—प्रसिद्ध कर्त्ता के नाम—

शेठ केशरीमलजी रिखबदासजी गुगलिया (धामक.)

(बेंच म्याजिस्ट्रेट. साहेब) राउतमलजी चोरड्या (वरोरा.)

हिरालालजी मोतीलालजी बोरा मुलचंदजी करणमलजी संचेति.

(वरोरा प्रान्त आदी)

हिरालालजी हणुमलजी गुगलिया मिलापचंदजी अगरचंदजी तातेट.

(बावलगांव बजार)

दिपचंदजी कस्तुरचंदजी खाबिया (मानकवाडा)

बगतावरमलजी जीवराजजी बागरेचा (मंगरुल चवाला)

वनेचंदजी बगतावरमलजी धोका (एरंड)

बालचंदजी नवलमलजी बंब, (कमजापुर)

जुगराजजी मुलचंदजी काकरिया (कौंणि प्रान्त वऱ्हाड)

य मव श्री जैन श्वेताम्बर स्थानक वासीके वास्ते अमूल्य भेट दि गई है और
अन्य मज्हबवालेके वास्ते किंमत रु २ रखी गइ है, मगर अन्य म-
जब वाला कोइभी माहात्म्य किसी तरहे धोका देकर यह
अमूल्य म गा लेगा और हमारी इस बातकी खातरी
हो जावे तो, उसके उपर कायदेशीर कार-
वाई कि जावगी.

इस बातकी निगराणी हमारे धर्मके श्री मधम रसक हमको
इत्तला देनेको अवश्य कृपा किजीये,

इस ग्रंथके पहीला और दुसरा भाग बालमजी बापुजी चव्हान
इन्होने अपने "गौरीशंकर छापखाना"
हिंगणघाटमे छापा

विज्ञापन

सुज्ञ पाठक गण ! इस "मिथ्यात्व निकंदन भास्कर" ग्रंथको जो मे ने जिनेश्वर देवाधिदेव वीतरागके फरमाये हुवे, असली और प्राचिन सिद्धांतों की सहायतासे और कितनेक ग्रंथोकी और विद्वानोंकी संमतीसे तय्यार किया हैं. और इसमे जो कुछ नजर दोषके जरिये न्युन्याधिक होवे तो एक बाजु रख कर उसमेका सदुपदेश हंसवत गुणानुरागी होके ग्रहण कर अपनी अत्माको ज्ञानका लाभ पहोंचाना चाहिये, ऐसी मेरी प्रार्थना है. क्योंकि भव्य जिवोंको ज्ञानका लाभ पहोंचनेके लिये, और मुर्तीपूजकोंकि और हमारे आम सभाद्वारा निर्णय होके, दुतर्फी सुलेह (संप) होके दोनो पक्षको अत्यानंद होना चाहिये, ये महान लाभका काम समज करके, मैंने ये तकलिफ उठाइ है, मगर मै खुद ऐसा नही समजता हुं के मे विद्वान हु परंतु परोपकारकी द्रष्टीसे ये ग्रंथ निर्माण किया है, मगर ये ग्रंथ दो छाप खानेमे छप रहा था उस वख्त प्रतिपक्षी पुरुषोंकी तर्फसे मेरेको अतिशय परिसह होनेसे किंवा और भी अनेक कारणोके प्रसंगसे ये ग्रंथ कोइ भी बनेसे मे संसोधन नहीं कर सका हु, इस लिये इस ग्रंथमे मेरे को पुर्ण शक हे के न्युन्याधिक निश्चे होवेगा, किंवा काना मात्रा वगैरे नजर दोष रह गये होवे तो, मेरे सिर्फ आशयपर द्रष्टी देकर दोषों की क्षमा किजीये, और ये ग्रंथ सुर्यवत प्रकाशमे लाके तत्ववेता बननेकी मेरी खास आपको विनंती है.

मुनि कुंदनमल.

विज्ञापन

इसिये ! हमारे प्यारे पाठक गणो की सेवाम धर्म विनंती निवदन करनेमे आती है के "मिथ्यात्व निकंदन भास्कर" य ग्रंथ हिन्दी भाषामे शुद्ध लिखनेके वास्ते किंवा संसोधन करनेके वास्ते हमको वैयाकरणीक पंडित का योग नही मिलनेसे, य काम हमन * सिवारामजी देशमुख क सुपूर्द किया था, मगर उक्त माहाशय पूर्ण वैयाकरणिक नही होनेके नरिये, ये ग्रंथ पुर्ण ससोधन नही हो सका और विरोध पक्षीयोंके तर्फे कितनेक कारण प्रयोजनके सबबसे इस ग्रंथका पुनरपी जन्म हुवा, और विरोध पक्षी-योंके तर्फसे मुनि माहाराजको अतिशय त्रासका कारण होनेसे मुनि माहाराज भी प्रुफका ससोधन नही कर सके और दोनु प्रेसके व्यानमर की गलती के सबबस प्रुफ पूर्ण ससोधन नहीं हो सका, इत्यादि कारणोंके सबबसे इस ग्रंथम ह्रस्व दीर्घ अक्षर कान्हा मात्रा वगैरेकी गलतियां ज्यादातर रह गइ है और हमको पुर्ण शक है के इस ग्रंथमे न्युन्याधिक लिखाय होवेगा इस लिये हमारे प्यारे पाठक गणोन गुणानुरागी होके साथ माफि के सुधारेके साथ पढने (वाचन) की कृपा करेंगे, ऐसी हमको पुर्ण आशा है

आपका शुभचिंतक-

श्री सघ- परोरा और वरार

—:।:—

*ये माहाशय आगे पोलीस सब-इन्सपेक्टर थ, इस वास्ते इनकी पुर्ण नि-गरानिके निचे य काम इनको सुपुर्द किया गया, और इनोकी मददसे ये काम बहोत जल्दी तैयार हुवा इस वास्ते इन माहाशयको हम कोटीस धन्य वाद देते है

धन्य वाद

देखिये ! हमारे प्यारे पाठकगणोकी सेवामें एक अर्ज निवेदन करने मे आति है के, श्रीयुत हिरालालजी बोरा तथा मुलचदजी सचेति को कोटीस धन्यवाद घटना है के इन पूरुषोंने अतिशय परिश्रम उठाके इस ग्रंथ का कार्य प्रारंभ किया और वगेरा किसा बरार श्री संघ तर्फे खर्च की सहाता फोरन दिलवाई मगर किणी निवासी श्रीयुत जुगराजजी काकरिया को वारवार कोटीस धन्यवाद देनेमे आता हे के इस माहाशयने खास आपने घरका व्यापार वगेरे सर्व काम बंध करके, ये पुस्तकको छपवाके तैयार करवाके श्री संघकी सेवामे हाजर किया है और ये कार्य करनेमे धर्मकी पुर्ण उन्नती हुई ऐसे तटस्त पुरुष ऐसे सर्वोत्तम कार्योपे हमेश ध्यान रखे तो श्री जैन श्वेताम्बर स्थानक वासी वर्गकी वृद्धि क्यों न होवे सदा सर्वदा होती रहे बलिहारी हैं उक्त पुरुषोंकी के धर्मकी वृद्धिके कार्योकी हमेस तन मन धन से सेवा बजाते है,

आपका सुभचिंतक

जैनी मोतीलाल मोहनलाल

गुरु भक्तिपर स्तवन

ज्ञान रत्न महाराज क्षमा निधि कुन्दन मुनि जग उपकारा,
मवत्र वानी कहैं धारक, मिथ्या वानी परिहारी ॥१॥ज्ञान०॥
किनि जिनता सब अमरावती वर्ष च्यार मेहनत भारी
स्वीकारा कीनी मुनि वरजी, झप्या है सहु नरनारी ॥२॥ज्ञान॥
मुरधरस्य स्थानग्र पधारे, फेर मन्दार पावन किना,
अज्ञानीका ज्ञान मवाय यथाधर्म उपग्र दिना ॥३॥ज्ञान०॥
मिथ्या भेदकरमी करि मान्ति, ज्ञान भाव मगन किना,
जा जिनवानी तारक जाणी अमृतरस प्याल्य पीना ॥४॥ज्ञा०॥
पाखंड मतका खडन करक, जैन धम मगन किना,
मूर्तकसम्म फन्दी किर्ती, पुण धम शुनिवर गिना ॥ ॥ज्ञा०॥
गामगरजी माहाराज कहिये, मुनिवरक है लघु भ्राता,
अशात्सरी जिनेन्द्र है, ते कहीये पुरण ज्ञाता ॥९॥ज्ञा०॥
हिंसाधर्मी माया कुकर्मी फकर बांध सनमर्ख आये,
माहा भयंकर दिया परिमा, क्षेत्र कुदेर काढण च्याये ॥७॥ज्ञा०॥
समपरिणामे सहा परिमा मुखक मन्द सर किनो,
पुत्र सुपरलक मभावे, मुनिवरका दरशण किना ॥८॥ज्ञा ॥
शिरमान भाग महता है, सुरुचन्द संपति सुना,
शुगराज कांकरियामें सो, मुनि मणमें ता चित दिना ॥९॥ज्ञा॥

श्री मिथ्यात्व निंकंदन भास्करका

— शुद्धि पत्र —

—:०:—

हमारे पाठक-गणो ! अवल ईस शुद्धि पत्रको ख्यालमे लेके पिछे सुधारेके साथ ईस पुस्तको यत्ना पुर्वक पढनेकी कृपा किजिये और तत्ववेता बनिये.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२४	भव्भ	भव्य
४	४	क्रिनेनेक	क्रिननेक
७	५	जनी	जैनी
१०	१६	मध्रास्थ	मध्यस्थ
१२	२४	सवेगी	संवेगी
१७	१०	तुनिको	मुनिको
१८	१३	मिकाले	निकाले
१८	१६	श्रो	श्री
१९	८	कोग	लोग
२३	११	अनादि	अनादि
,,	१४	बलमित्र	बालमित्र
,,	१७	करमेकी	करनेकी
२५	२०	ग्रए	पए
२६	२२	आचार्यायोने	आचार्योंने
२७	२१	शाति विनयजी	शाति विनयजी
२७	१८	क्रिया	क्रिया

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८४	५	स्थपना	स्थापना
८४	६	तिर्थकरोके	तिर्थकरोंके
,,	१०	,,	,,
८५	१	करन	करना
८६	[illegible]	[illegible]फा	साफ
८७	[illegible]	होवेगा	होवेगी
८७	६	प्राति	प्राप्ति
८८	२	मुखा बिदसे	मुखारबिंदसे
८९	२०	सिन्धातोमे	सिद्धातोमें
९०	७	कुबुलकर	कुबुल करे
९०	१४	मुर्तीजकोंके	मूर्तीपूजकोंके
९१	१	कराते हे	करेते हे
९५	२	माति	प्राप्ति
,,	१२	प्रप्ति	प्राप्ति
९५	२०	तिर्थोकर	तिर्थकर
९६	१	मिलगे	मिलेंगे
९८	७	तथा	तथा
१०२	१	उनोक	उनोकु
१०५	१५	धर्गके वास्ते	धर्मकेवास्ते
१०८	२	अकने	अनेक
१०९	२४	छाड	झाड
११०	१	छाड	झाड
११२	४१	कायोसे	कायौसे
,,	१२	नदी	नही
,,	२२	माति	प्राप्ति
११३	२१	,,	,,

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११०	११	मुर्तिपुजक	मुर्तीपुजक
१११	२१	प्राणीयोंके	प्राणीयोंका
११४	१७	प्राचिन	प्राचिन
१४१	१	माति	माति
"	१२	"	"
१४१	५	मुर्तीपुजकोंने	मुर्तीपूजकजन
१४	१	माति	माति
"	१२	बगैर	बगैर
१४३	२	मत	मत
	१०	कर्माको	कर्मोंको
४०	११	कदाचि	कदाचि
४९	१७	फलको	फलकी
१ १	२	फक	फर्क
"	"	मर्मी	भैसी
१६७	९	सोरसे	सारस
१७१	२	मुर्तीपुजकोंने	मुर्तीपूजकजन
१७२	२४	प्राचिन	प्राचिन
१७३	१४	मडा	मढी
१७४	२	बसी	बैसी
	१७	तिथ	तिर्थ
१७५	१०	तिर्थ बगैरेक	तिर्थ बगैरक
१७६	१०	मजीवर	मिजवार
१७०	१	सत्र	पुत्र
१७७	१०	धमकी	धर्मकी
१८	१६	भावथ	भावार्थ
१८४	१	मम्मद	महम्मद

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९१	९	अमोव घासरुप	अमोघ धार.रुप
१९२	१६	मुतिपुजकोके	मुर्तीपुजकोके
,,	२०	मुतिपूजक	मुर्तीपुजक
१९३	५	मुतिपुजकोके	मुर्तीपुजकोके
,,	१०	लग गये ये	लग गये थे
,,	२२	उपदा	उमदा
१९६	१३	जौर	और
१९८	३	मुर्तीपुकोका	मुर्तीपुजकोंका
१९८	२४	होसक	होसका
२०२	१९	पिड	पिन्ड
२०७	२	शहरमे हाणेमे	शहरमेहाणेमे
२०८	१९	रिवाजरोके	रिवाज रोके
२१०	२१	निसदेहपणे	निसंदेहपणे
२१४	१	तियकरोको	तिर्थकरोको
२१५	२२	कसी	कैसी
२१७	७	संतोत	सतोष
२१८	२	तिर्यकर	तिर्थकर
२२३	१	ने	न
,,	८	,,	,,
२२६	१	सिसा	हिंसा
२२९	११	शुध्दशुद्ध	शुद्धाशुद्ध
२३०	१४	रखमेसे	रखवेसे
,,	१७	फरमाते	फरेमाते
,,	२०	वधीहु	वधी हुइ
२३१	१४	सकन्द	सकेन्द्र
२४१	२४	लडकका	लाटेका

[अनुक्रमणीका]

प्रस्तावना.

श्री जैन धर्म सर्व धर्मोंसे श्रेष्ठ है, निर्मल है, पवित्र है, महा प्रधान है, महा मांगलिक है, महान उत्कृष्ट है, उत्तमोत्तम है, महा प्रभाविक है, कल्याणका कर्ता है, और मोक्षका दाता है,। इत्यादिक अनेक उत्तमोत्तम गुण और शुभ औपमाएं करके संयुक्त है; लेकिन इस दुषम काल (पंचम काल) के प्रभावसे इस जैन धर्ममेंसे अनेक नवीन और नकली मत निकले हैं। ऊन मतोंके नाम हम नीचे दरज करते हैं।

१ श्वेतांबर [मूर्तीपूजक यति संवेगी पितांम्बरी] २ दिगंबर द्वितीय नाम रक्ताम्बर [तेरापंथी बिसपंथी तारण तिरण] ३ काष्टंगी ४ मयूर श्रंगी ५ जापालिया ६ मलधार ७ आगमिया ८ आग औरिया ९ भावसारा १० पूजारा ११ उकट १२ वेषधर १३ पोतीयाबंद १४ तेरापंथी १५ अजीवपंथी—गुरु मुख धारणा।*

---

* इन मतोंमेंसे कितनेक मत विद्यमान हैं और इसमेंसे कितनेक मजहबोंकी नास्ति होगइ है.

वगैरह मजहबोंने इस पाक निर्मल जैन धर्मको डामाडोल करके मलीन कर डाला है; जहां सूर्य [आफताब] का प्रकाश होता है, यद्यपि अंधेरेका विनाश होता है; याने वहां अंधेरा नहीं रह सक्ता है। इसी तरह जहां श्री जिन अरिहंत भगवान वीतराग देवाधिदेव प्रत्यक्षज्ञानी और प्रत्यक्षदर्शनी [केवळ ज्ञानी तथा केवल दर्शनी]महान् भाव पुरुषोंकी अमोघ धारा रूप निर्विघ वाणीका पूर्ण प्रकाश होता है। वहां परसे मिथ्यात्व तथा अज्ञानरूप अंधकारका नाश होता है। जिन भव्यजीवोंके हृदय कमलमें भी जिनवाणीका प्रकाश हो चूका है; उन भव्यजीवोंके मिथ्यात्व, अज्ञान, शंका, कंक्षा, विचिगिच्छा वगेरहका विनाश होकर सदा सर्वदा निर्मल और निष्कलंक हो कर साथ बडेभारी आनंदके ज्ञानकी स्वदरमे मग्नतिमान [रमण] रहे है। जहांपर जिन वाणीकी नास्ति होती है, वहांपर मिथ्यात्व अज्ञान, भय और शंका वगेरहकी अस्ति होती है। सो अब मिथ्यात्व और अज्ञानरूप अंधकार वगेरहकी नास्ति करनेके वास्ते 'मिथ्यात्व निकंदन भास्कर' का प्रकाश करनेमें आया है। इसका प्रकाश करनेका सबब यह है की 'भारतवर्षकी' जैन प्रजाको मिथ्यात्व और अज्ञान रूप अंधकारसे दूर करके भी जिनवाणीका पूरा पूरा भवलम्ब समजानेके वास्ते उक्त ग्रंथकी रचना करनेकी पूरी पूरी जरूरत पडी है। फिर भी जैन सनातन धर्मके उपर व अजरंगी मुनिवर्ग वगेरहके उपर, जैनभासक मुर्तिपूजक वगेरह धर्म धर्मोने जो जो आक्षेप किये हैं और करते है भी जैनके असत्य भाषित सिद्धांतोंके जैन भासक मूर्तिपूजकोंने स्वकपोल—मन कल्पित अर्थ करके टीका—चुर्णी भाष्य, निर्युक्ति और ग्रंथ तथा प्रकरण की रचना करके भोले भाणी भव्यजीवों का मुग्धम् भ्रमरुप जाल में फंसा दिये है। अतएव अनेक ग्रंथोंका शोधन करके इस ग्रंथमें स्पष्ट—खुल्ले रीतिसे न्याय और युक्ति पूर्वक दिखानेमें आया हैं।

चोपाई छंद.

देखो जैन मतके मांहि, मत मतांतर फैले बहुभाई;
ग्याता तुमतो करियो विचारा, नकली मतसे रहिये न्यारा ॥

विदित हो की इस समय आर्य खंडमे श्री जैन मजहबमेसे बहो-तसे मत मतांतर प्रचलित हो रहे थे; लेकिन सर्व मतोंसे प्राचीन सनातन और प्रधानमत श्री जैन श्वेतांबर साधुमार्गी है। और दूसरे अर्वाचीन नवीन मत मुतिपूजक वगेरह मत है। उन मतोंके अनुया-यी लोग अपने अपने मतोंके मताध्यक्षोंने श्री जैनके असली सि-द्धांतोंसे अलग २ अर्थात भिन्न भिन्न अपने मतोंके पुस्तक संस्कृत मागधि प्राकृत वगेरह भाषाओंमें बनाये है। और श्री जैनके असली साधुओंका भेष छोड कर नवीन-चिन्ह धारण करके फिरते है। श्री जैन धर्मके तिर्थकरोंके फरमाय हुये सिद्धांतोको छोडकर पीछले सावजाचार्योंके बनाये हुए टीकादि ग्रंथोंको सिद्धांत मानते है। यह तो हम खूब अच्छी तरहसे जानते हैं कि जिसको खास अपने घर में खानेको टुकडा नहीं मिलता है; वही शख्स दूसरोंके घर मांगनेको जाता है; मगर अपने खास घरके मालिककी हतक होती है। इस बातको वह शख्स नहीं जान सक्ता है। यह बात यहां लिखनेका सबब यह है कि श्री जैनके असली सिद्धांत तो उनोंके सावज्याचार्योंके समयमेंभी विद्यमान थे; तो फिर नवीन टीका-चुर्णी आदि ग्रंथपुस्त-क बनाने की क्या जरुरत थी? विचारे क्या करे! जेकर नवीन ग्रंथादि न बनावे तो श्री जैनके असली मुनी झटपट इनके मतोंकी नास्ति कर डाले। जब ऐसा हो जावे तो फिर उनोंकी महिमा भ-क्ति बंद हो जावे! क्यों कि श्री जैनके असली सिद्धांतोंके असली मालिक श्री जैनके असली मुनि हैं।

शंका—क्योंजी! जैनके असली और प्राचीन सिद्धांत तो मु तिपूजकोंके हस्तगत हैं। यह कैसे हुआ मत्स।

समाधान—चरम तिर्थङ्कर श्रीमान महावीर परमात्माके निर्वाण बाद, बारहकाली महादुष्काल पडनेसे भी जैनके कितनेक असली मुनि आर्य खंडको छोडकर अन्य खंडोंमें उतर गये और कितनेक मुनि पश्चात आर्य खंडमें रह गये उन मुनियोंसे संयम कष्ट सहन न होनसे संयमसे भ्रष्ट होकर मुर्तिपूजाका नवीन और नकली भी जैनके असली सिद्धांतोंके विरुद्ध मजहब उन्होंने कायम किया उस ही सबबसे असली मुनियोंके सब सिद्धांत उन नकली मुनियोंके पास रह गये भी जैनके असली सिद्धांत मुर्तिपुजकोंके हस्तगत हो जानेका यह ही प्रयोजन समझ लेवें ॥

इस लिये जो नवीन पंथ निकाल्ते हैं वेतो अपने निकाले हुए मतका पुरी तौरसे निर्वाह करते हैं; और नवीन तथा मन कल्पित ग्रन्थोंकी रचना करते है एसा होतें भी अन्तमें भी जैनके असली सिद्धांतोंका चरण शरण ग्रहण करना पडता है तब जैनाभास जैन मतावलंबी अन्तमे जैनके असली सिद्धांतोंको मानते हैं तो फिर नवीन ग्रंथ–पुस्तक बनाना और पंथ निकालनेका क्या प्रयोजन है? मगर नवीन और मनकल्पित ग्रंथ बनाकर तथा पंथ निकाल कर पंथियोंका प्रगट फजिता करना है।

तर्क—क्योंजी! क्या तुमारे आचार्योंने नवीन नवीन ग्रंथका रचना नहीं करी है?

समाधान—अलबत्ते यह कार्रवाई मुर्तिपुजकों के तर्फसे हुई है मगर हमारे तर्फसे यह कार्रवाई हुई है क्यों कि बहुत वर्षोंके म्यार म्यार नवीन नवीन (ग्रंथ) पुस्तक अवलोकन करनेसे तथा मा-

चनेसे लोगोंकी धर्मसे श्रद्धा भ्रष्ट हो जाती है! और वे लोग कहते हैं कि हम किसको सच्चा और किसको झूठा माने? इसका समाधान ऐसा हैं कि श्री जैन धर्मके असली सिद्धांत आचारंगादिकका ऐसा फरमान है कि इस जगतमें अनादि कालसे मिथ्यात्व और अज्ञान फैल रहा है, श्री जैनके असली सिद्धांतोंके लेख पुर्ण सत्य है ऐसा सब ही जैनवर्गने समझना चाहिये, श्री जैन सिद्धांतोंके लेख पुरी तोरसे सिद्ध ओर सत्य है, ऐसा समजनेका कारण प्रत्यक्ष प्रमाणोंसे सिद्ध होता है इस बातका पुरी तोरसे पुरा पुरा विचार करोगे तो सत्यऽसत्यका निर्णय हो जायगा निर्णय नहीं होनेका सच्चा सबब तो यह हैं कि अज्ञान तथा मिथ्यात्वका पुरा २ विनाश न होनेसे कीचित मात्र मिथ्यात्वका संबंध बाकी रह गया है जिस जगहपर अज्ञान है उस जगहपर मिथ्यात्व हे यह दोनों एक दूसरेको आधार भूत हैं मिथ्यात्वका सबब जो अज्ञान हैं; उसको खास दूर करनेकी जरूरत है अपने आत्माकी सिद्धि करनेवाला जो धर्म है, उसका यह अज्ञान विरोधि [दुश्मन] है इस लिये अज्ञानका और मिथ्यात्वका विनाश करनेकी जरूरत है मोक्षपद साधन करनेवाले जीवोंको यह अज्ञान अंतराय देता है अज्ञान और मिथ्यात्व यह पापका मुल हैं इन दोनोंका विनाश करनेसे शंका, कंखा, वितिगिच्छा वगेरहका विनाश होकर देव, गुरु, और धर्मकी शुद्ध पहिचान होती हैं यह भी बात याद रखना चाहिये कि जब मुर्तिपुजकोंका जोर तोर अतिशय बढ गया था तब जैनके असली मुनियोंको हदसे उनोंने ज्यादह त्रास देना शुरु किया और लेखद्वारा तथा भाषाद्वारा अतिशय नींदा करना शुरु किया यह बात स्मरणमें रखना चाहिये कि पुर्ण सत्यकी नास्ति किसी वजहसे नहीं होती है हम गवर्नमेन्टी राजको धन्यवाद देते हैं कि जिसके राज्यमे न्याय–नीतिसे चलने वाले महाशयोंको कोई खौफ नहीं है

फिर सिंह और बकरी एक घाट पानी पीते है। लेकिन मग्दूर नहीं है कि कोई किसीको गैर कायदेसर गर्म आखसे देख सके'

विचार—जैनी है या नहीं है उसका

देखिये ' एक बडीभारी आश्चर्यकी बात है कि हमने कितनेक पुस्तकोंमे अवलोकन किया है तथा बांचा है; और 'प्रति तथा पीतांबरी—संवेगी वगेरहके मुखसे सुनाभी है कि भी जैन श्वेतांबर साधुमार्गी स्थानकवासी वर्ग ये जैनी नहीं है। यह कहना और लिखना उक्त लोगोंका सत्य है या असत्य है? यह एक विचार करनेके योग्य प्रश्न है।

देखो ' हमारी समजसेतो उन लोगोंका कहना और लिखना असत्य याने साफ झुंठा है क्यों कि जो कोई छकायाकी हिंसा करे, पांच आश्रवद्वार, अठारह पापस्थानक, पचीस प्रकारका मिथ्यात्व और पांच प्रकारका अज्ञान, तेवीस प्रकारका परिग्रह, पचीस प्रकारकी क्रिया, आठ मद और सात कुव्यसन इत्यादि अशुभ जोगोंके कार्योंमें धर्म माने—मनावे—और मानतेको भल्ल—अच्छाजाने सा जैनी नहीं है। फिर जिस शास्त्रमें हिंसा, झुंठ, चोरी, स्त्रीसेवन, पांच आश्रव, मिथ्यात्व, अज्ञान, क्रिया, मद, कुव्यसन और परिग्रह इत्यादिक अशुभ जोगोंके काय सेवन करनेमें करानेमें तथा कर्त्ताको अच्छा समजनेमें धर्म, पुन्य, स्वर्ग और मोक्ष मिलनेका फल लिखा है; उस शास्त्रके कर्त्ता तथा उस शास्त्र को सत्य शास्त्र माने, मनावे और मानतेको भल्ल जाने सो जैनी नहीं है; फिर रागी देवोंको भोगी करे, करावे, करतेका भला जाने वाभी जैनी नहीं है फिर पाषाण धातु वगेरह के बनाये हुवे देवोंको सत्य देव माने मनावे मानतेको भल्ल जाने वोभी जैनी नहीं है; फिर कुगुरु-'

यादि पहाड, पर्वत नदी वगेरहको धमतीर्थ माने, मनावे मानतेको भला जाने वह भी जैनी नहीं है।

अब देखिये! श्री जैन श्वेतांबर साधु मार्गी मजहबमें उपर लिखे हुए श्री जैन मजहबके विरुद्ध लक्षणोंमेंसे एकभी लक्षण नहीं मिलता है; तो फिर श्री जैन श्वेतांवर साधु मार्गी मजहबको जनी नहीं है ऐसा कहना और लिखना मुर्तिपुजक वगेरह लोगोंका साफ खोटा [झुट] है।

मेहरबान साहब! आप नहीं जानते हो जैनी नहीं है, ऐसा उसे कहते है जिन मंदिरको, जिन प्रतिमाकों शत्रुंजयादि गिरीको धर्म तीर्थ, मुर्तिपुजक आचार्योंके बनाये हुए टीकादि ग्रंथ तथा प्रकरणको सत्य शास्त्र तथा हिंसामें धर्म वगेरह न माने उसको जैनी नहीं है ऐसा वह कहते है अरे भाई! यह कहना धर्मविरोधी हठवादी, निंदक अज्ञानी, कदाग्रही मुर्खोंका है; मगर ज्ञानी पुरुषोंका नहीं है; क्यों कि किसी मुर्खनें हीरेको कंकर कह दिया तो क्या हीरा कंकर हो जायगा! यों तो सर्व मतावलंबी कह देवेंगे कि हमारे देव गुरु और धर्म तथा शास्त्रको नही माने, वो सब अधर्मी है तो क्या उनोंके कहनेसे सब अधर्मी हो जावेंगे? कदापी नहीं! न्याय संपन्न पुरुषोंने ज्ञानकी द्रष्टिसे विचार करना चाहिये कि जो पुरुष धर्मको अधर्म और अधर्मको धर्म मानते हैं; साधुको कुसाधु और कुसाधुको साधु मानते हैं; देवको कुदेव और कुदेवको देव मानते है; हिंसाको दया और दयाको हिंसा मानते हैं कुव्यसनके भोगी और ठगबाजी करके भोले लोगोंको ठगने वाले, दुराचारी, जीवोंका मरण चिंतवनेवाले, छलदंभी, महालोभी, स्वार्थ तत्पर, स्वार्थांध लोगोंको भ्रमरुप अंध कुएमें डालनेवाले, दयादान परोपकार वर्जित, अभिमानी, मत्सरी, परगुण असहनहार, अज्ञानी,

मिथ्यात्वके धारक, कुपथके चलनेवाले, परवस्तुके अभिलाषी, हिंसा, झुठ, चोरी अब्रम्ह और परिग्रहके धारक, मंत्र, जंत्र तंत्र जडी, बुटी, ज्योतीष, निमित्त, वैद्यग इत्यादिकके धारक, सत्यदेव सत्य साधु, सत्यधर्म और सत्यशास्त्र के द्वेषी (वैरी), दुराग्रहाग्रही, इत्यादिक अनेक सावद्य अवगुण करके युक्त है, वह सत्यस राक्षस समान है अर्थात् जैनी नहीं है। और उपरोक्त दुर्गुण करके विरक्त—रहित है, अठारह दोष करके रहित देवोंको मानते है, दयामें धर्म समजते है, संज्मी पुरुषोंको साधु मानते है, करुणा हृदय है, विषय भोगोंके त्यागी है, संसारसे उदासीन है, इत्यादिक अनेक निर्दोष शुभगुण एकत्र होवे वह जैनी है।

अब बुद्धिवान न्यायसंपन्न पुरुष आपही विचार कर लेवेंगे कि कौन जैनी है और कौन जैनी नहीं है।

मतलब—भगनि सजूर मिठी और औरोंकि सजूर कडवी यह सब अपने अपने स्वार्थ—मतलबके वास्ते सर्व मतावलंबी कहते है। अर्थात् सच्चे देव—गुरु—धर्म और शास्त्रका निर्णय करना बहुत कठिन है। मगर जो भी मतानुयायी जिस जिस धर्मका अवलंबन करनेवाले है, वह सब अपने ग्रहण किये हुए मतोंको सच्चे कहते है और मानते है; उन पुरुषोंको सच्चे देव—गुरु—और धर्मका तथा शास्त्रका असली सुधा स्वाद नहीं आता जो पुरुष सत्यअसत्यके परीक्षक है और सत्य वस्तुके ग्रहण करनेवाले है; उन पुरुषोंके लिये इस ग्रंथकी रचना कि गइ है इससे जो स्वस्थ शुद्ध हृदयी और पक्षपात रहित पुरुष है, उनोंको शुद्ध देव—गुरु—धर्म—तथा शास्त्र और ज्ञान—दर्शन—चारित्रकी प्राप्ति होती है।

इस ग्रंथका प्रयोजन

इस ग्रंथके बनानेका प्रयोजन तो यह है कि, वर्तमान समयमें

इस आर्य स्वदर्श जो [illegible] इसमें [illegible] जैन श्वेतांबर साधुमार्गी स्थानकवासी [illegible], [illegible] इनोंके आचार्योंने बनाये हुवे ग्रंथोको [illegible] [illegible] [illegible] मानते है; इनोंमें क्या क्या लिखा है और किस किस प्रकार तीर्थंकर देवोकी सावद्य-पुजा, भक्ति, प्रतिष्ठा, यज्ञ होम लिखे है, और वो शास्त्र किस किसके बनाये हुऐ है, और वे किस समयमें बने हुऐ है, और जैनीयोंका सच्चा मत क्या है और जैनके असली सिद्धांत कोनसी भाषामें है; और जैनके असली तीर्थंकर महाराज कोनसी भाषामें शास्त्र फरमाते थे, जैनके असली सिद्धांतोंका असली अर्थ जैनसे विपरीत वर्तनेवाले नहीं कर सक्ते हैं. देखिये! यह हकीकत बहुत लोग नहीं जानते है उन सर्व महाशयोंको पूर्वोक्त सर्व हकीकत मालुम होना चाहिये. बस, यह ही इस ग्रंथका मुख्य प्रयोजन समझना चाहिये.

करी है उसमें लिखता है कि 'हमारे और ढुंढकोंके पुस्तकों का निःपक्षपातसे पंडितोंके मध्यस्थपणे निर्णय करवा लेना और तीर्थंकर गणधरादि सर्व आचार्योंकी निंदा करने वालोंको शासन करना चाहिये' अमरविजयका यह कथन वहोत ठीक है; इस लिये हमने '**मिथ्यात्व निकंदन भास्कर**' में जो जो लेख निर्णय करनेके वास्ते दाखल किये हैं, उन लेखोंका हमारे निम्न लिखित लेखानुसार आम सभामें निर्णय अमरविजय वगेरह सर्व मुर्तीपुजकोंनें करना चाहिये, इसकी सुचना हम निचे दे देते हैं।

हिंसाधर्मी मुर्तीपुजक आम गच्छवासियोंको

सुचना

विदीत हो श्री जैन आम वर्गको, की जैन भासक हिंसाधर्मी श्वेतांबर तथा संवेगी तथा पीतांवरी मंदिरवासी (मुर्तीपुजक) वर्गमें ८४ गच्छ हैं; उन गच्छोके अमरविजय—वल्लभविजय—हंसविजय—शान्तिविजय— वगेरह मुर्तीपुजकोंके आचार्य—उपाध्याय—यति—संवेगी पीतांवरी—सूरी—सागर—विजय तथा इनोंके श्रावक पालनपूर निवासी रिखवचंद उजमचंद—व—पंजाब निवासी मेलाराम वगेरह आम गच्छवासियोंकी तर्फसे सम्यक्त्व शल्योद्धार, ढुंढक नाटक, ढुढक हृदय नेत्रांजन, रिसाला मजहब ढुंढिये—गप्पदीपिका समीर, साधुमार्गीनी सत्यता उपर कुहाडो—वगेरह अनेक ग्रंथोंमें श्री जैन श्वेतांबर स्थानकवासी वर्गके आचार्य—उपाध्याय—मुनी तथा श्रावक वगेरह हमारे आम लोगोंको स्थानकवासी ढुढक—साधुमार्गी वगेरह नामोंसे महान पुकार करके गच्छवासी लोग कहते हैं, कि ढुंढिये

फिरते हैं–निन्हव हैं, नीच हैं। जैनी नहीं है इत्यादि पुरी तौरसे मत्सरोंसे भरे हुए, मिथ्याकलंकित–पनिकारक–हलकेकी तौरस अनेक ग्रंथोंमें हमारे वर्गके उपर लेख दर्ज किये हैं–व मुखसे भी कहते है मगर कितनेक ग्रंथ छापाद्वारा पब्लीकमें जाहिर करके हमारे आचार्य तथा उपाध्याय मुनि, श्रावक वगेरह लोगोंके उपर तथा हमारे मजहब (धर्म) के उपर महान जुल्म मचा दिया है, इस वास्ते हमारे वाल्ममित्र गच्छवासियोंको विदीत करते हैं कि देखिये ! शिवाय दुंढीयोंके तुमारे अन्य लोगोंका पक्षिपणा कदापि नहीं होवेगा दुंढीयोंके श्रावकवर्गकी खुशामद करके तथा फुसलाकर बहकाकर धर्मके नामसे लाखों रुपैये मंगकर, तुमारे खुदको, व तुमारे दर्शनोंको, व तुम्हारे धार्योको व तुमारे मंदिरोंको तथा तुमारी प्रतिमाओंको परम पवित्र किये हो, वो फिर तुम लोगोंको आश्चर्य करने को, व व्याख्यान करतेको क्या कुछभी शर्म नहीं आती है, लेकिन अन्यागममें तुम लोगोंकी बराबरी करना यह हमारा कर्तव्य नही है, सबब कि हम लोग त्यागी है, फिरभी देखिये ! वल्लभविजय–अमरविजय वगेरहने महासतीजी पार्वतीजीका सामना किया वो सभा द्वारा लेनाथा, सो धन्य रोज यादगिरी वो रहता मगर वेश्याकी ओपमा देकर मस्करी करना, यह कुछ पढिलोंका, उत्तमोंका, स्थविरोंका व मरदोंका काम नहीं है। लेकिन फिरभी देखिये ! हमारे गच्छवासी बाल्भमित्रोंने त्रिलोकीनाथ शासनाधिपती श्री वीर परमात्माके हुक्म विरुद्ध जो जैनके आगमों सिद्धांतों के लेख विरुद्ध व जैन धर्मविरुद्ध जिससे जैनधर्म नष्ट हो जावे एसे लेख छापा कर पब्लीकमें जाहिर किये है, एस हमारे बालमित्र गच्छवासियोंके–आचार्य–उपाध्याय–यति–संवेगी व पीतांबरा तथा श्रावक वगेरह सब लोगोंका विदीत करते है कि, जिसमें

किनाय शासनाधिपती श्री वीर परमात्मानें आचारांगादि असली सिद्धांतोंमें आचार्य-उपाध्याय-साधु-श्रावक वगेरहको धर्म कार्यमें किस वजहसे प्रवर्तना, धर्मक्रिया किस वजहसे करना, धर्मकी उत्पती किस वजहसे करना, धर्मको किस वजहसे स्थिर करना, धर्मकी वृद्धि किस वजहसे करना, धर्मकी महिमा किस वजहसे करना, धर्मके निमित्त आदेश-उपदेश--किस तरहसे करना, इत्यादिक बातोंका खुलासा श्री वीर प्रभुनें हेतु दृष्टांत संयुक्त जाहिरमें फरमाया है; मगर अन्य मतके महाभारत पुराणमें धर्मके वास्ते क्या उमदा अधिकार फरमया है:—

श्लोक

कथ मुत्पद्यते धर्म, कथं धम्मो विवर्द्धते ॥
कथंच स्थाप्यते धर्म, कथं धम्मों विनस्याति ॥१॥
सत्यनोत्पद्यते धर्म दया दानेन वर्द्धते ॥
क्षमायां स्थाप्यते धर्म, क्रोधलोभाद्विनस्याति ॥२॥

इति वचनात्

तो अब हमारे बालमित्र गच्छवासी लोग श्री वीर प्रभुके हुकमके मुताबिक धर्म कार्यमें प्रवर्तते होवेंगे तुमारी समकित निर्मल होवे तो, व तुमारा साधुपणा निर्मल होवे तो, तुमारा यतिपणा निर्मल होवे तो व श्रावकपना निर्मल होवे तो तुम लोग असल जैनी होवो तो व सच्चे जैनी होवो तो; निर्मल जैनी होवो तो, जैनमें तुमारा धर्म शरूसे अव्वल होवे तो,-हमारे बालमित्र गच्छवासियोंनें हमारे निम्नलिखित लेखानुसार श्री जैनके एकादस अंगादि ताडपत्रोमें लिखित प्राचीन असली सिद्धांतोके मूल पाटसे आम सभामें सिद्ध करके बताना

चाहिये; अहो गच्छवासियों ! यदि तुमारे फ्लोशासक सावद्याचार्य वगरह हुए हैं, उनोंके बनाये हुऐ टीका, चुर्णी, भाष्य, निर्युक्ति ,ग्रंथ प्रकरण, ढाल, चौपाई चाढालिया, स्तवन, सज्झाय, दोहा, सवैया, कुंडलिया, गीत, छन्द, श्लोक, काव्य वगरहकी साक्षी देवो तो वे साक्षी माक्षी हमलोग कदापि मंजुर करेंगे नहीं;

पुर्वपक्षी—क्योंजी ! मूल, टीका चुर्णी, भाष्य, निर्युक्ति, वगरह पाच अंग है; सो मुलके सिवाय चार अंग आप नहीं मानते हो क्या ?

उत्तर पक्षी—अगले समयमें जो उत्तमोत्तम निर्वद्याचार्य वगेरह हो गये हैं; उन उत्तम पुरुषोंके बनाये हुए मागधि भाषामें जो चार अंग थी जैनके एकादश अंगादि प्राचीन और असली सिद्धांतोंके अनुकुल थे वे चार अंग जमाने हालमें विच्छेद हैं; और इस ...—जमाने हालमें मुर्तीपुजकोंके सावद्याचार्य वगेरहके संस्कृत भाषामें नवीन और मनकल्पित जो चार अंग भी जैनके एकादस अंगादि प्राचीन व असली सिद्धांतोंसे प्रतिकुल बनाये है; इस लिये हम लोग नहीं मानते है

पुर्वपक्षी—क्योंजी ! वे चार अंग विच्छेद है यह आपने कायसर से निश्चित किया है !

उत्तरपक्षी—जिस वक्त बारह वर्षका महादुष्काल पड़ाथा, उस वक्त कितनेक उत्तम मुनी अन्य देशावरोंमें उतर गये, और पचाससे रहे हुए मुनियोंके हस्तगत सर्व दांतोंही अंग हो गये, फेर ...नके कारणसे उन मुनियोंसे संयमका निर्वाह न होनेके सब ... भ्रष्ट होकर भी जैनके प्राचीन और असली सिद्धांतोंके विरुद्ध मुर्तीपुजाका मनःकल्पित और नवीन मत (मजहब) निकाला;

परन्तु प्राचीन असली पांचों अंगोंसे मुर्तीपुजाका मत प्रचलित न होनेसे नास्ति होनेका समय आ गया था, तब मुर्तीपुजकोंनें सोचा के मूलके सिवाय चारोंही अंगोंकी नास्ति करके नविन बनाये सिवाय अपना मत चलेगा ही नहीं, उस समय मुर्तिपुजकोंनें मूल छोडकर बाकी के चारोही अंगोंको निर्मूल कर डाले, हमने सुना है की दक्षिण देशमें अन्य मतमें तुकाराम भक्त हुआ है, उसके बनाये हुये कितनेक ग्रंथ ब्राम्हणोंनें नदीमें डुबवा दिये, इस दृष्टांत मुर्तीपुजकोंनें प्राचीन चारों अंगोंकी नास्ती करके अपने मनकल्पित नवीन चारो अंगोकी रचना रचली है; और यह चारों मनकल्पित नवीन अंग श्री जैनके प्राचीन असली सिद्धांतोंसे प्रतिकुल है, इस वास्ते यह मनकल्पित और नवीन चारों अंग माननेमें नहीं आते है।

पुर्वपक्षी–क्योंजी ! मुर्तीपुजकोके आचार्य वगैरहके बनाये हुए चारो अंगोंको आप श्री जैनके एकादस अंगादिक असली सिद्धांतोंसे प्रतिकुल मानते हो, तो कुछ सबूत बताओगे (देवोगे)

उत्तरपक्षी--हांजी ? सबूत देवेंगे।

पुर्वपक्षी–मेहरबान साहब ! बराय मेहरबानीके बतानेकी कृपा किजीये,

उत्तरपक्षी–देखिये ! मुर्तीपुजकोके आचार्य वगैरोनें टीकादिक चार अंग, तथा ग्रंथ–प्रकरणादिककी रचना करी है, लेकिन श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचिन और असली सिद्धांतोमें कितनेक अधिकार नहीं है, ऐसे विपरीत अधिकार टीकादि ग्रंथ प्रकरणोंमें मनकल्पित झुंटे (खोटे) दाखल किये है, वह अधिकार इस जगह हम किंचित मात्र दिखाते है

सुत्रभी-जंबुद्वीपपन्नती नामक सूत्रादिमें ऐसा अधिकार नहीं है कि भरत चक्रवर्तीनें अष्टापद पर्वतके उपर जिनमंदिर बनवाये हैं, (बिंब भरवाये है) लेकिन आवश्यक नियुक्तिके अ ध्ययन पहलेमें भरत चक्रवर्तीनें अष्टापद पर्वतके उपर जिनमंदिर बनवाये हैं, ऐसा अधिकार दाखल किया है, वह पाठ निचे देखलो।—

(गाथा)

थुम सयभाउगाण चउविस जिणघरे कासी
सव जिणाण पडिमा वन्नपमाणेंहिं नियएहिं॥

सुत्र श्री सुयगडांग्म वगेरह सिद्धांतोमें ऐसा अधिकार नहीं है कि अभयकुमारनें आद्रकुमारके वास्ते जिनमुर्ती भेजी, वो जिनमुर्तिको देखकर आद्रकुमारनें प्रतिबोध पाया, लेकिन सूयगडांग दुसर श्रुतस्कंधकी निर्युक्तिमें ऐसा अधिकार दाखल किया है कि अभयकुमारकी भेजी हुई जिनप्रतिको देखकर आद्रकुमारनें प्रतिबोध पाया, वो भी निचे दर्ज करा है. देखलो!!!

[गाथा]

पतिम दोम्ह हुओ पुछण अभयस्स पछवे सोओ॥
तेणावि सम्मदिठिति होज्जो पडिमा रहमिगया॥१०॥
दठु संबुद्धो रखिओ आसण वाहण पलातो ॥
पव्वयतो धारेतो रज्ञ न करोति को अन्नो ॥११॥

सुत्र-श्री भग्वती वगेरह सिद्धांतोंमें दृष्टि [मसारद]

रस्ते में जैन मुनिको गोचरी जाना साफ मनाई है; लेकिन कल्पसूत्र तथा टीका वगेरह मे कम [थोडी] वारिशमें जैन मुनिको गोचरी जाना कहा है प० पाठ निचे देखलो।

(गद्यपाट)

कप्पसे अप्पुठी कायंसि ॥

[टीका]

प्रवृत्तस्य अल्पवृष्टो गंतु कल्पते ॥

सूत्र श्री आचारागजी वगेरह सिद्धांतोंमे जैन मुनियोंको अल्पमोल-का वस्त्र ग्रहण करना कहा है. लेकिन प्रवचन सारोद्धारमें बहुमोल्य वस्त्र जैन मुनिको ग्रहण [लेना] करना कहा है, वह भी पाठ निचे दरज है-

[गाथा]

मुल्लजुअं पुणातिविहं जहन्नयं मझिमंच उक्कोसं ॥
जहनंणं अठारसगं सय सहस्सचं उक्कोसं ॥८०४॥

सूत्र श्री निशीथ वगेरह सिद्धांतोंमें जैन मुनियों को स्वहस्तसे कागद (खत) लिखनेकी साफ मनाई है, लेकिन कल्पभाष्य चूर्त्तिमें जैन मुनियोंको स्वहस्तसे कागद लिखना कहा है वह भी पाठ निचे दरज है।

[पाठ]

जथ्थविय गतु काम सथ्थ विकारे तितोसिं नायसु आरक्खियाई तेविय तेणेव कमेण पुछाति ॥

(वृत्ति) यद्यपि राजये गतुकास्तत्रापि ये साधवो वर्तंते तेया सम भेपणेन सदेश भेपणेन-सविभागुं कुर्वंति यथावयं इतराभ्यात् तथागंतु कामा भतो भवद्भिस्तत्रारसकान् तत पृच्छवि यदाः तैरनुमव भवति तान् सयुन् ज्ञापयन्ति आरक्षितादिभिरभातु ज्ञातमित भवद्भिरम मार्गमर्त्थ्य " एप निर्गमने प्रवेशश्च विधिरुक्तः " ॥

देखिये ! उपर हमने किंचित् माथ अधिकार दिखलाया है; ऐसे अनेक विपरित (खोटे) अधिकार निकादि चारों अंग तथा ग्रंथ . ण वगेरहमें मुर्तीपुजकोंके आचार्य वगेरोनें दाखल किये हैं; ता अब कहिये श्री सैनक एकादस अगादि प्राचीन असली सिद्धांतोंके शिवाय कहांसे लाये ! क्या जमीन मे गड़े हुए थे सो खोदकर निकाले क्या आकाशमे लटके थे सो निचे उतार, क्या वारिधककी पचकमें जमी नमें पाक आया था सो उठाकर चारों अंग तथा ग्रंथ-प्रकरण वगेरहमें दाखल किया ? और भो जिरपरमात्मा तो केवली थे, मगर इन्होंसभी ज्यादह महाकवली मूर्तीपुजकोंके आचार्य वगेरह थे सो ऐसे स्वदु मनकल्पित खोटे खोटे अधिकार दाखल कर दिये है अब कहिये, निकादि चारों अग तथा ग्रंथ-प्रकरण वगेराह खोटे खोटे शास्त्रोंका कौन सत्य और प्रमाणिक शास्त्र मानेगा ?

पूजारसी—आपको कोटिशः धन्यवाद देते हैं कि आप महानुभावने हमारी शंकाका समाधान किया,

मगर फिर भी देखिये ! अहो गच्छवासियों ! तुम लोग हम सो

गोंको श्री जैन के प्राचीन असली सिद्धांतोंके अधिकारोंमेंसे, सिद्धा-यतन, कयवलीकम्मा, चेईय शद्ध, जंघाचारण, स्थापना निक्षेप, द्रौपदी सुरियाभ, विजेपोलिया, वगेरा इस नमुनेके अनेक अधिकार बतलावोगे तो हम लोग कदापी मंजुर नही करेगे. सबब की कितनेक अधिकारों के तुम लोग खोटे खोटे अर्थ करते हो, ईस वास्ते ना मंजूर करना पडता हैं;

पूर्वपक्षी—क्योंजी ? श्री जैनके प्राचीन असली सिद्धांतोके अधि-कारोमेंसे कितनेक अधिकार आप कोग ना मंजूर क्यों करते हो ? इसका क्या सबब है ?

उत्तर पक्षी–मूर्तीपुजक लोक श्री जैनके प्राचीन असली सिद्धांतों के कितनेक अधिकारोके साफ खोटे खोटे अर्थ करते है, इस वास्ते,

पूर्वपक्षी–महेरबानीके साथ बतलानेकी कृपा किजीये,

उत्तरपक्षी–हमारे साक्षी के ऊपर पुरापुरा ख्याल किजीये, देखिये ! मुर्तीपुजक लोग श्री जैनके असली प्राचीन सिद्धांतोंके मूलपाठों के के अर्थ खोटे करते है, उसका दाखला निचे मुजब हैं,

सम्यक्त्व शल्योद्धार नामक पुस्तकमें पृष्ठ ५२ पर पितांबरी आत्मारामनें श्री आचारांगजीके दुसरे श्रुत स्कंधके दुसरे अध्यायन के तिसरे उदेशेके पाठका अर्थ खोटा किया है, वह पाठ निचे देखो !

(गद्यपाठ)

से भिक्खुवा भिक्खूणीवा उसाससमाणवा निसास-माणेवा कासमणेवा छीयमाणेवा जंभायमाणेवा

उड्डवापत्ता वायाणिसग्गेवा करेमाणेवा पुघामेवा आसयत्ता पोसयवा पाणिणा परिपेहित्ता ततो सजायामेवा ओसासेज्जा जाव वायणिसग्गेवाकरेजा

भावार्थ–उच्छ्वास–निस्वास लेवे, खांसी लेवे, छिंक लेवे, उबासी लेवे, डकार वालवे हुवे, साधुनें हस्त करके, मुह ढांकना अब विचार करो की मुह बांधा हुआ होयेतो ढाकना क्या ?

देखिये ! आचारांगजी सुत्रके पाठको आत्मारामनें जो भावार्थ उपर धरा है, मायः इस भावार्थका तात्पर्य ऐसा नजर आता है की मुखपति हाथमें रखना; लेकिन आत्मारामका लिखना साफ सत्य है; ... आत्मारामके लखसे यह बात सिद्ध नही होती है; देखिये ! ... खासी लेती वक्त मुख फटता है और मुखपतिभी मायः मुख पर ना ... हो जाती है; मुखपती मुखसे उपर [दुर] होनेसे मुख खुल्ला हो जाता है मुख खुल्ला होनके वक्त मुनिनें मुखपतिके उपर हात रखकर मुखको दबा देना, अगर जो नही दबादेता नाभीसे जो श्वासवृत्त गर्म बाफ निकलती है; उस गर्म बाफसे विचार हजारों सुक्ष्म जीवोंकी हानि (घात) हो जाती है; सुक्ष्म जीवोंकी रक्षा के बास्ते मुखपति कायम है; तो भी हातसे मुख ढाकना ज्ञानीनें फरमाया है; मगर इस पाठसे यह सिद्ध नही होता है की मुखपति को हातमें रखना,

सम्यक्त्वशल्योद्धार के पृष्ट ५० में विचारी आत्मारामनें पञ्चमय परका धर्मतीर्थ सिद्ध किया है; यह ऐसा नीचे मुजब है ।

" श्री ज्ञाता सुत्र और अंतगडदशांग सुत्रमें कहा है की—

" जाय सिंतुंजे सिद्धा " इस पाठसे सिद्ध होता है की तीर्थ—

भूमिका शुद्ध धर्मका निमित्त है।"

देखिये! आत्मारामनें जो खोटा अर्थ उपरके पाठका किया है; परन्तु ऐसे खोटे अर्थ करनेसे पर्वतादिक धर्मत्तिर्थ सिद्ध नहीं हो सकते है; "जाव सित्तजे सिद्धा" ईस पाठका अर्थ—तात्पर्य इतना ही हैं की शत्रुंजय पर्वतके उपर केई मुनि संथारा करके सिद्ध हुए हैं; लेकिन ऐसा नही कहां हैं के शत्रुंजय पर्वत धर्म तिर्थ है अगर इस पाठसे शत्रुंजय पर्वत धर्मतीर्थ सिद्ध हो जावेगा तो ढाईद्वीपमे बिना सिद्ध हुएकी कोनसी जगह बाकी रह गइ है ? सो ऐसे जैनके असली प्राचिन सिद्धांतोका पाठ लिखना चाहिये, अगर ढाईद्वीपमें बिना सिध्ध हुएकी किंचित् मात्र—थोडीसी भी जगह खाली नहीं रही होवे तो मुर्तीपुजक लोगोंने ढाईद्वीपकी जमिन और जमिनके कंकर कंकर समेत पुजना चाहिये, मुर्तीपुजक लोग ढाईद्वीपकी सब जमीनके कंकर २ समेतकी पुजा नही करेंगे तो, मुर्तीपुजकोंके लेखोंसे मूर्तीपुजक लोग श्रद्धांसे भ्रष्ट समझे जावेंगे।

सम्यक्त्वशल्योद्धार पृष्ट ६६मे पिताम्बरी आत्मारामनें "सिध्धायतन" का अर्थ साफ खोटा किया है; वह लेख निचे मुताबीक—

क्यों की "सिध्धायतन" यह गुण निष्पन्न नाम हैं; सिध्ध कहिये शाश्वती अरिहंतकी प्रतिमा तिसका आयतन कहिये घर सो सिध्धायतन, यह इसका अर्थ यथार्थ है;"

आत्मारामनें जो 'सिध्धायतन' शब्दका अर्थ साफ खोटा किया है, उसका खुलासा—

अरिहंत महाराज तथा सिध्ध महाराजको घर नहीं हैं, सबब कि अरिहंत महाराजनें बाह्य और अभ्यंतर परिग्रहका सर्वथा प्रकारसे त्याग किया है; और सिध्ध महाराज आठ कर्मका क्षय करके तिन लोकसे अलग होकर तिन लोकके उपर और अलोकके निचे अरूपी पदसे

निराजमान है; सर्व आवागमनसे निवतमान हो गये हैं; अत एव अरिहंत—सिध्धकों घर नहीं हैं;

फिर सिध्ध शब्दका अर्थ अरिहंतकी शाश्वती प्रतिमा करते है; यह भी अर्थ साफ खोटा हैं; क्यों की सिध्ध शब्दका अर्थ कदापि प्रतिमा नहीं होता है; शाश्वती प्रतिमा जो ये लोग करते हैं, यह भी इनोंका कथन साफ खोटा है; क्यों की शाश्वती प्रतिमा होती तो उसका अधिकार सब जैन सिद्धांतोंमें आ जाता; लेकिन कोइभी सिद्धांतमें शाश्वती जिनप्रतिमाका अधिकार नहीं है; अगर यह लोग कहेंगे कि चार शाश्वती प्रतिमाका अधिकार शास्त्रमें चलता है; लेकिन शाश्वती प्रतिमा-का पाठ मूर्तीपुजकोनें मनकल्पित और नवीन, शास्त्रमें दाखल किया हैं, इसका खुलासा आगें करेंगे।

इत्यादि श्री जैनके प्राचीन असली सिद्धांतोंके पसे अनेक अधिकार का अर्थ—मूर्तीपुजक लोग वैयाकरणका घमंडके जोर जोरमें साफ खोटा करते है; भोले लोकोंको भर्म कुएमें डालनेका ईरादा करते हैं; ईस वास्ते श्री जैनके प्राचिन असली सिद्धांतोंके कितनेक अधिकार मुर्तीपुजकोंके मार्फत माननमें नहीं आते हैं।

पुर्वपक्षी—हम आपको कोटिशः धन्यवाद देते है की आपने हमारा भ्रम तुवंदुव दुर कर डाला; लेकिन पंडितोंके पास अर्थ करवाना चाहिये पंडितोंके पास अर्थ करवानेमें आपको किसी भी वातका हरज ता नहीं है?

उत्तरपक्षी!—महानुभाव! कई पन्डित लोग स्वपक्ष—स्वमत का कद मताग्रहसे अर्थका अनर्थ कर डालते हैं; ईस वास्ते पन्डितोंके पास अर्थ करवाने की कोई जरुरत नहीं है; देखव नाना आदि स्थानोंमें और कई जगह हजार आग यह भनात बन गये है, मगर मतकी खुब पाठ

दिखलाने वालोंको पंडितकी कुछ परवाह नही रहा करती है;

पूर्वपक्षी—आपका फरमान सत्य है;

अहो हमारे बालमित्र गच्छवासीयों ! तुम लोगोंने ऐसा विरपक्ष अधिकार बतलाना चाहिये की "जैसा सुत्र श्री उत्तराध्ययनजीमें तिहोत्तर बोलकी पृच्छा और सुत्र श्री भगवतीजीमें गौतम स्वामीजीनें श्री महावीर परमात्माको ३६००० छत्तीस हजार प्रश्न पुछे है; ईसके अलावा और भी साधु—श्रावकोने अनेक प्रश्न पुछे हैं; श्री विर परमात्मानें भी उन प्रश्नोंका पुरा खुलासा किया हैं; फेर श्री वीर परमात्माने लोकालोक—व—जीवाजीव अनेक बातोंका पुरा खुलासा किया है; इस वजहसे हमारे निम्नलिखित लेखानुसार निष्पक्षपातसे श्री जैनके एकादस अगादि ताडपत्रोंमें लिखित प्राचीन असली सिद्धांतोंके मुल-पाठसे, आम सभामें सिद्ध करनेमे आम लोगोंको जाहिर हो जावेगा की सच्चा कौन है।

अहो हमारे बलमित्र! गच्छवासीयो ! तुम लोगों का भंडार जो जेसलमेरमें है, उस भंडारमे श्री जैनके एकादस अंगादि ताडपत्रोंमे लिखित प्राचीन असली सिद्धान्त है; उन सिद्धांतोके जरिये चर्चा करनेको जरूरत हैं; मगर तुम लोग कहोगे की जेसलमेरके भंडार के सिद्धात बाहर नही निकल सकते है।

तो हम तुमसे पुछते है की अगर वे बाहर नहीं निकल सकते है, तो फेर वह सिद्धात क्या काम के है ? देखिये ! तुमारे लेख सिध्ध होकर तुमारा मजहब पुष्ट होता है; अगर ऐसे वक्त उपर यदि तुमारे भंडारके असली सिद्धात तुमारे काम न आवेगे तो फिर वो सिध्धातों का क्या पकवान बनाकर भोजन करोगे या चटनी बनाकर स्वाद लेवोगे ? ! ! क्या तुमारी पोलके ढोल खुल जाय इस वास्ते तुम लोग

तुमारे हाथसे रद होते हो; अगर इस जगह तुम कहोगे की साधुमार्गी —आपने भंडारमेंसे प्राचीन अक्षरकी सिध्धान्त वर्चा नहीं निकाल्ते है ? देखिये ! प्रथम तो तुम लोग साधु मार्गी को नवीन हे एसा कहते हो, द्वायम कदापि हम लोग प्राचीन अक्षरी सिध्धान्त निकालेंगे तो फिर तुम लोग कहोगे की इन सिध्धांतोंमेंसे पाठ निकल गये है; अतएव यह झगडा कदापि नष्ट होनेवाला नहीं है अहो गच्छवासीयों ! इस वास्ते तुमारे हो जेसलमेर के भंडारके श्री जैनके एकादस अगादि सुत्रपत्रोंमे लिखित प्राचीन अक्षरी सिध्धांतोंसे चर्चा करेंगे, और तुम लोगोंके पास से आम सभामें हमारे निम्नलिखित लेखानुसार सर्व लेख सिद्ध करवा लेंगे; मगर फजुल बकवाद कदापि मंजूर नहीं करेंगे, अहो गच्छवासीयों ! अगर तुम लोग जो हमारे ग्रंथका जबाब जेसलमेर भंडारके एकादस अगादि प्राचीन अक्षरी सिध्धांतोंके नामसे कल्पित छापद्वारा ग्रंथमें जाहिर करोगे तो हम लोग कदापि मंजूर नहीं करेंगे, प्रथम तो, जेसलमेरमें हमारे वर्गके मुनिराज पधार जावेतो, वहांभि रहीस तुमारे लोगोंके श्रावक लोग हमारे वर्गके मुनिराजोंको श्री जैनके एकादस अंगादि ताडपत्रोंमें लिखित प्राचीन अक्षरी सिध्धांतोंका भंडार खोलकर कदापि नहीं दिखलावेंगे, प्रथम की आगे यह बनाव का बक बन गया है; तो हे गच्छवासीयों ! तुम ही कहो की सत्यासत्यका निर्णय कैसा होवेगा !

प्रश्नवादी—क्योंजी आप तो बडे हठी दिखाई देते हो, हर बख्त फक्त ही कहे हम लोग अमुक बात नहीं मानेंगे तो क्या मुर्तीपुजक लोग शास्त्रमें मनके पाठ दाखल करते है; और शास्त्रोंका फेरफार करते है क्या ! जिससे की आप हरवक्त तकरार उठाते हो !

उत्तरवादी—हांजी ! तुमारे ग्रंथके मुताबीक कारवाई मुर्तीपुजक लोग करते है । इस वास्ते हरवक्त तकरार लेनी पडती है ।

पूर्वपक्षी–कृपा करके फरमाइयेगा !

उत्तरपक्षी–मुर्तीपुजकोंने श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचीन असली सिद्धांतोसे क्या क्या कार्रवाई करी है; उसके उपर अच्छी तरहसे ख्याल करना चाहिये; देखिये ! श्री जैनके एकादस अंगादि असली सिद्धांतोमें नवीन और मनकल्पित जो २ पाठ दाखल किये है, वह किंचित मात्र निचे दाखल करते है;

देखिये ! मुर्तीपुजक लोक हरवक्त श्री जैन के असली और प्राचीन सिद्धांतोंसे जो जो विरुद्ध (प्रतिकुल) अधिकार सिद्ध करनेके वास्ते किंवा माननेके वास्ते निर्युक्ती वगैरे की साक्षी देते हैं. इसके अलवा निर्युक्ती माननेके वास्ते १ भगवती सुत्र २ अनुयोगद्वारजी सुत्र ३ नंदीजी सुत्र वगैरे कि साक्षी देते है. और पाठ भी दाखल करते है निर्युक्ति वगैरे न माने उनको सुत्रार्थ के चोर भी कहते हैं.

निर्युक्ति माननेके वास्ते जो पाठ शास्त्रका दाखल किया है सो निचे मुजवः—

पाठ.

वायणा संखिज्जा अनुयोगद्धारा संखिज्जा
ज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जा
संखिज्जाओ निज्जुत्तिओ संखिज्जाओ
पडिवत्तिओ संखिज्जाओ संघयणीओ.

[सनम परस्तिये जैन पृष्ठ २४]

देखिये ! श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांत जव निर्युक्ति मानना स्विकार करते हैं तो फेर निर्युक्ति वगैरमे श्री जैनके असली

और प्राचिन सिद्धांतोक अनुकुल (बराबर) सब अधिकार होना चाहिये किंचत मात्र फेर फार होनेका कोई जरुरत नहीं है जैसाक मालुकार लेखक—राजनामा रोकड नकल वगैरोंमे जो जो लेख होय वो ही अधिकार खातेमे आवे मगर राजनामे वगैरोंके विरुद्ध लेख खातेमे कदापि नहीं आवेगा इसी माफेक जो जो ग्रंथोका किंवा प्रकरणाको भी जैनके असली और प्राचिन सिद्धांत स्विकार करेंगे वो वो ग्रंथोमे किंवा प्रकरणोंमे श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंके अनुकुल अधिकार होवेंगे, तब वो ग्रंथ किंवा प्रकरण पुर्ण सत्य मान जावेंगे, इसके बारेमें हमनें तारिख ३ जुलाई १०१४ को–मिथ्या भ्रम नास्ति– इस सिर नामे की जाहिर खबरमें लख दे चुके है, वो ले स निचे दाखल किये मुजब:—

४ देखिये ! हमके गत्नवा शांतिविजयजी नियुक्ती मानन के वास्ते काशीस करते है मगर नियुक्तिमे जो जो अधिकार साधजास्त्रपने वर्जे किये है वह सर्व अधिकार श्री जैनके एकदशांगादी ताड पत्रोमे लिखी त प्राचिन असली सिद्धांत अंगिकार करेंगे तब निर्युक्ती माननेमे आवे गी मगर नियुक्ति के सर्व अधिकार श्री जैनके ताड पत्र में लिखीत प्राचिन असली सिद्धांत स्विकार नहीं करेंगे तो नियुक्ति कदापी नहीं मंजुर करनेमें आवगी किंतु निर्युक्ति मंजुर करने के बारमे शांतिविज यजीने भगवती सुत्र, अनुयोगद्वारजी सुत्र, समवायंगजी सुत्र, नंदी जी सुत्र, यह चारो सुत्रोंके, जो उक्त किताबमें पाठ दाखल किये हैं वह सब पाठ मुर्तीपुजकोके आचारीयोंने अपने बनाये हुवे ग्रथोको पुष्ट सहायताके वास्ते श्री जैनके असली सिद्धांतो (सुत्र) में नकलि बनाकर दाखल किये है ऐसा निश्चय होवेगा फेर निर्युक्ति नियुक्ति का कर्ता और नियुक्ति कि साक्षी देनेवाले यह सब खोटे ठहरेगे अतःएव शांतिविजयजीने नियुक्ति के सब अधिकार श्री जैनके एकादशांगादी

ताड पत्रोंमे लिखीत प्राचिन असली सिद्धांतो (सुत्र) से रुजु (मुका-वला) आम सभामें करके दिखलाना चाहिये अगर शांतिविजयजी आम सभामें निर्युक्तिके सर्व अधिकार श्री जैनके एकादशांगादी ताड पत्रोमें लिखीत प्राचिन असली सिद्धातोसे मुकावला करके नहीं दिख-लावेंगे तो उपरोक्त चारो सिद्धांतोके जो पाठ निर्युक्ति माननेके बारेमे उक्त किताबमे दाखल किये गये है वह पाठ निश्चय मुर्तीपुजकोंके आचारयोंके बनाये हुये है ऐसा निश्चय होवेगा मगर तिर्थकरोंके फरमा-य हुये है ऐसा कदापि निश्चय होवेगा नहीं ईस उपर से निर्युक्ति वगेरे ग्रंथप्रकरण और इन्होके कर्ता यह सर्वत्र निश्चय खोटे ठहरेंगे.

अगर निर्युक्ति वगेरे ग्रंथ प्रकरणोके अधिकार पुर्ण सत्य होते तो शांतिविजयजी वगेरे यति संवेगी पितांबरी लोग आम सभाके मध्य में श्री जैनके असली ओर प्राचिन ताड पत्रोमें लिखित सिद्धातोसे सर्व अधिकार का मुकावला करके दिखलाते.

श्री अंगचुलिया सुत्रमें दाखल किया हुआ नविन पाठ— यतः—

" तिहि नखत्त मुहुत्त रविजोगाइय पसन्न दिवसे अप्पा वोसिरामि जिण भवणाइं पहाण खित्ते गुरू वंदित्ता भणइ इच्छकारि तुम्हे अम्हं पंच महव्वयाइं राइ भोयण वेरमण छट्ठाइं आरोवावणिया "

यह पाठ सम्यक्त्वशल्योद्धारके पृष्ट २६ में है, इस पाठका तात्पर्य दाखल कर्ता लिखता हे कि श्री अंगचुलिया सुत्रमें कहा है कि व्रत तथा दिक्षा जिन मंदिरमें देनी.

श्री निशीथ सुत्रके सोलहवे उदेशेमें दाखल किया हुआ पाठ— यतः—

" ताहे दिसिभाग ममणुता–घालवुढ्ढ गच्छस्स रक्खणट्ठा वणेठ्ठयाण काउसग्ग करांति–सा आकपि आ दिसिभाग पथ कहेज्जा इत्यादि यावत एथ्थ सुग्धोयव–नथ्थी पायच्छित ॥ "

यह पाठ निस्तुति परामसके पृष्ट ६१ में है,

इस पाठका तात्पर्य दाखल कर्त्ता के (अभिप्रायसे) लेखसे एसा मालूम पडता है कि रस्ता भूल जानेसे मुनिने कनवणाग्र ध्यान करना; श्री निशीथ सुत्रके भगारहावे उदेसेमें दाखल किया हुआ नकिन पाठ इस प्रकार है यत

" जे भिक्खूण वयमे वथ्थे लछे तिफट्ट घहू दित्र सिपण लोघेणवा वकेणवा पउम चुन्नेणवा वन्नेणवा उहछेह ज्जवा उपदेज्जवा उछोसवा उवदतवा साईज्ज "

यह पाठ मानवधम संहिता के पृष्ट ८०" में दाखल किया है

इस पाठका तारार्य ऐसा है कि जैन मुनिने पिले वस्त्र रखना चार शाश्वता प्रतिमाका सिध्धांतोंमे दाखल किया हुआ नकिन अधिकार मेसिये ' श्री जैनके इग्यारस अंगादि माफिन असली सिध्धा तोंमें जो चार शाश्वती प्रतिमाका अधिकार लम्बा है वो केवल नाम मात्रका है, विस्तार पुर्वक नहीं है, यह अधिकार तो मुर्तीपुजकोंने मनकल्पित नकिल–माफिन सिध्धांतोंमें दाखल कर दिया है, अगर तिर्थंकरोंका फरमाया हुआ चार शाश्वती प्रतिमाओंका अधिकार माफी– म असली सिध्धांतोंमें होता तो, मुर्तीपुजकोंके कहने मुताबिक शेष

सर्व प्रतिमाओंका अधिकार विस्तारपुर्वक चलता, मगर जिन प्रतिमा-
का अधिकार श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचिन असली सिध्धांतोमें
किसी स्थानपर नजर नहीं आता है, ईसके उपरसे निश्चित होता है
की चार शाश्वती प्रतिमाका अधिकार श्री तीर्थकर भगवनोंका फरमाया
हुवा नहीं है, मगर मुर्तीपुजकोंने अपना मत पुष्ट करने के लिये तथा
प्रतिमा सिध्ध करने के वास्ते, श्री जैनके एकादस अगादि प्राचीन
असली सिध्धांतोमें चार शाश्वती प्रतिमाका अधिकार नवीन मनकल्पि-
त दाखल किया हैं, लेकिन उपर कहा हुआ अधिकार श्री तिर्थंकर
भगवानोका फरमाया हुआ नहीं है यह अधिकार वास्तविक
रीतिसे देखते-यह सत्य हैं की मुर्तीपुजकोंका दाखल किया हुआ है;
देखिये ! मुर्तीपुजकोंने निशिथ वगेरह सिध्धांतोंमे मनकल्पित नवीन
पाठ दाखल करके भडारोंमें वह सिध्धांत दाखल कर दिये है; मगर
पाज पचास वर्षोंके वाद मन कल्पित नवीन अधिकारोको पश्चात-पिछेका
लोग प्रमाण करके असत्य मार्ग ग्रहण करेंगे; लेकिन प्राचीन है य
नही ऐसा न समजकर निर्णय न कर सकेंगे, यह वात सत्य किसी
वजेसे प्रतित नही होती है;

फिरभी देखीये ! श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचीन असली सि-
द्धातोंसे जो जो विपरीत पाठ है; वह सब के सब मुर्तीपुजकोंके दाख-
ल किये हुए है; सिद्धांतोंमें विपरीत पाठ दाखल करनेका [illegible]
है की–इस आर्य क्षेत्रमे वारह वर्षका महा दुष्काल पडा था, [illegible]
कितनेक उत्तम मुनि आर्यक्षेत्रोंको छोडकर अन्यक्षेत्रोंमें [illegible],
पीछे जो मुनि वाकी रह गये थे, वह मुनि संयमसे भ्रष्ट [illegible]; श्री
जैनके एकादस अंगादि प्राचीन असली सिद्धातोंसे विरुद्ध [illegible]का
नवीन मत निकाला. तथा प्राचिन मागधिभाष्यामें [illegible], चुर्णी
भाष्य निर्युक्ति थी वे निर्मुल करके अपने मन माने [illegible] नविन
टीका, चुर्णी, भाष्या, निर्युक्ती, ग्रंथ और प्रकरण [illegible]

और टीकादि ग्रंथ तथा प्रकरण वगेरहमे श्री जैनके एकादस अंगादि प्रचीन असली सिद्धांतोंसे विपरीत कितनेक अधिकार दाखल करके पूर्वाचार्योंके नाम जाहीर करके, भोले-भद्रिक जीवोंको भ्रमीष्ट कर डाले हैं; अब मुर्तीपुजकोंके बनाये हुए टीकादि ग्रंथ तथा प्रकरण वग रहमे श्री जैनके एकादस अंगादी प्राचीन असली सिद्धांतोंसे जो जो विरुद्ध अधिकार दाखल किये हैं—उन सब अधिकारों की सहायताके किंवा पुष्टिके लिये श्री जैनके एकादस अंगादी प्राचान असली सिद्धांतोंको फिरसे वापीस लिखवाकर मनकल्पित और नवीन पाठ दाखल कर दिये है; जैसा की महानिशीथ सूत्रका जीर्णउद्धार आठ साचार्योंने किया है, उसमें मन कल्पित पाठ दाखल करके फिर मिथ्या दुष्कृत्य दिया है; और इस वक्त भी मुर्तीपुजक लोग श्री जैन के एकादस अंगादी प्रचीन असली सिद्धांतोंमे मनकल्पित नवीन पाठ दाखल करते है; और शब्दोंका भी फेरफार करते हैं; इस उपरसे निः

पुरी खातरीसे सिद्ध (निश्चित) होता है की श्री जैनके एकादस ... प्राचिन असली सिध्धांतोंमें जो जो विपरीत पाठ है, वे सर्व मुर्तीपुजकोंके दाखल किये हुए है; लेकिन श्री तीर्थकरोंके फरमाये हुये नहीं है;

अब और देखिये! मुर्तीपुजक लोग कहते है की श्री जैनके एकाद स अंगादि प्राचिन असली सिध्धांतोका एक कना मात्रा वगेरहकी कमीयस्ती (हाना-वृद्धि) कर या यह करनेवाला अनंत संसारी होता है अतएव श्री जैनके एकादस अगादि प्राचिन असली सिध्धांतोंमें मनःकल्पित और नवीन पाठ दाखल करनेवालोंको कितने अनंत ससार कना यह कोई कह सक्ता है क्या? हाय! अफसोस!! एसे मिथ्यावादीपनाका जैनी कौन कहना??? ख्याल किजीये! उपर हम जो अनेक नंबर प्रमाण उन सबोंसे मुर्तीपुजकोंका छरा हुआ क

लियत जवाब हम लोग कदापी मंजूर नहीं करते हैं,

पूर्वपक्षी—हम आपकी कहांतक तारीफ करे! आपका फरमाना माकुल हैं; अहो गछवासीयों! तुमारे तरफसे अखबार द्वारा रजिष्टरसें हम को खबर मिलेगी की हम गच्छवासी लोग (नामका खुलासा करना गुम रखना नहीं) तुमारे निम्नलिखित लेखानुसार तुमारे ग्रंथका उत्तर देनेको हम लोग तैयार है, तब दुतर्फा सम्मति से चर्चा स्थान नियत किया जावेगा, बाद दोनों तरफ के २५ । २५ श्रावक लोग जेसलमेर में हाजर होकर श्री जैनके एकादस अंगदि ताडपत्रोंमे लिखीत प्राचिन असली सिध्धांतोंकी प्रतां साथ लेकर चर्चा स्थानपन हाजर होवेंगे तब हमारे निम्न लिखित लेकानुसार, आम सभामे अहो गच्छवासीयों! तुम लोगोंसे हमारे ग्रंथका उत्तर लेनेंमें आवेगा, अहो हिंसा धर्मी गच्छवासीयों! तुम लोग हमेशां पुकार करते हो की ढुंढीयोका किसी वक्त विजय नहीं हुवा हैं। तो अब हमने तुमारा विजय करनेके वास्ते हमारे इस ग्रंथमे नवीन नमुना रुप अति सरल और मागधीभाषामे पाठ दाखल करे हैं, तो हमारे उपर लिखे हुए लेखानुसार श्री जैनके एकादस अंगादि ताडपत्रोंमें लिखीत प्राचिन असली सिध्धांतोंके मूल पाठसे हमारे लेखोंका जाहिर पंडीताई व मरदुमी व हिम्मत के तोर जोरसे आम सभामें फोरन जवाब देना चाहिये, अहो हमारे बालमित्र गच्छवासीयो! देखिये! कैसा उमदा वक्त आया हैं, यह अमूल्य वक्त वृथा मुफतमें गमानेका नहीं है; मगर मरदुमी छोडकर गांडुकी तरह पुंठ दिखला कर लम्ब कर्ण आश्वके दूम (पुछ) की पदवी लेकर भागना मत. वाह! भाई, वाह! हमे उम्मेद है की बराबर फोरन हमारे अगले पिछले लेखोंका जवब दोगे.

॥ इत्यलम् ॥ श्री शान्तीः ॥

अथ प्रवेशीका

वांचिये ! " मिथ्यात्व निकंदन भास्कर " ये ग्रंथ हमने हमारे स्थानिक जैन मुर्त्तीपुजकोंके उपर कोई भी बजे की द्वेष बुध्धि करके इस ग्रन्थकी रच नही करी हैं मगर हमारे परम स्नेही जैन मुर्त्तीपुजको शेत्रु कम्फरन्स कत सुपता द्वारा दुसर्फी प्रयोंका मुकाबला (मिलाप करके इनसाफ (न्याय) की मागणी करी थी, वास्ते ये ग्रंथ निर्माण किया गया हैं सो अब दातु कान्फरन्स की तर्फ से इन्साफ करवाने ये कारवाई कोशीशके साथ हमारे मुर्त्तीपुजक भाई अवश्य ही करेंगे तथापि ये ग्रंथ पुर्ण दया धर्म की पवित्र कर्त्ता हैं इस लिये सुज्ञ श्री उत्तारा ध्येनजीक पांचवे अध्यानकी तिसकी गाथाके मुताबिक इन्मा वाक धर्मा धर्मका निश्चय अवश्य ही होना चाहिये और ये कारवाई मामने पक्ष वालोंनें अवश्य ही करना चाहिये

(गाथा)

तुलिया विसेस मादाय, दया धम्मस्स खंतिए
विप्प सिइम मेहावि, तहा भुएण अपणो ॥३०॥

भावार्थ—जैसा जव्हेरी, जव्हारातको पुर्ण रितिसे परिक्षा कर फेर उस जव्हारात को पेटि मे डालके ताल्या है मगर उक्त कारवाई करनेमें किंचित मात्र फर्क नही रखता हैं इसही बजेत मनुष्योंनें अ क पुलियों लगाके पुरी तोरसे धर्म की परिक्षा करके फेर धर्मको शा रूप पेटिमे डालके तोले फेर पुण्य पवित्र और उत्तमोत्तम प्रधान धानसा है ये निश्चय कर इस परसे भी ध्यान नहीं खोंचे तो बुद्धि त, मर्यादावंत, पक्षपात रहित, न्याय पक्षा, मेधावि पंडित (पंडित

गुण) वक्तृत्व १ वादित्व २ कवित्व ३ आयामत्व ४ नमत्व ५ इत्यादि ज्ञान प्रबोध १ दर्शन प्रबोध २ चरित्र प्रबोध ३ धर्म प्रबोध ४ प्रज्ञा प्रबोध ५ दान प्रबोध ६ शास्त्र प्रबोध ७ तत्व निश्चय प्रबोध ८ इत्यादि ज्ञान शक्ति १ दर्शन शक्ति २ चारित्र शक्ति ३ धर्म शक्ति ४ दान शक्ति ५ इत्यादिक शुभ गुणा लंकृत होवे, ऐसे पंडित और ज्ञानी पुरुषोंसे अनेक प्रकारके प्रश्न पुछके पुरी तोरसे धर्मका निश्चय करे, राजा परदेशीयत तिनों तत्वोंका निश्चय होनेसे (श्लोक) देवेषु देवस्तु निरंजनोमे गुरु गुरुस्तुद मिसमिंभ धर्मेसुधर्मस्तु दया परेमे, त्रणेव तत्वानि भवे भवेमे ॥१॥ जो गये (भुतकाल) कालमें, जो अशुद्ध, नीच और मलिन दुर्गुणों करके संयुक्त जो हिंस्या धर्म है उस धर्मसे पुर्ण प्रेम (स्नेह) था, परंतु अब उक्त धर्मसे स्नेह (मोह) को पुरी तोरसे दुर [अलग] करके अपणी आत्मा शुद्ध परम पवित्र निर्मल सर्वोत्तम शुभगुणालंकृत क्षमा संयुक्त जो दया धर्म है उसमें अपणे चिदानंद (जीव) कों प्रवेश करे अर्थात दया धर्म अंगीकार करे, उपरोक्त रितीसे धर्मकी निश्चय करनेवाले पुरुष ईस ग्रथका (तात्पर्य) समजकर तत्ववेत्ता बने (होवें) गे.

॥ ॐ असिआउसाय्नमः ॥

मिथ्यात्व निकंदन भास्कर

मंगलाचरण.

गाथा

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।
देवावि तं नमंसंति जस्स धम्मे सयामणो॥

अर्थः—ध ० धर्म किसको कहना। अधोगति (दुर्गति) जाते हुए जि
वको पकड रखे अर्थात जाने न देवे उस धर्म कहना, म जगतमें जितने
मांगलिक कार्य हैं, उन सब कार्योंसे धर्मकार्य है सो महामांगलिक है।
उ जगतमें जितने उत्कृष्ट कार्य हैं उन सब कार्योंसे धर्मकार्य ये महा
उत्कृष्ट कार्य है जगतमें जितनी उत्कृष्ट वस्तु है उन सब वस्तुओंसे धर्म
वस्तु उत्कृष्ट है। अ धर्मकी उत्पति कहां है छःकाय जीवोंको जहां न
तो मारे और न मरावे तथा छःकाय जीवोंपर सदा दयाभाव रक्खें। (अहिं
सा लक्षणो धर्मो, अधर्म प्राणीनांवध इति वचनात) स सतरह भेदसे
संयमका पालन ा बारह प्रकारसे तप करे, व ऐसा धर्मसहित धर्म सदा
रहे वाके त्रिलोकी सुर था सुरेन्द्र वि अपि सहस्र नरेन्द्र तथा राजेन्द्र

५. उसको न० नमस्कार करते है। ध० ऐसे परम पवित्र धर्मके विशाय सदाकाल (हमेश) म० शुद्ध मनसे अंगीकार करे। उ० उन पुरुषों-तीन लोगमें यशकिर्ती होती है।

दोहा

ॐ पंच परमेष्टी प्रणमी करी, करुं कसौटी सार;
कचनवत धर्मकी, निर्णय करो भवि सार ॥१॥
वर्धमान वृद्धिकरण, अशरण शरण है जास;
तुम दृष्टि शुभ वृष्टिका, प्रभु मुज पुरो आस ॥२॥
विघ्न हरण, मंगल करण, कल्पवृक्ष कामधेन;
चिंतामणी रत्नसम, प्रभु समरण है ऐन ॥३॥
अतिशय विमल चौतिस है, वाणी गुण पेतीस ;
सप्त हस्त कंचन वरण, इंद्रा इन्द्र जगीस ॥४॥
रसनारस अमृतरसन, भवि भ्रमर गुंजार;
अद्भुत सोरम लुब्धेयो, तोय न तृप्त थाय ॥५॥
गगन मंडल गगनमां, अमराडाम् गाजंत;
श्रीमुख वाणी प्रकाशता, पाखंडी भाजत; ॥६॥
तन वजीर गौतम (गुण) नीला, लब्धीतणा भंडार;
ग्रंथ रचु हो साहेबा, आपो बुध्दीसार ॥७॥
गुरी इन्द्र नरीन्द्र है, गुरु देवनके देव;
गुरु मनमोहनथाल हो, नितू प्रतिसारु सेव ॥८॥
खारा अमृत सारखा, ओछा निपट समंद,
मेला मोती चंद है रवि ज्योति आमंद ॥९॥
गुरु सेव्यां सपत्ति मिले, सिद्धि सगळा काज;

कष्ट मिकष्ट दुरे टले, पामे शिवपुर राज ॥१ ॥
गुरु ध्याता गुण है निरले, कहेता लहुँन पार;
किटीसे कुंजर कियो, भवरघमे आधार ॥२॥
रत्नाधिंतु अधिपति, पंडित प्राणाधार;
वर मांगु हुं शारदा, अम्मर आपो सार ॥३ ॥

सवैया इकतीसा

त्रिलोकी के नाथ आप, बिंदु काल बाव जाणि
द्वादश अंगवाणी, श्री मुख प्रकाशी है ॥
तारण हो भव्य जीव, विदारण अशुभ कर्म;
उगारण षट्काय (जीव,) निर्वद्य खासी है ॥
ताहिमे अनेक भेद, धार लिये मुख मति;
पूर्ण भाष्य ग्रंथ, सापेक्षक भाषी है ॥
सन्कृत देववाणी, सिद्धांत है मायकृत;
मान सोना कुंदन पे, मिथ्या (मासी) दृष्टि थासि है ॥१॥
मनकी उउरग प तरंगकी फलासहुँमें,
सारे २ ग्रंथ रच;
पंच विषय मागहुँ, धर्मके विरुद्ध और,
सिद्धांत की शास्त्र नहीं,
ऐसे अधिकार धरे, कष्ट करम जोगहुँ,
मोलका भरमाय हारा,
मिथ्या जंका जन्माय, गधाको ताम्रमया पुंछ
दुर्गति भगई, दया शुद्ध हिंसा प्यारी;

छक्कायके भये वैरी, कुंदन कहेता वाने,
भ्रष्ट किये लोगकुं ॥१॥

चद्रायण

पंडित पढियो खूब, वैयाकरण छद कोश है॥
वेद पूराण कूराण कलामे जोस हैं,
जाण्यो है सर्व दिन पिंगल ओर फारसी ॥
मुनि हां कुंदनेश धर्म मर्म नही जाण,
अंध हस्त आरसी ॥

दोहा

ग्रंथ अनेक प्रकार हैं, तासे भेद अनेक ॥
अर्थका अनरथ किया, लीजो खोंजि देख ॥१॥
अमृत रस बतलायके, मिश्रित कियो जहेर ॥
यांको पान किया थकां पडे चौराशी फेर ॥२॥
याकी राखे आसता निश्चे दुर्गति जाय ॥
वीतरागकी वाणीसे, उल्ट पंथ कहाय ॥३॥
नकली तो तारे नहीं, निश्चै डुबावण हार ॥
नकलीकी सेवा किया, भवजल कूप तैयार ॥४॥

सवैया इकतीसा,

अनत संसार वृद्धि, एक काना मात्र शून्य,
अधिक हीण जो करे, सिद्धातके मायरे,
मनके कल्पित पाठ, सिद्धांतमें घाल्या देखो ॥

श्रीमद्विजे अर्थीश्वर, विनीत सेवकपरे,
साम्य नाम पूर्वाचार्य, महाराजाश्व सेवत हैं।
पता अनंत समार, बुद्धि को पार नापर॥
फदन फहत मंगु, माफ ईषर्ष भारी,
एसा वो नर भवियारमें सिद्धापर॥१॥

दोहा

निरम वाणी सागर, पुवाचार्य कहेवाय।
मावम वाणी सागरे, पुर्वाचार्य से नाय॥१॥
उल्लु सो देखे नहीं, रवि किरणका रूप।
जिनवाणी परख नहीं क्या वाणीमें चूक॥२॥
ि झाव मतिमणी, जावे जवा सूक।
— वाणी परख नहीं, क्या वाणीमें चूक॥३॥
ग नम्र नहीं दरपणमांही मुख।
जिन वाणी परख नहीं, क्या वाणीमें चूक॥४॥
जिन वाणीको परखकर, हृदयमें लेवो धार।
सिद्धपद पावो सही, यामें फेर न सार॥५॥

वर्ग १ ला

श्री दया वर्ग.

दोहा

दया रणासिंगा व्रज रहा. चेतो चेतो नरनार—
मोक्ष गड कायम करो, सिघ्र होवो तैयार ॥१॥

॥ दया धर्मस्य जननी ॥

सज्जन जन ! दया धर्मकी माता है !!

देखिये ! यह भी एक बडे ताज्जुबकी बात हैं की हमने कितनेक पुस्तकोंमें अवलोकन किया हैं, यति, संवेगी और पीतांबरी डिगाम्बरी वगेरहके मुखसे भी सुना हैं कि श्री जैन साधु मार्गी (ढुंढिया लोग) केवल दया दया मात्रका झुंटा पुकार करते है, ढुंढ० प्र० १८ ईस वास्ते इस ग्रंथने अनेक याने जैनी—जैन मतके मानने वाले. वेदांती—वेदके मानने वाले. पुराणी—पुराणके मानने वाले, कुरानी—कुरान शरीफके मानने वाले. (मुसलमीनें लोग) किरानी—बाईबल के मानने वाले, (इंग्रेज लोग) जरथोस्ती—जरथोस्ती शास्त्रके मानने वाले. (पारशी लोग) इत्यादि मजहबोंसे दया सिध्द करने की जरुरत पडी हैं,

जिस वक्त तिर्थंकर महाराजको केवलज्ञान और केवल दर्शन (ब्रह्म ज्ञान तथा ब्रह्मदर्शन) की उत्पत्ति होती है–उस वक्त प्रथम सूत्र श्री आचारांगजी फरमाते है, उसमें यथा सयुक्त धर्म फरमाया है उस परम पवित्र और शाश्वता तथा सनातन फरमाया है।

—श्री आचारांगजी का पाठ—

सेबेमि-जेय, अतीता, जेय पडुपन्न, जेय आ गमिस्सा भगवंतो, ते सव्वेवि, एव माइक्खंति, एवभासंति, एव पण्णवंति, एव परुवेंति, सव्वेपाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, ण हंतव्वा ण [illegible]वियव्वाण परिघातव्वा,ण पारितावयेव्वाण उ [illegible]म, धम्मे सुध्य, णितिए, सासए, समेच्च [illegible] [illegible]र्हि पवेतिते, तजहा–उट्ठिएसुवा, अणुट्ठि एसुवा, उवरय दंडेसुवा, अणुवरेय दंडेसुवा, सोवा हिएसुवा, अणोवाहिएसुवा संजोगरएसुवा अस जोगरसुवा आ० अ० ४० उ० १–०

भावार्थ–मैं कहता हूं–क जो तिर्थंकर गये कालमें हो गये है, और वर्तमान कालमें जो [illegible] (हाजर) विचरते है, और आवते भविष्यकालमें होवेंगे, ए सर्व तीनकालके तीर्थंकर एमा फरमाते है–एमा भाखते है–ऐमी प्ररूपी करते है। तथा एमा वचन करते है। सब प्राण (बेंद्रिय–तेंद्रिय–चौरेंद्रिय), सब भूत (वनस्पति), सब जीव (पंचेंद्रिय) सब सत्व [पृथ्वी पाणी–तेउ–वायु–], इन सबको मारना नहीं, इनाके उपर हुकम करना

हीं, इनोको कब्जे करना नही, इनोंको जानसे मारना नही,—ऐसा धर्म वित्र नित्य [शाश्वता—सनातन), लोगोके दुःखोको जाणनेवाले त्रिलोकीनाथ भगवानने फरमाया हे। श्रावग करनेका तैयार होनेवालोंको, नहीं तैयार होनेवालोको, मुनिजनोको, गृहस्थोंको, रागियोको, मार्गके चलनेवालोको, जोगियोंको और भोगी वगेरह सर्वोको ऐसा दयामय सनातन और पवित्र धर्म बतलाया हैं इसके अलावा और भी प्रश्न व्याकरण सुत्र तथा दशवैकालिक सुत्र वगेरह जैनके अनेक असली और प्राचिन सिद्धांतोंमें दयामय धर्म श्री जैनके असली श्रीमान अनादिकालके तीर्थंकरोंनें फरमाया-बतलाया हैं

देखिये! श्री वितरागदेव (तीर्थंकर देवने) किसी भी मजहबका पक्ष ग्रहण न करते साफ साफ ऐसा फरमाया हैं कि—छकाय जिवोंको हणनेवाले छकाय जिवोंको मारनेका उपदेश देनेवाले तथा हिंसामें धर्म प्ररूपने (बताने) वाले इन सर्वोको अनार्यभाषा के बोलनेवाले फरमाये है। देखिये वीतराग देवका कैसा अदभुत ज्ञान है.

॥ आचारांगजीके इसही अध्यायनका पाठ ॥

“ आवंती केआवंती लोयसी समणाय माहणाय पुढो विवादं वदंति से दिठ्ठ—चणे सुयंचणे मयंचणे विएणायं चणे उड्ढ अहंतिरियं दिसासु सव्वतो सुपडिले-हियं चणे सव्वेपाणा सव्वेभूया सव्वेजीवा सव्वेसत्ता हंत व्वा अज्जावेतव्वा परिघातव्वा परितावेयव्वा उदेवयव्वा एत्थापजाणह णत्थित्थदोसो अणारिय वयणमेयं ”

भावार्थः—इस जगतमें जो कोई साधु तथा ब्राम्हण वगेरह धर्मके विरुद्ध पक्षवाद करते है। जैसा की हमने देखा, हमने सुना; हमने माना, हमने निश्चय कर समझा, हमने भलीभांती तपास करके, सर्व प्राण, सर्व भूत, सर्व जीव, सर्व सत्व—को मारना, दवा देना, पकडना, दुःखी करना (तकलीफ

देना) तथा मानसे मार डालना, ऐसा कार्य करनेमें किंचित मात्र भी दोष की प्राप्ति नहीं होती है—पाप नहीं लगता है। इत्यादिक मतवाद भी हैं सो पाप की वृद्धि करनेवाले हैं। इस वास्ते ज्ञानी पुरुषोंने फरमाया हैं कि धर्मके विरुद्ध मतवाद करनेवाले लोगोंके वचन हैं सो अनार्य वचन है।

देखिये! अगर यहांपर कोई कुतर्क कर की यह अधिकार जैनियोंके वास्ते ज्ञानीने नहीं फरमाया है। तो ऐसा कुतर्क करने वालेको हम कहते हैं की, जैनियोंको धर्मनिमित्त छकायकी हिंसा करना—कराना करतेको भला जानना ऐसा ज्ञानी पुरुषोंनें भी जैनके आचारांगादि प्राचीन मानने सिद्धांतोंमें कहां फरमाया है! सो खुलासे वार पाठ को रन दिखलाना चाहिये।

देखिये! दया धर्मके द्वेषियोंको सिद्धांतोंमें ज्ञानीनें क्या फरमाये हैं! उनोंके वचनोंको अनार्य कहे हैं।

सुयगडांगजी स्कंध अध्ययन ६ आर्द्रकुमारके अधिकारमें—

(गाथा)

दयावरं धम्मदुगंछमाणा, वाहं वहं धम्म पससमाणा एगापिजेमाययेती असीलणायोणि सजातीकऊ सुरेह

भवार्थ —दयारूपी प्रधान और पवित्र धर्मका दुगंछा करनेवाले—अर्थात दयारूप धर्मका मलीन समझकर निंदा करनेवाले, और हिंसा धर्मकी प्रशंसा करनेवाले तथा उनोंको भोजन वगैरह के देनेवालोंको उत्तम गतिकी प्राप्ति नहीं होवेगी।

महाशयों! महात्माओंका ध्यान है कि बिना विचार किये हेत

देनेवालोंका देखो कैसा प्रगट फजीता होता है। हिंसारुप चंडिकाको नचानेवाले तथा हिंसारुप चंडिकाकी पुजा प्रतिष्ठा तथा भक्ति करनेवालोंको उत्तम गति नही मिलती है। ईन लोगोंको भोजन वगेरहकी सहायता देनेवालोंको ज्ञानी पुरुषोने उत्तम उंच्च गतिकी नास्ति फरमाई है। देखिये! ईतनी बडी भारी बातोंपर भी इनोंका ख्याल नही पहुचता है तो दुसरी बात क्या जानते होवेंगे? और ऐसा होते भी पंडित कहलाते हैं। हाय, अफसोस मुर्खोंके शिरोमणियोंको कैसे समझावें?

देखिये! दिगंबर आम्नायके शास्त्रोंसे भी धर्म निमित्त षट्काय जीवोंकी हिंसा करना नही ऐसा साफ २ फरमाया है।

"पद्मपुराणके अध्याय १०५ एक सौ पांचमें लिखा है की सकल भूषण केवली रामचंद्रजीसें कहते है की, जहां दया-क्षमा-वैराग्य-तप-सचय-रही-तहां धर्म नहीं। जहां शम-दम-संवर नहीं—तहां चारित्र नहीं। जो पापी हिंसा करे-झुट बोले-चोरी करे-स्त्री सेवे-महा आरंभी हैं-महापरीग्रही है, तिनके धर्म नही। धर्मके निमित्त हिंसा करे है, वे अधर्मी अधमगतिके-दुर्गतिके पात्र है। जो मूढ दीक्षा लेकर आरंभ करे है, सो यति नही। यतिका धर्म आरंभ परिग्रहसे रहित है। परिग्रह धारकको मुक्ति नही। जो हिंसा विषे धर्मजाने, षट्काय जीवनकी हिंसा विषे धर्म नहीं। हिंसकको इसभव तथा परभवमें सुख नही, मुक्ति नहीं। जे सुखअर्थी धर्मकेअर्थी जीव घात करे सो विरथा हैं। इत्यादि अधिकार। यह ग्रंथ ईस वक्त हमारे पास हाजर नहीं होनेसे मूल पाठ संयुक्त अधिकार नहीं दाखल किया हैं।

देखिये! खुद अन्य मतके पुराणादिकमें कैसा दयाका अद्भुत

कार फरमाया है की जिसका अवलोकन कर्ताको पुर्ण आनंद आता है।

भारत अधिकार

श्लोक

अहिंसा लक्षणो धर्मो, अधर्मः प्राणिनां वधः ॥
तस्मात धर्मार्थीभिलोक, कर्तव्या प्राणिनां दया ॥१॥

भावार्थ—देखिये ! धर्मका लक्षण क्या है की, सर्व जीवोंका रक्षण करना। और अधर्मका लक्षण क्या है की सर्व जीवोंका प्राणघात करना। (जीवोंको मार डालना) इस वास्ते अहो धर्मार्थी (धर्मके करनेवाले) पुरुषों ! प्राणि-मृतके उपर दयाभाव रखो। सर्व जीवोंको मरणांत कष्टसे बचावो।

महाभारत पुराणका अधिकार.

श्लोक

अहिंसा परमो धर्म, अहिंसा परमं तप ॥
अहिंसा परम ज्ञान, अहिंसा परमं पद ॥१॥

भावार्थ—दया है सो उत्कृष्ट धर्म है, दया है सो उत्कृष्ट तप है, दया है सो उत्कृष्ट ज्ञान है और दया है सो उत्कृष्ट पद (मोक्ष) है ॥१॥

श्लोक

अहिंसा परमं ध्यानं, अहिंसा परमा दम ॥
अहिंसा परमा दान, अहिंसा परमं शुभम् ॥२॥

भावार्थः—दया है सो उत्कृष्ट दान (सर्व जीवोंको अभयदान) है, दया है सो उत्कृष्ट इद्रियोंका दमन करना है,(इद्रियके बिकारोको मारना) दया है सो उत्कृष्ट यज्ञ (होम) हैं, और दया है सो उत्कृष्ट शास्त्रका श्रवण करना है। (हिंसा संयुक्त शास्त्रके सुननेसे कल्याण नहीं होता है) ॥३॥

श्लोक

तमेव उत्तमं धर्म, अहिंसा लक्षणं शुभं ॥
येचरंति महात्मनो, विष्णु लोके जायते ॥४॥

भावार्थः—वह धर्म है सो उत्तम है (दया संयुक्त हैं सो धर्म उत्तम है।) दया है सो धर्मका शुभ लक्षण है जो महापुरुष दया अंगीकार करते हैं; वह महापुरुष कैलास (मोक्ष—विष्णुलोक) में जाते है ॥४॥

भारतका अधिकार

श्लोक

योयत्र जायते जंतु, सतत्र रमते चिरं ॥
अतः सर्वत्रजीवेसु, दया कुर्वेति साधवः ॥१॥

भावार्थः—जो जीव जिस ठिकाने उत्पन्न होते है, वो जीव उस ठिकाने सदाकाल सुखी रहते है। इस वास्ते हे साधु! तेने सर्व जीवोपर द्रया रखना चाहिये।

तेरह प्रयोगसेशल्ल जीवोंको ज्ञानकी प्राप्ती होकर, वह बाल जीव सर्व जीवोंपर दया रखेंगे। देखिये! जो साधु दयायुक्त धर्म पालन

करेगा, वह साधु सर्व प्राणिमात्रको दयाका उपदेश करेगा और उना का हृदय कमलभी करुणा रससे भरा हुआ होता है। ऐसे धर्मसे और सद्गुरुसे कल्याण कारक कार्यकी सिद्धि होती है। लेकिन जो साधु हिंसाधर्ममें सदाकाल रमण (तल्लीन) रहते हैं, उनोंसे कदापि सर्वथा प्रकार दयाका उपदेश दिया नहीं जाता है। सबब की उनोंके हृदय कमल सदा कठोर होते हैं। ऐसे धर्म गुरुओंसे कल्याण कारक कार्य कदापि सिद्ध नहीं होता है। इस कारण सब महाशयोंने दयायुक्त धर्म अंगिकार करना चाहिये।

इसलिये ! सर्व जीव जीवन धारण करनकी इच्छा करते हैं; लेकिन मृत्युको कोईभी जीव नहीं चाहते हैं।

॥ मार्कंड पुराणका अधिकार ॥

श्लोक

अमेध्य मध्ये कीटस्य, सुरेन्द्रस्य सुरालये ॥
समाना जीविताकांक्षा, समं मृत्युभयंद्वयो ॥१॥

भावार्थ—अशुचिमें उत्पन्न किडा तथा सुर वृन्दका मालक जो इन्द्र वो कहां रहेता है? स्वर्गलोक (सुरलोकमें रहता है) लेकिन दोनोंकी जीनेकि इच्छा बराबर है और मरनेका भय दोउको बराबर है मगर कम ज्यादा नहीं है इस वास्ते सर्व प्राणिमात्रको मरणान्तिक भयसे बचाना चाहिये (सब जीवोंपर दया रखना चाहिये) यह धर्म पवित्र और सनातन है इस धर्मसे ही इस आत्माका कल्याण होवेगा।

नारदका अधिकार

श्लोक

यदि प्राणि वधे धर्म स्वर्गश्च खलु जायते,
यदि प्राणि रक्षते धर्म कस्य सर्थानि जायते ॥१॥

भावार्थः—देखिये ! जीवोंको मारनेसे जो धर्मकी प्राप्ति होके प्राणि देव लोक [सुर लोक] को जावेंगे तो जीवोंकी रक्षा अर्थात दया धर्म पालन करनेवाले प्राणि कोनशि गतिमें (ठिकाणे) जावेंगे, याने उनको अधोगति (नरक) मिलेगा ? कदापि नही ! अ तएव जीवोको मारणे मराणे वाले तथा हिंसामें धर्म सरदने (अगीकार करने) वालोको अधोगति मिलेगी

वेदवाक्य

॥ अहिंसा परमो धर्म इतिवचनात ॥

भावार्थः—देखिये ! वेदमें भी कहाके दया है सो उत्कृष्ट धर्म है लेकिन हिंसामें धर्म वेदभी स्विकार नहीं करता हे तो अब दयाये धर्म सिद्ध हुवा

महा भारतके शांति पर्वके-१६२ वे अध्यायमें कहा है

श्लोक.

अद्रोह सर्व भूतेषु कर्मणा मनसागिरा ।
अनुग्रहश्च दानंच सतां धर्मः सनातनः ॥

अर्थः—मन वचन [वाणी] और काया; ये तिनोंके कर्म अर्थात प्रयोग व्यापारसे सुक्ष्म किंवा स्थूल— छोटे अगर बडे [एकेंद्रिसे लगके पंचेंद्रितक] सर्व प्राणि [जीव] मात्रोपे द्रोह [इनोका बुरा सत्यानास होवे ऐसी इच्छा नही करना] नहीं करना चाहिये, सर्व प्राणि मात्रपे कृपा [मित्र भाव]

रखना चाहिये, फिर सब प्राणी मात्रको अभयदान देना चाहिये, अर्थात मरणादिक महा भयंकर कष्टसे बचाना चाहिये इनाप उपगार करना चाहिये (देखो फिर भी शास्त्रकार क्या फरमाता है) "पर उपकारय पुन्याय पर पिडाय पापाय" इति वचनात्, मरणादिक महा भयंकर कष्टसे प्राणी मात्रा का बचाना यही पुण्यका काम है, और मरणादिक महा भयंकर कष्ट प्राणी (जीव) मात्रोको देना यही पापका काम है) यही परम प्रधान सत्य पु ष्योक्त सनातन [प्राचीन-अनादि] धर्म है,

श्रीमद् भगवद् गीताका सत्तरमा अध्यायमें १८ में श्लोकमें कहा है

श्लोक

देव द्विज गुरु प्राज्ञ, पूजनं शौच मार्जनम ।
ब्रह्मचर्यम हिंसाच, शारीरं तप उच्यते ॥

... —त्वकी अर्थात परमेश्वर ब्राह्मणकी यहाँपे ब्राह्मणके गुण लिख भाये हैं

श्लोक

क्षमा दयाँ तपो ध्यानं, सत्य शील धृति घृणा ।
विद्या विज्ञान मास्तिक, मेतेत ब्राह्मण लक्षणं ॥
अहिंसा सत्य मस्तेयं, ब्रह्मचर्या परिग्रह ः
काम क्रोध निवृतस्य, ब्राह्मणस्य युधिष्ठिर ॥

इत्यादि गुणों करके संयुक्त होवे उसे ब्राह्मण कहना चाहिये, और एसे गुणोंके धारक ब्राह्मणोंको दान देना अयोग्य नहीं समझा जावेगा मगर निचे बयान किये हुवे दुर्गुणों करके संयुक्त ब्राह्मणा

को दान देनेसे निश्चय दुर्गति प्राप्त होवे उसमें कुछ ताजब नहीं है यह निश्चत समजना.

श्लोक

सत्य नास्ति तपो नास्ति, नास्ति चेंद्रिय निग्रहः
सर्व भूत दया नास्ति, मेतेत् चंडाल लक्षणं ॥

(महा भारत-शाति पर्व)

गुरुकी और ज्ञानी पुरुषोंकी पवित्रता, सरलता, पुजा और प्रतिष्टा किस तौरसे करना चाहिये, ब्रह्मचर्य अर्थात इंद्रियोके विकारोंकि नास्ति करना-(स्त्री सेवन करना नही) और अहिंसा अर्थात सर्व जीवों को मरणातिक महा भयंकर कष्टोसे बचाना—सो ही दया—यही सर्व प्राणि मात्रके शरिरका परम पवित्र तप है, देखिये ! अब हिंसामे धर्म कहां रहा.

देखिये ! प्राणिके प्राण लुटनेसे (जीवोंको जानसे मारनेसे) कैसी जबर दस्त वेदना होती है के हम कुछ बयान नहीं कर सकते है, मगर अन्य मजहबके शास्त्रोंमें भी इसके बारेमें कैसा २ उत्तम अधिकार फरमाया हैं सो अवलोकन कर्ताको पुर्ण आनंद प्राप्त होता है.

—:महा भारताधिकारः—

श्लोक.

कंटके नापि विद्धस्य, महति वेदना भवेत ।
चक्र कुन्ता दिय ष्टाद्यै, मार्य प्राणस्य किं पुनः ॥

भावार्थः—सोचिये ! सूक्ष्म अगर स्थूल सब जीव मात्रोंके शरीरमें करि टोंच देवे अर्थात (दवा दव घुसा दव) तो कैसी गजब दुःख वेदना [दुःख] होता है, इसका पूर्ण बयान कोइभी नहीं कर सकता है देखिये ! कांटाके प्रयोगसे इतना गजब दुःख दुःख प्राप्त होता हैं, तो फर चक्र, भाला, छुरी, कटारी, तलवार, चाकू, सांगा, गुप्ति, सुई, सोंटा लकड़ी, वगेरह शस्त्रोंसे मारते हुये प्राणी (जीव) को कितना गजब दुःख (महा भयंकर) दुःख होता होवगा ? इसका बयान मनुष्य मात्र नहीं कर सकता है, सिफ सजा भुगतान वाले प्राणीका प्राण अर्थात जान जाता है अगर ज्ञानी पुरुष जान ते हैं इनोंके सिवाय दुसरा कोइभी नहीं जान सकता है

सोचिये ! इस दुनियामें सूक्ष्म अगर स्थूल सर्व प्राणी मात्रको मरणे मरिखा महा भयंकर दुःख एक भी नहीं हैं इत्यादि भयंकर दुःखोंको ~ (नास्ति) करणेके वास्ते ये चिदानंद कैसा गजब दस्त वचन के हर वजेसे प्राण (जीव) का बचाव होनाही चाहिये

श्लोक.

विपत मार्य माण्स्य कोटी, जीवितमे वस धन कोटी ।
परित्यज्य जीवो, जिवीतु मिच्छति ॥

भावार्थ—देखिये ! कोई मनुष्यका प्राण लेनेका वास्ते (जानसे मारनेका वास्ते) हत्यार लेके आय, और कहे के मै तेरेको जानसे मार डालूंगा अथवा वध करूंगा तब वो मनुष्य उस घातक मनुष्यको क्रोड़न रुपियोंका द्रव्य देकर अपनी जान बचाना चाहता है ! मगर इतन परबी अपनी जानका बचाव नहीं होता दखे तो क्रोड़न रुपैयोंका माल अर्थात इधर छोड़के अपनी जान का (जीवका) लेके देखता भाग जाय मगर अपनी जानकी मारि अर्थात मृत्यु कदापि नहीं होन देवे और जिंदा रहनेका इरादा करे इसही वजेसे सूक्ष्म और स्थूल सब प्राणी मात्र (जीव मात्र) अपनी जिंदगी सलामत

रखनेमें परमानंद मानते है किंतु मरणा कोईभी जीव नहीं इच्छिता है-

सोचिये ! सर्व प्राणी मात्रका वध करनेसे इस जीवको कोनसी गति मिलती हैं सो देखो !

श्लोक

यथात्मनः प्रियाः प्राणाः, तथा तस्यापि देहिनः
इति मत्वान कर्तव्यो, घोर प्राण वधो बुधैः ॥

(विष्णु पुराण)

भावार्थः—सोचिये ! अपना जीव अपनेको कितना वल्लभ अर्थात प्यारा है के हदसे ज्यादा इस वजेसे सूक्ष्म किंवा स्थूल सर्व प्राणी मात्रको अपना जीव वल्लभ अर्थात प्यारा हैं. जैसे अपन अपनी जिंदगी सलामत रहेनेमें परमानंद मानते है वैसे ही सूक्ष्म और स्थूल सर्व प्राणी मात्र अपनी जिंदगी सलामत रहेनेमे परमानद मानते है, ऐसा प्रभु (अल्ला) के फरमानपे ख्याल रखके, माहा भयकर और दुर्गति (नर्क) अर्थात दोजगका देनेवाला जो सूक्ष्म किंवा स्थूल सर्व प्राणी (जीव) मात्र वध अर्थात जीवका मारना है सो ऐसा महा भयकर खोटा कर्तव्य चतुर अक्कलवद और ज्ञानी पुरुषोंने कदापि नहीं करना चाहिये.

सोचिये ! मनुष्यनें कोनसा दान देना चाहिये.

श्लोक

यो दद्यात कांचन मेरुं, कृष्णा चैवा वसुंधरा ।
एकस्य जीवितं दद्यात, नैव तुल्य युधिष्टिर ॥

भावार्थ —देखिये ! एक दिनके समय माणक मोती सोना चादि वस्त्र

वगैरे अनेक प्रकारका दान युधिष्ठिर दे रहा था, इतनेमें श्री कृष्ण भगवानका वहांपे अचानक आना हो गया तब युधिष्ठिरसे श्री कृष्ण भगवान पूछने लगे अहो युधिष्ठिर क्या दे रहा है, तब युधिष्ठिरने हात जोडके श्री कृष्ण भगवानसे अर्ज गुजारिके अहो भगवान मैं सोना पृथ्वी वगैरेका दान देता हु तब श्री कृष्ण भगवान फरमाने लगेके, अहो युधिष्ठिर मेरु पर्वत इतना सोन का ढिगला किंवा पृथ्वी वगैर गो इत्यादि दान देता रहे तो भी तेरेको कुछ भी फलकी प्राप्ति नहीं होवगी तब पश्चात युधिष्ठिरने पुछाके अहो भगवान अब मेरेको कोनसा दान देना चाहिये, तब श्री कृष्ण भगवानने फरमायाके हे युधिष्ठिर अगर एकभी जीवको मरणांतिक महा भयंकर कष्टसे बचाना इस तुल्य दुसरा सर्वोत्तम दान इस जगतमें नहीं है और यही दान कल्याणका [illegible] है,

प्रिय ! इस जगतमें सर्वोत्तम दान देनेवाले किंतन है

श्लोक

हेम, धेनु, धरादीनां, दातार सुलभा, भुवी, दुर्लभा ।
पुरुषा लोके ये प्राणीष्वभयप्रद ॥

भावार्थ—प्रिय ! इस दुनियामें सोना चांदी माणक मोती हिरा पन्ना वस्त्र पात्र भस वगैरे गाय भैंस घोडा हस्ति बकरी और, पृथ्वी प्रमुखका दान देनेवाले बहोत है और उपरोक्त दान देना उन मानवोंका बहोत सुलभ है और इस कार्यमें बडे खुशीके साथ भाग्य लेते है मगर इस दुनियामें बहोत थोडे (किंचित मात्र) है प्राणी (जीव) का मरणांतिक महा भयंकर कष्टसे बचानेवाले और ये कार्य करना महा (बड़ा) कठिन है ऐसा सर्वोत्तम महा कठिन कार्य करनेवाले इस जगतमें बिलकुल अल्प है धन्य है उन पुरुषोंको ! ऐसा सर्वोत्तम कार्य सिकार करते है

देखिये ! कोन कियासे मोक्ष साधन होता है—

श्लोक

हेमादि कितीं दानम्, दद्यात मानार्थे नरा,
दद्यात जीवस्य अभय दानम्, ये क्रिया मोक्ष साधनम् ॥

भावार्थः—देखिये ! इस जगतमें जस कितींमान, माहात्म वढानेके वास्ते सोना चादी, पृथ्वी वगेरहका कितींदान देते है मगर ये क्रिया स्वर्ग मोक्ष साधने की नही है, तो मोक्ष साधनकी क्रिया कोनसी है ? सो वतलाना चाहिये सूक्ष्म किवा स्थूल जीवोंको मरणातिक महा भयंकर कष्टोंसे वचाना सो हि क्रिया स्वर्ग किंवा मोक्ष साधन करनेकी है.

देखिये ! दानका निष्फलपणा दिखाते हैं—

श्लोक

सप्त द्वीप सरत्नंतु, दया त्मेरुसकाचन ।
यस्मे जीव दया नास्ति, सर्व मेवं निरर्थकं ॥

भावार्थः—सोचिये ! सात द्विप रत्नोंसे भरे हुवे दान देवे तथा मेरु इतना सोनेका ढिगला दानमें देवे अपि शद्धसे चांदी, जव्हारात, वस्त्र, पात्र, वगैरे हमेशा दान देवे, मगर जिस प्राणीके जीवमें करुणा रस अर्थात सर्व प्राणी मात्रको मरणान्तिक माहा भयंकर कष्टसे बचावे ऐसी जिसके हृदय कमलमें जीव दया नहीं है उसका सर्व दान निरर्थक अर्थात खोटा है. देखिये जिसका दान खोटा है उसकी करणी भी खोटी समजना चाहिये.

देखिये ! स्वर्ग और मोक्ष की नास्ति कायसे होती है—

श्लोक

न दयात जीवस्य, अभयदानम् ये नरा।
ते नरानि नर्कयांति, स्वर्ग मोक्ष विवर्जयेत

भावार्थः—यानिये! इस जगतके अंदर सुक्ष्म किंवा स्थूल जो सर्व प्राणी मात्र है उन जीवोंका मरणान्तीक माहा भयंकर कष्टास नहीं बचाव अर्थात अभय दान नहीं देव वे आदमी नर्कादिक खोट ध्यान-अपाव गिनी [खोटी] गतिमें जाव, मगर उनोंका स्वर्ग (देवलोक) किंवा मोक्ष की नास्ति है अर्थात स्वर्ग किंवा मोक्ष कदापि नहीं मिलेगा और जो प्राणी जिस प्राणी का जिस वखत मारेगा उसके हजार दरजे ज्यादा तकलिफ देके उस प्राणी का परभव में वो प्राणी मारेगा, अर्थात कोइ प्राणीका दुःखकी मार देके मा ... तो उस वापिस पर भवमें वो प्राणी ... किंवा मारण वगैर मारस ... निश्चय समजना ये बात जैन शास्त्रोंमें तो है मगर किसीका ... समजना "माम मेव" मंथमें देख लेवे

भारत अधिकार

श्लोक

स्थूल जीव रक्षत धर्म, सुक्ष्म प्राणी वध्यते।
तस्य ह्रदय दया नास्ति, यावत् चंद्र दिवाकर ॥१॥

भावार्थ—स्थूल अर्थात बड़ जीव—जैसे बैल हाथी घोडा वगर और जीवोंका मरणान्तीक माहा भयंकर कष्टम बचावस धर्म मानते है मगर सुक्ष्म अर्थात छोट जीव—पृथ्वी—(मट्टी पत्थर वगर) अप [पाणी वगर] तऊ (अग्नी वगर) वायु [हवा वगैर] वनस्पती [फल-फूल-पत्र-छाल-मूल वगैर]

इत्यादि सूक्ष्म अर्थात छोटे निर्बल जीवोंको मारके धर्मकी उत्पति अर्थात धर्म करना चाहते है, किंतु जिवोंको मारनेसे धर्म प्राप्त होवेगा तो जीवोंके बचानेसे पाप अवश्य प्राप्त होना चाहिये. जीवोंकी हाणी करनेसे अर्थात मारनेमे धर्मकी प्राप्ती कदापि नही हो सकती हैं इस लिये धर्मके वास्ते सर्व जीवोंको अभयदान देना चाहिये अर्थात मरणान्तिक महा भयंकर कष्टोंमे अवश्य बचाना चाहिये

(दोहा)

दया धर्मका मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छांडीये, जब लग घटमें प्राण ॥१॥
दयामें तो धर्म है, हिंसामें हैं पाप।
याते हिंसा छांडीये, मिटे नर्क कि थाप ॥२॥
चेतन प्रत्यक्ष देखिये, धर्म दयाके बीच।
हिंसा धर्म सेवे तिका, जावे दुर्गत बीच ॥३॥

दयासे ही धर्मकी प्राप्ती होवेगी; किंतु जो इसम (मनुष्य] स्थुल अर्थात बडे जिवोंको मरणान्तीक कष्टोंसे बचानेमें धर्म समजते है और सूक्ष्म अर्थात छोटे जीवोंको मारनेमें पाप नहीं समजते हैं उन पुरुषोंके हृदय कमलमेंसे दयाकी नास्ती अर्थात दया दुर हो जाती हैं किंतु उन पुरुषोंका हृदय कमल करुणा रससे हीण हो जाता हैं अर्थात वज्रसे भी कठोर उन पुरुषोंका हृदय कमल हो जाता है और ऐसे पुरुष सदा सर्वदा दया माताके शत्रु अर्थात दुष्मन बने रहते है और हिंसारूप चंडिका देवीके भक्त बने रहेते है मगर दिवसके चंद्रसे कोई भी वजेका कार्य सिद्धि नहीं हो सकती है और दिवसके चंद्रको कोई भी नर आदर सत्कार [मान] नहीं देते हैं, इसही वजेसे हिंसा धर्म-जीवोंके वधसे किंवा मारनेमे धर्म समजते है अर्थात हिंसा शिवाय धर्मकी प्राप्ती

नहीं होती है, ऐसे नीच [खोटे] तात्पर्य युक्त धर्मसे आत्मा सिद्धि कोई भी वजेसे नहीं होती है एसा मलीन और निरर्थक अधोगति दाता धर्म अंगिकार करनेसे तथा ऐसे धर्मका आदर मान देनेसे निश्चय चौर्‍याशी लक्ष (सहस्र) जीवा जोनीमें परिभ्रमण करना पडता है, ईस लिये दया युक्त धर्मको अवश्य अंगिकार करना चाहिये

देखिये ! जरथोस्त शास्त्र भी दया माताका अंगिकार कर रहा है यह कैसी उत्तम और पवित्र बात है के अवलोकन कर्त्ताको पुर्ण आनंद प्राप्त होता है

जरथास्त नामामें क्या उत्तम अधिकार लिखा है इसकी हम क्या तारिफ करे—

--लेख--

मकु शवन नीयारद कसक दरेद ॥
म अग्रुस फंदाके बसद बरद ॥

भा । इसलाम । चाहे अगर मर्दे (सुक्ष्म किंवा स्थूल) कोईभी जीवोंका [जान प्राणीका] कोईभी वजेसे किसी भी वक्त मारना मत.

देखिये ! पारसि लोगोंके धर्म शास्त्रमें भी धर्म निमित्त कोई जीवोंका कोई वजेसे कोईभी वक्त मारना नहीं फरमाया है, तो अब कहीये ! साहबान ! इससे ज्यादा दया क्या चिज है, कोटीश धन्यवाद है के दया माताके नगारे चारोंही खुंटमें बज रहे है और सब मजहबाले दया माताको स्विकार कर रहे है मगर हिंसा धर्मीयोंको यह बात प्यारी नहीं लगती है, सबब उक्त लोगोंका हृदय कमल हिंसारूप पंकिकाके प्रभावसे महा मलीन हो रहा है, इस लिये

देखिये ! मुसलमानी शास्त्रभी दया स्विकार करता है ता यै कैसी उत्तम बात है अवलोकन कर्त्ताओंको पुर्ण आनंद आता है।

बेतकुराण शरीफमें

॥ अजाबुलव्हक ॥

भावार्थः—कोईभी जानको मारना नही अगर किसी जानको जुवह करोंगे तो खुदाकी दरगामें तुम्हारे इस गुन्हे की माफी नही मिलेगी याने जुवाह करना नही देखिये ! मुसलमान लोगभी सर्व जीवकी दया मंजूर करते है तो जैनी सर्व जीव की हिंसा मजुर कैसे करेगे, तो अब दयामें धर्म सिद्ध हुवा.

॥ कातेलुससजर ॥

भावार्थः—हरा झाड काटना नहीं याने वनसपतीका विनास करना नहीं मुसलमान लोग वनसपती की हिंसा नहीं करना स्विकार करते है तो जैनी लोग किस तोरसे वनसपती की हिंसा अंगिकार करेंगे कदापि नहीं

माहाशयजी ! देखिये ! दया माताका कैसा अलोकीक प्रभाव है के कोईभी पुर्ण वर्णन नहीं कर सकता है, और दया माताको सर्व मतानुयाई लोग अंगिकार करते है, अतःएव खिस्ती लोगोंके शास्त्रसे दया सिद्ध करके दिखलाते है (वायवल) "जुनाकरार" निर्गम अ० २० ओवी १३ में "खून न करना" (Do Not Kill)

॥ डु नॉट किल ॥

भावार्थः—हिंसा मत करो परंतु इसका अर्थ खिस्ती लोग इतना ही करते है की 'खून मत करो' सोचिये ! खून मत करो इसका असली मायना है के कोइभी जीवोंका जान (प्राण) मत लेवो अर्थात कोइभी जीवोंको जानसे मत मारो, कहो इससे ज्यादा दया क्या सिद्ध होती है, येता पुर्ण दया हो चुकि, देखिये ! खिस्ती लोगभी पुर्ण रीतिसे दयाको मजुर करते है तो फिर जैनी लोग दयाका त्याग करके हिंसा मजुर करेंगे

कदापि नहीं, तब जैनी दया अंगिकार करे उसमें क्या ताज्जुब है, यथा ! श्री जैन श्वेताम्बर स्थानक वासी (ढुंढियों का) दया दयाका सत्य पुकार अनेक शास्त्रोंसे सिद्ध हुवा; श्री दया माताकी जय विजय सदा हो जो लिली लोग दयाको धिक्कार करते है तो जैनी क्या पंथपाखंडियतना करे जिससे क्या ताज्जुब है इससे दयामें धर्म सिद्ध हुवा

देखिये ! जैन मुनियोंका दया संयुक्त उपदेश श्री जैन धर्मका सुत्र श्री उत्तराध्ययनका नवमां अध्ययनकी ११ मी गाथामें गर्दभाल नामा मुनिने संजति राजाको फरमाया है

॥ गाथा ॥

अभयं पत्थि वाहुंम्म, अभय दयामया हिय ।
अणिच्चे जीवलोगंमि किं हिंसा रायसज्जसी ॥११॥

अ—हे राजन हमारे तर्फसे तुमको अभय दान दिया है; लेकिन ज ।। । तुमको अभय दान दिया है वैसाही राजन तुं सर्व प्राणियोंको अभय दान दे इस दुनियामें आके हिंसारूप खराब कर्मसे ये तेरी अमूल्य आत्माको अधोगतिमें डालनेके वास्ते क्यों तैयार होता है इसि वचनसे श्री जैनके सर्व मुनि कानी प्राणरक्षा रक्षाका उपदेश देना चाहिये, जैनके असली सिद्धान्तोंका, यथा, जिन वचनोंका सार यही है

देखिये ! श्री जैनका प्राचीन असली सिद्धान्तोंमें ज्ञानी पुरुषोंने ज्ञान का सार किस तरे बतलाया है सुत्र श्री सुयगडांगका प्रथम अध्यानका चोथा उद्देसेकी दसभी गाथा,

॥ गाथा ॥

एयंखु नाणि णोसारं, जन हिंस किंचणं।

अहिंसा समयंचेव, एतात्र तंवियाणिया ॥१०

भावार्थः—ज्ञानी पुरुषोके ज्ञानका सार ये है के कोई जीव मात्रको मारना नही मरवाना नही मारतेको भला जाणना नही यही ज्ञानका सार हैं प्रधान विवेकवंत ज्ञानि पुरुष होवेगा वोही जीव दयाको जानेगा माहाशयजी! देखो! जीव दयाको ज्ञानसार ज्ञानी पुरुषोने फरमाया हे लेकिन जीव हिंसा को ज्ञानका सार ज्ञानी पुरुषोने नही फरमाया है ज्ञानी पुरुषोने ज्ञानका सार जीव दया फरमाया हैं तो फेर धर्मका सार जीव हिंसा किस वजेसे होवेगा यह हमारे प्यारे बंधुओने जैनके असली सिद्धातोसे सभामे सिद्ध करके बत-लाना चाहिये अब हिंसा धर्मी जैन मुर्तीपुजको को ज्ञानी कहना के अज्ञानी कहना ये विचार हमारे प्यारे पाठक वर्ग इस उपरसे कर लेवेंगे

देखिये! ममत्व भावमें सुभासुभ कार्य कोईभी नजर नहीं आता है, और हटग्राही ममत्वी पुरुष सुभासुभ कार्यको परिक्षाभी नही करता हैं, सुभासुभ कार्यकी परिक्षा नही करने के वजे इस भव पर भवमें दुख देखता हैं और जन्म भी बिगाडता है, मगर इससे असल और कम-सल कि परिक्षा कदापि नहीं हो सक्ति है.

श्लोक

पुत्रोमें भ्रातोमें हिंसादि धर्मोमें, स्वजनोमें ग्रहकलत्र वर्गोमें।
इति कृतमे मेशद्वं, पशु मिव मृत्युर्जनं हरति ॥१॥

भवार्थः—अहो प्राणी तु रातको और दिनको हमेशा ऐसा विचार करता है के ये मेरा पुत्र, ये मेरा भाई, ये मेरे सज्ज, ये मेरा घर, ये मेरी स्त्री, वगैर मेरे पुर्ण प्रेमी है, ऐसा तु हमेसा स्नेहमे निमग्न हो रहा हैं और मेरा मेरा कर रहा हे जैसा कमाई वें वें करते बकरेको मार डालता है, इसही

कनेसे तुमको काल में मैं फरसेका उठाके एकदम छ जावेगा और ये ऋद्धि और सायबी सब महाफि तिहां पडी रहे जावगी, फरमी दसो। तु य मरा हिंसा धर्म है और मेरे बडे बुडे करते हुये गझे आय है तो मन मुझे य छोडना योग्य नहीं है चाहे अच्छा हो या खाटा हो, हमार बडे बुडे करत आये है, वैसा हमे करना योग्य है, अहो, हमारे बाल भ्रातो ये तुमरा कहना साफ खोटा है, दखो। अगर अपने बडे बुढ अधे, लुले, पांगळे, निर्धन दरिद्री इत्यादि होंगे पुनक धनी हुव और अपनेको उपरोक्त दुर्गुणा करके रहित उत्तम ऋद्धि मिली तो क्या उसको फेंकके उपरोक्त दुगुर्णोका अंगिकार करेंगे, कदापि नहीं तो फेर उपराक्त हटको छोडके धर्म की परि क्षा अवश्य करना चाहिये, परीक्षा किये बिगाय धर्मको कोईमी धमेस अंगिकार नहीं करना चाहिये, अगर धर्मकी पराक्षा नहीं करते हुवे स्नेहक जरिये अशुभ भयात मलीन हिंसक धर्ममें फस रहे तो उस भमर सरिसे इस ...ग और पर भवमें दुःख देखना पडगा

॥ वसन्ततिलका वृतम ॥

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यती सुप्रभातं, भास्वानु देष्यति
　हसिष्यति पंकज श्रीः ॥
इत्यं विचिन्तयती कोशगते दिरेफे, हा हन्त हन्त नलिनीं
　गज उज्जहार ॥१॥

॥ स्वागता वृतम ॥

बन्धनानि खलु सन्ती बहुनि, प्रेम रज्जु कृत बन्धन मन्यत्।
दारु भेद निपुणा अपिषट्ङघि, निष्क्रियो भवति
　पङ्कज कोषे ॥२॥

भावार्थः–देखिये ! कमलका शौरम रुपरस पिनेके वास्ते कमलके उपर बैठा हुवा अली (भवरा) अपने दिलमें विचार करता है के अब साझ (सध्याकाल) पडनेको आई है, सो ये कमल अब वापिस बंद हो जावेगा इस लिये मुझे ह्यासे उड जाना ठिक है, ऐसा विचार करते करते निमास्याम (दिन अस्त) हो गई, और कमलनें अपना मुख बद कर डाला कमलका मुख बंद होनेमे भमरा कमलमें बद हो गया कमलके अदर बैठा हुवा भमरा विचार करने लगाके रात्री निकलेके बाद और सुर्य उदयकी वखत, पिछा कमल प्रफुल्लीत होवेगा उस वखतमें उडके बाहेर निकल जाउगा इतनेमें उस सरोवरके उपर एक हस्ति पाणी पिनेके वास्ते आया, और उस हथीने उस कमलको मुखमें लेके उस भमरे संयुक्त खाने लगा ॥१॥ उस वखत उक्त भमरा मरता मरता अपने दिलमें बिचार करने लगाके इस दुनियां (जगत)में अनेक प्रकारके प्रतिबंध हैं, मगर प्रेम अर्थात स्नेह सरीखा प्रतिबंध इस जगतमें दुसरा कोईभी नहीं है सोचो ! चाहे जैसा लकडा जबर दस्त मजबूत हो, परतु भमर उस लकडेके आर पार छीद्र गिरानेको समर्थ होता है मगर मे तो स्नेहके बसमें होके कमलके ढोडेको कतरके बाहेर निकलनेके वास्ते असमर्थ हुवा, इस लिये, मुझे हाथी मारके खाता है, देखिये ! जो पुरुष अपना हट छोडके पुर्ण परिक्षाके साथ निष्कलंकित उत्तमोत्तम धर्मको अगिकार नही करता है वो इसम हिंसा, चोरी, झुट, स्त्री सेवन, और परिग्रह तथा कु विशनादिकके जरिये महा कठोर कर्म बाधके इस भव और पर भवमें दु खी होता हैं, सबब ऐसा कोईभी जीवकी रजा नही है के तुम मेरा प्राण घात करो सो तुमके धर्म होवेगा और इस हिंसा धर्मके जरीये तुमारे आत्माका कल्याण होवेगा, जब जीवोका ऐसी रजा नही है तब जबर दस्तिसे जीवोंके प्राण घात करते है उसका अपनेको कितना जबर दस्त पाप लगता है और इस पापके प्रभावसे कैसे माहा भयकर कठोर असुभ कर्म बधते है के केवली माहाराज शिवाय दुसरा कोइ बयान नही कर सकता है

और अशुभ कर्मोके बसमें ये जीव होके कैसा कैसा दुःख भुगता है सो अवलोकन करो

(गाथा)

निवासइ सायरमज्झे, निवसइ गिरि गुहर कंदरामज्झे ॥
कम्म सहाय जीवाणं, कहम विनइणे विम्झंतु ॥१॥
मार्यगा घर हरिचंद राईणो, पंड पाण वणवासो ॥
मजस्स भिक्ख भमणं, किर इजं कम्मुणसच्चं ॥२॥
राई करे इरंको, रंको पुण करे ईरायसारित्यो ॥
जंन घर जाईयए, कीर इस कम्म जीवाणं ॥३॥

भावार्थ —हेभिव्य । ये जीव कर्मोके भयसे समुद्रमें निवास करे किंवा माहा भयंकर पहाड़ बडी गुफामें जाके वास करे तो पण जीवोंकी —ो संगत जीवोंके साथ ना कम लगे हैं वो कर्म कोईभी भ — — — र्मी हो सके हैं अर्थात निकाचित (मजबूत) कर्म भुक्ते बिना नहा छु न — दूर हात) है ॥१॥ फेरभी हेसिव्य ! कर्म के बसमें हो क. हरिचंद राजा चंडालके घरका रहा तथा पांच पांडवोंने वनवास सेवन किया तथा मुंजन राजा घर घर भिक्षा मांगी, इस लिय कर्म करे सो दुसरा कोईभी नहीं कर सक्ता हैं सोचो । कर्म चक्रवर्ती वासुदेव, राजा माहाराजा और बड़े बड़े ममधरानाका नहीं छोड़ते हैं ॥२॥ फेरभी हेभिव्य । कर्मोंका कैसा भयंकर स्वरूप है सो दिखलाते हैं राजा घरमें राजाको रंक बनाके दि खला देते हैं, और रंक घरमें रंकको राजा बराबर दिखला देते हैं और कोईभी किसीप्रदिन कि बातों सपनांतरमें भी नहीं जाणनेमें आती हैं, वो बातों कर्मोंके प्रताप समायोगसे स्न्युख स्वरूप हाजर हो जाती हैं और ऐसे कर्मोंसे जीवोंको क्या क्या दुःख सुख भी जिनसी भोगते रहते हैं

के सो जानेके प्रभु जाने परंतु अंतरंग सुखाऽसुख कि वार्ता दुसरा नही जान सकता है, इस लिये कर्मकी कोईभी तरेहकी शर्म नहीं. इस वास्ते परमानंदि इंद्रि पोषण हिंसा युक्त धर्मको अंगिकार करके माहा भयंकर कर्मो की उपार्जन करके इस भव परभवमें कर्मोंकि वश होके अति दुःख उपार्जन करता है मगर पकडा हुवा हट लवकर्ण अश्वकी पुंछकी तोरसे छोडता नहीं. ग्याता पुरुष ऐसा हट कदापि नहीं पकडते है, मगर हट छोडना या नहीं छोडना इसके उपर ग्यानी पुरुशोंने क्या उमदा वार्ता फरमाई हैं सो निचे अवलोकन करो तो सही ॥२॥

श्लोक

चिन्ता रत्न मनर्घ्यं, चेत्प्राप्यते काच संचयैः ॥
रेणुनां चहिरण्यं, चेत्सुधाब्धी नीर बिन्दुना ॥१॥
गृहेणयदि साम्राज्यं, देहेन सुकृतंयदि ॥
कस्त दातब्, ग्दारीयात्तत्वातत्व विचारकः ॥२॥

॥ युग्मम् ॥

भावार्थः—देखिये! तत्व और अतत्वका विचार करनेवाले जो बुद्धिमान सकल शास्त्रोंके तत्ववेत्ता (जाणकार) जो ज्ञाता पुरुष है वो कांचका टुकडा देके मनोवांच्छित कार्यकी सिद्धिका कर्ता सो ऐसा अमोल्य चिंता मणी रत्नको कोण नही ग्रहण करता हैं फेर धुल (मट्टी) देके सोना कोण नही ग्रहण करता है. फेर पाणीका बिंदु देके अमृतका समुद्र कोण नही ग्रहण करता है ॥१॥ फेर रवताका रहनेका झोंपडा (खोपडा) देके छखंडका चक्रवर्ती राज्य कोण नहीं ग्रहण करता है अर्थात तत्वातत्वका विचार करने वाले पुरुष तो तुर्तही ग्रहण करेंगे ॥२॥ इसही तर्जेसे इस असार संसारके विषेयें मल मुत्रादिसे भरी हुइ जो ये अशुद्ध देही है और इस शरीरके

अंदर जो परम पवित्र चिदानन्द (जीव) नें भाक वास किया है मगर ये जीव कर्मोंके वसमें होके पन अनमकप संसार समुद्रमें गुफा की भाक इघर के उघर परि भ्रमण करता है और रागद्वेष रुप दावा नलमें जल रहा है और जन्म मरण रुप माहा भयंकर दुःखामें पच रहा है, एस अनेक माहा भयंकर कष्टोंसे बचानेके वास्ते श्री वीतराग यथाविदव तिर्थंकर माहाराजाने फरमाया हुवा निःकलंकित परम पवित्र सर्वोत्तम दया मय फरमाया हुवा श्री जैन धर्मको कोण नहीं ग्रहण करेगा अपनी आत्मा सिद्धिके वास्ते दया धर्म (जैन) सर्व सज्जन अंगिकार करेगे

इसही बजेसे हमनें दया धर्मकी वृद्धि करनेक वास्ते "मिथ्यात्व निकंदन भास्कर" ईस नामका ये ग्रंथ निर्माण किया है ईसे कोण *नहीं अगिकार करेगा, दया धर्मी अवश्य अंगिकार करेगा, मगर ये* उपदेश किसके वास्ते हैं सो लिखे पढो—

श्लोक

उपदेशो ही मुर्खाणां, प्रकोपाय न शान्तये ॥
पयः पानं भुजंगानां, केवलं विष वर्द्धनम् ॥१॥

भावार्थ—इसलिये ! मूल अर्थात अज्ञानी मिथ्यात्वी जीवोंका हर वखत हितोपदेश दवस वा उपदेश हर तरहेस दुःखमानका दनवाला है, सब्जन भक्ति त पुरुषोंका उपदेश दवस वा दुर्बुद्धि भाक उलटी भाभासुर होके, सत्य उपदेश दनवाले ज्ञानी पुरुषोंके दुष्मन बन जाते है जैसाके सर्पको दुध पि लानस दुध पिपमा वैसा वैसा जहर बढता जायगा

इसही बजेस मुर्ख—अज्ञानी—मिथ्यात्वी—हिंसा धर्मी—असुध धर्मी हट ग्राही कदाग्राही—मूढ—कुमतमनी—स्वार्थांध—दुस्तर्क सबन करनवाले कुबिधोंके मानलेनेमें काए, मट्टिका, पाषाणादिक मूर्तीको सत्य इश्वर

करके माननेवाले—बालचेष्टावत—कुदेव—कुगुरुके बचानोके रसिक—ऐसे अधम पुरुषोंकी बंकाई कोई वजेसे दुर नहीं होती हैं शंखवत्॥

श्लोक.

हरि करे वसनं मृदुता स्वरे, जनयिता तव शंखमहो दधेः।
विशदता वचस्य गोचरे, कुटिलता तव तत् हृदये कथम्॥१॥

भावार्थः—हे शंख तेरा निवास हरिके करमें है और तेरा मुख मिठा और मधुर स्वर है, और तेरी उत्पती महा समुद्रमें है और बाहेरसे तेरा शरीर अति उज्वल है, तो तेरा हृदय कमल साथ बाकाइके कुटलतासे भरा हुवा क्यों है धिकार! धिकार!! धिकार!!!

देखिये! इसके उपर एक अन्य मजबके कवीनें क्या उमदा अधिकार कहा है सो अवलोकन कर्त्ताको पुर्ण आनंद होता है सों निचे पढो तो सही—

(गजल)

अस्लकुं छोडकर. नकलपुजा करे, ज्ञान दयालसे स्वभ जोडे,
मछ अवतारकी सकल महिमां करे नीरके मीनको मारखावे,
नकल वाहारायकी देखकर देहरे, सूर देसांकडे सांगवावे,
सिंघके शब्द सून, ढ्राड मारन चले, अष्ट नरसिंगको व्रत साधे,
गाराको गणपती बनाय पुजा करे, अस्ल गजराजकी पिठ लादे
कृष्ण राधिकाकी नकल नचायके, आप धनवंत होय दान देवे,
बीबीको पुजीये, देवकु धूजीये, कालकुं व्यालकुं मार लावे,
जानता है परमानता है नहीं, स्वादके सांत संसार साई,
केह राम चर्न कुछ कहत आवे नही, देख ये जुल्म हैरान होई॥१॥

इस दुषम कालमें नकली और असार पदार्थकी मान्यता बहोत हैं किंतु नकली और असार पदार्थको प्रेम पुर्वक अंगिकारभी बहोत करते है, किस मजेसे (द्रष्टांत) देखो ! दूध ये उत्तम और सार पदार्थ हैं सो घर घर और गली गली बिकता भटकता हैं, मगर दारु ये निच और असार पदार्थ है सो एक स्थानपे बिकता है, ईस वास्ते समजलेना लेकिन नकली और असार पदार्थमें माहान आडंबर रुप भूत भरा हुवा हैं इस आडंबरके जरीये अज्ञान पुरुष भ्रमिष्ट होके प्रपंचके जालमें फसते हैं

श्लोक

असार हि पदार्थेहो प्रायेण डंबरो महान्‌;
नहिया हग ध्वनि स्वर्णे यादकांस्ये प्रजायते ॥१॥

अर्थः—देखिये ! नकली और असार पदार्थमें माहान आडंबर भरा हुवा ।मिका निचे पटकनेस कैसा जबर दस्त आवाज होता है मगर सु वण (सोना) को निचे पटकनेस बिलकुल कारिकसा आवाज होता हैं परंतु कांसी तुल्य आवाज नहीं होता है सबब सुवर्ण है सो माहंत गुण अर्थात भारी गुणोसे भरा हुवा है इस वास्ते मर्यादा भारित आवाज सुवर्ण कदापि नहीं कर सकता है ॥१॥

समीक्षा—महाशयजी ! सोचिये ! इसही वजेसे अमर्ण्ये न्याय सर्वोत्तम गुणालंकृत देव, गुरु, और धर्म इसकी पुजा, प्रतिष्ठा, मान्यता कर्ना बहोत कम हो गये हैं और नकल्य अथवा पाषाणादिकृत देव और आडंबरी और अर्थकामी गुरु तथा हिंसामें धर्म इनोकी पुजा, प्रतिष्ठा, और मान्यता कर्णा बहोत बढ गये है, देख्या ! अज्ञाने हाल्में जानी आत्मानंद सहीत बंध्ये हुवे भी दुर्गुणालंकृत वस्तुको अंगिकार

करते है.

देखिये! गपोष्टक अर्थात माहान झुटके कथन करनेवाले (मिसल्न) नव हाथका 'वैंयगन' सत्ताविस गाडीमें नही माया, निपट झुटके सिर-दार और दुर्गुणालंकृत पुरुषोंके वास्ते हमारे ग्रंथका उपदेश नही है, मगर ज्ञाता पुरुष हमारे ग्रंथका असली तात्पर्य पहेचानके तत्ववेत्ता बनेंगे ऐसी हमारी विनंती है!

देखीये! मूर्तीपूजकोंके कर्वीनें दयाके उपर क्या उमदा अधिकार कहा है:—

स्तवन

कर्मकी कैसे कटे फांसी २ ॥ टेर--

संजम शिव सूखसेज तजकर, दुर्गुत दिल भासी।
धर्म उपर धाडोते पाडयुं। ज्ञान गयुं नासी ॥१॥
हिंसा करी तुंने हार हियाको, दया करी दासी।
कामदार थारे क्रोध बन्यो हे, ममत बनि मासी ॥२॥
कहे जिन दासमें पाप प्रभावे, पायो हुंसन राशी।
नवि खरचिमें पलेन बांधी, खाय खोई वासी ॥३॥

दोहा

श्री जिन वाणी पाएनमी, समरीजे सरस्वती।
जीव दया प्रतिपालना, मात देके मुझ मती ॥१॥

॥ छंदजामी ॥ रयणी वीनाचंद्र चंद्रविना रयणी
अरक पखे उजवास किशो ॥

कामिनी बिना काय, कंथ बिना कामिनी
काम विहुणा पुरुष किसो ॥
तुरी बिना वेग, जल बिना सरोवर,
प्राण विहुणो पिंड किसो ॥१॥

इम उत्तम नर आचार विचारो जीव दया बिना धर्म किसो टेर।
फल बिना वृक्ष, वृक्ष बिना पक्षी, अंगण बिना गमन किसो ॥
पुत्र बिना थाण, गुण बिणा संपयन, गुण विन गुण पात्र किसो।
गुरु बिना ग्यान, अक्षर बिना पुस्तक, कंठ विहुणो ग्यान
किसो ॥२॥ ॥इम ॥

धान बिना सान, पान बिना लवण, घृत पाखे भोजन किसो,
सुन्दरी बिना सेज, सेज बिना सुंदरी, पाणी बिना मुख कमल किसो,
[illegible]बिना मानस, खड्गबिना शूरो, हाथबिना हथीयार किसो ॥३॥इम०

[illegible]बिना सुख, क्षमाबिना तपसी शील बिना व्यापार किसो,
[illegible] मंत्री, मायुध बिना क्षमी, शूर बिना संग्राम किसो,
विद्या [illegible]ना सद्गुरु, सभा बिना पंडित, सैन्या बिना साहेब किसो
॥४॥इम०॥

सुगंधबिना कुसुम, कुसुमबिना वाडी, अंगबीना आभरण किसो,
स्वस्वामी बिना माग याग बिना यागी, आणबिना अधिकार किसो,
सत्ता बिना बाद, गम्य बिना गायन, अर्थबिना गुण ग्रंथ किसो॥५॥
॥इम०॥

तुंबा बीना थंभ, बिवहर बिना भव, सोवर्ण बिना श्रृंगार किसो
देवबीना देउल, आणबीना राजा, सैन्याबीना राजेन्द्र किसो,
सम्पतिबिना घट, हा बिना पत्न, थानक पाखे घर किसो॥६॥इम०॥

पयवीना धेनू, मेघवीना महील, मनजित्यावीना मुनी किशो,
रग वीना चोल, गढ विना कोंपर, शास्त्र विना अभ्यास किशो,
संपवीना सिद्धि, रती वीना ऋद्धी, अरिहंत विना वीजो जाप किशो
॥७॥ईम०॥

वासविना ग्राम, क्षाकवीना ठाकुर छंदविहूणो कवित्त किशो,
तेलविना दीप, दीपवीना मंदीर, लक्ष्मी वीना जीम गृह किशो,
दर्शणविना मुख, रसवीना वाणी, आप्या विना उपकार किशो
॥८॥ईम०॥

जलविमा कमल, कमलविना काया, उत्तम विना आचार किशो,
कुंकुमवीना कामनी, धनविना दामनी, मदविना मातंग किशो,
श्रंगविना संविका, गुणविना गुणीका, दान विना दातार किशो,
॥९॥ईम०॥

मायावीना माता, मातावीना बालक, पुत्रविना पयपाण किशो,
संजमविना शिक्षा, गुरुविना दिक्षा, अन्नविना आयतन किशो,
प्रजाविन करसण, पुत्रवीना वराज्यू, मेख विना दर्शण किशो,
॥१०॥ईम०॥

(कलश) जीव दयावीन धर्म, दिवस जीम दिनीयर पाखे,
जीव दयावीन धर्म, प्राणविन पिन्डन राखे, जीव दयाविन धर्म,
नाव ज्युं सढ विहूणो, जीव दयाविन धर्म, सूर घर ससी प्राहूणो
जीव दयावीन धर्म, धर्म मर्म चाले नही, जीन चरण दास सुंदर
कहे सो वीतराग वाणी लहे ॥११॥ईम०॥

॥ इति जीव दया छंद संपूर्ण ॥

देखिये ! हिंसा धर्मी जैन मुर्तीपुजक, दयाधर्मी साधुमार्गी, वर्गको

मानते है के हुक्क दया दयाका सोय्र पुकार करते है, लेकिन मुर्तीपुज लोके थोते पोथोमें भी जीव दयाका अधिकार चल्ना है लेकिन न लागकि ह्म्पनेओसे छकाय जीवपि दयाका गोर नहीं हो सक्ता है सा पश इन स्लगोंकि माव नेम गुप्त हो गये है सा छकाय जीवोंकी दयाक उपर इन लागोंसे गोर नहीं हा सक्ता है हिसा धर्मी जैन मुर्तीपुजकोंके तर्फसे "जैन संमदाय शिक्षा" ईस नामका ग्रंथ प्रगट हुवा है इस ग्रंथक म० ६०८ में रत्न प्रभु सुरीका अधिकार चल्या है उसमेका किंचित अधिकार दिखलाते है जैन मुर्तीपुजक संमदायमें जा रत्न प्रभु सूरी हुये हैं जिनोंने रजपुतोंका मिथ्यात्व छुडाकर जैनी बनाये हैं और रत्न प्रभु सूरीने रजपुतोंको देविकी पुजाका त्याग करवाया है। लेकिन जिन प्रतिमा की पुजाका उपदेश दिया नहीं दयामें धर्मकी परुपना करि हैं [लेख निचे मुजब] म० ६०८ दया मूल धर्म का अंगिकार करोगे तो जिन धर्मका उद्योत होगा म० ६११ दया ~ धर्मका ग्रहण करों म० ६१८ धर्मकी चौथी परिक्षा दयाके द्वारा । जाना है अथात जिसमें एकेन्द्रिय जीवसे लेकर पंचेन्द्रीय तक जी वा पर न्या करनेका उपदेश हा बाही धर्म माननीय है म० ६११ उनमेंसे प्रथम महाव्रत यह है क सब प्रकारक अर्थात् सुक्ष्म और स्थुल किसी जीवका एकेन्द्रीयसे लेकर पचेन्द्रीय तक किसी जीवको स्वयं मन वचन कायासे न मारे न मरावे और मारतेको भला न जाणे

समीक्षा:—हमारे प्यारे सज्जनोंने विचार करनाके खुद हिंसा धर्मी मुर्ती पुजक छकाय की दया स्वीकार करते है लेकिन दुसरोंका साध्य मांय रखते हैं हिंदु मुसल्मान क्रिस्ती पारसी वगैर मजहब वाले खुब अच्छी तर्हसे दयाका स्विकार करते है तो जैनी सर्वथा प्रकारसे न्या अंगिकार कर जिसमें कुछ ताज्जुब नहीं है श्री जैनके असली निर्धकर वीतराग देवाधिदेव महाराजने दयाका पुकार उठाया हैं उनमें कोई हज.

नहीं हैं जैन मुर्तीपुजक लोग साधु मार्गी वर्गको कहते है के केवल दया दयाका खोटा पुकार उठाते है, तो अब जैन मुर्तीपुजकोंने श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचीन असली सिद्धांतोंके मूल पाठमें सच्ची दयाका खुलासा आम सभामें हम लोगोंको करके दिखलाना चाहिये तब हमारे प्यारे मुर्तीपुजकोंको सत्यवादि समजेंगे.

इत्यलम्! श्री शान्ति ः

सरूपका खुलासा करेंगे, नारकिमें दस प्रकारकी क्षेत्र वेदना (दुःख) फरमागा हे, जिसमे फेर ज्ञानी पुरूषोने फरमाया हे, के नारकि की किंचित मात्र मट्टी इस मृत लोकमे कोई देव वगैरे लाके डाले तो कितनेक कोसो तक मनुष्य तिर्यंच और वनस्पति वगैरेका नास हो जावे और नारकि के नेरियोंको [अर्थात] नारकिमे उत्पन हुवे हुवे जीवों को अगर कोइ हातमे उठा लेवे तो उस नारकिके नेरियोंका शरीर पारे सरिखा विखर (क्षीण क्षीण हो जावे) जावे मगर हाथमे नही आता हे सांमलि वृक्षके पते जो शरीरपे गीरे अगर उक्त वृक्षका शरिरको स्पर्श होवे तो शरिरके तुकडे हो जाते हे इत्यादि अनेक प्रकारकी भयंकर नारकि की वाते ज्ञानिने फरमाइ है, अव सोचिये ! इस मृत लोक में नारकीके हजारों किवां लाखों चित्र [फोटु] होवेंगे मगर उपरोक्त वार्तामेसे एक भी वात नहीं मिलती हैं तद असदरूप स्थापनाको तदरूप स्थापना किस तोरसे मानि चावे, ये तो एक वाल अज्ञानीयोंका ख्याल है, जैसा अल्प वयका वालक निरर्थक ख्याल करता हैं वैसा ये भी एक ख्याल हे, देखो ! अव असदरूप स्थापना माननेसे आत्म सिद्धि अर्थात फायदा नहीं होती हैं और असदरुप स्थापना नही मानने से कुछ नुकसान नहीं होता हैं, तो फेर वालवत (खोटी) दलिल करना ये भी एक भुल भरी वात है,

देखिये ! श्री वीर प्रभुने सुत्र श्री जंवुद्विप पन्नंति वगैरे जैनके असली सिद्धांतोंमें, जबुंद्विप वगैरे द्विपसमुदोका वर्णण श्री मुखसे फरमाया हे इसके अनुसार किंचित मात्र वर्णण जंवुद्विप वगैरोके नकासेमे छापा गया हें, मगर उसमें परवत (पहाड) वन, नदी, समुद्र, स्त्री

बगैरोंका सत्य दिखलाये गये है, तो अब सोचिये ! श्री जैनके मुनि राजतो कचा पाणी (कच्चा जल) किंवा वनसपता किंवा स्त्री बगैरोंका संघट नही (छीवे नहीं) करते हैं तो फर मुर्तीपुजकोंके साधु लोग जैन साधु कहलाते है, तब ये लोग जगुप्रिय बगैराक नकासेका सत्र करते होंगे अर्थात छीवे होंगे तब कचा पाणी, बनस्पती, स्त्री बगैरोंका संघट होता है तो इसका प्रायश्चित (दंड) जरूर लेते होंगे, इसमें कोई भी तरका फर्क नहीं होवेगा, कदापि नहीं लेते होवेंगे तो मुर्तीपुजकोंका कहेना साफ खोटा है, और माले शर्गोको भरमानेका ही है ऐसा सिध्द हुवा तब तो ये बात ऐसी हुईकी मुर्तीपुजकोंका कहेना और, रहेना और, किंवा चलना और, ये कुछ जैनीयोंका लक्षन नहि है, तब असदरूप स्थापना माननेके वास्ते खोटी बकवाद करना ये कुछ शाना पुरुषोंका काम नही है.

देखिये ! श्री जैनके असली और प्रमाणि मुनि किंवा श्रावक लोग ? गच्छा किंवा अपना फोटू निकलावे और उस फोटूको मुनि ।तथा गुरु तरिके माने किंवा श्रावक तरिके माने और वंदना नमस्कार करे तो उन मुनियोंको किंवा उन श्रावकोंको श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंके आधारसे एकांत मिथ्या दृष्टी कहेना चाहिये, अर्थात मुनिपदसे किंवा श्रावक पदसे भ्रष्ट कहेना चाहिये कारण फोटूकी असदरूप स्थापना है अर्थात उस फोटूमें मुनिपणेके किंवा श्रावकपणेके किंचित मात्र गुण नही है, इस वास्ते, मगर मुर्ती पुजक लोग इस बाबक वास्ते एसा अयस्तुव दृष्टांत देते है के कुछ अकल काम नहि करति है लेकिन उक्त दृष्टांतका किंचित खुलासा करना चाहते है, मुर्तीपुजकोंके तरफका दृष्टांत सुनिये, दृष्टांत० क्यों जी ! तुमारे बाप बगैरेके फोटूको तुम लाथा मगर जुते मारोगे क नहीं,'

देखो ! कैसा काफि द्रष्टांत है, पर शोक ! है के ये द्रष्टांत देनेवाले पुरुष इस द्रष्टांतके परमार्थ के अजाण हैं. और अजाण पुरुषोंको ही ऐसि बाते पुछते हे, मगर ह्यांपे ईसका किंचित खुलासा करना चाहते हैं, अरे भाई थोडा सोचोतो सही, अगर किसीके बाप वगैरेका फोटु (तसवीर) निकाला हुवा होवे और उसे कोई मुर्ख कहेके भाई साहेब ये आपके बापका फोटु हैं सो आप इसे पांच जुते मारो, तब वो कहेगाके मे ईस फोटुको जुते नही मारुंगा, क्योंकि इस दुनियामें परमार्थके अजाण पुरुष मुर्ख और बे अकले बहोत हे तब मुर्ख लोग तुरंही वो योग्य पुरुष कि हांसी करनेको लग जावे वास्ते वो कदापि उस फोटुको जुते नहीं मारेगा, मगर जुते मारनेसे भी हम ह्यांपे ज्यादा हिसाब बताते हैं सो थोडा ख्याल किजीये तो सही, फोटु तो दुर रहा मगर फोटु निकालने वालेके माता पिताका मृत्यु हो जाता हे तब उस मृतक शरीरको स्मशानमें ले जाके अंगारमें जलाते हे और पुर्ण जलाके नहीं जला ईसकी तलास करणेके वास्ते खास पुत्र बंधु वगैरे लोग बांसडोसे अछी तेरेसे खास उन माता पिता वगैरेके शरीरको ठोकते हे और उसकी दुर्देशा करते हे, सोचो ! अगर फोटु को जुते मारनेसे दोसा पचि होवे तो फेर खास माता पिताके शरीरपे लाठीया बजानेसे कितने भारी प्रायश्चितकी उसी होती होवेगी, फेरभी देखो ! मुर्तीपुजकोके साधु वगैरोका अंतकाल हो जाता हे तब वो लोग साधु वगैरेके मृतक शरीरको स्मशानमें ले जाके अग्नि संसकार करते है तब साधु श्रावक दोनु व्हांपे हाजर रहते हैं, और वो मृतक साधु वगैरोंके खास शरीरको पूर्ववत वासडोसे ठोकते है अगर गुरु वगैरोंके फोटुको लात अगर जुता लगनेसे असातना अर्थात दोष लगता होवे तो गुरु वगैरोंके खास मृतक शरिरपे लाठीया बजाके दुर्दसा करनेसे कितना भारी प्रायश्चितके

वगैरोंका स्पर्श दिखलाये गये है, सो अब सोचिये ! श्री जैनके मुनि राजतो कचा पाणी (थंडा जल) किंवा वनस्पती किंवा स्त्री वगैरोंका संघट नही (छीते नहीं) करते है तो फर मुर्तीपुजकोंके साधु लोग जैन साधु कहलाते है, तब ये लोग जंबुद्विप वगैरोंके नकशेका संघट करते होंगे अर्थात छीते होंगे तब कचा पाणी, वनस्पती, स्त्री वगैरोंका संघट होता है तो इसका प्रायश्चित (दंड) जरूर लेते होंगे, इसमें कोई भी तरका फर्क नहीं होवेगा, कदापि नहीं लेते होवेंगे तो मुर्तीपुजकोंका कहेना साफ खोटा है, और भोले लोगोंको भरमानेका ही है ऐसा निश्चे हुवा तब तो ये बात एसी हुइकी मुर्तीपुजकोंका कहेना और, रहेना और, किंवा चलना और, ये कुछ जैनीयोंका लक्षन नही है, तब असद्रूप स्थापना माननेके वास्ते खोटी बकवाद करना ये कुछ ज्ञानी पुरुषोंका काम नही है

इसलिये ! श्री जैनके असली और प्रमाणि मुनि किंवा श्रावक लोग ा गरूका किंवा अपना फोटू निकलावे और उस फोटूका मुनि ।स्वा गुरु तरिके माने किंवा श्रावक तरिके माने और वंदना नमस्कार करे, तो उन मुनियोंको किंवा उन श्रावकोंको श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंके आधारसे एकांत मिथ्या द्रष्टी कहेना चाहिये अर्थात मुनिपदसे किंवा श्रावक पदसे भ्रष्ट कहेना चाहिये, कारण फोटूकी असद्रूप स्थापना है, अर्थात उस फोटूमें मुनिपणेके किंवा श्रावकपणके किंचित मात्र गुण नही है, इस वास्ते, मगर मुर्ती पुजक लोग इस बातके वास्ते ऐसा अदभुत द्रष्टांत देते है के कुछ अकल काम नही करती है लेकिन उक्त द्रष्टांतका किंचित खुलासा करना चाहते है, मुर्तीपुजकोंके तरफका द्रष्टांत सुनिये, द्रष्टांत० क्यों जी ! तुमारे बाप वगैरेके फोटूको तुम अथवा मगर जुते मारोगे के नहीं,'

जितनी मजा नहीं मिलती हैं, ये ही फोटु की तारीफ, इसके अलावा फेर भी देखो! मुर्तीपुजकोके तिर्थकरोंकी रद्दी कि हुई प्रतिमा, अजब घर वगैरे अनेक ठिकाणे रखडती पडी है, और उनोंके उपर कैई जनावर चढते हैं, हगते है, मुतते हैं, केई आदमी जुते पहेनकर उनो के उपर पाव धरके कइ तरेसे उनोंके हाल करते हैं, देखिये! मुर्ती पुजकोंके, अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय, और साधु वगैरोंके फोटु, चित्र, और प्रतिमाकी कैसी कैसी जाहिरमें दुर्दशा होके फजीते होते हैं, के हम कुछ बयान नहीं कर सक्ते है, और ये दुर्दशा और फजिते देख के हम लोगोंको भी पुर्ण पणे शर्म प्राप्ती होती है क्योंकि नाव जैन धरवाते है ईस वास्ते ओर इसके अल्वावे मुर्तीपुजकोके अरिहंत वगैरोके फोटु बजारमें बिकते हुवे, उचसे लगाकर निच कोम जातके मकानपे भी जा पहोचते है, इस बातकी मुर्तीपुजक लोग किंचित मात्रभी बंदोबस्ती नहीं करते है, अपसोसका स्थान है के इस असातनासे मुर्तीपुजकोंके कितने जबर दस्त कर्म बंधते होवेंगे के इस बातका ज्ञानी पुरुष भी बयान नही कर सकते हैं, अगर जो उत्तम पुरुषोंके माता पिता वगैरे अंधे, लुले, अंगहीण हो जावे तो घरके बाहेर निकाले जाते हैं कदापि नहीं मगर मुर्तीपुजकोंके अरिहंत आचार्य, उपाध्याय, साधु वगैरोंके फोटु चित्र, प्रतिमा, अंगहिण अर्थात खंडन हो जावे तो तुर्तही उसकी सेवा पुजा बंद करके स्थानके बाहेर निकाल देते है, देखिये। कैसा सच्चा और उमदा धर्म हैं के जिसमें किंचित मात्र भी सत्यका परिचय नहीं है, फेरभी अरिहंत वगैरेके फोटु विषय विकार सेवन करनेके मकाने भी रखते हैं कैसी उमदा बात है ये भी भले आदमीयोंका ही काम है,

प्रभावसे तो आम मुर्तीपुजकोंको तो उत्तम गति की नास्ती होना चाहिये, मगर दुसरा कि तो दुर रहो, अब आप खास मुर्तीपुजकोंके तरफकी अदभुत वार्ता श्रवण किजीये, देखिये। मुर्तीपुजकोंके खास आचार्य, उपाध्याय, साधु, मगर ईनोंके देवोंके फोटु अर्थात चित्र निकल जाते हैं और उक्त फोटुअ खराब अगर कुत्ता लग जावे तो य लाग दोस लगता है एसा कहते है ये कहना इनोका साफ खोटा है सबब उक्त फोटु फट जावे तब मुर्तीपुजक लोग उसे बाहर फेंक देते है तब यो फोटुके टुकडे रस्तेमें रखडते है और वा फटे हुये फोटुके टुक डाप खास हुवे पहेनके मुर्तीपुजक लोग चलते है सबब पर मुए निति (पसाब) भी करते है और जाय जरुरत [झाडे] भी जाते है और वो फटे हुए फोटुके टुकडे दवास उडके कचर की पटीमे भी पडते हैं, और पेसाने वगैरे खराब ठिकानेमें भी गिरते है, तद उनकी अमा नहीं होती होवेगी तद इस असातनासे तो मुर्तीपुजकोंको उत्तम नास्ती होके अधोगति मिलना चाहिये, मुर्तीपुजकोंके न्यायसे [illegible] भारी खेदाश्चर्य का स्थान है की ईन पागलोंका पाप मानना दुर न हावेगा, मगर फेर भी देखो ! ब्राम्हण वगैरे कितनीक जातीमें अगर काइ कुत्ता मार देवे तो विटाल पडता है, अर्थात दोस लगता है और वो दोस निवारण करनेके वास्ते उनको पुर्ण तकलीफ भी उठानी पडती है, मगर उन लोगोंके फोटुको कोइ कुत्ता मार देवे तो उनोको विटाल नहीं पडता है, सोचो ये क्या बात हुइ मला–

और भी देखो ! अभी पाणी वगैरेके जरिये काइ आदमी दुसरेको मार डाले तो उसे फांसी अगर कालापाणी मिलता है मगर अभी पाणी वगैरेके जरिये फोटुका विनाश कर डाले तो उसे आदमी मारे

कहांतक तारीफ करे के आपके सर्व मान्य वस्तुकी स्वद्वासे ये दुर्दशा करते हो तो दुसरे मान्य कैसे कर सकेगे कदापि नहीं. ऐसे कपट युक्त धर्म माननेवालोंको धिक्कार ! धिक्कार !! कोटीश धिक्कार है !!!

देखिये ! अरिहंत वगैरोंके फोटु किंवा चित्र किंवा प्रतिमा सेवन कर नेसे जो आत्म सिद्धि होती होवे तो फोटु किंवा प्रतिमा किंवा चित्र वगैरे की उपस्थिती करनेमें जो जो वस्तु अगर आदमी काम आते है उन सर्वोकि सेवा पुजा भक्ति किंवा वंदना नमस्कार करना चाहिये तब तो उक्त बाते सच्चि मानि जावेगी नहीं तो उक्त सब बाते मनकल्पित और गलत मानी जावेगी ये निश्चे समज लेना–

फेरभी देखिये ! हमारे साधु मार्गी [स्थानक वासी] कितनेक भाई किंवा बाया, समायक पोसा वगैरोंमें तिर्थकरोंके फोटु किंवा रंगित चित्र किंवा नव पदके गठे वगैरोंके दर्शण करते है ये इनोकी बडी भारी भूल है, सबब फोटु किंवा चित्र किंवा प्रतिमा किंवा नव पदका गठा ये सर्व अव्रती है, और समायक पोसावाले व्रति होते है इस वास्ते फोटू वगैरेका दर्शन करना नहीं, और नमस्कार भी करना नहीं अगर करोगे तो मिथ्यात लगता है, कारण, "देव नहीं ने देव कहे तो' गुरु नहीं ने गुरु कहे तो' धर्म नहीं ने धर्म कहे तो" मिथ्यात लगता है किंवा महा मोहणी कर्म बंधता हैं, सुत्र श्रीसमवायंगजी देखो। वास्ते फोटु किंवा चित्र किंवा तसवीर किंवा प्रतिमा वगैरोंको वंदना नमस्कार करे जिनोको श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचिन असली सिद्धातोके आधारसे समकितसे किंवा व्रतसे किंवा पच खाणसे भ्रष्ट समजे जावेगे कारण असद्रूपको तद्रूप मानते है, इस लिये

द्वीप सहज सवाल हानेकी जगह हैं के जो फाटु किंवा चित्र वगेर का स्पर्श वगैर स्पर्श से किंवा फाडने तोडनेसे अगर कर्म बंधते होय तो, खास मुर्तीपुजक लोग अनेक प्रकारके फाटु किंवा चित्रके संयुक्त कपडे पहेनते हैं, और उनोमें इनोके तिर्थंकर वगैरोंके चित्र (फोटु) भी आते है और वा लोग इनोंको खाते और धुते वगैर भी रूलाते हैं और उन कपडाके संयुक्त शुभाशुभ अनेक प्रकारके धर्मवी करते हैं, इस न्यायसे तो मुर्तीपुजकोंको माहान कठोर कर्म बधते है और इनोके मान्यवर आचार्योके बनाये हुवे शास्त्रोंके आधारसे इन मुर्तीपुजकोंकी निश्चे उत्तम गति नहीं होना चाहिये और इनोके न्यायसेही इनोका निष्ट गति मिलना चाहिये इसमे कोई भी तरेका शक नहीं समझना

फेर भी देखिये। कितनेक मुर्तीपुजकोंका प्रतिमा की पुजा किये सिवाय अन्न जल मुखमें डालना नहीं एसा पक्का नेम रहेतो उन लोगो [illegible] छोटी प्रतिमा किंवा चित्र किंवा नव पदका गट्ट हमेशा पास [illegible] उन लोगोंका गावांतर जानेका काम पडता है तब वो [illegible] सर्व पुजाका सामान एक झोलनेमें बांधके अपने साथम [illegible] गन्टी किंवा पेटीमें वो प्रतिमा सहीत पुजाका झोलना धर लेते हैं और गावांतर रवाना हो जाते है मगर वखत पडता है तब उस गठडी किंवा पेटीपे बैठ जाते है, धुवे सहीत पांवभी उपर धर देते हैं और बगलमें लेके पेशाब [मल्ली-मुतने को-लघुनित] करनेको बैठ जाते है और बगल में किंवा शिरपर लेके दृटी (दिसा-झाडा) भी फिर आते है, अब कहिये साहेब सात दुर्दशाके कितनी बडी मारी असातना करते है और दुसरो को कहते हैके तुम लोग प्रतिमाका यदु ना पडु करोगे मगर स्वयंसे तो खाना और जूतीयां मारनेमें कुछ बाकी नहीं रखते है और दुसरेको उपदेश देते है (मिसलन) माम गुरांजी बैंगन खावे और दुसरेको उपदेश सुनावे या जी या ! पोपजी आवकी

होता है, इस ही वजेसे अक्षरमेंसे अक्षर की प्राप्ति होती है और अनुस्वार से अक्षर ऐसा बोला जाता है, देखो! श्वेताम्बर इसही शद्बके 'ता' अक्षरके उपर अनुस्वार हे मगर वो अनुस्वार निचे उतारनेसे, अर्थ, मकार की प्राप्ति होती हे कैसा, श्वेताम्बर, ये तो हुवा, फेर भी देखो! पाडवो की माता कुंति ऐसा नाम हे मगर वहापे पाडवोंकी माता कुती ऐसा नही लिखा जावेगा इसही वजेसे अनुस्वार और विसर्ग युक्त अक्षर बोलाये जाते है. और अक्षरोंको अपेक्षा इस वजेसे लागु होती हे जेसा व्याकरणमे "सर" धातु है मगर सर ये शद्बको, क, की अपेक्षा लगनेसे "कर" ऐसा शद्ब बनता है न की अपेक्षा नर, व की अपेक्षा वर त की अपेक्षा तर ह की अपेक्षा हर ख की अपेक्षा खर, घ की अपेक्षा घर, म की अपेक्षा मर, देखो! जैसी जैसी अपेक्षा लागु होवेगी वैसे वैसे शद्ब बनते चले जावेंगे, लेकिन इस बातका सारा औंश इतना ही है, के जिस स्थानपे जो अक्षरका उचार होता हे उस स्थानपे वो ही अक्षर लिखा जाता हे मगर अन्यथा लिखनेसे, विरोधा भाष्य होता हे, वास्ते माहासयजी! यथा योग्य वस्तुकु नही मानना ये भी अयोग्य हे.

पूर्वपक्षी —आपका फरमाना सत्य है।

सोचनेका स्थान है, अक्षरोंमे अक्षरों कि सुध स्थापना (अलंकार) गुण लछण पुर्ण हे, मगर किंचित मात्र फर्क नही है, इस लिये गुणसपन्न, तद्रुप सुध स्थापना माननेमें कोई भी हर्ज नही है, इसही वजेसे मुर्तीपुजक लोग, जिन प्रतिमामें जिन राजकी सुध स्थापना, गुण, लछण, पुर्ण पणे दिखलावेंगे तो हम लोग प्रेम युक्त मंजुर करेगे मगर ऐसा न होके एक कविने कहा हे.

दोहा

दस बोगा दस बोगली, दस बोगलके बचा ।

वर्ग ३ रा

-अक्षरोंकी स्थापना विषय-

वन्दिये ! मुर्तीपुजक लोग कहते है के तुम लोग अक्षरोंकी स्थापना मानते हो तो फिर जिनराजके प्रतिबिम्बकी स्थापना माननेमें क्या हर्ज है, मुर्तीपुजकोंका कथन सत्य है, मगर इसमे इतना फर्क है, स्थापनाके दोय भेद है, एक तो तदरुप स्थापना और दुसरी अतदरुप स्थापना इस मतलब असली मतलब हमारे वाले मित्र समजते नहीं हैं, देखिये। स्वर १६ मात्रा, अ आ इ ई उ वगैरे है, और व्यंजन ३४।३६। चौतिस किंवा छतिस 'क ख ग घ ' हैं स्याल करो, जिस स्थानप जिस अक्षरका उचार करते है, वही अक्षर लिखा जाता है, परंतु दुसरा अक्षर नहीं लिखा जाता

पुर्वपक्षी—अजी साहेब आप थोडा सोचो तो सही, अक्षरोंमेंसे अक्षर की प्राप्ती होती है और अनुस्वार और विसर्गसे भी अक्षरका उचार होता है और अक्षरोंका अक्षरोंकी अपेक्षा भी लघु होती है, बस

उत्तरपक्षी।— आपका कहना सत्य है मगर ये भी एक स्याल ।करमेंख स्थान हैं जैसा किसी एक पुरुषने लिखा "आध्यात्म" और दुसरे पुरुषने लिखा "मध्यातम" मगर यदि मकारका लोप होके अकार की प्राप्ति होती है अकार की प्राप्ति हुवे के बाद, मध्यातम का वापिस अध्यातम सिद्ध

होता है, इस ही वजेसे अक्षरमेंसे अक्षर की प्राप्ति होती है और अनुस्वार से अक्षर ऐसा बोला जाता है, देखो! श्वेतांबर इसही शद्बके 'तां' अक्षरके उपर अनुस्वार हे मगर वो अनुस्वार निचे उतारनेसे, अर्थ, मकार की प्राप्ति होती हे कैसा, श्वेताम्बर, ये तो हुवा, फेर भी देखो! पांडवो की माता कुंति ऐसा नाम हे मगर वहांपे पाडवोंकी माता कुती ऐसा नहीं लिखा जावेगा इसही वजेसे अनुस्वार और विसर्ग युक्त अक्षर बोलाये जाते है. और अक्षरोंको अपेक्षा इस वजेसे लागु होती हे जेसा व्याकरणमे "सर" धातु हे मगर सर ये शद्बको, क, की अपेक्षा लगनेसे "कर" ऐसा शद्ब बनता है न की अपेक्षा नर, व की अपेक्षा वर त की अपेक्षा तर ह की अपेक्षा हर ख की अपेक्षा खर, घ की अपेक्षा घर, म की अपेक्षा मर, देखो! जैसी जैसी अपेक्षा लागु होवेगी वैसे वैसे शद्ब बनते चले जावेंगे, लेकिन इस बातका सारा अंश इतना ही है, के जिस स्थानपे जो अक्षरका उचार होता हे उस स्थानपे वो ही अक्षर लिखा जाता हे मगर अन्यथा लिखनेसे, विरोधा भाष्य होता है, वास्ते माहासयजी! यथा योग्य वस्तुकु नही मानना ये भी अयोग्य हे.

पूर्वपक्षी—आपका फरमाना सत्य है।

सोचनेका स्थान है, अक्षरोंमें अक्षरों कि सुध स्थापना (अलंकार) गुण लंछण पुर्ण हे, मगर किंचित मात्र फर्क नही है, इस लिये गुणसपन्न, तद्रूप सुध स्थापना माननेमें कोई भी हर्ज नही है, इसही वजेसे मुर्तीपुजक लोग, जिन प्रतिमामें जिन राजकी सुध स्थापना, गुण, लछण, पुर्ण पणे दिखलावेंगे तो हम लोग प्रेम युक्त मंजुर करेगे मगर ऐसा न होके एक कविने कहा हे

दोहा

दस बोगा दस भोगली, दस बोगलके बचा।

गुरुजी बैठे गप्पा मार, चेल्या जाणे सत्या ॥१॥

अहा हमार बाल भाइगम इस पदवी को मत पहचानना, हम लाग ता असल मैनि है, इस वास्ते हम सारा वो गुण रोतल वस्तुका अंगिकार करते है अतएव सकर को सकर, और रविक्र रेति, हिरका हिरा, और कार का कंकर, इस बनेस पक्षपात रहीत जैसि वस्तु होवेगी वैसि ही मान्येंगे लेकिन निष्फल वस्तु कदापि स्विकार नहीं करेंगे,

पाषणादिककी

प्रतिमासे आत्म सिद्धि नही है

देखिये। हमने मद उपासक मुर्तीपुजकोंके सावध्या चार्यो के बनाये हुए, विधादि मंद प्रकर्ण वगैरामें अवलोकन किया हे और उक्त लोगोंके मुखसे भी सुना है के पाषाण धातु वगैरे की बनाई प्रतिमाको सूरी मंत्र सुणानेसे उक्त प्रतिमा जिनराज तुल्य हो जाती है और उस जिनराजकी प्रतिमा की सेवा भक्ति पुजा, प्रतिष्ठा करनेसे अनन्ता कारमै बंध क्षेय जाते हे, समय तिर्थंकर गौत्र उपार्जन करते हे, उत्कृष्ट मोक्षकी प्राप्ति होती हे, ऐसा मुर्तीपुजकोंका फरमान हे, मगर ये कथन उक्त लोगोंका साफ गप्प है सबब मुर्तीपुजकों के फरमान मुवाफिक (प्रमाण युक्त) श्री जैनके असली और माफिन सिद्धांतोंमें ऐसा नहीं है इस लिये मुर्तीपुजकोंका कथन साफ खोटा ह न्याय करा वितराग किसको कहना चाहिये सो देखो। वितरागके गुण की व्याख्या

[काव्य]

राग, द्वेष, कषाय, मोह, मथनो, निर्दग्ध, कर्मेधनो,
लोकालोक, विकाश, केवल, गुणो, मुक्त, शुधोनिर्भय:-
शापानुग्रह, वर्जीतो, गदतृषा, क्षुत्काम, निद्राजरा,
क्रीडा, हास, विलास, शोक, रहितो, देवाधि, देवो, जिन ॥१।

अर्थ:-राग अर्थात मेहेरबानी रखना-द्वेश अर्थात खफा मरजी रखना-कषाय अर्थात क्रोध- मान, कपट, लोभ वगैरे २५ प्रकारकी कषाय-मोह अर्थात सनेह-- इत्यादि वस्तुका विनास करके, शुक्लध्यानके जरिये, कर्म रुप कचरेको जलाके, लोक और अलोकका पुर्ण भाव देखे ऐसा केवल ज्ञान और दर्शन रुप गुणको प्राप्त किया है और कोई भी प्रकारका शस्त्र पास नहीं रखते हुवे प्रभु निर्भय है, और कोईको प्रभु गुस्सेमें आके सराप नहीं देते है और कोईपे प्रज्ञा होके मेहरबानी भी नही करते है और प्रभु के शरिरमें रोग नही, त्रषा अर्थात प्यास वगैरे नही, क्षुधा अर्थात भुक वगैरे नही, काम अर्थात विषय विकार की नास्ति, निद्रा की नास्ति, जरा अर्थात बुढेपणे की नास्ति, क्रिडा अर्थात खेल (नाटक वगैरे) करने की नास्ति, हास्य अर्थात हसने कुदने की नास्ति, विलास अर्थात विनोद करनेकी नास्ति, शोक अर्थात सर्वथा प्रकारसे चिंता दु:ख नास्ति-इत्यादि अनत दोष करके रहित ऐसे जो देवाधिदेव श्री जिनेश्वर वितराग भगवान है उसे तिर्थकर भगवान कहेना चाहिये, ऐसे गुणालक्रत जो तिर्थकर भगवान है, उनोकी स्थापना उपरोक्त गुणालक्रत होवे तो उसे तदरुप स्थापना कहेना चाहिये.

पूर्वपक्षी:-क्योजी वर्तमानमे जो तिर्थकरोंकी स्थापना है वो तदरुप है या नही है.

उत्तरपक्षीः—वर्तमान समयमें जो तिर्थकरोंका ... है

पुर्वपक्षी—क्योंजी इसमें क्या फर्क है ...

उत्तरपक्षीः—महाशयजी। जरा सोचिये तो सही ... समयमें जो विंबकरोंकी जो स्थपना है, वो स्थापना तिर्थंकरोंके गुणानुसार तो सर्वांश मे भी नहीं है, मगर जो सिद्धांतोंमे तिथकरोंके शरीरका वर्णन कीया है, उसमे भी बहोत फर्क है

पूर्वपक्षीः—अच्छा क्या क्या फर्क है सो थोडा खुलासा तो किजीये

उत्तरपक्षीः—देखिये ! प्रथम तो तिर्थंकरोंके कान स्कंदसे चिप (चिपटे) हुवे नहीं रहते है, और प्रतिमाके है दुसरा तिथकरोंके कलेजेके उपर खिसर नहीं रहता है और प्रतिमाकि है; तिसरा जैसा मनुष्योंके सी चिन्ह भयुक्त आकार है, वैसा तिर्थंकरोंके नहीं होता है

मगर प्रतिमाके है, इत्यादि अनेक बोलोंका तिर्थंकरोंके शरिरसे और प्र... से फर्क है, कहांतक वर्णन करे वसो ! तिर्थंकरोंके शरीरका एसा अत्यन्त स्वरूपकार है उसका आकार (फोटू) इंद्रभी नहीं उतार सकते, तो मनुष्यकि तो क्या ताकद है कि तिर्थंकरोंके शरीरका आकार उतारलेवे, वर्तमान कालकी जो तिर्थंकरोंकि प्रतिमा है वो केवल एक मनुष्याकार है, इसवास्ते सदरस स्थापना नहीं मानी जाती है

पूर्वपक्षी आपका फरमान सत्य है, मगर प्रतिमाके समक्ष मानेसे तिर्थंकर भगवानका नाम तो लेनेमें आता है

उत्तरपक्षी तिर्थंकरोंके नामके अनेक आदमी होवे है मगर ऐसा भाव शुन्य नाम लेनेस कार्य सिद्ध नहीं होता है

पूर्वपक्षी अजी साहेब ! तो फेर कोनसा नाव सेवन करन चाहीये.

उत्तरपक्षी० जैसे तिर्थंकरोंके गुण है उस गुणालंकृत जो तिर्थंकरोंका नाम है वो नावका सेवन करनेसे सकल कार्यकि सिद्धि होति है, (सवैया ३१-सा) लक्ष्मीतो नाव पाया, छाणाही चुगण जाय, नाव हीरालाल घर कंकर न पाईये, ! नाव मोतिलाल घर, जवारका आखानाय, नाव प्रेमचंद प्रेम, रंचनही पाईये, नांव सूरसिंग पाय, पाछल्ही पग, भागे, नाव अमरचंदते, तो मरता देखाईये, कुंदन कहेत झुठा, नाव सेति सिद्धि नाय, यथा नाव जथा गुण सेव्या सूख पाईये ॥१॥

इस तोरसे नावका समरण हर ठिकाणे करनेसे भी सकल कार्यकी सिद्धि होती है.

पुर्वपक्षी:—क्योंजी क्या तिर्थंकरोकी प्रतिमाकी सेवा भक्ति करनेसे क्या हमको बिलकुल लाभ नहीं मिलेगा.

उत्तरपक्षी:—श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंमे तिर्थंकरोकी प्रतिमा की सेवा भक्ति करनेसे लाभकी प्राप्ति होवे ऐसा लेख कहीं भी नहीं है, तो तुमको लाभ कहांसे मिलेगा.

पुर्वपक्षी:—अजी साहेब। तो फेर किसकी सेवा भक्ति करनेसे लाभ की प्राप्ति होती है सो फरमाईये.

उत्तरपक्षी:—माहाशयजी। देखो। श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंमें तो तद्रुप मुनि राजो की सेवा भक्ति करनेसे १० दस बोल की प्राप्ति श्री विरप्रभुने श्री मुखसे फरमाई सो निंचे वाचो—

श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंमें तो तद्रुप श्री जैनके असली मुनियोकी सेवा, भक्ति, पुजा, प्रतिष्ठा करणेसे दस १० प्रकारके गुणोकी प्राप्ति होती है ऐसा लेख खुला और साफ साफ ज्ञानी (तिर्थंकर) पुरुषो

क्ति करनेसे० कि० क्या फल (लाभ) की प्राप्ति होती है, इति प्रश्न० १० उत्तर० त० वो कहता हु० गो० हे गौतम तुम चित्त लगाके सुनो० ३० सि। ज्ञान सुननेका अर्थात ज्ञान सुननेका योग (प्रसग) बनता है॥१॥ १० जो ज्ञानीकि वाणि सुनेगा, अवश्यही ज्ञानकी प्राप्ति होवेगा०।२। णां० और ज्ञान प्राप्त होनेसे विज्ञान (विशेष) ज्ञानका प्रकास (उद्योत–वल) होता है०।३। वि० विज्ञानसे सुकृत दुकृतके फलोंका जाणाकार होता है, फिर दुकृतका त्यागन करता है, ।४। प० और जो दुकृतके पचरकाण (त्यागन) किये सो ही सयम (आश्रवका रुंधन–खोटे कर्मोंको आते को रोके) हुवा०॥५॥ सं० और जो आश्रवका रुदन (रोका) किया वो ही तिर्थकरोंके अज्ञाका अराधन किया०॥६॥ अ० आश्रवका रुधन और वीतरागकी अज्ञाका अराधन (पालन) है सो ही तप है ; ॥७॥ त० और तपके प्रयोगसे सकल कर्मोका क्षय होता है ।८। वो० कर्म कटनेसे--अक्रिया--स्थिर जोगा--सर्व पाप रहित होते है ।९। अ० ओर जो सर्व पापसे रहित होते हे उनको निरजन निराकार–जोतिस रुपि, अजर-अमर-अचल, पदवी की प्राप्ति होती है, अर्थात मोक्षकी प्राप्ति होति है, मोक्ष उसे कहते है के वो जीव पिछा कोइ भी वखत ससारमे मोक्षसे आवे नहीं, देखो साधु की सेवा भक्ति करनेसे कैसी अमुल्य और अलोकीक वस्तुकी प्राप्ति होती है क ज्ञानि शिवाय दुसरा इस वातका वर्णण नहीं कर सक्ता है—देखो। इसही अधिकारको श्री वीर परमात्माने इसही स्थानपे दुवारे फरमाया है-- सो वो भी निचे दाखल करता हु

॥ गाथा ॥

सवणे नाणे विनाणे, पच्चरकाणेय संजमे ॥
अहे नाए तवेचेव, वो दाणं अकिरिया सिध्धि ॥१॥

भावार्थ—देखिये ! साधुके दर्शनसे तथा संगतसे, तथा सेवा भक्तिके य यमसे ज्ञान सुननेका योग [प्रसग] बनता है, ॥१॥ जो माहासुमा ज्ञानी पुरुषोंकी साधुके मुखा बिंदसे वाणि सुनेगा उनका अवश्यही ज्ञान प्र स होवेगा,॥२॥ और ज्ञान प्राप्त होनेसे विज्ञान [विशेष] ज्ञानका प्राप्त [उत्पात–पन] होता है, ॥३॥ विज्ञानसे सुकृत दुकृतका कर्मोका जाणन र होता है, मालमदर होके फेर दुकृतका त्याग करता है, ॥४॥ और जो दुकृतके पचखाण किये सो ही समम [आश्रव संदन–रोकना] हुवा,॥५ और आश्रवका रूधन किया वो ही तिर्थंकरोंकि आज्ञाका आराधन [पालन किया, ॥६॥ आश्रवका रूधन और तिर्थंकरोंकी आज्ञाका आराधन है सो ई तप है, ॥७॥ और तपके प्रयागसे प्राचीन सुभासुभ सब कर्मोका ना [कटते] होता है, ॥८॥ कर्म कटनेसे अक्रिया–स्थिर जोगा–सब पाप रहित (निर्मल) होते है ॥९॥ और जो सर्व पापसे रहित होते हैं, उ अचल, अमर, अविनासी पदकी प्राप्ति होती है, अर्थात मोक्षकी प्राप्ति होती है, ॥१० ॥

समिक्षा:—देखिये ! माहासयजी ! साधके दर्शन करनेसे और सेव भक्ति करनेसे तिर्थंकरोंने भी जैनके असली सिद्धांतोंमें कैसे उत्तमोत्तम अमोल्य गुणोकी प्राप्ति होती है ऐसा अनेकानेक अधिकार बारंबार फरमाया है० मगर जिन प्रतिमाके, दर्शन करनेसे तथा सेवा भक्ति करनेसे तथा पुजा प्रतिष्ठा करनेसे उपरोक्त गुणोमेंसे एक भी गुणा की प्राप्ति होता है ऐसा तिर्थंकरोंने जैनके असली सिद्धांतोंमें किंचित मात्र भी अधिकार कही भी नहीं फरमाया है, मगर आपि सहज सवाल होन की जगेह है क्या जिन प्रतिमाका भी जैनके असली सिद्धांतोंमें अधिकार फरमान करति वखत क्या तिर्थंकरोंका ज्ञान गुम होगयाथा, क्या किसिखड्डेमे उतरगयाथा, क्या ! जिन प्रतिमासे डरके [लोपके]

अधिकार फरमाना भूल गये क्या ! तिर्थकरोंने नमालियाथा सो न-
के छाकमें जिन प्रतिमांका अधिकार फरमाना भूल गये—मगर येवात
ापि नही होनेवाली है कारण ये बात असंजतिकि पूजाका अछेरा
मनोखि बात] तथा हुंडा सर्पणिके कारणसे ये जिन प्रतिमाकि पूजाका
ेस असंजति की पुजा कही जाती है) ये बारा कालीसे चली है. मगर
नादिसे ये बात नही है इस वास्ते ज्ञानी पुरुषोंने [तिर्थकरोंने] श्री
नके असली सिद्धांतोमें जिन प्रतिमाका अधिकार फरमाया नही है,
स परसे साफ साफ खुला निश्चे होता है के मुर्तीपुजकोंका कथन
कहेना) साफ गल्त (खोटा) है, अगर मुर्तीपुजकोंका कथन अस-
ी और सत्य होवे तो, इसके निर्णयके वास्ते नविन और नकली
मुना रुप अखिल रत्न मागधि भाषामें पाठ इस ग्रंथमें दाखल किये है,
के जिसको शाल्के पढनेवाले बच्चेभी समझ सकते हैं, अतःएव मुर्तीपु-
जकोंने हमारे नकली पाठोंके अनुकुल श्री जैनके एकादस अंगादि
असली और प्राचिन ताड पत्रोंमें लिखित सिद्धांतोंके शुद्ध पाठोंसे आम
सभामें दिखलाना चाहिये, अगर ऐसे खुलासेवार असली सिद्धांतोके
पाठ दिखलावेंगे तो हम सत्य बातको कभी इनकार नहीं करेंगे मगर
जड उपासक मुर्तीपुजकोंके जो सावज्याचार्य वगैरोंके बनाये हुवे टिका,
चुर्णी भाष्य, निर्युक्ति ग्रंथ प्रकर्ण वगैरोंकी साक्षी देवेंगे तो हम लोग
मंजुर कदापि नही करेंगे.

पुर्वपक्षीः—क्योंजी ! मुर्तीपुजकोंके आचार्य वगैरोंके पुर्ण सत्य लेख
क्यों नहीं मंजुर करते हो

उत्तरपक्षीः—खास मुर्तीपुजकोंकुं इनोके खास आचार्य वगैरोंके लेखों
का पुर्ण संदेह दुर नहीं हुवा तद हम लोग तो उन लेखोंको कैसे मंजुर
करेंगे.

पुर्वपक्षी—मेहेरबानी करके हमे दिखलाना चाहिये

उत्तरपक्षी—ह्रांजी अच्छी तरेस देखिये,

श्रीस्तुति परामर्श पृष्ट ९ ओली १९मी (जवाब) क्या ! तिर्थंकर गण धरोंके वचनोंसे भी भी पुरुषों की भलाई हुई आचरण नहीं हो गई ! हरगिज नहीं ! इसही ग्रंथके पृष्ट १२ ओली १७मी, (जवाब) अगर उस आचार्यका हुकम-मुवाबीक शास्त्रके हो तो-उसको शुसिरोधाम कुसुमकर मगर जन सिलाफ हुकम शास्त्रके कोई बात आचार्य फरमावे तो चेलेको फर्ज हैं उसका न-माने, साधुपणा अपनी कायाकी शुद्धि के लिये है—नकी—झुंटी—झंभे—हा—मिमानेके लिये

इसलिये मुर्तीपुजकोंके सससे पुर्ण सिद्ध हुवाके जो बात भी जैनके एकादस अंगादि माधिन और असली सिद्धांतोंमे होवे वो बात टिकादि ग्रंथ प्रकर्ण वगेरोंमे होवे तो प्रमाण की जाती है लेकिन असली सिद्धां- विरुद्ध जो कोइ बात टिकादि ग्रंथ प्रकर्ण वगेरोंमे होवे तो क्दापि [illegible] नी की जायगी इस वास्ते हम लोग मुर्तीजकोंके लेख मंजुर नहीं करते है

पुर्वपक्षी:—आपका फरमाना माकुल है

देखिये ! हमारे प्यारे पाठक गणको हुवे हुव ख्यालमे आये इसलिये एक दृष्टांत देके पिछे पाठ लिखेंगे, दृष्टांत निचे मुजब—

(दृष्टांत) देखिये ! हिंदका बादशाह विलायतमें निवास करता रहता है उसके खास वजीर है, और हिंदि वजीर है, पारलमेंट सभा है, हिंदका राज कारभार चलानेके वास्ते वाईसराय—वगेरे बडे बडे हुदेदार है, सिरस्तेदार वगेरे अहलेकार है, वकील बारिष्टर वगेरे है, ऊुर्री (पंच) है, कायदे किताबे है, दुधका दुध और पानीका पानी इंसाफ

कायदे सर कोर्ट इन्साफ कराते हे, मगर जिस वख्त कोर्ट ईन्साफ करणेके वास्ते इजलासपे दाखल होते हे उस वक्त कोई मनुष्यने वि- चाराके कोर्टको ईजलासपे दाखल नही होने देना, और कोर्टके बदले कोर्टका फोटु [प्रतिमा] ईजलासपे दाखल कर देना सो वो फोटु (प्रतिमा) कायदे सर इन्साफ करके जज्जमेंट सुना देवेगा, अगर कि सी मनुष्यने मोके सर कोर्टको अर्ज करके कोर्टका फोटु कोर्टके बैठने की खुडची उपर दाखल [धर दिया] कर दिया तो वो कोर्टका फोटु अर्थात प्रतिमा कायदेसर इन्साफ करके जज्जमेंट सुना सक्ता हे, कदा- पि नहीं, देखो ! द्रव्य कार्यभी फोटु अर्थात प्रतिमासे सिद्ध नहीं होता हे, तो भाव कार्य तो कहासे सिद्ध होवेगा.

गोर करनेका स्थान हें. कोर्ट हाजर हें. वकिल बालिष्टर हाजर हे. पच हाजर हें. कायदेकि कितावें हाजर हें वादि प्रतिवादी हाजर हें. कोर्ट कायदे सर इसाफ करके जजमेंट सुनाति हे. इतनि वातें प्रतक्ष प्रमाणमें हाजर होतेके सात ह्यापे फोटू अर्थात प्रतिमाकि क्या जरूरत हे ह्यापे प्रतिमाका किंचित मात्र समंध नही होना चाहीये. इसही वजेसे, भाव द्रष्टात मिलाते हें.

देखिये ! श्री जैनके चक्रवृति वादशाह त्रिलोकिनाथ वीतराग देवाधि देव श्री श्री श्री श्री श्री श्री मंदिर स्वामि माहाराज वगैरे तिर्थंकर देव, माहाविदे क्षेत्रोंमें विद्यमान विचरते हें. गणधर माहाराज मुख्य वजिर हें, हिंदके अर्थात भर्त क्षेत्रके वजिर सामान्य केवलि हें. पारलामेंट अर्थात धर्म सभा हे इस सभाके मत ज्ञानी सूर्त ज्ञानी अवध ज्ञानी मन पर्जव ज्ञानी वगैरे मेम्बर हें

हिंदका अर्थात भर्त क्षेत्रका धर्मराजका कारवार चलाने वाले धर्म वाइसराय आचार्य उपाध्याय वगैरे वडे वडे हुदेदार (अमल्दार) हें.

सामान्य साधु सिरस्तेदार वगैरे अहेलेकार हे बहु मुनि पंडित राज वकिल पाब्लिक वगैरे हे श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचीन असलि सिद्धांत हैं सो कायदेकि किताबें हैं, संवर निर्जरा रूप मुनी (पंच) हैं अब कर्म सो वादि हैं चिदानंद [जीव] प्रतिवादी हैं, तिर्थंकर महाराजके इजाजत रूप इजलासपे कार्ट दाखल होके, ज्ञान, दरशन, चारीत्रके अनुक्रम कायदे सर इंसाफ करके कोर्ट जजमेंट सुनाति हे

देखो ! सोचनका स्थान हे के, इस भर्त क्षेत्रमें आचार्य उपाध्यायरूप कोर्ट हाजर हे, समान्य साधु रूप अहेलेकार हाजर हे बहु मुनी पंडित रायरूप वकिल पाब्लिक हाजर हे, श्री जैनके असली सिद्धांतरूप कायदे की किताबें हाजर हे, सवर निर्जरारूप पंच हाजर हे, कर्मरूप वादी, और जीवरूप प्रतिवादी, हाजर हे, कोर्ट कायदेसर इन्साफ करके जजमेंट सुनाती हे इतनि बाते प्रत्यक्ष प्रमाणमें हाजर होनेके साथ, फोटु अर्थात प्रतिमाकी क्या जरुरत है आपे प्रतिमाका किंचित मात्र संबंध नहीं होना चाहिये अगर प्रतिमा संबंधी सर्व बाबा सत्य होव तो हम हमारे मुर्तीपुजक भाइ यो से पुछते है के आपके आचार्य वगैरोंने टिकादि ग्रंथ प्रकर्ण वगैरोंमें प्रतिमा संबंधी जो जो अधिकार विस्तार पूर्वक दाखल किया है उसका खुलासा हमारे निम्न लिखित लेखानुसार श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचिन ताड पत्रोमें लिखित असली सिद्धांतोंके मूल पाठसे आम सभामें सिद्ध करके दिखलाना चाहिये

नवीन और नकली नमुना रूप अति सरल भाष्यमें भाष्यमें पाठ दाखल किये हे, सो निम्न मुजब हे:—

—मंदिरकी आदि विषय—

अर्थात्—अहो भगवानजी जिन मंदिर शाश्वता है या नहीं

पाठः-किंभंते जिन मंदिरेणं सास भाव हवइ,

----प्रतिमाकी आदि विषय----

अर्थ -अहो भगवानजी जिन प्रतिमां सासवती हे या नहीं,

पाठः-किंभते जिन पडिमाण सासं मायं हवइ,

भावार्थः-अहो दिनदयाल तिन लोकमें जिन मंदिर जिन प्रतिमा अनादि कालसे सासवती हे तथा नही हे,

—जिन गुण आरोपण विषय—

अर्थः- अहो भगवानजी जिनराजके गुण जिनराजसे अनेरि व-स्तुमे डालनेसें समावेस होवेके नही,

पाठः-किंभते जिन गुणाणं जिन प्रतिकुलाणं द्वाणं मइ आरोपेण हवइ,

अर्थः-अहो भगवानजी जिनराजके गुण जिन प्रतिमामे डालनेसे प्रवेस होवे या नहीं,

पाठ -किंभते जिन गुणाणं जिन पडिमाण मइ आरोपेण हवइ.

अर्थः- अहो भगवानजी जिनराजके गुण जिन प्रतिमामें डालने से वो प्रतिमा जिन तुल्य होवे या नहीं,

पाठः-किंभते जिन गुणाण जिन पडिमाणं मइ आरोपेण करइ २त्ता जि न पडिमाण जिन तुलाण हवइ,

अर्थ -अहो भगवानजी जिन प्रतिमामें जिनराजके गुण डालनेसे क्या फल की प्राप्ति होती है,

पाठः-जिन पडिमाणं मइ जिन गुणाण आरोपेणं करइ२त्ता भंते किंफले.

सुरिमंत्र विषय

अर्थ अहो भगवानजी जिनप्रतिमा सुरिमंत्रको सुणति है या नहीं

पाठ किम्मते जिन पडिमाणं सुरिमंत्रेणं सुणइ१रता,

अर्थ-अहो भगवानजी जिन प्रतिमा सुरिमंत्रको अंगिकार करती है या नहीं

पाठ-किम्मते जिन पडिमाणं सुरिमंत्रेणं सद्दइ१रता

अर्थ अहो भगवानजी जिन प्रतिमाका सुरि मंत्र सुनानेसे जिन राम सुस्य होती है या नहीं

पाठ-किम्मंते जिन पडिमाणं सुरि मंत्रेणं भणावइ१रता जिन सुत्थणं हवइ.

अर्थ -अहो भगवानजी सुरि मंत्रकी कोणसे तिर्थंकरने परूपणा करी है

पाठ-किम्मंते सुरि मंत्रेणं केणइ तिर्थंकरणे पागरइ१रता

अर्थः-अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको सुरि मंत्र सुनानेवाला मनुष्य मात्र धर्माचार्य [गुरु] होता है, सुरिमंत्र सुणाणार्ये भी एक मातका । ग समझना चाहिये

पाठ-किम्मते सुरिमंत्रेणं जिण पडिमाणं भणावइ१रता तेनरास जिन पडिमा णं धम आयरियाण हावइ

अर्थ अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको सुरि मंत्र सुनानेसे क्या फल की प्राप्ति होती है

पाठ -जिन पडिमाणं सुरि मंत्रेणं भणावइ१रता भंते किंफले

भावार्थः-इसिये ! जैनके एकादश अंगादि प्राचिन असली सिद्धांतोंमे कहां भी तिथ्यम सुरि मंत्रका अधिकार नही है

सम्यक्त्व वगैरे भ्रष्ट विषय

अर्थः-अहो भगवानजी ज्ञान भ्रष्ट (ज्ञानसे भ्रष्ट) को वंदना न-मस्कार करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे,

पाठः-नाणं भटाणं वंदइ२त्ता नमंसइ२त्ता भंते किंफले,

अर्थः-अहो भगवानजी समकित भ्रष्टको वंदना वमस्कार करे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है,

पाठः-दंसणेणं भटाणं वंदइ२त्ता नमसइ२त्ता भंते किंफले,

अर्थः-अहो भगवानजी संजमसे भ्रष्टको वंदना नमस्कार करे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है,

पाठः-संजमेणं भटाणं वंदइ२त्ता नमंसइ२त्ता भंते किंफले,

अर्थः-अहो भगवानजी धर्मसे भ्रष्टको वंदना नमस्कार करे तो क्या फल की प्रप्ति होती है,

पाठः-धमेणं भटाणं वंदइ२त्ता नमसइ२त्ता भंते किंफले,

भावार्थ-देखिये ! ज्ञान दरसन (समकीत) चारित्रा और धर्म से जो कोई भ्रष्ट हो जावे तो उस मनुष्यको पाच गतिमेसे कोणसी ग-ति मिले और भवोका अंत करे के नही,

मिलाप विषय

अर्थः- अहो भगवानजी तिर्थकर तिर्थंकरके मिलाप होवेके नहीं

पाठः-किंभंते तिर्थकरेणं तिर्थंकरेणं समागमेणं हवइ,

भावार्थः-देखिये ! तिर्थकरसे तिर्थंकर गये कालमें मिले नहीं

वरतमान कालमें मिलते नही, और भरते कालमें मिलते नहीं फेर तिर्थंकर तिर्थंकर की उंच निच बैठक होती नहीं हे, लेकिन मुर्तीपुजक लोग तिथकरोंके अनेक प्रतिमाका एक मंदिरमें मिलाप कराते हे, और उंचे निचे आसणसे प्रतिमा की बैठक भी करते है, ये असली सिद्धांतोंसे विरुद्ध है,

कैद विषय

अथ-अहो भगवानजी तिर्थंकर देवको कोई मंदिसानेमें देवे या नहीं,

पाठ-किंभंते तिर्थेंग्गरे मंदिसामेणं हवइ,

भावार्थ-देखिये ! तिर्थंकर महाराज कोई कालमें किसीके मंदिरमें नहीं रहते है, मगर मुर्तीपुजक लोग जिन प्रतिमाका जिन गृह च कइ फरक तालेमे बंध करते है, ये भी एक आतकी कैद समझ-लिजिये

जिन मंदिर करण कराधण अनुमोदन विषय,

अर्थ-अहो भगवानजी सोनेमे चांदीमे रत्नोंमे पाषाणादिमे जिन मंदिर जिन प्रतिमा करे कराते करतेको भला जाणे और सावज दरखत देवे वा क्या फल की प्राप्ति होवे,

पाठ-पुढ विमइ हिरण्णमइ सोवनमइ रयणमइ जिन मंदिराणं जिन पडिमाण करइ वा करावेइ वा अनुमोदइ वा सावज्जे वाणि बागरइवा भंन किंफले,

भावार्थ-देखिये ! जिन मंदिर जिन प्रतिमा करवानेके वास्ते भारा नसिय सुज की साक्षी मुर्तीपुजक लोग देते हे लेकिन भारा म

शिथ सुत्रका जिर्ण उधार मुर्तीपुजकोंके आठ आचार्योंने किया हे, मगर इसही सुत्रमे मंदिर प्रतिमा करवाना कहा हे और इसही सुत्रके पांचवे अध्येनमें मंदिर प्रतिमा करवानेका निषेध भी किया हे सो पाठक वर्ग ने ख्याल रखना.

उपाश्रा वगैरे करण करावण अनुमोदन

--विषय--

अर्थः-अहो भगवानजी आचार्य उपाध्याय साधु यति संवेगी वगैरोके वास्ते स्थानक पोषध शाल उपाश्रा धर्म शाला वगैरे करे करावे करतेंको भला जाणे तथा सावज उपदेश देवे तो क्या फल की प्राप्ति होवे,

पाठः-आयरियाणं उवझायाण समणाणं यतियाण संवेगीयाणं पिताम्बरियाण कज्जेण थानकेणं पोशव शोलेणं उवासयेण धमशालेणं करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता सावज वाणी वागरइ२त्ता भंते किंफले

भावार्थः-देखिये! मुनिको तथा श्रावक लोगोंको भी इत्यादि कारणोके वास्ते, छकायकी हिंसा होवे ऐसी सावज भाष्या बोल्ने की मनाइ हे,

सावज उपदेश विषय

अर्थः-अहो भगवानजी आचार्य उपाध्याय साधु श्रावक यति संवेगी पिताम्बरी दिगाम्बरी वगैरे भव जीव धर्म कार्यके वास्ते अनेक प्रकारसे अदेश उपदेश अर्थात अमुक काम करो इसे अदेश वचन कहेते है और अमुक काम करणेसे अमुक फायदा होवेगा इसे उपदेश वच-

न कहेते है करति पसत सावज वाणी अर्थात जिन वचन कहेनेसे छकाय जीवोंकी हाणी होवे ऐसे सावज वचन कहते है बोले मबस कर तो क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठ-आयरियाणं उवझायाणं समणाणं समणोपासकाणं यतियाणं संवेगी याणं सित्ताम्बरीयाणं दिगाम्बरीयाण भवजीवाण अम्मरूनाणं अण्णगाविहेण भा- दराण उपदशेणं निमित्तणं सावमं वाणि बागरइरत्ता मंते किफळे

भावार्थ-देखिये ! धर्मके वास्ते छकाय जीवोंको दुःख होवे तथा छकाय जीवोंके प्राणकी हाणी होवे ऐसी भाषा मुनि वर्गको तथा श्रा- वक वर्गको बोलना नही दुसरके पाससे बुलमाना नहीं बोलनेको अच्छा भी समजना नहीं ऐसा श्री वीर परमात्माका सक्त हुकम है,

स्नान विषय

अर्थ-अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको कचे पाणीस तथा पके पाणीसे स्नान करावे करातेको भला जाणे तो क्या फल की प्राप्ति होवे

पाठः-जिन पडिमाणं सचित्तणं अचित्तेणं अंबुणं पखालेणं करावइरत्ता अ-माणइरत्ता मंते किफळे

अर्थः-अहो भगवानजी सुरज कुंडमें तथा सेत्रुंजी नदीमें स्ना- न करे करावे करतेको भला (अच्छा) समजे तो क्या फलकी प्राप्ति होता है,

पाठः-सुरज कुंडि सेत्रुंजी नदीण स्नाणं करइरत्ता करावइरत्ता अनुमो- दइरत्ता भंते किफळे

अर्थः-अहो भगवानजी आचार्य उपाध्याय साधु यति संवेगी पिताम्बरी स्नान करे करावे करतेको भला जाणे (अच्छा) समजे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठ;-आयरियाण उवझायाण समणाणं यतियाण संवेगीयाण पितामरि-याण स्नानेण करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भते किंभले.

अर्थ;-अहो भगवानजी अन्य मतिके गगादि अनेक तिर्थ है उन तिर्थोका सम द्रष्टी स्नान यात्रा करे करावे करतेको भला समझे [जाणे] तो क्या फल की प्राप्ति होती है

पाठ,-गगाणं जमुनाण जावअणेग विहेण वालतियेण समदिठीण स्नानेणं करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भते किंफले.

भावार्थ -देखिये ! तिर्थंकर माहाराज तो सदासर्वदा निर्मल और पवित्र है, तो फेर उन सर्वोत्तम पुरुषोंको स्नान करनेकी क्या जरुरत है, और वो सर्वोत्तम पुरुष तिन कालमें भी कदापि स्नान नही करते है तो फेर उनोकी प्रतिमाको स्नान करवाना ये भी गैर मुनासिब की वात हे और जैन मुनिजनोको जैनके असली सिद्धांतोंमे स्नान करने की साफ (सक्त) मनाई है ओर यति सवेगी पितामरी तिर्थंकरोंका हुक्म तोडके स्नान करते है और सूरज कुंड वगैरोंमें स्नान करनेसे कल्याण होता है, ऐसा लेख जैनके असली सिद्धातोंमें कोई भी ठिका-णेपे दाखल किया हुवा नहीं है, मगर इनोके सावजा चार्योंने जैनके असली सिद्धांतोंके विरुद्ध अपनी वनाई हुई टिकादी ग्रथ प्रकर्ण वगैरों में ये अधिकार दाखल किया है, और अन्य मतके गंगादि तिर्थोको जैनियोने मान्य करना ऐसा जैनके असली सिद्धांतोमे नहीं कहा है, मगर मुर्तीपुजकोंने मान्य किया है, इसका खुलासा पछातमे हम कर आये है, ये वात पाठक वर्गने अवस्य ध्यानमे रखना चाहिये देखिये मुर्तीपुजकोंके जड उपासक सावज्याचार्य [उन्हे ये पुर्वाचार्य कहते है] वगैरोंने आपने इस भवके स्वार्थके वास्ते सर्वोत्तम केवली पुरुषोको वडा भारी लंछन लगाया है, ऐसे उत्तमोत्तम महा पवित्र पुरुषोंको लांछन

लगाये सिवाय इस मनका स्वार्थी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता है, तब परम पवित्र पुरुषोंको लंछन अवश्य लगाना पडता है, देखो ! सेत्रुंजय माहा तमके प्रथम उध्धार की गाथा निचे मुजब,

॥ गाथा ॥

कवलीयांके स्नान निमत, इसान इंद्र आनीसु पवित्र ॥
नदी शत्रुंजी सुहामणी, मरें दीठी कौतुक भणी ॥४॥

दखिये ! केवली भगवानको कचे जलका संघट भी (छीवे) नहीं करते है, अगर कोइ समान साधु जो कच जलको संघट (छीमा) किया हो तो उस दंड देते है या फेर आप खुद शत्रुंजे नदीमें जाके स्नान कैसे करते होवेंगे जब ऐसी बात हो जाव तब तो एक स्याद्य की बात हुई (पत) पर उपदेश कुशला, दृश्यंते बहुव नरा, स्वभाव मनुवृतव, सहंसे सुदुर्लभा ॥१॥ परन्तु एसी बात केवली भगवान कदापि स्विकार करेंगे नहीं, अगर उनके जरिये केवली भगवान पवित्र होवेंगे तब तो केवली भगवान अपवित्र एसी पदवी मिलेगी य बात तो कदापि हान वाली नही है, उन [illegible] पर्वोंका तो स्नान करनकी कोइ भी बजस जरुरत नहीं है स्नान को तो अपवित्र मलीन और अधम (नापाक) पुरुष अंगिकार करेगा केवली भगवानतो सदासवदा परम पवित्र और निमल और पाक है तब वे पुरुष स्नानके द्वारा सक पवित्र कायकु कहलावगे य तो स्याद्य करो तुमार अज्ञानियोंके सदबम केवली भगवानको अपवित्र की पदवी मिलती है अगर तुमारे [illegible] कौरोंसे केवली भगवान अपवित्र कदापि नहीं ठेरगे सुन [illegible] कर और केवली भगवानकु स्नानार्थ (स्नानके वास्ते) इत्यादिकम [illegible] भी नदि कहांसे भी लाइ नही है, जो तुमारे सेत्रुंजय माहातम बगे रोंमे केवली भगवानके स्नानमा अभिप्राय बता है और नदी लानेका अभि

कार धरा हे, वो सर्व साफ अज्ञान पुरुषोंने खोटा भग हे. किंचित मात्र सत्य नही हे, साफ खोटा है. तुमारे सावज्या चार्योके गपोडे ज्ञात (पटित) पुरुष कदापि मजुर नही करेगे, देखिये ! ब्रम्हचारि पुरुपोंको अन्य मतमे भी स्नान करने की मनाई हे.

श्लोक

सूपमशेया नोवस्त्रं, तांबोल स्नानंसे मंडलं ॥
काष्टदंतं सुगंधेच, ब्रम्हचाश दोपनं ॥१॥

भावार्थ-देखिये ! मुलाम (नरम) बिछानेपे सोना नही, ऐसे भारी वस्त्र नही पहेननाके जिससे अपने शरिरकी सोभा पुर्ण हो के, वृतको धका पहोचे (शरिरको आरामि होके इंद्रीयोका विकार बढके वृतको धका पहोचे ऐसे नरम बिछाने तथा ऐसे भारि वस्त्र ब्रम्हचारी पुरुषोने अंगिकार करना नही) मुखकि पुष्टाइ तथा सोभा निमित पान सुपारी वगेरे मुखवास खाना नही स्नान करना नही तिलक छापा करना नही, निब वगेरे की लकडीसे दातण (मुख धोना नही) करना नही, सुगधकी (अतर तेल वगेरे) कोई भी वस्तु सेवन करना नही, इत्यादि दोषोंसे निवर्तमान [दुर] होवे उसे ब्रम्हचारी पुरुश कहना चाहिये, अन्यथा पुरुपोको ब्रम्हचारी नहीं कहना चाहिये.

समीक्षाः-देखिये ! अन्य मतके शास्त्रकारोने भी ब्रम्हचारी पुरुषोंको स्नान करना निषेध किया हे, तो फेर जैन केसा स्विकार करेगा, तो क्या फेर केवली पुरुष बिभचारी थे, सो सेत्रुजय नदीमें स्नान करके पवित्र होते थे, कदापि नहीं जो पुरुष जलके जरिये पवित्र होना चाहना है, तो फेर उन पुरुषोंने सदासर्वदा (हमेस) जलके अदरही निवास [मछीवत] करके निमग्न रहना चाहिये तो उनोका कल्याण तुर्तही हो जावेगा, तो

फर उनोक प मय स्पयादि किया करने की कोईभी जरुरत नहीं है और संसारी कार्य भी करनेकी कोइ भी जरुरत नही है, कारण हमस मनमें पद रहे (मन मनुष्यवन) गे ता उनाके गुणा (दोषु) कार्योकी सिद्धि कौरन होवेगी भेदाश्रयका स्थान है के वो कम अवलके पुरुष मनके बाहेर निवास करते हे हाय ! अफसोस फेरभी दखिये। श्री जैनके भमकी और प्राचिन सिद्धांतोमें जैन साधुको स्नान करन की सक्त मनाइ है, अगर कोइ साधु स्नान करे तो उसे दंड लेना पडता है अगर वो साधु दंड नाही लेवे तो संप्रदायसे बाहेर निकाला जाता हे, एसी यदोबस्त समान्य साधु के वास्ते केवली भगवान शासन करी हे, तो फेर केवली भगवान खुद स्नान करेगे, तब तो केवली भगवान अन्याइ ठहरेंगे मगर ये बात सपनांतरम भी होने वाली नही हे के केवली भगवान स्नान करे, कारण उन सर्वोत्तम पुरुषोंका शरीर सदा परम पवित्र और निर्मल है, इस वास्ते केवली भगवान स्नान कदापि नहीं करते है, अस्तु, देखो। एक कविने क्या कहा है

दोहा

संवदास संसारमें सारि बातां सोरा,
संवदास संसारमें, इण गप्पा आगे दोरा ॥१॥

अर्थ—इस दुनियामें सर्व बातोंका इलाज हे, मगर गप्पोंका इलाज कोईभी स्थानपर नहीं मिल सकता है अर्थात लुकमान हकीमके—या वर्तमानमें शिक्षा सर्जनके पास भी नही है इसलिये केवली भगवानके स्नानार्थ [स्नान करण के वास्ते] गेंगुमादि नदी क्षीर इन्द्र महाराजने लाइ, ये केस सुर्वीष् कोंका सफ माया है अर्थात पुर्ण बहादुरीका गपोडा है सो हाल [ज्ञानी] पुरुषोंने समज लेना चाहिये, इसमें किंचित मात्र शंसय समझना नही

धम अपराधि मारण विषय-

अर्थः-अहो भगवानजी धर्म अपराधीको मारे मरावे मारतेको भला (अच्छा) समजे तो क्या फलकी प्राप्ति होती हे,

पाठः-धम्म अपराधिण, हणइ२त्ता, हणावइ२त्ता, अनुमोदइ२त्ता भते किंफले.

देखिये ! मुर्तीपुजक लोग कहते हे के धर्म अपराधीको मारणमें किंचित मात्रभी दोष नहीं हे और इन मुर्तीपुजकोंके जो पुर्वाचार्य वगैरे हुवे हे, उनोकी बनाई हुई "पुलाकनियठकी टिका और संधाचार की टिका" मे भी लिखा हे के धर्म अपराधिको मारना वो पाठ निचे मुजब

(गाथा)

सघाइयाण कजे, चुनिजाच कवट्टीसेनं ॥
पीक्कविउ मुणी महप्पा, पुत्तायलध्धी संपन्नो ॥

तात्पर्यः-देखिये ! धर्मकी तथा संघकी नास्ति होती होवे तो चक्रवृतिकी सेन्या) चौरासी लाख हस्ती, चौरासी लाख घोडा चौरासी लाख रथ, छिनुं करोड पायदल सर्व इतनी फौज चक्रवृतिके मामुली रहती थीं) ईतनी जवर दस्त फौजका चुरा कर डालना, और विष्णु कुमारकी तोरसे धर्म अपराधीको मारनेमे किंचित मात्र भी दोष नहीं हैं, [धर्मनिमित्त विष्णु कुमारने नमुचि ब्राम्हणको मारा ये लेख श्री जैनके असली सिद्धातोंमे नहीं हे,]

फेर भी देखिये! मुर्तीपुजकोंके महा धर्मतमा जो पुर्वाचार्य वगैरे हुवे हे उन अज्ञात पुरुषोंने चवदासो चमालीस १४४४ वोधियोंको

होम डाले है, सोचो मनुष्य मारणे सरिसा पुर्ण धर्म काम सो एका कि कसाई भी अंगिकार नही करेगा परंतु मुर्तीपुजकोंके जो पुर्ण धर्मा त्मा पुर्वाचार्य हुवे है उन अज्ञात पुरुषोंने तो तन मन और विधाके बलसे पुरा हर्षके साथ मनुष्य मारनेका दया धर्म जाहिरमें स्विकार किया है, धन्यवाद है उन पुरुषोंकोक अधोगतिके दरवाजे स्वताके वास्ते खुले किये इससे फेर ज्यादा बाहादुरिका काम ईस दुनियामें क्या हावा होवेगा

समाधान—देखिये ! हमारे प्यारे मुर्तीपुजक लोग कैसे सचे दया धर्मी है और सत्य धेनि है के हम लोग इन मुर्तीपुजकोकी कहांतक तारीफ ? फेर भी मुर्तीपुजक लोग अपना कपोल कल्पीत पमड कायम रखनेके – हियेमें सत्य शिरोमणिपना टिकवानेके वास्ते खाली गाल धमाल ह के ढुंढक (श्री जैन श्वेताम्बर साधु मार्गी धर्म) लोग केवल – सुन्य पुकार करते है, अहो हमारे भाइ मित्रो तुमारी म मन मात्र स्वरुप उपरोक्त खुलासा कर आये है, सो न्यास कर ा अज्ञात पुरुषों तुमारी सच्ची दयाका सरल कैसा बखान है क भी अनेक आसकी और प्राचिन तिर्थंकरोंके खास फरमाये हुये सिद्धांतों की भी तावत नही है के तुमारी मनुष्य मारणे सरिखि सच्ची दयाका किंचित मात्र भी अधिकार अंगिकार कर सके, अहो हमार बालमित्रा मुर्तीपुजकों तुमारी मनुष्य मारण सरिखि सच्ची दया की भास्ति करन की तो श्री वीर परमात्माके फरमाये हुव अमुलि सिद्धांता की तो पुर्ण मजबुत नाकर है क अहा हमारे बालमित्रो मुर्तीपुजक लोग तुमारे जो पुर्ण सत्य वादि पुर्वाचार्य हुव है उनोकि ठहराइ हुइ मनुष्य मारन सरिखि सच्ची दयाको पुरा रितिसे तिर्थंकरोके वचनोसे विरोधी (खोटी) साफ साफ तोरसे मुकासबार ठहरा सक्ते है, इस बातमें किंचित मात्र फरक समजना नहीं फेर

। देखिये ! गौसाला खास श्री वीर प्रभुका खुब तोरसे अपराधि था फेर मोसर्णमे दो दोय मुनियोकी तेजुलेश्यासे प्रभुके समक्ष [सामने] घात कर ाली तो भी प्रभुने गौसालाको मारा नही और दुसरेके पाससे हुक्म देके रवाया नही तो क्या प्रभु असमर्थ थे.

पुर्वपक्षी:—अजी भाई वीर प्रभु तो वितरागी पुरुष थे इस वास्ते न्होने गौसालाको मारा नहीं और दुसरेको भी मारनेका हुक्म दिया हीं है.

उत्तरपक्षी:—माहासयजी ! श्री वीर प्रभुने धर्म अपराधि को मार डालना ऐसा छदमस्तको कोई भी श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोमे हुक्म फरमाया होवे तो कृपाके साथ दिखलाना चाहिये.

अगर जो धर्म अपराधिको मारनेमे दोष नहीं होता तो श्री वीर प्रभु बेशक गौसालाको मारते अगर दुसरेके पाससे मरवाते मगर प्राणि मात्रकी घात अर्थात जानसे मारनेसे दुर्गति (खोटी गति—दोजक) मिलति है, इस वास्ते प्रभुने गौसालापे दया भाव रखा.

तात्पर्य—देखिये ! धर्म निमित्त (धर्मके वास्ते) कोई भी जीवक किंवा धर्म अपराधिको मारना नहीं दुसरेके पाससे मरवाना नही का दुसरा मारता होवे उसे अच्छा (भला) समजना नहीं ये असली जैन धर्मका रहस्य [मतलब] हे सो हमारे पाठक वर्गने पुर्ण ख्यालमें रखना चाहिये, देखो ढुंढीयोंका दया दयाका सच्चा पुकार श्री जैनके असली प्राचिन सिद्धांतोंके आधारसे खुब तोरसे सिद्ध हुवा

—अंगिया विषय—

अर्थ:—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके सचित फुलकी अंगिया रचे

तो क्या फलकी प्राप्ति होवी, १

पाठः—जिन पडिमार्णं सचितं कुसम मइ अंगियार्णं रचइरत्ता भंते किंफले ?

अर्थः—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके केशरकी अंगीया रचे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे २

पाठः—जिन पडिमार्णं केशरमइ अंगीयार्णं रचइरत्ता भंते किंफले

अर्थः—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके कस्तुरि की अंगिया रचे तो क्या फल की प्राप्ति होवे ३

पाठ—जिन पडिमार्णं कस्तुरिमइ अंगियार्ण रचइरत्ता भंते किंफले ?

अर्थः—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके सुवर्ण कि अंगिया रचे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ४

पाठ—जिन पडिमार्णं सोवण्णमइ अंगियार्णं रचइरत्ता भंते किंफले ५

— भगवानजी जिन प्रतिमाके चांदि कि अंगिया रचे तो

मइ अंगियाण रचइरत्ता भंते किंफले ६

न प्रतिमाके रत्नोकी अंगिया रचे तो क्या फलकी प्राप्ति

पाठः—जिन पडिमाण रयणम याण रचइरत्ता भंते किंफले ७

अर्थ—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके अनेक प्रकारके सचित द्रव्य अचित द्रव्य मिश्र द्रव्यसे अंगिया रचे पुसपके पाससे रचावे रचता को अच्छा [भला] समझे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ७

पाठः—जिन पडिमार्णं अनेगविहर्णं सचितेर्णं दवार्णं अचितेर्णं दवार्णं

मिसेणं दवाणं अनेगविहेणं अंगिआणं रचइरत्ता रचावईरत्ता अनुमोदइ रत्ता भंते किंफले ७

भावार्थः—देखिये। इन्द्रादिक देवोंने तथा चक्रवृति वासुदेव प्रति वासुदेव राम (बलदेव) राजा महाराजा किंवा और भी दुसरे श्रावक वगेरोंने तिर्थकरोंके अंगीया रचि नहीं दुसरेके पाससे रचवाई नही और रचतेको भला पण समजा नही सबब इस दुनियामें ऐसी वस्तु कोईभी नही हे के तिर्थकरोंके शरिरकि प्रभाकांति को ढाकके अपनि प्रभा कांतिका तेज आगे बढावे जब ऐसी वस्तु इस दुनियामें हेवि नहीं तो फेर अंगीया रचनेकि कोई जरुरत भी रही नहीं हे, मगर मुर्तीपुजक लोग जिनराजकि प्रतिमाको जिनराज तुल्य समजते है. और इस दुनियामें जिनराजकि प्रतिमाको अलोकिक की ओपमा देते है तो फेर जिन प्रतिमाके अगीया रचके जिन प्रतिमाको सुसोभित करते है, सोचो अगियाके जरिये जिन प्रतिमाको सोभित करते है, तब तो जिन प्रतिमा जिनराज तुल्य कहा रही जब जिनराज तुल्य जिन प्रतिमा नही रही तो फेर जिन प्रतिमा वद वा पूजा वा योग नही है. अर्थात जिन प्रतिमा अवंदनिक अपूजनिक है, देखो। सिद्धांतोंके न्यायसे जिन प्रतिमा अवंदनीक है, ऐसा खुब तोरसे सिद्ध हुवा.

----पुजा प्रतिष्ठा विषय----

अहो भगवानजी जिन प्रतिमाकी पाच प्रकारकि नव प्रकारकि, सतरा प्रकारकी सत्ताविस प्रकारकि जब अनेक प्रकार कि पूजा प्रतिष्टा करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फल कि प्राप्ति होवे १

पाठः—जिन पडिमाणं पंचविहेणं नवविहेणं सत्तरविहेण सत्तावीस विहेणं जाव अनेक विहेणं पुयाणं प्रतिष्टाणं करइरत्ता करावइरत्ता अनुमोदइरत्ता भंते किंफले १

वासुदेव राम (वल्देव) वगैरे राजा माहाराजाने किंवा अन्य दुसरे अनेक श्रावकोने तिर्थकरों की किंवा तिर्थकरोंकी प्रतिमाकी सचित अचित मिश्र द्रव्योंसे पुजा प्रतिष्ठा स्वत करि नही करदाइ नही करते को अछी भी समजे नही सबब तिंर्थकरोंने जातीअभिमान कुलअभिमान वल, अभिमान रुप अभिमान पद अभिमान वगैरे के जिससे कर्म बंधनेका काम होवे ऐसे सर्व कार्योंका नास करके त्यागी हो गये हे, और उन सर्वोत्तम पुरुषोने कर्मोंका क्षय करके वीतराग हो गये हे, वो सर्वोतम पुरुष ऐसे अलोकीक पदवीके धारक होके वो सर्वोत्तम पुरुष मन वचन कायासे भी किंचित मात्र भी द्रव्य पुजा प्रतिष्ठा की स्वत से वांछा नही करते हे और दुसरेको करनेका उपदेश देते भी नहीं हे, और जो कोई द्रव्य पुजा की वांछा करते है उसे अछा भी नही समजते हे, ह्यांपे गौर करनेका स्थान हैं के ऐसे माहा त्यागी वैरागी सर्वोत्तम पुरुषोंको ऐसा कोन माहा कर्म चंडाल हे, सो द्रव्य पुजा प्रतिष्टाका कलंक लगावेगा, अतःएव तिर्थकरोंकी द्रव्य पुजा करना एभी एक माहा त्यागी वैरागी पुरुषोंको भोगी करनेका स्थान हे, ऐसे कुकार्य करने वालो की अखिरमें गति कैसी सुधरेगी देखो! ऐसी साफ साफ जैन सिद्धांतोंमे खुले अधिकार होते हुवे भी मुर्तीपुजक लोग जिन प्रतिमा-को जिनराज तुल्य समज करके सचितादि द्रव्योंसे द्रव्य पुजा कैसे करते है, जिन प्रतिमाकी सचितादि द्रव्योंसे पुजा करना ये भी एक अयोग्य वात हे द्रव्य पुजाके वारेमें ह्यांपे एक छोटासा द्रष्टांत देके पीछे अधिकार खतम करेगे.

द्रष्टांतः—देखिये! एक नग्रके विषय एक समयकी वात हे के एक व्राम्हण देव पुजा करनेके वास्ते तुलछी दल तोडने लगा तब तो तुलछीका छाड धुजने लगा इतनेमे एक देवता ह्यांपे आ पहोचा, तुलछी दल तोडतां

जीवोका प्राण छुटेगा नही ये आपने निश्चे समज लेना.

देखिये ! देवताका उपदेश ब्राम्हणको लागु हुवा मगर श्री वीत-राग देवाधिदेव तिर्थकरोंके निर्दोष दया संयुक्त अमोघ धारारुप वचनामृतका उपदेश हमारे बाल्भ्रात गण मुर्तीपुजकोंको लागु अर्थात असर नही करता हैं ये भी एक खेदाश्चर्यका स्थान है, मगर थांपे सहेज नवाल होनेकी जगह है, के अतःएव हमारे प्यारे मुर्तीपुजक लोग अनेक प्रकारकी वनसपतीके पत्र फल फुल वगेरे तोडके जिन प्रतिमाको चढाते है और इसमे अपनी आतम सिद्धि और आत्माका कल्याण भी मानते है, तो फेर वृक्षोंके पत्र फल फुल वगैरोंके बदले अपने लडका लडकी (बेटा बेटी) क्यों नही चढाते है. अगर वृक्षोंके पत्र फल फुल वगैरोंके बदले अपने अंग जात पुत्र पुत्री चढा देवे तो उनोको इसही भवमें मोक्षकी प्राप्ति हो जावे (मिलजावे) इस बातमें किंचित मात्र फर्क समजना नही, मगर उनोके बेटा बेटी उनोको पुर्ण प्यारे है, इस वास्ते अपने बेटा बेटी को बचाके बिचारे वनस्पती वगैरे गरीब जीवों के प्राण घात करके बडे भारी आनदके साथ चढाते है, लेकिन ये बात श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंसे साफ बरखलाप (विरुद्ध) है ये निश्चे समजना चाहिये और मुर्तीपुजकोंका ये कार्य करना भी पुर्ण अयोग्य है,

अंगलुहण विषय.

अर्थः—अहो भगवानजी जिन प्रतिमाका अग लुहण करे करावे करते को भला जाणे तो क्या फल की प्राप्ति होवे,

पाठ—जिन, पडिमाणं अंग लुहेण करइत्ता, करावईत्ता अनुमोदई त्ता भंते किफले,

लोग जिन प्रतिमाको आभरण चढाते है ये अयोग्य है और दिगम्बरी जिन प्रतिमाको आभरण नही चटाते है तो अब सचे किसको समजना इस परसे दोनुको झुटे समजना चाहिये.

जल यात्रा विषय.

अर्थः- अहो भगवानजी जल यात्रा करे करावे करते को भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है।१।

पाठ – जल यात्राणं करइत्ता करावइत्ता अनुमोदइत्ता भते किफले।२।

भावार्थ – देखिये! पर्युसण वगैरोमें चार आदमी कपडा पकड लेते है उस कपडेके निचे यति, संवेगी, पिताम्बरी वगैरे साथ गाजे वाजेसे शहरमे फिरनेको जाते है इसे मुर्तीपुजक लोग जल यात्रा कहते है (जल यात्राके मत्र) चीदावद संवेगी कृत, 'स्याद्वा दानुभव रत्नाकर' किताबमें चतुर्थ प्रश्नका उत्तर—जैन मत—वर्णनमें प्रष्ट २३० वां में लेख है.

अव्वल—जलका मंत्र कहेते है [मत्र] ॐ आपो, दप काया, एकेन्द्रीया, जीव, निरवद्या, ॥ अर्हत्पुजाया, निर्व्यथा, सतुनिष्पापा : सतु सद्गतय संतु, नमोस्तु संघट्टनहिंसापा, पमर्ह, दर्चने:—इस मत्र से पाणी मत्रके निष्पाप करना चाहिये,—

दुय्यम—पुष्प, फल, पात्रका मंत्र कहते है—(मंत्र) ॐ वनस्पतयो वनस्पति काया, एकेन्द्रीया, जीवा, निरवद्या, अर्हत्पुजाया, निर्व्यथा सतु निष्पापा सतु, सद्गतय संतु, नमोस्तु, संघट्टन, हिंसा पापमर्ह दर्चने, ॥ इस मंत्रसे पुष्प, फल, पत्र मंत्रके निष्पाप किजे,

अर्थः- अपाके एकेन्द्री–जलके जीव–अर्हतपुजायाके जिनराजकी

ति उक्त मंत्रोंसे फोरन कर लिजीये. उक्त बात किस तोरसे बनी है सो ख्याल कीजीये.

(मिसलन) जैसे यवन लोग—कलमां पढाके बकरेको हलाल करते हैं, और फरमान करते है के, 'ये वहिशतमे गया' ईस शिवाय हवन करने वाले लोग वेदके मंत्र पढके बकरा वगैरे हवनमे होमके कहते है के ये वैकुंठमे गया, ऐसे करनेसे वैकुंठ—या—बहिशत मिल जावेगा, तो दुसरी तकलिफ कोन उठावेगा, ये बाते सारी खिलाप है, इसही वजेसे हमारे मुर्तीपुजक अज्ञात भ्रातृगण सकपोल मन कल्पित नविन और नकलि मंत्र बना करके गरिब विचारे अनाथ जीवोकी सद्गति करते है, ये कैसी आश्चर्यकी वार्ता है सो ज्ञात पुरुषोंने विचार कर लेना चाहिये,

(प्रश्न) मुर्तीपुजकोकी तर्फसे जलका—या—वनस्पति निष्पाप करनेके मन्त्र छपके जाहिर हुवे है, उन मन्त्रोंको श्री जैनके एकादस अगोंके साथ मुकाबला सभामें करके दिखाना चाहिये, तद उक्त मन्त्र सत्य हैं, ऐसा समजनेमें आवेगा.

—बारंबार जन्म विषय—.

अर्थः— अहो भगवानजी दरसाल तिर्थंकर भगवानका जन्म करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होती हे

पाठः— संवत्सरेणं सवत्सरेणं तिर्थंकराण जमेण करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भते किंफले

भावार्थः—देखिये ! तिर्थंकरे माहाराज मोक्ष पधार गये हे, मगर मुर्तीपूजक लोग दरसाल पजुसणमे विर प्रभुका जन्म करवाते है, लेकिन वीर

ति उक्त मंत्रोंसे फोरन कर लिजीये. उक्त वात किस तोरसे वनी हे सो ख्याल कीजीये.

(मिसलन) जैसे यवन लोग—कलमां पढाके वकरेको हलाल करते हैं, और फरमान करते हे के, 'ये वहिशतमे गया' ईस शिवाय हवन करने वाले लोग वेदके मंत्र पढके वकरा वगेरे हवनमे होमके कहते हे के ये वैकुंठमे गया, ऐसे करनेसे वैकुठ—या—वहिशत मिल जावेगा, तो दुसरी तकलिफ कोन उठावेगा, ये वाते सारी खिलाप हे, इसही वजेसे हमारे मुर्तीपुजक अज्ञात भ्रातृगण सकपोल मन कल्पित नविन और नकलि मत्र वना करके गरिव विचारे अनाथ जीवोंकी सग्दति करते हे, ये कैसी आश्चर्यकी वार्ता हे सो ज्ञात पुरुषोंने विचार कर लेना चाहिये,

(प्रश्न) मुर्तीपुजकोकी तर्फसे जलका—या—वनस्पति निष्पाप करनेके मत्र छपके जाहिर हुवे हे, उन मत्रोंको श्री जैनके एकादस अगोके साथ मुकावला सभामें करके दिखाना चाहिये, तव उक्त मत्र सत्य हैं, ऐसा समजनेमें आवेगा.

—वारंवार जन्म विषय—

अर्थः— अहो भगवानजी दरसाल तिर्थंकर भगवानका जन्म करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होती हे

पाठः— संवत्सरेणं संवत्सरेणं तिर्थंकराण जमेणं करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते किफले

भावार्थः—देखिये! तिर्थंकरे माहाराज मोक्ष पधार गये हे, मगर मुर्तीपुजक लोग दरसाल पजुसणमे विर प्रभुका जन्म करवाते हे, लेकिन वीर

ति उक्त मंत्रोंसे फोरन कर लिजीये. उक्त बात किस तोरसे बनी है सो ख्याल कीजीये.

(मिसलन) जैसे यवन लोग—कल्मां पढके बकरेको हलाल करते हैं, और फरमान करते हे के, 'ये बहिश्तमे गया' ईस शिवाय हवन करने वाले लोग वेदके मंत्र पढके बकरा वगेरे हवनमे होमके कहते हे के ये वैकुंठमे गया, ऐसे करनेसे वैकुंठ—या—बहिश्त मिल जावेगा, तो दुसरी तकलिफ कोन उठावेगा, ये बाते सारी खिलाप हे, इसही वजेसे हमारे मुर्तीपुजक अज्ञात भ्रातृगण सकपोल मन कल्पित नविन और नकलि मंत्र बना करके गरिब बिचारे अनाथ जीवोंकी दुर्गति करते हे, ये कैसी आश्चर्यकी वार्ता हे सो ज्ञात पुरुषोंने विचार कर लेना चाहिये,

(प्रश्न) मुर्तीपुजकोकी तर्फसे जलका—या—वनस्पति निष्पाप करनेके मंत्र छपके जाहिर हुवे हे, उन मंत्रोंको श्री जैनके एकादश अंगोके साथ मुकाबला सभामें करके दिखाना चाहिये, तब उक्त मंत्र सत्य हैं, ऐसा समजनेमें आवेगा.

—वारंवार जन्म विषय—

अर्थः— अहो भगवानजी दरसाल तिर्थंकर भगवानका जन्म करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होती हे

पाठः— संवत्सरेणं संवत्सरेणं तिर्थंकराण जमेणं करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते किंफले

भावार्थः—देखिये ! तिर्थंकर माहाराज मोक्ष पधार गये हे, मगर मुर्तीपुजक लोग दरसाल पजुसणमे विर प्रभुका जन्म करवाते हे, लेकिन वीर

ति उक्त मंत्रोंसे फोरन कर लिजीये. उक्त वात किस तोरसे वनी है सो ख्याल कीजीये.

(मिसलन) जैसे यवन लोग—कलमां पढाके वकरेको हलाल करते हैं, और फरमान करते है के, 'ये वहिश्तमे गया' ईस शिवाय हवन करने वाले लोग वेदके मंत्र पढके वकरा वगैरे हवनमे होमके कहते है के ये वैकुंठमे गया, ऐसे करनेसे वैकुंठ—या—वहिश्त मिल जावेगा, तो दुसरी तकलिफ कोन उठावेगा, ये वाते सारी खिलाप है, इसही वजेसे हमारे मुर्तीपुजक अज्ञात भ्रातृगण सकपोल मन कल्पित नविन और नकलि मंत्र वना करके गरिव विचारे अनाथ जीवोंकी सद्गति करते है, ये कैसी आश्चर्यकी वार्ता है सो ज्ञात पुरुषोंने विचार करना चाहिये,

(प्रश्न) मुर्तीपुजकोकी तर्फसे जलका—या—वनस्पति निष्पाप करनेके मंत्र छपके जाहिर हुवे है, उन मंत्रोंको श्री जैनके एकादस अंगोके साथ मुकावला सभामें करके दिखाना चाहिये, तव उक्त मंत्र सत्य हैं, ऐसा समजनेमें आवेगा.

—वारंवार जन्म विषय—

अर्थः— अहो भगवानजी दरसाल तिर्थंकर भगवानका जन्म करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठः— सवत्सरेणं संवत्सरेणं तिर्थकराण जमेण करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भते किफले

भावार्थः—देखिये ! तिर्थंकरे माहाराज मोक्ष पधार गये है, मगर मुर्तीपुजक लोग दरसाल पजुसणमे विर प्रभुका जन्म करवाते है, लेकिन वीर

ति उक्त मंत्रोंसे फोरन कर लिजीये. उक्त वात किस तोरसे वनी हे सो ख्याल कीजीये.

(मिसलन) जैसे यवन लोग—कल्मां पढाके वकरेको हलाल करते हैं, और फरमान करते हे के, 'ये वहिशतमे गया' ईस शिवाय हवन करने वाले लोग वेदके मंत्र पढके वकरा वगैरे हवनमे होमके कहते हे के ये वैकुंठमे गया, ऐसे करनेसे वैंकुठ—या—वहिशत मिल जावेगा, तो दुसरी तकलिफ कोन उठावेगा, ये वाते सारी खिलाप हे, इसही वजेसे हमारे मुर्तीपुजक अज्ञात भ्रातृगण सकपोल मन कल्पित नविन और नकलि मत्र वना करके गरिव विचारे अनाथ जीवोकी सग्दति करते हे, ये कैसी आश्चर्यकी वार्ता हे सो ज्ञात पुरुषोंने विचार कर लेना चाहिये,

(प्रश्न) मुर्तीपुजकोकी तर्फसे जलका—या—वनस्पति निष्पाप करनेके मत्र छपके जाहिर हुवे हे, उन मत्रोंको श्री जैनके एकादस अगोके साथ मुकावला सभामें करके दिखाना चाहिये, तद उक्त मत्र सत्य हैं, ऐसा समजनेमें आवेगा.

—वारंवार जन्म विषय—

अर्थः— अहो भगवानजी दरसाल तिर्थकर भगवानका जन्म करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होती हे

पाठः— सवत्सरेणं संवत्सरेणं तिर्थकराण जमेणं करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भते किंफले

भावार्थः—देखिये! तिर्थंकरे माहाराज मोक्ष पधार गये हे, मगर मुर्तीपुजक लोग दरसाल पजुसणमे विर प्रभुका जन्म करवाते हे, लेकिन वीर

पुमामें—निम्यषा संतुके तुमस्पाधि करक रहित हो—अर्थात मिथ्यात्व र
तुमारा दुर होय निष्पाप समूकें॰ निष्पाप हा अर्थात पाप रहीत हो
य संतुके तुम्हारिसन्दति हा इस लिय तुम्हारा जो सेषदन, हिंसा
जा हे सो अर्हतकी—अर्थनके॰ पुमनमें ममास्तुके मेरेको मत हो—

भावार्थः— अहा! एकेन्द्री (एक इंद्रि होवे उस ऐकेन्द्री कहते है—थावर) मन वगेरोके सर्व जीवो, जिन राजकी पुमामें तुम दुःख (व्याधि) करके दुर होवो अर्थात मिथ्यात्व रोग तुम्हारा दुर होना ये, तुम निष्पाप होवो, तुम्हारि सन्दति होवो, इस लिये हमारेको स्वर्ग हानस जो हमको तुमारा हिंसा पाप लगता है सो अर्हताजीमें वा पुजा करता हु, इस वास्ते जिनराजकी जीवोको दुःख—या—तुमारा माण घात होता मत होवो,

समीक्षा—अजब गजब! अजब गजब!
गाथा (बात) सुनके केवली भगवानभी
ते है।

ति उक्त मत्रोंसे फोरन कर लिजीये. उक्त वात किस तोरसे वनी हे सो ख्याल कीजीये.

(मिसलन) जैसे यवन लोग—कलमां पढाके वकरेको हलाल करते हैं, और फरमान करते हे के, 'ये वहिशतमे गया' ईस शिवाय हवन करने वाले लोग वेदके मंत्र पढके वकरा वगैरे हवनमे होमके कहते हे के ये वैकुंठमे गया, ऐसे करनेसे वैंकुठ—या—वहिशत मिल जावेगा, तो दुसरी तकलिफ कोन उठावेगा, ये वाते सारी खिलाप हे, इसही वजेसे हमारे मुर्तीपुजक अज्ञात भ्रातृगण सकपोल मन कल्पित नविन और नकलि मत्र वना करके गरिव विचारे अनाथ जीवोकी सग्दति करते हे, ये कैसी आश्चर्यकी वार्ता हे सो ज्ञात पुरुषोंने विचार कर लेना चाहिये,

(प्रश्न) मुर्तीपुजकोकी तर्फसे जलका—या—वनस्पति निष्पाप करनेके मंत्र छपके जाहिर हुवे हे, उन मत्रोंको श्री जैनके एकादस अगोके साथ मुकावला सभामें करके दिखाना चाहिये, तद उक्त मत्र सत्य हैं, ऐसा समजनेमें आवेगा.

—वारंवार जन्म विषय—.

अर्थः— अहो भगवानजी दरसाल तिर्थकर भगवानका जन्म करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होती हे

पाठः— संवत्सरेणं संवत्सरेणं तिर्थंकराण जमेण करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते किफले

भावार्थः—देखिये ! तिर्थंकरे माहाराज मोक्ष पधार गये हे, मगर मुर्तीपुजक लोग दरसाल पजुसणमे विर प्रभुका जन्म करवाते हे, लेकिन वीर

भावार्थ– देखिये ! मुर्तीपुजक लोग जिन मदिरमे ढोल नगारा मृदं-ग झांझ वगैरे अनेक प्रकारके बाजे बजाते हे ये श्री जैनके असली शास्त्रोंसे विरुद्ध है,

नगरमे फेरण विषय.

अर्थः– अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको अनेक मोछवके साथ नग्रमें फेरे फिरावे फेरतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे

पाठ;– जिन पडियाण अणेगविहेण आडंबरेणं नगरमइ अडमाणेकर-इ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते किफले

अर्थः– अहो भगवानजी श्री जैन सिद्धांतोका अने मोछवके साथ नग्रमें फेरे फिरावे फेरते को भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे.

पाठः– जिन सिद्धांताण अणेगविहेण आडवरेण नगरमइ अडमाण करइ२त्ता करवाइ२ता अनुमोदइ२त्ता भंते किफले

अर्थ– अहो भगवानजी तिर्थंकर माहाराज गणधर आचार्य उपाध्य य साधु यति सवेगी पिताम्बरी वगैरेको अनेक मोछवके साथ गाजे बाजे वगैरेसे नग्रमें फेरे फिरावे फेरतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे

पाठः–तिर्थकरेण गणधरेणं आयरियाणं उवझायाणं समणाण यतियाणं संवेगीयाण पिताम्बरीयाणं जाव अणेगेण आडवरेण नगरमइ अडमाण करइ२ता करावइ२ता अनुमोदइ२ता भंते किफले,

हिंस्यामे धर्म विषय.

अर्थ;– अहो भगवानजी हिंस्या शिवाय धर्म होवे नही ऐसा जाणे हिंस्या धर्मकी परुपणा करे अर्थात हिंस्यामे धर्म होवे ऐसा भाषण करे -फर-

सभा करे अर्थात हिंस्या संयुक्त धर्म करे करावे करत का भला माने तो क्या फलकी प्राप्ति होती है,

पाठ;— हिंस्यामइ धम्मसदइरत्ता परुपइरत्ता फरसइरत्ता भंते किंफले

वरत विषय

अर्थ;— अहो भगवानजी श्रावकको जो बारा वरत है उसमेसे कोन से वरतमे जिन प्रतिमाकी पुजा प्रतिष्टा है

पाठ·— किंभते जिन पडिमार्ण पुयं प्रथिठाणं समणोपासकाणं दुवादसण वरताणं कयइ वरतेर्पं मइ हवइ—

गुण लांछण विषय

अर्थ — अहो भगवानजी जिनराजके पुर्ण गुण जिन प्रतिमामे है·
पाठ·— किंभते पडिमा मइ जिन गुणलभ्य

अर्थ·— अहो भगवानजी जिनराजके पुर्ण लंछन जिनराजकी प्रतिमा

किंभते जिन पडिमा मइ जिन लंछणं समए,

—नाटक विषय—

अर्थः— अहो भगवानजी जिन मंदिरमे अनेक प्रकारके नाटक करे करावे करताको भला माने तो क्या फलकी प्राप्ति होवे,

पाठः— जिन मंदिरेणं मइ अणेगविहेणं नाटकेणं करइरत्ता करावइ ता अनुमोदइरत्ता भंते किंफले,

--शिखर विषय--

अर्थः- अहो भगवानजी जिन मदिरके शिखर उपर अडा-दंडा-धजा चढावे चढवावे चढाते को भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे.

पाठः- जिन मंदिरेणं, शिखरेणं, वाइंडेणंवा, दडेणंवा, धजेणंवा, चढाव्रइत्ता चढवावइत्ता अनुमोदइत्ता भंते किफले,

असातना विषय.

अर्थः- अहो भगवानजी जिन मदिरकी चौन्यासी असातना कोणसे तिर्थंकरने फरमाइ हे,

पाठः- किंभंते जिन मंदिरेणं चौन्दाशिणं असाणाए के वइणं तिर्थकरेणं वागरइत्ता,

तप विषय.

अर्थः- अहो भगवानजी नंदिश्वर तप करनेसे क्या फलकी प्राप्ति होती हे.

पाठः- नंदिसरेणं तपेणं करइत्ता भंते किफले,

भावार्थः- देखिये! मुर्तीपुजकोंकी तर्फसे नंदिश्वर तपका विस्तार "नंदिश्वर द्वीप सबधी जे प्रसाद छेते पट्ट उपर लखिने नदिश्वर पटनी पुजा पुर्वक पोतानि शक्ति माफक तप करवुं वगैर, उजमणे नदिश्वर द्विपनो मंडल बनावे पुजा करावे ज्ञान पूजा करे गुरु भक्ति करे मंडलनी पूजा करे बावन बावन फल नारियेल पुंगी फलादिक वस्तु ढोके वगैरे" -और भी ये लोग सेत्रुंजय गिरनार समेत शिखर वगैरेके पट निकलाके पुजा प्रतिष्टा करते हे,

अर्थ— अहो भगवानजी स्वसिद्ध पखवे तप करणसे क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठ— स्वसिद्ध पखवे तपेणं करइ२त्ता भंते किफले,

भावार्थ— देखिये। मुर्तीपुजकोंकी तर्फसे तपकी विधि "श्री इंद्र मानमा शिष्य गौतमनु उपवासादिके करि आराधन करवुं वगेरे, उज्जमणांमां, चोसठमाणा पांच अक्षवापक्षिने, त्यामगस्त एक अने पाखिने, मठसठ एक उपर पक्षिने, अक्षदमाणा पांच मकार मरमाळ, मोधुर्मसम्हे, चोसमसम्रण, कोठ वामाणत्रण, ढोकवा (चढाणा) यथा शक्ति दांन पुजा वगेरे करवा

अर्थ— अहो भगवानजी अष्टकदसमितपः करणसे क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठः— अष्टदसमि तपेणं करइ२त्ता भंते किफले,

भावार्थः— देखिये। मुर्तीपुजकोंकी तर्फसे तपकी विधि "प्रतेक वर्षाणी मादवा शुदि दसमीना दिवसे यथा शक्तिए उपवासादि करिने अंबका देवी पासे सगीतादिक थी रात्री जागरण करवुं नारियेळ केरि मोदकादि त्याजी पासे ढोकवा बिजे दिवसे साधर्मीकने जमाडि साधुने दान आपी अंबा देवीने कुकानी सिक करवी अंजन करवुं तेम पोतानेस्य नर रेशमि चरणियो कांचळी तथा बाहु दबिने बतावियें, विगेरे उमाएटळुं विशेष जे फलादिक पाके वर्ष वधाविने विगतवर्षे बिगुणा, एमया दश दसमा वर्षे दस गुण ढोकवा"

अर्थ— अहो भगवानजी अंबिका तप करणसे क्या फलकी प्राप्ति होती है,

पाठ— अंबिका तपेनं करइ२त्ता भंते किफले,

भावार्थ— देखिये मुर्तीपुजकोंकि तरफसे तप की विधि "पांच कृष्ण

पंचमी ये श्री नेमिश्वर पुजा पुर्वक अंविकानि पूजा करि तथा शक्ति ये एकासनादिक तप करवुं, नैवेद्य तथा फल ढोंकवा उजमणे साधुमे नवा वस्त्र अन्न पान आपी प्रतिलामवा अवानि मुर्तीनि पुत्र ·सहित तथा आम्र वृक्ष सहित करावबी, पछीतेनु पुजन करवुं "—

अर्थ – अहो भगवानजी वृद्ध ससार तारण तप करे तो क्या फलकी प्राप्ति होती हे.

पाठः– वृद्ध संसार तारण तपेणं करइत्त्वा भंते किफले,

भावार्थ – देखिये। मुर्तीपुजकोंकी तर्फसे तप की विधि–" उपवास त्रण करिने पारणे आयविल करिये एम निंरतर त्रणवार करीये, तेवारे नव उपवास अने त्रण पारणा थाय सर्व मलिने बार दिवसे तप पुर्ण थाय, उजमणे रुपामय वाहण क्षीर समुद्रमातर तुं मुकवाने वदले दुधमांतर तु मुकवु माहे मोती विद्रम भरवा " देखो अत लोभी पुरुषोंने श्री जैनके असली सिद्धा-तोंके विरुद्ध ऐसे अनेक तप वतलाये है धिकार है इन समकित भ्रष्ट पुरुषों कोंके आप डुवते है और दुसरोंको डुवाते हैं, उपरोक्त रितिके तप देखने की इच्छा होवे तो शाहाभीमसिंह माणेकका छपाया हुवा "जैन प्रबोध पुस्तक" में देखो,

जात्रा विषय,

अर्थः– अहो भगवानजी सेत्रुंजा, गिरनार, समेत शिखर, अष्टापद नंदिश्वर वगैरे अनेक तिर्थ करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ।१।

पाठ – सेत्रुजेणं गिरनारेणं समेत शिखरेणं अष्टापदेणं नंदिस्वरेणं जाव अणेग विहेण अणेगतिथेणं यात्राणं करइत्ता करवावईत्ता अनुमोदई त्ता भंते किफले, ।१।

अर्थः— अहो भगवानजी सिध क्षत्रके यात्रा करे करावे करतेका भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे, ।२।

पाठ— सफलक्षेत्रे यात्राणं करइरता करावइरता अनुमोदइरता भंते किंफले ।२।

अर्थः—अहो भगवानजी एक तिर्थकी एक वखत यात्रा करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फल की प्राप्ति होती, है ।३।

पाठ— एगेतिर्थेणं एकविहेणं यात्राणं करइरता करावइरता अनु मोदइरता भंते किंफले, ।३।

अर्थः— अहो भगवानजी एक तिर्थ की अनेक वखत यात्रा करे करावे करते का भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है, ।४।

पाठ— एगेतिर्थेणं अणेगविहेणं यात्राणं करइरता करावइरता अनु मोदइरता भंते किंफले ।४।

अर्थः— अहो भगवानजी अनेक तिर्थों की एक वखत यात्रा करे करावे करतेको भला जाण तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ।५।

— अणेगतिर्थेणं एगविहेणं यात्राणं करइरता करावइरता अनु भंते किंफले ।५।

अहो भगवानजी अनेक तिर्थोकी अनेक वखत यात्रा करे करावे जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है ।६।

पाठ— अण [illegible] अणेगविहेणं यात्राणं करइरता करावइरता अनुमोदइरता भंते किंफले ।६।

अर्थः— अहो भगवानजी शेत्रुंजा आदि नंदी दिस्वरद्वीप सर्वोमे उतम तिर्थ है ऐसा समज तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ।७।

पाठ— शेत्रुंजेणं जावनंदिसर दिवेणं धम्मतिर्थेणं सदहरता भंते

किफले ॥७॥

अर्थः– अहो भगवानजी शेत्रुंजेसे लगाके नंदिसर दिप तक ये सर्व धर्म तिर्थ हे ॥८॥

पाठ;– किंभंते शेत्रुंजेणं जावनंदिसर दिवेण धम्मतिथेणं हवइ ॥८॥

अर्थः– अहो भगवानजी शेत्रुजा तिर्थ आदि देइने अनेक तिर्थ सास्वता हे ॥९॥

पाठ,– किंभंते शेत्रुजेणं जाव अणेगतिथेणं सासइ भावं हवइ ॥९॥

अर्थ;– अहो भगवानजो जिन मंदिर जिन प्रतिमा जिन तिर्थ को नसे तिर्थकरोंने फरमाये हे ॥१०॥

पाठः– किंभते जिन मंदिरेणं जिन पडिमाणं जिन तिथेणं केवइ तिर्थकरेणं वागरइ२त्ता ॥१०॥

अर्थ – अहो भगवानजी कोणसे तिर्थकरोंने पुजा प्रतिष्टा धर्म तिर्थ विधि फरमाइ हे ॥११॥

पाठ – किंभंते केवइ तिर्थकरेणं पूयाणं परतिष्टाणं धम्मतिथाणं विधिणं वागरइ२त्ता ॥११॥

भावार्थः– देखिये ! उपरोक्त जो तिर्थ कहे हे, वो सर्व श्री जैन के असली सिद्धांतोंसे विपरत हे, कारण सेत्रुंजा परवत वगैरेके उपर तिर्थकर तया मुनि सथारा करके मोक्ष गये हे, तब तिर्थकर महाराज तथा मुनिराज वदनिक पुजनिक हे, मगर परवत पहाडको शास्त्रमें धर्म तिर्थ तथा वदनिक पुजनिक नहीं कहे हे, परतु मुर्तीपुजक लोग सेत्रुजा वगैरेको धर्म तिर्थ मानते हे ये बात सर्व मिथ्या है देखो । सुत्र श्री भगवतीजीका सतक अठारमां उदेसा दसमांमे श्री माहा वीर परमात्माको सोमल व्राम्हणने पुछा के अहो दयाल आपके यात्रा कोणसी हे तव सोमलको श्री वीर प्रभुने ऐसा उत्तर दिया हे पाठ निचे मुजब.

(मध्य पाठ)

सौमिस्य, अमे, तव, नियम, संजम, सझाय, झाणा,
बसग, मासिमुस्सु, जपणासे, सं जवा, तप, १२, नियम
अभिग्रह, संयम १७, सझायर५, ध्यान, धरम, शुक्र ॥

अर्थ— बारा प्रकारकी तपस्या कठम अभिग्रह सतरा प्रकारका सयम पांच प्रकारकी सझाय ध्यान का योत्सग (काउसग) बयाकच छे आसम और स्वध्याय लोकोकी यत्ना प्रवृतिव यात्रा अहो सोमल इत्यादि संवर निर्जराकी करणा करते हे, सो हमारे यात्रा है ऐसी आज्ञा वीर स्वामीन सोमलका यात्रा फरमाइ है, वैसे तिन कल्यके तिर्थकर यात्रा बतलात है कारण तिन कल्यक तिर्थकरोंका ज्ञान बराबर है इस लिये देखो ! सिद्ध हुवा के सेत्रुंजा वगैरे पहाड परमत्ताकी यात्रा करना नही चाहिये

देखो ! मुर्तीपुजकोंके पुर्वाचार्य वगैरोंने ग्रंथ मकर्म कांगरेमे कैसे कैसे आश्चर्यभूत गपोडे मारे है के न्याय्य पुरुषोंके हांसी पात्र मात्र होवे तो कुछ ताजब नही है, मगर बाल बुद्धिवाले बच्चोको भी हांसी पात्र वार्ता है, देखो सत्रुंजा माहात्म ग्रंथके सोलम सधार है उसमे पहेल अधिकार.

[गाथा]

रिखभदेव अयाध्यापुरी, समोसस्या स्वामी हीत करी ॥
भर्त गया वंदनने काज, मै उपदेस दिया जिनराज ॥१॥
जगमा है मोटा अरिहंत देव चोवट इंद्रकर जससेव ॥
तेथि मोटा संघ कहाय, जेने प्रणमे जिनवरराय ॥२॥

तेथ्थी मोटो संघवी कयो, भर्ते सुणिने मनगेह गयो ॥
भर्ते कहेते किमपा मिये, प्रभु कहे सत्रुजय यात्रा किये ॥३॥

सोचिये। सिद्ध माहाराज शिवाय दुसरे किसीको तिर्थंकर देव नमस्कार नही करते हे, मगर मुर्तीपुजक लोग कहते हे के "तिथाण नमो-किच्चा" तिर्थंकर महाराज तिर्थीको नमस्कार करते हे, मगर ये कहना मुर्तीपुजकोंका साफ खोटा है देखो। श्री जैनके प्राचिन असली सिद्धांतोंमे तो ऐसा साफ साफ फरमाया है सिद्धाणं नमो किच्चा" तिर्थंकर माहाराज हमेस सिद्ध महाराजको नमस्कार करते है मगर दुसरोंको कदापि नही करेगे कारण त्रिलोकी नाथसे इस जगतमे कोन वडे है वरिष्ट सिवाय दुसरेको नमस्कार कैसा हो सक्ता है कदापि नही, ये तो अन्य मतवाली कहावत हुइ के भक्तके अधिन ईश्वर" मगर वितराग देव किसीके अधिन नही रहते है खुब ख्याल करो,

देखो! मुर्तीपुजक लोग तिर्थंकरोसे भी वढकर संघवी (संघ निकालके तिर्थ यात्रा करे ते संघवी) को वतलाते हे, अगर तिर्थकरों से वढके जो संघवि होवे तो तिर्थकर खुदने संघवी की यात्रा (जारत) करनेको जाना चाहिये, और जिन प्रतिमाने भी संघवीके चर्ण भेटना चाहिये, तो ये दोनु भी वाते नजर नहीं आती हे, न तो जैनके असली सिद्धातोंमे वीर प्रभुने फरमाया हे, मगर खैर, जो संघवी तिर्थकरोंसे वढकर हे, तो सेत्रुजादि परवतोंपे वो संघविसंघ ले करके किसकी यात्रा करणेको जाते हे, अगर उक्त लोग कहेंगे के जिन प्रतिमाकी यात्रा करणेको जाते हे, तो हम पुछेंगे के जिन प्रतिमा संघविसे निचे दरजेमे हे, तव वो संघवी यात्रा किसकी करता हे, तव निज वानी हुवे, एक कविने कहा है—

"झुठ दोड, वगरुस्य तांड़, सत्य दोड तिन लोकके माही"
यानेप जादा दौड़े तो तुर्तही निचे गिर जाता है, जमीन पर जादा दौड़े तो फिल्ने दुर निकल जाता है वैसे ही झुठ बोलने वाले की जबान तुर्तही बंद हो जाती है, सत्य बोलने वाले की जबान सदा तेज रहती है, माहासयजी ' मुर्तीपुजक लोग इमेस झुटही झुठ बोलते रहते है, सबब जैनके असली सिद्धांतोंका असल मतलब समजनेकी ताकद नहीं हानेस बिचारे क्या करे झुन्का अर्थ ग्रहण करके अपने कपोल कल्पित मतको चलाते हुये चले जाते है मगर ईस बातसे विजय नहीं मिलता है

सजम विषय

अर्थ – अहो भगवानजी जिन प्रतिमा सजमी है या नहीं

पाठ— किमते जिन पडिमा मइ संजमेणं हवइ,

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमा संवरमे है या नहीं

पाठः— किमत जिन पडिमाणं संवर मई हवई

गुण स्थान विषय

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमा चवद गुण ठाणममे कोण गुण ठाणेम है,

पाठ— किंभते जिन पडिमाण केवई गुण ठाणेम हवइ,

—द्रष्टी विषय—

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमा समद्रष्टी मिथ्या द्रष्टी मिश्र द्रष्टी ये तिन द्रष्टीमेंसे कोणसी द्रष्टीम है,

पाठ -- किंभंते जिन पडिमाणं केवई दिठिण हवई,

गंवली विषय.

अर्थ -- अहो भगवानजी जिन प्रतिमा के आगे अनेक प्रकारकी गंवली करे करावे करतेको भला जाणे वो क्या फलकी प्राप्ति होती है.

पाठः-- जिन पडिमाणं अणेगविहेण गंवलीणं करइत्ता करवाइत्ता अनुमोदइत्ता भते किफले

भावार्थः-- प्रतिमाके आगे चावल वगेरके सातिये करके उपर सुपारी वगेरे धरते हैं, उसे गंवली कहते हे, परतु ऐसी गवली तिर्थकरोंके आगे किसीने करी नही हे, इस वास्ते प्रतिमाके आगे भी करना गेर मुनासिव हे,

—द्रव्य चढावण विषय—

अर्थ-- अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको अनेक प्रकारके सचित (जीव सहीत) अचित (जीव रहित) द्रव्य चढाये तो चढवावे तो चढाने के भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होती है,

पाठः--जिन पडिमाणं अणेगविहेणं सचितेण अचितेणं दवाणं चढाइत्ता चढवाइत्ता अनुमोदइत्ता भते किफले,

भावार्थः-- देखिये ! केशर चंदन अनाज वगैरे सचित अचित मिश्र द्रव्य तिर्थंकर माहाराजको कोइने चढाया नही है मगर मुर्तीपुजक लोग प्रतिमाको चढाते हैं ये बात गेर मुनाशिम हे परंतु मुर्तीपुजक लोग कहते हे के " रावल देवल गुरुके पास, खाली हात कभु नही जाय " अर्थात एक तो राजाके पास एक मंदिरमे और एक गुरुके

पास, खाली हातसे नही जाना चाहिये, कुछ तो भी भेट ले जाना चाहिये, सोचिये राजा सिवाय तिर्थंकर माहाराजको तथा मुनिवरोंका क्या भेट करना इसकी खबर हमारे बाल मिथ मुर्तीपुजकोंकु हाल तक नही है; क्योंकर बिचारे ग्रंथ प्रकरण वगैरे कचरा पट्टी अवलोकन कर ते है तो इन लोगोंको असली बातकी खबर कहांसे होवेगी, ऋभी जैन के असली और प्राचिन सिद्धांतोंमे तिर्थंकर महाराज तथा मुनिवरोंका त्याग प्रत्याख्यान (सोगानपचखान अर्थात् नियम) की भेट करना चाहिये, मगर तिर्थंकर भगवान कुछ कमाल नही है, के मुठ भर अनाज वगैरेसे खुस हो जावेगे जैसा मनुष्य होवे वैसी भेट करना चाहिये

प्रश्न——कोइ एक गरीब मनुष्य राजाके मिलापको गया तब भेटके वास्ते एक फुटी कवडी और बहोत उमदा पाच सात गारगोटी साथ ले गया, जिस वखत राजा साहेबके दरसण होनेके साथ उक्त मनुष्यने वो भेट राजाको इनायत करी, वो भेट राजा देखतेके साथ उस मनुष्यका अतिशय फजीता करवाके गावके बाहेर निकाल दिया वो बिचारा पश्चाताप करते करते घर पोंहचा, सोचिये! मिसलेकी नाय थिथंकर भगवान तो माहा त्यागी वैरागी है और ससारके सर्व कार्योंसे निश्चे निवर्तमान हो गये है, तो एसे परमात्मा पुरुषोंको तो त्याग वैरा ग्य नियम वगैर की भेट होना चाहिये मगर एसी निच भेट करनेसे कुछ हासल प्राप्त नही होता है मगर क्या करे बिचार कायर कंगाल त्याग वैराग्य प्रत्याख्यान करनेके वास्ते असमर्थ होनसे मुठीभर अनाज भेट कर करके अपना दिल खुस करते है, और माहात्मा पुरुषोंको लांछन लगाते है, लेकिन माहात्मा पुरुषोंको लांछन लगानेसे उत्तम गति हास-ल होना मुसकल है,

धूप विषय.

अर्थः- अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको अनेक प्रकारके धूप खेवे खेवरावे खेवतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे

पाठः- जिन पडिमाणं अणेगविहेणं धुपेणं खेवइ२त्ता खेवावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते किफले,

भावार्थ - देखिये ! तिर्थंकर माहाराजको कोई श्रावकोने अगर चदन अष्टांग धुप वगैरे खेवे नही है, तो जिन प्रतिमाको धुप खेवणा ये अयोग्य है, मगर मुर्तीपुजक लोग खेवते है

दिपक विषय-

अर्थः-अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके आगे अनेक प्रकारकी रोसनाइ करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फल की प्राप्ति होती, है

पाठ;- जिन पडिमाणं अणेगविहेणं दिवेणं करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते किफले.

भावार्थ - देखिये ! इंद्रादिक देव तथा चक्रवृतादिक श्रावक वगैरे जाहा तिर्थंकर माहाराज विराजते थे व्हांपे रत्नोकी रोशनाइ करे तो वनसक्तिथी, लेकिन ये बात किसीने किवि नही, मगर मुर्तीपुजक लोग जिन प्रतिमांके आगे अनेक प्रकारकी रोशनाई करते है ये बात भी अयोग्य है,

फुल माला विषय.

अर्थः- अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको सचित अचित एक तथा

अनेक फुल चढ़ावे चढ़वावे चढ़ावतको भला जाणे ता क्या फलकी प्राप्ति हाती है

पाठ— जिन पडिमाणं, अणेगविहेण सचितेण अचितेणं अगणं अणेगणं कुसुमेण चढाइ॰त्ता चढवावइ॰त्ता अनुमोदइ॰त्ता भंते किफले,

अर्थ—अहो भगवाननी जिन प्रतिमांका सचित अचित फुलकी एक माला अनेक माला चढ़ावे चढ़वावे चढ़ातेका भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति हाती है

पाठ— जिन पडिमाण अणेगविहेणं सचितेणं अचितणं कुसुमेण अणे ण मालेण अनगण मालेण चढाइत्ता चढावावइत्ता अनुमादइत्ता भंते किफले

भावार्थ— देखिये ! मुर्तीपुजकोके आचार्य वगेरोंने कैसी कैसी अद्‌भुत बाते प्रकाश करी है के जिसको जैनके माधिन असली सिद्धांत किंचित (बिलकुल) मात्रभी स्वीकार नही करते है, लेकिन निचे मुजब देखो ! धर्म उपदेश नामा ग्रंथमे क्या कहा है,

गाथा

सयंरम्म अणे पुन्नं, सहस्सच विलेवणे सयसहस्सीया माला, अणत्ता गिय वाइय ॥१॥

अर्थ— निर्मल जल्ल प्रतिमाको स्नान करावे तो १०० सो रुपय मका फल हाये, चदन केशर कपुर कस्तुरी अगर तगर वगैरे सुगंध जल्लमे घसके भगवंतकी का भयागी पुजा करे तो १० ० हजार रुपयामका फल होय, फर भगवतके गलेमे पंच वर्णकी माल्य पहेरावे तो अथवा चबेली रायबेली चंपा मोगरा मचकंद गुलाब मरवा इत्यादि अनेक

प्रकारके फुलोंका ढीगला करे तो १००००० लाख उपवासका फल होवे, फेर गितग्यान छराग छतिस रागणी गावे ढोल नगारा ताल मृदंन पिशा तंबुरा सारंगी इत्यादि अढतालिस जातका वाजित्र बजावे और नाटक वगैरे करावे तो अनत उपवासका फल होवे,

(पुनर्पि) दशभि पुफ मालाभी लभ्यं चतुर्थीक तवतते।
माले देश गुणे क्रमात षष्टाष्ट पाक्षिकं मासस्य द्विमासी
त्रिमासी षणमासिकात्

अर्थः- दस फुलोकी माला भगवानको चढावे तो एक उपवासका फल होवे, सो फुलकी माला चढावे तो वेलाका फल होवे, हजार फुलकी माला चढावे तो तेलेका फल होवे, दस लाख फुल चढावे एक महिनेकी तपका फल होवे, क्रोड फुल चढावे तो दो महीने के तपका फल होवे, दस क्रोड फुल चढावे तो तिन महिने तपका फल होवे एक क्रोडा क्रोड फुल चढावे तो छ महिने के तपका फल होवे और नाचणे कुदनेमे अनता तपका फल होता है.

समीक्षा—अनंत तप तिर्थंकर महाराज शिवाय अनेरे से कदापि नही होवे, नाटक करनेसे तिर्थंकर नाम गोत्र उपारजन होता है ऐसे ऐसे अपुर्व लाभ दिखलाते है, इस शिवाय और दुनियामे क्या लाभ ज्यादे होवेगे, ऐसे लाभकी ईच्छा सर्व इसानोंको (मनुष्योंको) रहती है,

इत्यादि हुंडा सर्पणी पंचम काल और भस्मग्रह ये तिन योगोके भजोजनसे विभ्रम मतिवाले जो जड उपासक सावज्याचार्य हुवे है उनोने श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचिन असली सिद्धांतोंके विरुद्ध मन कल्पीत महान लाभ बताके मृगवत भोले प्रणीयोंको भ्रमरुप

जाम्मे फसा दिये हे, मगर मुर्तीपुजकोंके लेखानुसार श्री जैनके असर्मी श्रावक लोगोंने एक भी बात स्विकार करी नही ह, जिस वखत तिर्थंकर महाराज तथा मुनिराजोंके पाष श्रावक लोग आते थे, उस वख त पाच अभिगमण साचवते थे,

[गद्य पाठ]

पचविहेणं अभिगमेण गछति सच्चाणं सचिताणं दव्वाणं
विउसरणयाए अचिताण दव्वाण अविउसरणयाए एगं
साडियं उत्तरासंग करणेणं चरकू पास अजलि पगहेण
मणसोएगति करणेणं जेणेवथेरा भगवंतो तेणव उवागछंति २ त्ता

भावार्थ – देखिये ! जिस स्थानप त्रिलोकी नाथ तथा मुनि महाराज बिराजते थ उस स्थानप श्रावक लोग वंदना नमस्कार करण के वास्ते जाते थ लेकिन वो मकान दखते के साथ अवश्य पांच बातोंको अंगिकार करके फर मकानमें प्रवेश करके मुनियोको तिख्खुतके पाठसे वंदना नमस्कार करके तथा भक्ति करते थ वो कैसे हे सचित अर्थात जीव सहित द्रव्योंको दुर रखे, अचित दुर करन अथवा तरवार खड्ग वगेर दुर रखे, दोनु हात जोड के नेत्रोंके सनमुख करे मनको स्थिर करके फर वंदना नमस्कार करते थ इनो जैनके प्रचिन असली सिद्धांतोंका तो अधिकार ऐसा हे मगर मुर्तीपुजकोंके लेखानुसार अधिकार असली सिद्धांतोंम कहीं भी नजर नही आता हे मगर आप लोगोंसे सवाल हानेकी जगे हे, के मुर्तीपुजक लोग उनोके आचार्य वगेरेके लेखोंको पुर्ण सत्य समजते होवे तो उस मुजबिक सर्व कार्य करना चाहिये—देखिये ! नाचन कुदन नाटक वगेर करणासम तिर्थंकर नाम गौत्रकी उपार्जना होती हे, तो मुर्तीपुजकोने मंदिरोंके वास्ते नाटक वगेर करवाके उन लोगोको काम देना ठिक नही ह देखो ! इस लखसे सदा

दुसरा लाभ इस दुनियामे कोनसा हे इस महान लाभके वास्ते मुर्तीपुजकोके मुनि वर्गने महासति वर्गने श्रावक वर्गने श्राविका वर्गने बजारके मध्यमे नाच के कुदक नाटक वगेरे करके तिर्थंकर नाम गौत्रकी फोरन उपार्जना करना चाहिये परतु किंचित मात्र विलब करना ठिक नही हे, (सवाल) ये काम तो निर्लज्य मनुष्योंका हे लेकिन प्रमाणिक पुरुषोंका नही हे (जवाव) धर्म कार्य कर्त्ता पुरुषोंको लज्या लक्ष्मी सेवन करने की कोइ जरुरत नही हे अर्थात धर्म कार्य करनेवाले महासर्योको कोइ भी बुरा (खोटा) नही कह सक्ते हे, अगर जो अपना कल्याणार्थ कार्य सिद्ध होता होवे तो दुर्वचनोके तर्फ लक्ष न देता ये कार्य मुर्तीपुजकोने अवस्य सविकार करना चाहिये तब हम मुर्तीपुजकोको सत्यवादि समजेगे

देखिये। एक फुल की माला जिन प्रतिमाको चढानेसे एक लाख १०००,०० उपवासका फल होता हे तो क्या मुर्तीपुजकोके मुनि वर्ग तपस्याका लाभ नही लेना चाहते हे अगर वो लोग कहेंगे के हम लोग त्यागी है तो क्या तिर्थंकर महाराज भोगी है कदापि नही, लेकिन खैर, मगर मडलिक राजा माहा मडलिक राजा, चक्रवृति राजा वगैरोने दिक्षा लेके माहा कठण तपस्या करके आत्म सिद्धि करी है ओर ऐसी तपस्या सुनते के साथ कायर पुरुष कपायमान—पाय माल हो जाते है ये अधिकार जैनके असली सिद्धातोमे वीर प्रभुने बयान किया है तो क्या उन पुरुषोको नाचना कुदना गाना बजाना नाटक करना वगेरे याद नही था, क्या उनोको फुल अगर फुलोकी माला नही मिलती थी तो उन पुरुषोंको महादुक्कर [घोर] तपस्या करके आत्माको दुःख देना पडा वडी खेदाश्चर्य की वात है के इन पागलोका पगलपणा दुर कब-होवेगा.

फल विषय,

अर्थ — अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको अनेक प्रकारके सचित

आवेत फल चढावे चढावे चढात का मम जाणे ता क्या फलकी प्राप्ति होती है

पाठ— जिन पडिमाण भणेग विहेगं सचितेण अचितेणं फलेणं चडावइत्त चडावइत्ता अनुमोदइत्ता भंते किंफले

भावार्थः— हलिये। तिर्थंकर भगवानको किसीने फल चढाये नहीं है मगर जिन प्रतिमाका मुर्तीपुजक लोग फल चढाते है, य बात अयोग्य करते है

आरती विषय

अर्थ – अहो भगवानजी जिन प्रतिमाकी अनेक प्रकारसे आरती करे कराय करतेकु मम माम ता क्या फलकी प्राप्ति होवे

पाठ – जिन पडिमाणं अणेगविहेणं आरतीणं करइत्ता करावइत्ता अनुमोदइत्ता भंते किंफले,

भावार्थ— हलिये! तिर्थंकर महाराजकी इंद्रादिक वगैरे कोइन आरती उतारी नहीं है मगर जिन प्रतिमाकी मुर्तीपुजक लोग आरती करते है य अयोग्य करते है,

—छत्र विषय—

अर्थ – अहो भगवानजी जिन प्रतिमाका अनेक प्रकारके छत्र चडावे चडावे चडातेको मम जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे

पाठ— जिन पडिमाणं अणेगविहेणं छत्तेणं चडावई त्ता चडावावई त्ता अनुमोदइत्ता भंते किंफले,

भावार्थः— देखिये। तिर्थंकर भगवानको इंद्रादिक वगेरोंने छत्र चढाये नही लेकिन मुर्तीपुजक लोग जिन प्रतिमाको छत्र चढाते हे, ये बात अयोग्य करते हे (सवाल) तिर्थंकर माहाराजके शिरपर तिन छत्र हमेस रहते हे [जवाब] तिर्थंकर महाराज के अतिसयसे नजर आते है लेकिन किसीने चढाये नही है.

चामर विषय.

अर्थ — अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको अनेक प्रकारे चामर चढवे चढवावे चढातेको भला जाणे वो क्या फलकी प्राप्ति होती है,

पाठ — जिन पडिमाण अणेगविहेणं चामराहिं चढाइ२त्ता चढवाइ-२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते किफले,

अर्थ — अहो भगवानजी जिन प्रतिमाको अनेक प्रकारके चामर विंजे विंजवावे विंजतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे.

पाठः— जिन पडिमाण अणेगविहेणं चामरा हिंउध्दु माणेहिं करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदई२त्ता भते किफले,

भावार्थः— देखिये तिर्थंकर भगवानको इंद्रादिक वगेरोंने चामर चढाये नही है, और उनोपे चामर ढोले भी नहीं है परतु मुर्तीपुजक लोग जिन प्रतिमाको चामर चढाते हैं और उपर विंजते है, ये बात भी अयोग्य है (सवाल) तिर्थंकर महाराजके चोसट इंद्र चामर सदा विंजते रहते है. (जबाव) तिर्थंकर माहाराजके अतिसेसे चामर विंजते हुवे दिखते हे लेकिन कोइ विंजता नही है, कारण छकाय जीवोको समय समय मरणातिक कष्टसे बचानेका (दयाका) उपदेश देते है मगर स्वताके वास्ते छकाय जीवोके प्राण छुटवानाये तिर्थंकरोका मार्ग नही है, अगर तिर्थंकर भगवान स्वताके वास्ते छकाय जीवोंकी हाणी करवाके दुसरेको मना करेंगे तो उन माहा

रमा मुरुपोक्त हुकम मान प्रमाण करेगा, तिर्थंकर दवक स्थदान मिलना काय दाता ह वो उन माहत्मा पुरुषोंके अतिमयस होता है, मगर तिथंकर दव स्नाक वास्त हुकाम की प्राणी करवाक कदापि कार्य नही करवाते है

नेत्र विषय

प्रश्न— अहो भगवानजी जिन प्रतिमांको अनक प्रकारके नेत्र चढाय चढावे चढाव्या भला जाण तो क्या फलकी प्राप्ति होवे,

पाठः— जिन पडिमाणं अणेगविहेणं नयणं चढाबइ२त्ता चढवावइ२त्ता अनुमोदई२त्ता भंते किम्फले.

भावार्थ— देखिये। तिर्थंकर भगवानको इंद्रादिक वगैरे कोइ भी भावकोंने नेत्र चढाये नही है, मगर मुर्तीपुजक लोग जिन प्रतिमाको नत्र चढाते है, तो क्या प्रतिमा अंधि हे, अंगहीनको जिनराजकी पदवी नही मिलती है, वृत्तमान समयमें अंगहीनको राज्य पद भी नही मिलता है तो अंगहीनको तिर्थंकर पदको कहांसे मिलेगा, फेर दिगम्बर आनावाले प्रतिमा को नेत्र नही लगाते है, तो अब सच्ची जिन प्रतिमा किसकी समझना चाहीये ये भी एक बडा भारी फर्क है इस फर्क परसे हम दोनोंको साफ साफ सोटि समझना चाहीये, कारण दोनुही चौवीस तिर्थंकरोंका मानते है इस वास्ते दोनुही सिखे खोट हैं

भावार्थः— देखिये। मुर्तीपुजक लोग जिन प्रतिमाको जिन राज तुल्य कहते हैं तो जिन प्रतिमा संयमी समद्रष्टी और तेरवे गुण स्थान होना चाहीये मगर सुत्र श्री भगवतिजीके सतक पेलम उदेसा दुसरे मे पाचधावर जिन विकलेंद्री (पथवी अपतेउवाउवनसपति बेंद्री

द्रिचौंद्री) को एकांत मिथ्या द्रिष्टि कहे हैं, इस वास्ते जिन प्रतिमा जिन राज तुल्य नही है,

--पुजा विषय--

अर्थः- अहो भगवानजी जिन प्रतिमाकी तिर्थंकर महाराज पुजा प्रतिष्टा यात्रा करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होवी है.

पाठ - जिन पडिमाणं तिर्थकराणं पुयाणं प्रतिष्टाण यात्राणं करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदई२त्ता भंते किफले,

भावार्थ - देखिये। तिर्थंकर देव किसीकी भी पुजा प्रतिष्टा यात्रा नही करते है मगर मुर्तीपुजक लोक ऋषभ देव माहाराजने सेत्रुजे की यात्रा करी ऐसा कहते हैं तो तिर्थंकरकुं तो मोक्षका फल प्राप्त होनेका निश्चे हो चुका वो फेर इससे तिर्थंकर को क्या जादा फल प्राप्त होवेगा सो मुर्तीपुजकोने श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंसे सिद्ध करके दिखलाना चाहिये.

माता पिता विषय.

अर्थ - अहो भगवानजी जिन प्रतिमाके बनानेवाले शिलावट लोग हे सो जिन प्रतिमाके माता पिता है.

पाठः- किंभते शिलावटाणं जिन पडिमाणं अम्मा पियरो हवई,

अर्थ - अहो भगवानजी तिर्थंकरके माता पिता वणे बणावे बणतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे

पाठ - तिर्थंकरेणं अमा पियाणंवणइ२त्ता वणावई२त्ता अनुमोदइ२त्ता भंते किफले,

भावार्थ— देखिये। पर्युषणमें भगवानका जन्म मालम करावते है इस तथा प्रतिष्टा वगेरेमें भगवानके नकली माता पिता बनते हे य भी एक अमल गमनका स्थान है

लिलान विषय

अर्थ— अहो भगवानजी जिन सिद्धांत लिखाय कर तो क्या फलकी प्राप्ति होती है १

पाठ— जिन सिद्धांताण रोहण करइरथा भंते किंफले ?

अर्थ— अहो भगवानजी जिन प्रतिमाकी माला लिखाय कर तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ?

पाठ— जिन मालाणं रोहण करइरथा भंते किंफल २

अर्थ— अहो भगवानजी जिनराज की माता को जो चवदा सुपना आया है उसको लिखाय कर तो क्या फलकी प्राप्ति होय १

पाठ— जिन अम्माण सुमिणेणं रोहण करइरथा भंते किंफले १

अर्थः— अहो भगवानजी जिन प्रतिमाकी आरति लिखाय करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ४

पाठ— जिन पडिमाणं आरतीण रोहण करइरथा भंते किंफलं ४

अर्थ— अहो भगवानजी जिन मदिरका ईंडा लिखाय करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ५

पाठ— जिन पडिमाणं ईंडेणं रोहण करइरथा भंते किंफले ५

अर्थः— अहो भगवानजी जिन मंदिरका ईंड लिखाय करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ६

पाठ:- जिन मंदिरेणं डंडेणं रोहण करइ२त्ता भंते किफले ६

अर्थ - अहो भगवानजी जिन प्रतिमाकी पुजा लिलाम करे तो क्या फलकी प्राति होवे ७

पाठ:- जिन पडिमाणं पुयाणं रोहण करइ२त्ता भते किफले ७

अर्थ - अहो भगवानजी जिन मंदिरका कंवाड लिलाम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ८

पाढ:- जिन मंदिरेण कवाडाणं रोहण करई२त्ता भंते किफले ८

अर्थः- अहो भगवानजी जिन प्रतिमाका स्नान लिलाम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ९

पाठ:- जिन पडिमाण पखालेणं रोहण करई२त्ता भते किंफले ९

अर्थ - अहो भगवानजी जिनराजका पालणा लिलाम करे तो क्या फलकी प्राति होवे १०

पाठ:- जिन पालणेणं रोहण करइ२त्ता भंते किंफले १०

अर्थ - अहो भगवानजी जिनराजका छत्र लिलाम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ११

पाठ:- जिन छतणं रोहण करई२त्ता भंते किंफले ११

अर्थः- अहो भगवानजी अनेक प्रकारसे जिनराज की वस्तु लिलाम करे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे १२

पाठ: अणेगविहेण जिनदवाणं रोहण करइ२चा भंते किंफले १२

भावार्थः- देखिये। मुर्तीपुजकोंने कैसा धताग मचा रखा है. के त्रिलोकी नाथ तिर्थंकर भगवानोको भी देवालिये कर दिये है "अजि कैसे" जिन प्रतिमाको जिनराज तुल्य कहते है और जिन प्रतिमाकी अनेक वस्तु

लिलाम करते है लिलामका—बि— पाया जाता है लिलाम करके पैसे जमा करते है

(प्रश्न) जैसा कोई मनुष्यके उपर किसीका पैसा लेना होवे और वो न देता हो तो वो मनुष्य सरकार मारफत उक्त मनुष्यकी इस्टेट लिलाम करवाके अपना पैसा जमा कर लेता है इस न्यायसे मुर्तिपुजकोने न्यात मथाल इसमें लोगोका धर्म बतलाते है मगर ये बात जैनके असली सिद्धांतोसे बिलकुल बरखलाप है, देखो एक कवीन कहा है

कुडलीया छद

तिर्थंकर मुक्ति गया, जैनी कर बखाण,
ताकि सुरत पुतलि, भंडिया मेली आणर
मोसरसे पाछा आया ढबगया घमसाण,
छुट कर मंदिर बणाया, कर भंडार खिच करण कहे,
द्रव्य मरपे की मुक्ति, जैनि करे बखाण,
गया तिर्थंकर मुक्ति, तिर्थंकर मुक्ति गया,
जैनि कर बखाण ॥१॥

देखो ! मुर्तिपुजकोने इर बजेसे लोगोको फुसलाके पैसा जमा करनेका प्रयत्न किया है लेकिन इसमे धर्म और आत्म सिद्धि किंचित मात्रभी नही है,

अभक्ष विषय

अर्थ— वहो भगवानकी भक्ष अभक्ष करे करावे करते को मज नाम वा क्या फलकी प्राप्ति होवे

पाठः- अभक्षेणं भक्षइरत्ता भक्षाव्इरत्ता अनुमोदइरत्ता भते किफले,

भावार्थः- देखिये ! मुर्तीपुजक लोग मखण, सहेत वगैरेको अभक्ष कहते है मगर अभक्ष किसको कहेना प्राण घात हो जावे तो मंजुर हे परतु भक्षण करनेके वास्ते कदापि मजुर नही करना चाहिये लेकिन मखण का तो " घी " और सहेतका " मुरबा " वगैरे बडे होसके साथ मुर्तीपुजक लोग खा जाते है ये अभक्ष कैसा उमदा है, दिल खुस मजा लेना है,

थंडा आहार विषय.

अर्थः- अहो भगवानजी शितल आहार करे करावे करतेको भला जाणे तो क्या फलकी प्राति होती हे.

पाठः- सीयंपिंड करइरत्ता करावइरत्ता अनुमोदइरत्ता भते किफले.

भावार्थ - देखिये। रात्रीकी वासी रही हुइ " रोटी वगैरे " खाने मे मुर्तीपुजक लोग माहा दोष बतलाते है मगर " लड्डु पेडे वगैरे " मिठि मिठि बलवान और स्वादिष्ट वस्तु रातवासी चटाचट खा जाते हैं क्योंकि जिम्याके चटे हे रातवासी रोटी तो न खाना और मजेदार माल ताल रात वासी खा जाना ये कोणसे जैनके असली सिद्धातोका न्याय हे ऐसे माल ताल शिवाय मजा उडाइ नही जाती हे मगर क्या करे बिचारे वासी रोटी वगैरेसे तो शरिरका बल हिण होता हैं इस वास्ते वासी आहारमे जीवकी उतपति बतलाते है मगर ये नही जानते है के वीर परमात्माने वासी आहार करके संथारा (समाधि) किया हे अगर थडे आहारमे दोष होता तो श्री वीर प्रभु कैसे ग्रहण करते ये अधिकार सुत्र श्री आचारंगजी क दुसरे सतस्कदमे देख लेना.

चार अंग विषय,

अर्थ — गहा भगवानजी पंचम कालके आ आचार्यादि हुए हैं उनोने भा निरु सूत्र, भाष्य, नियुक्ति संस्कृत मान्याम य चार अंग स्व है सा य चार अंग है

पाठ — किमते पंचम कालेणं भाव आचारणं संस्कृतेणं मसारी भगम भापाइ रूपेणं चत्तारि अंगेण हवइ

—जिन भाष्या विषय—

अर्थ — अहो भगवानजी तिन क्रमके तिर्थंकर महाराज संस्कृत भाष मे वाणी प्रकाम करते हे या नही

पाठ — किमते अतिते पडुपन्ने अनागते क्रमेण तिर्थंकरणं संस्कृतं वाणी वागरइ वा,

सिद्धरंग विषय

अर्थ — अहो भगवानजी सिध माहाराजका श्याम रंग है या नही

पाठ— किमंते सिद्धाणं श्याम रंगेणं हवइ,

भावार्थः— इसलिये ! मुर्तीपुजकोंका गो श्याम पदार्थ गया है उनम सिद्ध माहाराजका श्याम रंग करा है मगर सूत्र भी आचारांगजी मे सिद्ध माहाराजको रंगरूप वगैरे सर्व बातकी नास्ती करी है और सिद्ध माहाराज का अरूपी पद फरमाया है तब मुर्तीपुजकोंने सिद्ध महाराजका श्याम रंग कहां से निकाला है, इस रंगके वास्ते कोनसे स्थानपे गढा लाया है

—भाव विषय—

अर्थ — अहो भगवानजी जिन मंदिर जिन प्रतिमा तिर्थमादि जिन

तिर्थ पुजा प्रतिष्टा जात्रा वगैरे--उदे--उपसम--खेउपसम--खायक--भावमेसे कोणसे भावमे है.

पाठः- किंभंते जिन मंदिरेणं जिन पडिमाणं सेत्रुंजेणं अणेगेणं जिन तिर्थेण पुयाणं परतिष्ठाणं यात्राण जावसावजं धम्मेणं उदयइए, उवसमिए, खेउवसमिए, खइए; केवइ भावेण मइ हवई,

भावार्थ – देखिये ! मुर्तीपुजक लोग कहते है के धर्म निमित हिंस्या करे वो दिखनेमे हिंस्या है मगर भावमे हिंम्या नही गिनी जाती है, हमारे भाव सुध हैं, अरे भाई ये वात भी कही भी मानि जाती है कदापि नही कारण धर्मके उपर पुर्ण प्रेम रहता है वैसे ही धर्मके वास्ते छकाय जीवोंक प्राण घात करने के वास्ते प्रेमयुक्त प्रणाम रहते है तब हिंस्या युक्त धर्म उदय--उपसम--खेउपसम--खायकमे से कोणसे भावमे हैं

देखो। सुत्र श्री भगवतजीमे--छ--भावका अधिकार चला हैं उसमे से च्यार भावका किंचित अधिकार बतलाते हे ते निचे मुजब---

[गद्य पाठ]

उ० आठ कर्मको उदे करि विपाक (दु ख) भोगवेतो उदय भाव कहेना	उ० शखसेढंकी अग्नी निपरे कर्म रहे उसे उपसमभाव कहेना	ख० काइंकखय काइक उपसम वो खयो पसमभाव कहेना	खा० कर्मका खय करना वो खायक भाव कहेना
उदयइए १	उवसमिए २	खउवसमिए ३	खइए ४

भावार्थ.= देखिये। छ काय की हिंस्या, हिंस्या युक्त धर्मते अशुद्ध धर्म अठारे पाप, पचविस प्रकारका मिथ्यात पंचविस प्रकारकी क्रिया, आ-

उन्मद, पांच आश्रव, आठ कर्म पांच प्रमाद, तेरे काठिया, पांच प्रकारकी अंतराय, सात कुविसन, वगैरे जितन अशुभ कर्मोका बन्धन होके, इस भव परभवके दुःख की प्राप्ति होती है वो सब कार्य उदेभावमे जाण लेना, उस भावमे एकांत कर्म बन्धन करते हैं, ७ ज्ञानकी दयाका, ज्ञानका, समकितका, चारित्रका, [साधुपणका-व-श्रावकपणेका] तपका, संवरका, निजराका तथा आत्म सिद्धि वगैरेका, जितना शुद्ध पवित्र निर्मेय धर्म करणिका कार्य है जिससे अशुभ कर्मोका क्षय होके, इस भव परभवमे सुखानंदकी प्राप्ति होती है वो सर्व धर्म कार्य सदृश्य भावमे समझ लेना

च्यार घन घातिया अर्थात ज्ञानावरणी कर्म १ दरसणावरणी कर्म २ मोहणीकर्म ३ अंतरायकर्म ४ ये चार कर्मोको पुर्ण क्षय कर के केवल ज्ञान के वल दरसन (सम्यज्ञान सम्यक दरसन) की प्राप्ति करके अनुक्रम आठ कर्मोको पुर्ण क्षय करके मोक्ष जावे अर्थात सिद्ध पद को पहोंचे ज्यांपे जन्म, जरा, मर्ण, रुग, रंग वगैरे सर्व वस्तुकी तथा सर्व मदर्थोकी नास्ती है सो सिद्ध स्थान अलोकके अंतमे और तथा लोकके उपरोक्त के अग्र भागपे है; मगर ज्यांप वस्ती जगर जगल वगैर कुछ नही है, ऐसे अलोकीक स्थानप अरुपि पदसे सिद्ध महारा ज विराजमान है, मगर पुनरपि इस संसारमे आकर जन्म (अवतार) नही लेते है एस सिध्द स्थानपे पहोंचनेका जितना कार्य है सो सर्व धर्म कारक भावम समज लेना,

देखा ! मुर्तीपुजक लोग कहते है के स्त्री का चित्राम देखनेसे विषय विकार प्राप्ति होती हैं तो क्या जिन प्रतिमाको देखनेसे वैराग्य क्यों नही उपजेगा, क्या स्त्री क चित्रामसे जिन प्रतिमा हीण हो गइ, कदापि नही, ये कहना मुर्तीपुजकोका साफ न्याय है, सबब, स्त्री का तथा स्त्री के चित्रामका देखना तथा सर्व पापिष्ट कार्य वगेरेका करना

एकांत उदेभावमे हे मगर सुध्द पवित्र निर्वद्य दयामे धर्म करणीका तथा आत्म सिध्दीका कार्य कुछ उदेभावमे कदापि होता नही हे, इस लिये, स्री के चित्राम वगैरेके खोटे खोटे द्रष्टांत ऐसे स्थानपे लागु कदापि नही होते हे, इस वास्ते हम मुर्तीपुजकोको पुछते है के तुमारी जिन प्रतिमाकी पुजा प्रतिष्ठा वगैरे हिंस्यामे धर्म का सर्व कार्य कोणसे भावमे हे इसका खुलासा सभामे श्री जैनके एकादस अगादि प्राचिन असली सिध्दांतोके मूल पाठसे करना चाहिये,

केवली नाटक विषय.

अर्थः-- अहो भगवानजी केवली महाराज नाटक करे करावे करतेको भला जाणे.

पाठः-- किंभंते केवलिणं नाटकेणं करइत्ता करावइत्ता अनुमोदइत्ता

भावार्थ -- देखो। मुर्तीपुजक लोग कहते हे के कपिल केवलीको चोरोका कष्ट प्राप्ति हुवा तव चोरोको रंजित करणेके वास्ते कपलि केवलीने नाटक पाडा हे, ये कहना मुर्तीपुजकोका साफ खोटा है, और कपिल केवलीका अधिकार सुत्र श्री उत्तराधेनजीमे चला हैं मगर ये वात व्हांपे नही है और केवली कोरति आरतिका खय हो गया इस वास्ते ये वात कदाचि नही हो सक्ति है

सवैया ३१ सा.

हसवों नरमवोन, क्रिडाकेरो करवोन, नाटक विलास नाही,
केवलीने नाचणो, भगवती सुत्र मध्ये, केवलीने वरज्याएहे,
सकोन्नमे पडयासेति, वे वारन साचणो, तसकर मिला त्यारे

कष्ट हुवो भव भार, कंपिल्लक वास्यियो, नायकको नायण,
रितही भारित स्नेह, अमधरियो सनेह, कुंदन मकर्ण मांही,
पुत्तारिको भापणो ॥१॥

और ये लोग ' कुरमा पुत्र " के वास्ते भी कहते हे के कुरमा पुत्र को केवल उत्पन्न होनेके बाद—छ— महिन तक संसारमे रहे है, य कहना भी इन लोगोका जैनके असली सिद्धांतासे विरुद्ध ह, मगर इनका तत्व यह हैं क एसे एस माहात्मा पुरुषोंको मिथ्या लांछन लगाय सिवाय इन मुर्तीपुजकोके इरि मोगका सन मनम्पण काय सिद्ध नहीं हो सक्ते है, इस वास्ते जन्म बिगडा तो बेहतर है मगर उत्तम पुरुषोंका ता लांछन लगाना य ता मुर्तीपुजकोंको फर्ज हे

—रावण तिर्थंकर गोत्र विषय—

अर्थ— अहा भगवानजी जिन प्रतिमाके आगे नाच करती करता रावणन तिर्थंकर गोत्र बांधा या नही

पाठ— किर्मते जिन पडिमाण सनमुखण नाचकर्ण करइ? सा रावणेण तिर्थंकरणं गात्रेण उवजन्न,

भावार्थ – देखिय ' मुर्तीपुजक लाग कहत है क जिन प्रतिमाके आग रावणन नाच करक तिथकर गात्र बांधा हे य कहेना मुर्तीपुजकाका मात्र गपोड ह, क्योंकि श्री जैनके एकभ्रम अगादि मानिन असली सिद्धां तोंम य अधिकार नही है, तब इन मुर्तीपुजकोंने कोनसे दरयाम डुबकी मा रक य अधिकार बाहर निकाला है सा मालुम नही पडता है

आद्र कुमार विषय,

अथ – अहा भगवानजी अनाय कमार रत्नमाला, मिथ्या दृष्टी

आद्र कुमारने जिन प्रतिमाको देखनेसे समकितकी तथा जाति समरण ज्ञानकी प्राप्ति हुइ या नहीं.

पाठ -- किंभंते आद्र कुमारेणं जिन पडिमाणं पेखइ२त्ता समतेणं जाति समरण नांणेणं लभइ,

भावार्थः— देखिये। मुर्तीपुजक लोग कहते है के अभय कुमारने आद्र कुमारके भेटमे जिन प्रतिमाकों भेजी थी वो जिन प्रतिमाको देखके आद्र कुमारको जाती समरण ज्ञानकी तथा समकितकी प्राप्ति हुइ. ये कहेना मुर्ती पुजकोंका साफ खोटा है कारण सुत्र श्री सुगडायगजीमे आद्र कुमारका अधिकार चला है व्हापे ये वात बिलकुल नही है और विसेप अधिकार पक्षातमे खुलासा कर आये है.

देव गुरु धर्म निमित्त हिंस्या विषय.

अर्थ — अहो भगवानजी अरिहंतके वास्ते धर्म आचारज (गुरु) के वास्ते धर्मके वास्ते प्राणि (बेंद्रितेंद्रिचोरेंद्रि) को भूत [वनस्पति] को जीव (पचेंद्रि) को सता (प्रथ्वी पाणी तेज वायु) इत्यादि जीवोको मार पीटे, शस्त्रसे टोंचे शस्त्रसे काटे दुःख देवे, डरावे स्थान (ठिकाणा) छोटावे और उनोको जानसे मार डाले ऐसे देव गुरु धर्मके वास्ते ऐसा कार्य करणेवाले को कराने वालेको करतेको भला जाणने वाले को क्या फलको प्राप्ति होती है.

पाठः— अरिहतकजेणं धम्मे आयरिया कजेण धम्मे कजेणं बहू सूपाणाण भूयाण जीवाण सत्ताणं हणति छिंदंति भिदंति किलामइ मियाडंति भयत्तास मियाडंति, ठाणाउठाणा करेति जिवीयांओ, व वरोईया करेति, एवंण, कजेण, करइ२त्ता करावइ२त्ता अनुमोदई२त्ता भंते किफले.

भावार्थः— देखिये। देव गुरु धर्मके वास्ते मुर्तीपुजक लोग छ काय जीवोंकी हाणी करते है अर्थात छ काय जीवोंकी हिंस्या करते है लेकिन एसा कार्य करना मुर्तीपुजक लोगोंका साफ साफ है कारण जैनके एकादश अगादि प्राचिन असली सिद्धांतोंमे देवगुरु और धर्म के वास्ते छ काय जीवोंकि हिंस्या करणा साफ मनाइ है और एसा कार्य करणे कराणे करतेकं धर्म मानने वालोंको उत्तम गति मिलना मुसकल है ऐसा साफ साफ शास्त्रोंमे कहा है

माहासयजी ! देखिये ! हम हमारे पूर्ण प्रेमी धर्म मित्र मुर्तीपुजकोंकि, मुनि वर्ग तथा श्रावक वर्ग वगैरे आम लोगोंको जाहिर करते है के हमने जो उपरोक्त नकली पाठ दाखल किये है सो हमारे दाखल किये हुवे पाठोंकि अनुकुल थी जैनके एकादस अंगादि प्राचिन शास्त्रोंमे लिखित असली सिद्धांतोंसे असली मुल पाठसे सभामे सिद्ध करके दिखलाना चाहिये मगर इतर समझ रखना के पाठोंकि अंतम एसा पद्द आये हैं उसके आगे इय गोयमा ऐसा पद्द बतलाना पडेगा और जहांपि कहे ऐसा पद्द आया है उसके आगे ऐसे पाठ दिखलाना पडेगा

पाठः— जीवा समत लभई वाघ निसम्म सुय धम्मं चरित धर्म्म कम्मई निजरा कम्म सुसमयाइ उदयई नाणिदयई चरिमा उदयइ परित संसार कजई आहणेण सोहम कप्पो उक्कोसेण सव्वठ सिध्दे,

अर्थः— वा जीव समकितपामे बोध बिजपामे सुत्र धर्म चारित्र धर्म पामि कर्मोकी निजरा करे, दुर्लभ बोधिका सुलभ बोधि होवे, अज्ञानिका ज्ञानी होवे. चरम (छेला) शरिरि होवे, संसारमे परिभ्रमण करनेका वास्ते भव बहोत बाकी रहे होवे तो, थोडे बाकी रखे, जघन्यतोसम पहला देव लोक जावे, माहासमाधा जावे तो सवार्थ सिद्ध जावे

ऐसे खुलासे वार हमारे निम्न लिखित लेखानुसार अधिकार आम सभामे सिद्ध करके दिखलावोगे तब हम लोग तुमारा और तुमारे पुर्वाचार्यो वगैरोंका कथन सत्य समझेगे, नही तो, भोले प्राणियों को फुसलाके माल जमा करके इस भवमे मजा उडाना और संसाररुप समुद्रमे आप डुबना और दुसरोंको भी डुबाना, ऐसा धताग [पाखंड] मचा रखा है, ऐसा आम लोगोको निश्चे होवेगा,

—:०:—

ये स्तवन बनानेवाला चूश्त मुर्तीपुजक था और अन्य मतके वास्ते देखो क्या लिखता है,

॥ मिथ्यात्वी वर्णन लावनी ॥

कंकरकुं शंकर करी माने, ए कुमतीकी वाता है ॥
आक धतुरा बेल पानशुं, पुजत शिव रग राता है ॥क॥१॥
चडी जीवका गला कटावे, लोक कहे ए माता है ॥
ताकु पुजा मगन मन मोहन, सो नर नरके जाता है ॥क॥२॥
कु गुरुशु परभव दुःख पामे, नही तिल भर एक शाता है ॥
कु देवकुं चेतन यु सेवत, हिंसा धर्म दु ख दाता है ॥कं०॥३॥
कुगुरु त्याग सुगुरू निज सेवे, नित्य निर्ग्रंथ गुण गाता है ॥
जिनवर गुण जिनदास बखाने, ए मुक्तिका खाता है ॥क०॥४॥

देखिये ! अन्य मतके देवोंकी पाषाणादिक की मुर्तीको निषेध करते है, तो फेर इनोकी पाषणादिक की मुर्ती तिरण तारण कहासे आई, इनके और अन्य मतके किंचित फर्क नजर आता है, जसी

कित्त यात्र हिंस्या नहीं करनी, ज्ञान पाया कोशाररे ॥तु०॥८॥

ऱ् डाग इग्यारमे अध्यनसे, खुब खुला अधिकार ॥
गौतम स्वामी क्रिया उधारण, श्रावकको वेवाहाररे ॥तु०॥१०॥

समायक और दशावकाशी पोसा और पच्चखाण ॥
सभी सुत्रोंमे यही पाठ है, तु मतकर खेचा ताणरे ॥तु०॥११॥

ठाणायंगमे तिन मनोरथ, श्रावकका अधिकार ॥
चेत्य मनोर्थ ना किया सरे, सुत्र साख विचाररे ॥तु०॥१२॥

ठाणायंगके चोथे ठाणे, चार कहा विसराम ॥
समायक और दशावगासि, पोषध और पचखानरे ॥तु०॥१३॥

साढ समिये मिली श्रावकक्कु, किया सरी भगवान ॥
कोही सुत्रमे नहीं सुनासरे, चेत्य तणा विसरामरे ॥तु०॥१४॥

द्वादश भगवतकी वाणी, गया तिर्थंकर भाख ॥
समायंग सुत्रमें देखो, भगवतीकी शाखरे ॥तु०॥१५॥

इनकी करि खतावणीसे, जुदा २ अधिकार ॥
समायग और नंदि सुत्रमे, देखो अणजोग दुवाररे ॥तु०॥१६॥

सर्व साधुका यहि पाठ है, भण्या इग्यारे अंग ॥
मुक्ति गया अराधक होवा, तज्या कुगुरुका संगरे ॥तु०॥१७॥

तुंगिया पुरका श्रावकासे, सुत्र भगोति माय ॥
तप सजमका फल पुछियासरे, चेताला पुछा नायरे ॥तु०॥१८॥

सुत्र भगोती देखलो सरे, प्रश्न पुछा छतिस हजार ॥
चेत्य तणि पुछा नही सरे, अधर्मका दुवाररे ॥तु०॥१९॥

साध श्रावकको साता देकर, होवे इंद्र अवतार ॥
देव लोक तिजाको टाकुर, भगवतीमे अधिकाररे ॥तु०॥२०॥

देव लोकमे भमतरे सरे, प्रत्यक्ष आडे हाथ ॥
क्या करणि करतुत करि सरे, होवा हमारा माथरे ।।सु ॥२१॥
भवार्जवकी मेहर सरे हम हावे तुमारा माय ॥
प्रथम अंबुमे जायके सरे, तुम चलो हमारी माथरे ।।सु ॥२२॥
जंघा चारण विद्या चारण, चेत्य वन्दनका पाठ ॥
भगवतिमे क्या विराधक, मराकर समकी आंटरे ।।सु ॥२३॥
मही कुंवरिजी या फुरमाया, ज्ञाता सुत्रमे जोय ॥
रुधीरको वस्त्र रुधिरमें धोया, कभी शुद्ध नहीं होयरे ।।सु ॥२४॥
पुत्रनि जन्मे वासविं सरे, हिंस्या धर्म निहोय ॥
सुत्र साख विरोधके सरे, य गियो जन्मको खोयरे ।।सु ॥२५॥
धर्म कर्म और अधर्म दुवारमें, सूत्र सुत्र अधिकार ॥
आचारग और प्रश्न व्याकरणमें, देख अधमजोग दुवाररे ।।सु ॥२६॥
प्रश्न व्याकरणका धर्म अधर्ममे, देख हिय विचार ॥
चेत्य प्रतिमा माहि बाल्या, फल अधर्म दुवाररे ।।सु ॥२७॥
विलेक हिया वस्तु ईद्रिकी, नहीं वसवा जोग ॥
वसना भमके माहि देखलो, कुगुरु लगाया रोगरे ।।सु ॥२८॥
चेत्य बनावा कारणे सरे, करे जीवाको नास ।।
खोटा फल भगवती कहा सरे, परे नर्कमे वासरे ।।सु ॥२९॥
उत्तराध्यन सुत्रमे सरे, छटि गाथामें जोय ॥
बिन हरिकी हिंस्या कराबे, पापी समणा हायरे ।।सु ॥३ ॥
उत्तराध्यन गुण तिसमे सरे, देखो चित लगाय ॥
वियोतर बासका फल चालिया, चेत्यको फल मायरे ।।सु ॥३१॥
निर्णय पुन्नमी महेश्वमे सरे; किवो एह वो ध्यान ।।

साधु दरशनसे लियो सरे, जाति समर्णे ग्यानरे ॥तु०॥३२॥

मुहा दाइ दुला हासे, मुहा जीची विसेख ॥
चेत्य दुल्हाने क्या सरे, दसमी कालिक देखरे ॥तु०॥३३॥

जीव हणो मत जाण तासरे, मत कोही हणो अजान ॥
छटे अधेन दसमी कालीकमे, यो भगवत वखाणरे ॥तु०॥३४॥

आद अंत लगायो ही रहेगा, करलो वचन प्रमाण ॥
दस अधिनमे देखलो सरे, नहीं चेतनका नामरे ॥तु०॥३५॥

चार निक्षेपा कह्या सुत्रमे, खुब खुला अधिकार ॥
नाम स्थापना सप्न हे सरे, तु देख अणजोग दुवाररे ॥तु०॥३६॥

नाम इन्द्र गुवाल्यियो सरे, गऊ चरावण हार ॥
आवाको चीतराम देखने, गरज सरे निलगाररे ॥तु०॥३७॥

नकल सित्र मारे नही सरे, दुध न देवे गाय ॥
फोटु देख भरतारको सरे, विधवा सुवागण नही थायरे ॥तु०॥३८

पाखंडी और भिष्टाचारी, दर्वे निक्षेपा जाण ॥
साधु श्रावक भाव निक्षेपे, क्रिया श्री भगवानरे ॥तु०॥३९॥

भगवंत निर्णे कर गया सरे, क्यो कर्ता हे रोस ॥
अशुभ कर्मका जोर तुमारे, नही किसीका दोपरे ॥तु०॥४०॥

तेरी नांव दरयामे सरे, पड़ि भंवरके वीच ॥
को गुरु लेगया खेचके सरे, डोबी विसवा विसरे ॥तु०॥४१॥

दया धर्म भगवत क्यो सरे, भगट कियो विसेख ॥
साधु श्रावक पार उतरता, सर्व सुत्रमे देखरे ॥तु०॥४२॥

समण साध अणगारका सरे, पंच माहाव्रत जाण ॥
श्रावक द्वादस क्रिया सरे, पहोता पद निरवाणरे ॥तु०॥४३॥

रोख सिखोना नकल है सरे, जो गुरु मनाया तोल ॥
असली शुद्ध गुरु धर्म धारो, मिले आतम जातरे ॥सु ॥४४॥

अर्नेतिचार घेटाळ्य पुजा, देव लोगके भाय ॥
भव्य अभव्य सरिसा जीवाम, गरजन सिरी समारे ॥सु०॥४५॥

पुष्पकी पुजा करे सरे छुटे जीवाका प्राण ॥
पोसें इत्री आपनी सर, धर्म कहे बैमानरे ॥सु०॥४६॥

सबमे मारा जीव है सरे, भाख गया भगवान ॥
सात भोसकत किया कलेवर, समजो चत्र सुजान ॥सु ॥४७॥

वनस्पति सुक्ष्म फुलोमे, जीव क्या है जाण ॥
कोहि एक भव करने मुक्ति जासी, भाख गया भगवान ॥सु ॥४८

पुष्पकी पुजा मत करो सरे, मत छुटो जीवाका प्राण ॥
मिन छुट साधुको पुजो, खुसी मर्जकी लानरे ॥सु०॥४९॥

चोविस मामी नगर कल्यो सरे, सुणके मेघ कुमार ॥
अगणस दो सोल दो सुन्ने, गम्मत भव सुगाररे ॥सु०॥५ ॥

कर्म मुनिसर इममने सरे, पाळो धर्म असंख ॥
जीव दयाकी मजुना करने, मलो सिद्धार्थ मंदरे ॥सु०॥५१॥

॥ इति संपुर्णम ॥

दोहा

देव गुरु धर्म तिनका, किजे हिये पिछाण,
साण पणों मग दोहिले, सुनजो चतुर सुजाण ॥१॥

देव भमी जाणे नहीं, सु जाणे गुरु धर्म,
खोये माया मेरुने, बांधे भेरा कर्म, ॥२॥

कारागिर हाथे घडीयो, माथे थापि पात्र,
ते पत्थर किम तारसी, प्रत्यक्ष फुटी नाव ॥३॥

धुर गुण ठाणो तेहमे, ग्यान तणो नहीं लेश,
पत्थर मुख बोले नही, किन विध दे उपदेश ॥४॥

मुरख वेलु पिलणे, काढयो चाव्हे तेल,
मृग तृष्णोमे जल चाहे, खरासरीको खेल ॥५॥

तैसेही पत्थर पुजके, मुक्ति मांगे मुढ,
ते मुक्ती पावे नही, निकमी ताणे रुढ ॥६॥

जैसा दरखत होय छे, तैसा छोडा जोय,
जडतो जड जे हवो करे, चेतन कहांते होय ॥७॥

स्तवन

साधन जाणो इण चलगतसुं (देशी)

सुत्र तमो तो न्याय विचारो, मति करो झुंटी ताणजी,
पत्थरमे जिनजी नहीं लाधे किजो हिये पिछाण ॥१॥सु०॥
हिंसा धर्म कहे नही जिनजी. तिन कालरे विचजी,
हिंसा माहे धरम परुपे, ते तो जाणो नीचजी ॥२॥ सु०॥
अनुयोगद्वार सुत्रमे चाल्या. निक्षेपावली चारजी.
भाव निक्षेपो साधु वंदे, किजो हिये विचारजी ॥३॥सु०॥
नाम थापना द्रव्य न वांदे. देखो सिधो न्यायजी,
स्थापना वदन कुमति भाखे. योही वडो अन्यायजी ॥४॥सु०॥
जिनजी आपमोक्षमे जावे. लारे तेह शरीरजी.

साधु गणधर काइ न वंदे, इम भाख्यो महावीरजी ॥५॥सु ॥
घरमें अरिहत देव विराजे मारग मिलिया साचजी
अरिहंतन साधु नहीं वंदे ओशो अर्थ अणाचजी ॥६॥सु०॥
तो परथरो साधु किम वंदे. इणो आंख्या खाचजी,
वीरजनो उपदेश विचारो, मति दुवा कुत्र वाचजी ॥७॥सु ॥
आभ्र द्वारमें मंदिर प्रतिमा, भाखी श्री जिनराजजी,
प्रश्न व्याकरणमें देखो, नहीं होय पत्थराधुं काजजी ॥८॥नु ॥
आवश्यक सुत्रमें इनर भाखे, द्रव्य आवश्यक नही मोक्षजी
तो पत्थराथि हिंसावाणो करको किम संतापजी ॥९॥सु ॥
द्रव्य पडिक्रमणा माहे भाख्या श्री जिन तत्व पांचजी
प्रथम गुण ठाणा द्रव्यमें भाख्या वर्गु करो निरमी सांचजी ॥११
संवर निर्जरा विन मुक्ती नही खोलो हिये मझारजी
भाव विना सिद्धि नहीं पावें भाख्र ये निर्धारजी ॥११॥सु०॥
दशवैकालिक सुत्रमें भाख्यो यशी पोशो करे वाक्जी
अणारी उनसुं नही होवे य वो भालको ध्याख्जी ॥१२॥सु ॥
उत्तराध्यनमें जिनजी भाखें, द्रव्य पडिके कानजी मोक्षजी
भाव पडि मति केवण मुक्ती भाखी देखी करा संतापजी ॥१३॥
सुगडायंग सुत्रमें भाख्यो, अन्य मती समकित मंदजी
समकित द्रव्य क्रिया छाडे, भाव विनास फेदजी ॥१४॥सु०॥
पत्थर स्थापना माहे भाख्यो भाव कहा कहो द्रायजी
परना भाव मिले नहीं मेरा हिये विमासी चायजी ॥१५॥सु॥
समवायंगजी सुत्रमें देखो द्वादश आवर्तन नेहजी
द्रव्यपि माता नहीं तिहां भाखी संसय मो भर मेहजी ॥१६॥सु०

असल छोड नकलको ध्यावे, या मुरखकी बुद्धि—राम ...
रत्न चिंतामण हाथसे फेंके, काच ग्रहे वे शुद्धिरे ॥१४॥म०॥
कहेत कबीरा सुन भाइ साधु, यो पद है निर्वाणि—राम
या पदकी जो निंद्या करे, होवे वाकी धुल धानीरे ॥१५॥मं०॥

॥ इति ॥

—पुज्य चोथमलजी माहाराज कृत स्तवन—

सासण नायक दियो उपदेश, धर्म करो मिट जावे कलेस

ग्यान दर्शण चारित्र तपभाव सोन अराध्या भव जीव तिरणरो डाव ॥१॥
थेजिन जीरा वचन हिये धरोजी तुमें जिव हणिने पुजा काई करोजी ।टे।
सतरे भेदे लेई पुजारो नाव, छ काय जिवारो काइ करोजी हाण

इमकिमरिजे श्री वितराग, जिके पाप अठारे रोकर बेठा त्याग ॥थे०२॥
पुजा करावो साधु नाम धराय, इसडो अंधेरो नहीं जिन धर्म माय
माहरि माता फेर कहिजेजी बाझ, दिन दो फेरा किम थावेजी सांझ॥थे॥३॥
प्रभुके अंगिया रचो वले गहेणा पहिराय, नाटक करोवले ताल वजाय
धमक धेया कर चावोजी मोक्ष पिण ससय पडियो जावण देव लोक॥थे४॥
प्रभु त्यागी हुवा ज्याने भोग लगाय, खल गुल किधाथे एकण भाव
भोला नवी जाणो गाडरि प्रवाह शिख दिया चोर दंडे जाशाहयेजी॥थे५॥
सतरे प्रकारे करि जिवाने राख ए पुजा कही सुत्र निजी साख
भावसुं पुजो श्री अरिहंत देव सत्य सिल चंदन अगर जखेव॥६थे०॥
आचारंग प्रश्न व्याकर्णमे पाठ, दया पाले ज्यु बंधे पुनना थाट
साठ नाव दया राजीं सोय जिणमे जीव रक्षा पुजाले ज्योजी जोय॥७॥थे॥
महणो २ वाणि जिनराज, थे हिंस्या धर्म कर किधो अकाज
तिर्थंकर ल्यो तीन कालरा देख, सुत्र आचारमे वाणिजी एक॥८॥थे०॥

निज मंदिरको सोधन कियो पर मंदिरमें डोले—राम
मढी मढाइ बामे बठी तो हुं मुन्ह बोलेरे ॥२॥मं०॥

जल उपर बाडिरि मांही बैठ पयाल गावे—राम
या लों कुं तो केसी वार क्याहेकु शिस नमावोरे ॥३॥मं०॥

पेट भरणके कारण नचा यो मंदिर बनायो—राम
आप गुरुको करि ठगाइ ताकुं पथर पुगावारे ॥४॥मं ॥

मंदिर पुतली उपर देखो श्वान मारके मूत—राम
ताकुं तो या तावे नही तुम क्याहे अज्ञानमें सुवरे ॥५॥मं०॥

श्रवणसे या सुणे नही, कैसो गाय रिजाय—राम
नैणासे या देखे नही क्याहे समस्माइ बणोवरे ॥६॥मं०॥

हिय स्वर हैं नासका याको, क्याहे फुल चढावे—राम
रसना रस तो भयो नास्ति क्याहे भोग लगावेरे ॥७॥मं०॥

हाथ पाव तो याके नाही ,क्याहे रथ ,चलावे—राम
मूर्ती मिठ्ठी तु लिया फिरे, नाम रेखाकि मरावेरे ॥८॥मं०॥

सर्व बातकी भई नास्ति, यो नही हैं भगवान—राम
यासामें तु मरन मास्यो निकल गयो याहें ज्ञान ॥९॥मं०॥

ज्ञग कासिमर चोर भन्याई तु तो भमुक किनी—राम
मन तु ताममे मर मास्यो सत गुरुको ज्ञान नही लिनोरे ॥१

मुसलमान हिन्दुको देखो और जैनक ताई—राम
मूर्तीपुजा करी नही भाखी, या नवी बात बनाइरे ॥११॥मं०॥

ज्ञग पासिमर झगुरु बनिया, ऐसो जाल फसायो—राम
धन हुण्णके कारण मांही, उरझ्यो रस्तो बतायो ॥१२॥मं०॥

इन रस्तासे दुरो हुवे, परम पदको पावे—राम
इन रस्तामें पडियो देखे, फल दुखारे आवेरे ॥१३॥मं ॥

असल छोड नक्लको ध्यावे, या मुरखकी वुद्धि-राम —
रत्न चिंतामण हाथसे फेंके, काच ग्रहे वे शुद्धिरे ॥१४॥म०॥
कहेत कवीरा सुन भाइ साधु, यो पद है निर्वाणि-राम
या पदकी जो निंधा करे, होवे वाकी धुल धानीरे ॥१५॥मं०॥

॥ इति ॥

—पुज्य चोथमलजी माहाराज कृत स्तवन—

सासण नायक दियो उपदेश, धर्म करो मिट जावे कलेस
ग्यान दर्शण चारित्र तपमात्र योन अराध्या भव जीव तिरणरो डाव ॥१॥
थेजिन जीरा वचन हिये धरोजी तुमे जिव हणिने पुजा काई करोजी टे।
सतरे भेदे लेई पुजारो नाव, छ काय जिवारो काइ करोजी हाण

इमकिमरिजे श्री वितराग, जिके पाप अठारे राकर बेठा त्याग ॥थे०२॥
पुजा करावो साधु नाम धराय, इसडो अंधेरो नहीं जिन धर्म माय
माहरि माता फेर कहिजेजी बाझ, दिन दो फेरा किम थावेजी सांझ॥थे॥३॥
प्रभुके अंगिया रचो वले गहेणा पहिराय, नाटक करोवले ताल वजाय
धमक धेया कर चावोजी मोक्ष पिण ससय पडियो जावण देव लोक॥थे४॥
प्रभु त्यागी हुवा ज्याने भोग लगाय, खल गुल किधाथे एकण भाव
भोला नवी जाणो गाडरि प्रवाह शिख दिया चोर दंडे जाशाहथेजी॥थे५॥
सतरे प्रकारे कारि जिवाने राख, ए पुजा कही सुत्र निर्जी साख
भावसुं पुजो श्री अरिहंत देव, सत्य सिल चंदन अगर जखेव ॥६थे०॥
आचारंग प्रश्न व्याकर्णमे पाट, दया पाले ज्यु वंधे पुनना थाट
साठ नाव दया राखी सोय जिणमे जीव रक्षा पुजाले ज्योजी जोय॥७॥थे॥
महणो २ वाणि जिनराज, ये हिंस्या धर्म कर किधो अकाज
तिर्थंकर ल्यो तीन क्रालरा देख सुत्र आचारमे वाणिजी एक ॥८॥थे०॥

दया सागर कह्या श्री भगवान येभी बहभिने कई तोडोभी सान
फुल बचावो कहे पाणि ढोल धर्म बतावो पारे घट पणि मोक्ष॥९॥वि०॥
घट काय कुटोकर मानोजी धर्म इण बातांसुं बांधो भारागी कर्म
मंद बुद्धि कह्या मम व्याकर्ण माय कुगुरुयोंकने कह्यो नर्कमें माया॥१०॥वि०॥
मको प्रसाद करावेभी कोय ध्याने स्वर्ग बतावो वारमेंभी सोय
जिव हण्यां भोग मास्स स्वर्ग सो वकी वासुदेव कीम गावभी नर्क॥११॥मा
उत्तमणो करिम ठवावोभी वाप. वके रोकड़ा दाम खेवोनी आप
नामतो लेवो भमु देव कठोड पे त्यागी थया मास गया कर्म ताड़॥१२॥वि॥
तिरण तारण हुवा श्री वीतराग. ये, ई त्म, थवा कहे कुगरुसोभी माय
निवध मार्ग दाख्यो श्री जिनराय इणने आराध्यासरे आतमकाज॥१४वि०॥
बिन मरतार घमड सोवेभी मार, वे भाम मर्थे मिश्रिया बोकिमीदार
गोवो इणरि किमरखीजी सर्म. थोभी कहणीमें कोई कर राखा धर्म॥१४॥वि॥
समत अठारे साठ भैपुर चौमास. दया पालो ज्युं पुगे बंछित आस
ऋषि चोथमलजी कहे सुन गोय सुख राग द्वेष मत करज्योभी कोया॥१५॥वि
ख्याति मद चोथ ममस्वार, जिनबीरा नाव तिर्यां खेवोभी पार
भाव पुजा कहो शिव हुलास. ज्युं छ भाव वारा गर्भांगी वास॥१६॥वि०॥

॥ इति ॥

—बाणके उपर स्तवन—

मति करोमि सुने कालदए दरी सुणीयो भरसेगा पोषण
उथपे ग्रहाचार हैं, ॥एदेर॥
पोषम उथाप उमादक पाप भ्रष्टाचार कहीजे,
आचारय दुने सत संघे एहुनो निरणो किजे हो ॥१॥सु०॥
रिछ प्रकारे धारण दाख्यौ उमोदक को एक,

एकविंश प्रकारे धोवण पाणि. लेजो सिद्धांतमे देख हो ॥२॥सु०॥
म्हट कायाका मर्दन करके. उश्नोदक करावे,
साध नहींवे भ्रष्टाचारी. निश्चे अधोगत जावे हो ॥३॥सु०॥
खट मिठो कडवो नेक सायलो. चरको फेर वो आवे,
पयसम उष्णोदक पिता, एतो दु.ख कुण पावें हो ॥४॥सु०॥
हाडि और कठो ठिकेरो. धोवण सिद्धांतमे दाख्यो,
अध्येन पांचवे दस वैकालिक, श्री मुख सेति भाख्यो हो ॥५॥सु०॥
इद्रि दमण होवे धोवणसे. बल पुष्ट क्षिण थावे,
उष्णोदकसे वधे प्राक्रम. फेर मस्ती दिल आवे ॥६॥सु०॥
श्रुत काल उष्णोदक धोवण, बंधन्न ऐसा भाखो,
गाल पुराण तो म्हे नहीं माना साख सिद्धांतकि दाखो हो ॥७॥सु॥
अंतरमो रत पिछेको धोवण अनंत काय बतलावे,
झुंटा बोला पेटा अर्थी. शास्त्र रहस नहीं पावेहो ॥८॥सु०॥
अतरमो रत जो पिछे लेवे. सचित वोह बतलावे.
अंतरमो रतजो पेलि लेवे वाकु प्रायश्चित आवे हो ॥८॥सु०॥
प्रथम पहेर अखिर नहीं कल्पे. तिन पहेरका काल.
सिद्धांतोकु भक्षा पहुचावे. उनके खोटे हाल हो ॥१०॥सु०॥
सचित आहार पाणिजो भोगे निश्चे ग्रहस्थि होय,
सयम भ्रष्ट सका मत आणो, लेवो सिद्धांतको जोय ॥११॥सु०॥
तिनउ काला दाखे मुरख, भेद तणा अजाण,
अर्ध्द उर्ध्द और मध्य समागम, जिनवर वेण प्रमाण हो ॥१२॥सु०॥
पूर्व भवे धोवण वेसता गोंत तिर्तंकर वाध्यो,
सख राजाय सोमति राणि. मोक्ष पथकुं साध्यो हो ॥१३॥सु०॥
प्रसाद पुज्य सौभाग कहिजे: मुनि कुंदन इम भाख,

कमदि माहे स्तवन बनायो सिद्धांतोकि साख हो ॥१४॥सु०॥
उगमिसे पचावन सालमे, कृष्ण दश वैशाख,
रिस आवेतो सुध्द प्रमरसो असुध्द मेंग मति माल हो ॥१५॥सु०॥

॥ इति ॥

॥ अथ श्री उपदेशनी लावणी ॥

आप समझकर घरे नहीं पाया, दुजाकुं क्या समजावे ॥
भटक फिरे जिन दास मगतम, हियो हाथमे नहीं आवे ॥

॥ ए आंकणी ॥

दरस सवाद चाहनकी चितमे, चामक अनिकी लाय लगे ॥
इद्रीके परवशमे पडियो ग्यान कथा कहा कैसे भगे ॥
तृष्णाने मन छुट कियो है, कपट करी परजनकु ठगे ॥
खाय खाय छोडी मांस वधार्यो, प्राणि किस विध पले पगे ॥
विषय विसवकी करे घुपणी, धर्मोसुं चित नहीं लावे ॥भ०१॥
अपने अवगुणकु नहीं देखे, दुजाका अवगुण भांखे ॥
हिंसाहीमे हुओ हजुरी, दया दुर दिलसे नाखे ॥
गुणकरताय गुण खाय मरो मन, अवगुणके रसकुं चाखे ॥
विनुरी प्रश्नमे राग धराम, सरण जिनवर किम राखे ॥
ठग फांसीगर चोर अन्यायी, धन मिम इनकु ध्यावे ॥भ २॥
अवगुणकी मेरी खान आतमा, अज्ञान होय सो मोह पुजे ॥
मही गाममें रतन भरचो, परद भव सरिसो सुजे ॥
पारख नही है हिये ग्यानकी, गुण अवगुणकुं कुण बुजे ॥
गमर देम कहे मुम घरमें, काम धेनु इतनी दुजे ॥
एसी मेरी भवनीत आतमा, अपगुन किम गाया गावे ॥भ ३॥

क्रोध मान मायामें मातो, लोभ माहे लपट्यो रहेतो ॥
गरय गुमानी गमको गरजी, पिड पारकी नही सेतो ॥
भक्ति नही गुरु देव धर्मकी, कठण वचन मुखसे केतो ॥
अतर आट न खुले हिाकी, पुठ परम पटकु देतो ॥
स्वाग सजी जिनदास जेनको, माल मुल्कको ठग खावे ॥अ०४॥

—:वर्ग ५ वा:—

प्राचीन अर्वाचीन निर्णय.

देखिये ! वडी भारी आंश्चर्य की वात हे के हमने कितने क ग्रंथोमे अवलोकन किया हे, और यति सवेगी पितांवरी डिगांवरी वगैरोंके मुखसे भी सुना है के श्री जैन श्वेताम्बर साधु मार्गी (ढुंढीये) वर्ग नवीन हे ऐसा कहते हैं मगर ये कहना इन लोगोंका साफ खोटा है लेकिन हम यहापे ईसका किंचित वर्णन करना चाहते हैं सो ख्याल किजीये,

मुर्तीपुजकोंका पुरावा निचे मुजब:—

आज्ञान तिमर भास्कर प्रष्ट १७९ ओली २१मी में संवत १७०९ मे निकले ढुंढक मति ऐसे लेख हमारे ऊपर केई ग्रंथोमे दरज किये हुवे हैं कोई अढाइ सो वर्ष वतलाते है कोई चार सो वर्ष वतलाते हे कोई

ढूंढिया मजब केम्म छम सत्पन्न हुवा ऐसा भी कहते है ऐसे कपोल कल्पित मान्य बनाके अपना दिल खुस करते है लेकिन असली बात का हाल अभि तक इन लोगोको पुर्ण खबर नही हैं,

माहाशयजी देखो ! यदि ढुंढेमी पितामबरी दिगाम्बरी अवर मुर्तीपुजक लोग कहते है के हम लोग अनादि प्राचिन है लेकिन ये कहेना इन लोगोका साफ खोट्य (झुठ) है, अगर इन मुर्तीपुजकोंको अपने आपकी आदि अनादि प्राचिन अर्वाचिन की खबर नही हैं तो दुसरी असली बातों की तो क्या खबर होवेगी (मिथ्यात्व) दिपाके निचे अंधेरा ही हुवा करता है सोचनेका स्थान है के इनो मरूसी जैन भाईयोंका अंधेरा कब दुर होवेगा

देखिये ! आम (सर्व) जैन वर्ग नवकार मंत्रको सर्वोत्तम और (प्राचिन) मानते है और आम जैन वर्ग नवकार मंत्रका स्वीकार [अगिकार] करते हैं और आम जैन धर्म नवकार मंत्रके स्मर्ण (जाप) के साथ आरम सिद्धि भी मानते है और आम जैन का नवकार मंत्रको सिद्धांत शिरोमणि भी मानते है ईसलिये आदि अनादि प्राचिन (अर्वाचिन) का निर्णय हम लोग नवकार मंत्र वगैरे से निर्णय करना चाहते है,

॥ परिछेद १ ला ॥

—! नमोकार मंत्र :—

नमो अरिहंताणं–णमो सिद्धाणं–णमो आयरियाणं
णमो उवझायाणं–णमो लोयेसव्वसाहुणं—॥१॥

देखिये ! ये नवकार मंत्र आम जैन वर्गको सम्मत है लेकिन

इस नवकार मंत्रके आखिर (अंत) में णमो लोये सव्वसाहुणं ऐसा पद हैं, मगर णमो लोये यतियाणं, णमो लोये संवेगीयाणं, णमो लोये पिताम्बरीयाणं, णमो लोये डिगाम्बरियाणं, णमो लोये सुरिणं, णमो लोये सागरणं, णमो लोमे विजेणं, वगैरे ऐसे पद नवकार मंत्र के आखिर मे एक भी नजर नही आते है अगर हमारे लेखानुसार नवकार मंत्रके आखिरमे कोई भी पद होंता तो उस पद वालेको हमलो ग अनादि (प्राचिन) मान लेते लेकिन हमारे लेखानुसार नवकार मत्र के आखिरमे एक भी पद नहीं होनेसे इन कपोल कल्पित गाल वजाने वाले मिथ्या वादियोंकों अनादि (प्राचिन) किस तोरमे माने जावेंगे कदापि नही नवकार मत्रकी साक्षीसे पुर्ण निश्चे हुवाके यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग अनादि [प्राचिन] नही हैं आर्वाचिन नवीन हैं.

परिछेद २ रा.

श्री जैन के एकादस अंगादि प्राचिन असली सिद्धांतोंमे च्यार मंगल च्यार उत्तम च्यार सरण प्रभुने फरमायो हैं लेकिन इस उपरसे भी यति वगैरे मुर्तीपुजक लोक अनादि प्राचिन सिद्ध नही हों सकते हैं,

चार मंगलके नांव—अरिहंता मंगल, सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केवली पन्नते धमो मगलं,

च्यार उत्तमके नांव—अरिहंतालो गुत्तमा, सिद्धालोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवली पनते धम्मोलो गुत्तमां,

च्यार सर्णके नांव—अरिहंता सरण पडिवजामी सिद्धा सरण पडिव्वजामी साहु सरण पडिव्वजामी केवली पनंते धम्मो सरण पडिवजामी.

देखिये ! च्यार मंगल च्यार उत्तम च्यार सरण जैनके असली सिद्धांतोंमें प्रभुने फरमाया है लेकिन इस ठिकाणे सिर्फ साधुका नाम है परन्तु यति वगैरोंका नाम बिलकुल नही है अगर ये लोग अनादि [माचिन] होते तो इस ठिकाणे तथा नवकार वगैरोंमें यति वगैरे लोगोंका नाम आनेके वास्ते क्या हरजा था, इस परसे पुर्ण निश्चे हुआ के यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग अनादि (प्राचिन) नही है ऐसा सिद्ध होता है,

(परिछेद ३ रा)

देखिये ! यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग अपने बडे तथा प्रतिमा वगैरे को वंदना नमस्कार करते है लेकिन इस रितिसे भी यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग अनादि (प्राचिन) सिद्ध नही ठहर सक्ते है, महाशय यजी ! देखो ! यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग उनोंकि आचार्य उपाध्याय गुरु प्रतिमा वगैरेको, " इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणि जाए निसी ही आए मथेण वंदामि " इस पाठसे वंदना नमस्कार करते है लेकिन ये भी पाठ अधुरा है, और इस पाठमे भी दुसरे ठिकाणेके शब्द मिलाये गये है परन्तु इस पाठसें वंदना नमस्कार करना श्री जैनके एकादस अंगपत्रि प्राचिन असली सिद्धांतोंसे बिलकुल बरखिलाफ (स्रोय) है लेकिन देखिये ! अवश्यक सुत्रका पाठ,

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणि जाए निसीहि आए अणु जाण मे मिउग्गह निसीहि अहो कायं कायसं फासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलं ताणं बहु सुभेणं मे देवसी वइकंतो जत्तामे जवणि ज्जं च मे खामेमि खमा समणो देव सियं वइक्कमं आवसि आए पडिक्कमामि खमा समणाणं देवसी आए आसायणाए तेतिसं नयराए जंकिंचि मिच्छा ए मन दुक्कडाए वय दुक्कडाए काय दुक्कडाए क्रोदाए माणाए, मायाए

लोहाए सव्वकालिआए सव्वमिछो वयराए सव्वधम्माए कमाणाए आसा-
याए जोमे देवसी अयारको तस्स खमासवणो पडिकमामि निंदामि गिं-
रिहामि अप्पाण वोसिरामि.

ये पुर्ण पाठ तो प्रतिक्रमण [सध्या] करित वखत तिन दफा पढना (कहेना) पडता है, मगर हर वखत मुर्तीपुजकोंने मुर्तीपुजाका नवीन मत चलाया तब जैनियोंके असली कायदे छोडके नवीन कायदे निकाले और असली सिद्धातोंके कितनेक पाठोंका डामा डोल कर डाले परंतु उक्त पाठसे वंदना नमस्कार करना ये जैनका असली कायदा नही हे मगर इस जगेहमे जैनका असली कायदा जाहिर करते हैं,

देखिये ! गणधर माहाराज वगैरोंने वंदना नमस्कार जिस पाठ से करि हे वो पाठ निचे मुजब —

॥ असली सिद्धांतोका पाठ ॥

तिखु त्तोल्या अयाहिण पयाहिण वंदामि नमंसामि सक्कारेमि समाणेमि कल्याणं मंगलं देवीय चेइय* पज्जुवासामि मथेण वपामि,

---

* १॥ इस ठिकाणे मुर्तीपुजक लोग वैयाकर्णके धतांगेसे चेइय शद्धका अर्थ प्रतिमा करते हे लेकिन यहांपे चेइयं शद्धका अर्थ प्रतिमा नहीं होता है कारण इस शद्धके अवल देवयं ऐसा शद्ध आया है और पछातमे पज्जुवासामि ऐसा शद्ध आया है परंतु इसका तात्पर्य क्या है देवयं—के० जो च्यार प्रकारके अल्प ज्ञानी देव है वो भी इस लोकमे पुजनीक हैं और इनोसे तो आप चेइय—के० अनंतगुणा अधिक माहा ज्ञानी पुरुष है इस वास्ते मे आपकी पज्जुवासामि—के० तन मनसे सेवा भक्ति करके नमस्कार करता हु इस वातका तात्पर्य इतनाही है,

महाशयजी ! देखिये ! गणधर वगैरोंने ईस पाठसे वंदना नमस्का र करी है,

जैन मुर्तीपुजकोंकी तोरसे वंदना नमस्कार करना जैनके असली सिद्धांतोंमे कोइ जगेह लेख नही है इसपरसे पुर्ण सिद्ध हुवा के यति वगैर मुर्तीपुजक लोग अनादि माचिन नही है अर्वाचिन नवीन है,

(परिछेद ४ था,)

यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग जिस वखत शिष्य करते है तब शिरपर वांस खेप डाल्ते है इस उपरसे भी ये लोग माचिन नही ठर सक्ते है महाशयजी ! देखिये ! यति वगैरे शिष्य करते है तब उसके शिरपर वांस खेप डाल्ते है, लेकिन वांस खेप डालना य भी जैनके एकादस अंगादि माचिन असली सिद्धांतोंसे साफ वरखिलाफ है अगर ये बात सत्य होती तो भी जैनके असली सिद्धांतोंमे कोइभी ठिकाणे ये अधिकार आता लेकिन कोइ भी सिद्धांतोंमे ये अधिकार नही है इस परसे सिद्ध हुवाके, यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग अनादिके (माचिन) नही है अर्वाचीन (नवीन) है मगर माचिन नही है,

॥ प्रवेश ॥

यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग जिस वखत ग्रहस्थीके घरमे गोचरी

लेकिन तात्पर्यका जो पुरुष अज्ञान होता है वा पुरुष प्रजापतके पाके की पुछ पकडी हुई कदापि नही छोडता है लेकिन उसे मुर्ख शिरोम णी कहते है परंतु साचा अर्थ कदापि मंजुर नही होता है जैसा स्थान होयगा वैसा अर्थ मंजुर करनेमे आता है

वगैरे के वास्ते प्रवेश होतेके साथ धर्म लाभ ऐसा शब्द उच्चारण करते है तथा कोई पुरुष उन लोगोंको वंदना नमस्कार करे तो, उस वखत भी उपदेशमे धर्मलाभ ऐसा शब्द उच्चारण करते है, लेकिन इस परसे भी यति वगैर मुर्तीपुजक लोग अनादि (प्राचिन) नही ठहर सकते है,

देखिये ! श्री जैनके असली सिद्धानोका कायदा ये है के जिस वखत जैन मुनि ग्रहस्थके मकानपर (घरको) कोइ भी वस्तु लेनेके वास्ते जावे उस वखत वो वस्तु कल्पनिक (निर्दोष) हैं या नही है, इस बातकी सिर्फ चोकशी पुर्ण करना चाहिये लेकिन उपदेश तरीकेका शब्द धीरे अगर जोरसे वस्तु की याचना करनेके आगे तथा पिछे उच्चारण करने की कोई जरूरत नही हैं अगर उस वखत कोई वंदना नमस्कार करे तो कहना चाहिये और यति वगैरे मुर्तीपुजक लोगोंको कोई वंदना नमस्कार करते है तब उपदेशमे धर्मलाभ ऐसा कहते हैं लेकिन ये कहेना इन लोगोका श्री जैनके असली शास्त्रोंसे वरखिलाफ है,

माहाशयजी ! देखिये ! श्री वीतराग देवाधिदेव तिर्थिकर महाराज वगैरोंको कोई भी पुरुषने वदना नमस्कार करी है तब उपदेशमे ज्ञानी पुरुषोंने इस मुजब फरमाया है " देवाणुप्पीया " ये शब्द उच्चारण किया है लेकिन " धर्म लाभेणं " ऐसा शब्द कोइ भी तिर्थिकरोने फरमाया नहीं है. और किसी जैनके असली सिद्धातोंमे भी कहि लेख नही है अगर ये बात अनादि (प्राचिन) होती तो जैनके असली सिद्धातोंमे लेख अवश्य होता मगर यति वगैरे मुर्तीपुजकोंने ये " धर्म लाभ " का कायदा (रस्ता) नवीन निकाला हैं इस परसे पुर्ण निश्चे हुवा के यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग अनादि प्राचिन नही हैं अर्वाचिन (नवीन) है.

पुर्वपक्षी:— क्योंकी आप लोग भी उपदेशमे "दयापाल्ये" एसा शब्दका उच्चारण करते हो फेर आप लोग अनादि (प्राचिन) कैसे ठहरोंगे,

उत्तर पक्षी:— माहाशयजी! देखो ! बारावर्षी महा दुष्काळके कारणसे श्री जैनके असली मुनि इस आर्य क्षेत्रोंमेंसे निकलके अन्यक्षेत्रोमें जाते रहे थे सोफेर इन आर्य क्षेत्रोंमें जैनके असलि मुनियोंकि नास्ती होगइ बादमे मुर्तिपुजाका मजहब और नविन मत प्रगट होके "धर्मलाभ" का सोर गोरके साथ पुकारकर बमने लगा [मिसाल] सुना घर देखके कोइ नया नाचताहे किंतनेक अरसेके बाद अन्य क्षेत्रोंमेंसे मुनि इन आर्य क्षेत्रोंमें आ ज्ञानवानदेगा माहाराज पधारे महाराज श्रीके पधारनेसे इन आर्य क्षेत्रोंमें असलि जैन मुनियोंकी वृद्धि हूई तब श्रावक लोगोंनें मुनि महाराजसे अर्ज विनंति गुजारीस करीके आप साहेब उपदेश शब्दमें—देवाणुप्पिया,, एसा फर्माते हो लेकिन इस गहन बातमें अल्प बुद्धिवाले जीव नही समजते हे इस वास्ते आप साहेबान एसा फरमाना चाहिये क सर्व सम्यग्जीवोंके हृदयकमलमें आपका वचन सहजसे साथ उसमाय [समभाव] तब ज्ञानवंत मुनिवरोंनें दिलमें सोचा [विचारा] के सिध्दांतोंके न्यायसे कार्य करना चाहिये तब ज्ञानवंत मुनिवरोंने भी जैनके असलि सिध्दांतोंका न्याय मिलायका श्री शासनाधिपति श्रीवीर प्रभूने जैनके असलि सिध्दांतोंमें "महणो महणो" एसा फरमाया हे लेकिन इस शब्दका तात्पर्य ये हेके, सब जीवोंपे दया रखो सब जीवोंकी दयापालो इस सत्य अर्थसे ही जीवोंका कल्याण होवेगा इसवास्ते ज्ञानिके वचनोंके अनुकूल उपदेश शब्दकहेना चाहिये ज्ञानीके वचनोंके प्रतिकूल बोलनेसे अनंताने संसारकि वृद्धि होती है तब ज्ञानिक वचनोंके अनुकुल और जैनके असलि सिध्दांतोंके न्यायसे "दयापालो" एस शब्द मुनि माहाराज फरमाते हुवे "दयापालो" ऐसा कहना तो भी जैनके एकदम अनादि प्राचीन सिध्दांतोंके न्यायसे सिद्ध हुवा लेकिन श्री जैनके एकदम अनादि प्राचीन असलि सिध्दांतोंमें तो "धर्मलाभेणं" एसा

पाठ नही हे तव यति वगैरे मूर्तीपूजक लोगोने " धर्मलाभ " ये कोनसे खडे मेंसे खोदके निकाला अगर काहांसे हुलहुलका बच्चा पैदा किया इसकि हमको कुछ खवर पडति नही हे लेकिन उपदेश शद्बमे " धर्मलाभ ऐसा कहेना श्री जैनके प्राचीन असलि सिद्धातोंके विरुद्धहे इस परसे पूर्ण निश्चे हुवाके यति वगैरे मुर्तीपूजक लोग अनादि (प्राचीन) नही हे अर्वाचीन (नवीन) हे

पूर्वपक्षीः- आपने तो सिद्धांतोंके न्यायसे खुलासा करके हमारे मनका संतोष किया इस वास्ते आपको धन्यवाद घटताहे

[परिछेद ५ वा]

यति वगैरे मुर्तिपुजक कहते हैं के शत्रुं–जय परवत सासवताहे लेकिन इस परसे भी मुर्तिपुजक लोग अनादि [प्राचीन] नही ठहेर सकतेहे.

देखिये ! श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचीन असलि सिद्धातोंमें " शत्रुं जयेण पवइये सासभावहवइ " एसा पाठ कोइभी सिद्धातोंमे नही हैं, इसपरसे शत्रुंजयपरवत सासवता सिद्ध नहोहोताहे, फेर मुर्तिपुजकोके ग्रंथ वगैरे सेभी शत्रुजय परवत सासवता ऐसा पुर्ण रिति,सेसिद्ध नहीहोताहै, जैनतत्वदर्श ग्रथके प्रष्ट ५०२ ओली ११ मीमेंलिखताहेके * अवसर्पीणीनो प्रथमआरो सुपम सुपम च्यार कोडाकोडी [कीटाकोटी] सागरोपम प्रमाण छे तेकालमा भर्त क्षेत्रनी मुर्मी बहुज सुंपर रमणिय मर्दलनातला समान सम हती

यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग कहते हैं के शत्रुंजय परवत सासवता हे लेकिन इस परसे भी मुर्तीपूजक लोग अनादि [प्राचिन] नही टहेर सकते हैं,

माहासयजी ! देखो मुर्तीपुजक लोग क्या लिखते हेके अवासर्पणीके पहले

आरेकि जमिन मार्दिक तके समान समझी, वैसा होक्का भ्रम भ्रसाहार, यो भरम साकफिकना रहेताहे क्ष्मी पहले आरेकि जमीन्धी मय भ्रकाहिक कि इस भारतक्षेत्रमें नास्तियी तब मुर्तिपुजकोंका " शत्रुंजय पर्वत " सामवता कहांपरराहा क्या आगमसमे लोकमकितासे प्रत्कक्षया तो लिंच उत्तर, क्या ? इसनिपुरुषोंसे भी आदर्शहोरकुपासो भ्रमत्कारोंके नजर आवाहे । एसी मिथ्या बकवाद करनस कुछ कार्य सिद्ध नहीहोताहे लकिन इसनिपुरुषोंने जा भो वस्तु मामवती फरमाइहे वा वस्तु सासवती कही मामनी परंतु अन्य वस्तु सासवति नहिमानी (समझी) ग्यातिहे.

माहाशयजी ! यतिवगैरे मुर्तीपुजक लोग शत्रुंजयको सासवता मानतहे [सनातन] और धर्मतिथ मानते है तब मुर्तीपुजकोंका शत्रुंजय धर्मतिथ मामवत (प्राचिन) नही है तो ये लोग तो प्राचिन कहांस आय इस परस पुन सिद्ध हुवाक यति और मुर्तीपुजक लोग अनादि [प्राचिन] नही है अर्वाचिन (नवीन) है

॥ परिछेद ६ था ॥

— प्रतिमाके चमत्कार :—

यति मवेगी पिताम्बरी दिगम्बरी वगैरे मुर्तीपुजक लोग कहत है क हमारे शत्रुंजय तिथ, वगैरेमें केस बड भारी चमत्कार प्रत्यक्ष होते हैं और जिनजर ठिकाणे जमिनमेंसे निकलेहुवे प्रतिमाजी, भी निकल्ये है, और ताम्रपत्र शिलालेख वगैर कइ पुरान राज्य बादशाहोंके सहीके हम लोगोंकेपास है इसपरस हमलोग अर्वाचिन (नवीन) नही ठहर सकत है, हमलोग अनादि प्राचिन है

माहाशयजी ! देखो इस बात परस भी यति वगैरे मुर्तीपुजक लोग अनादि (प्राचिन) नही ठहर सकते है

देखिये। जिस वखत तिर्थ वगेरे स्थापित करते हैं उस वखत होम जगादि करके देवता आराधन करके तिर्थ वगेरेका अधिष्ठायक कर देते है. और जिस वजेसे तिर्थ वगेरे की महिमा कराना होवे उस वजेसे हर वखत कार्य करना ऐसा उस देवताका वचन लेते है देवताका वचन लेते है उस वखत हजारो वर्षोकी मुदत डाल देते है, उस मुदत तक उस देवताको अनुकुल हर वखत वो कार्य करना पडता है मगर ये कुछ तिर्थोका पराक्रम नही है, और ऐसे आडंबरसे तिर्थ मान्यावर कदापि नही हो सकते है, अगर तिर्थ वगेरे पराक्रमी होतेतो समेत शिखर उपर जिसवखत गवरमेंटी बगले बंधना, सुरु हूवेथे उसवखत यतिसंवेगी पिताम्बरी डिगांम्बरी वगेरे मुर्तीपुजकोंने समेत शिखर उपर बंगले कोइवजेसे बंधनानही ऐसी बंदोवस्त करनेके वास्ते मुलकमे हुलरमचा दिया था उसवखत तिर्थवगेरेका पराक्रम कोनसे खडमे घूसड गयाथा आखिरके दरजे, नाणेके जरिये बंदोवस्त करनापडा सत्यहै असलि चिजमें असलि पराक्रम होताहै नकलि चिजमें असलि पराक्रम कदापि-नही होसक्ताहै इत्यादि कपोल कल्पित बातोंसे जो मनुष्यअजाण होवेगा वो पुरुष भवर जालमेफसेगा लेकिन चतुर पुरुषतो आत्मसिद्धीके कार्यको प्रमाण करेगा इसपरसे सिद्ध होताहैके यति वगेरे मुर्तीपुजक लोग अनादि [प्रचीन] सिद्ध नहीं ठहरसक्ताहै [जमिनमे गडि हुई प्रतिमा] जमीनमेंसे गडीहुइ जो प्रतिमा निकलतिहै उसका येकारणहै विक्रम संवत ४ मे मुर्तीपुजाका मत निकलाहै अंदाजन पंधरासौ १५०० मे कुछजादा वर्ष लगभग हुवेहै कारण मुर्तीपुजाका मत स्थापित करने वाले जिवाजी गुरू और रत्नजी गुरु हुवेहै; और इस मत कि वृद्धी करनेबाला संप्रति राजा हुवाहै, जब अंदाजन १५०० सो वर्षके लगभगसे ये वात चलि आति है, तो पचास ५० तथा १०० तथा २०० के लगभग कई ठिकाणे प्रतिमा दटन पटन होगई होजे फेरजमिन खोदनेमे जमिनमेंसे गडिहुइ प्रतिमा निकलनेसे क्या बडी आश्चर्यकी वात हुई

क्या कदापी नहीं अगर मतके आडंबरीमनुष्य दिखानेके वास्ते मंत्रादिकसे प्रतिमाको जमिनमें दफन करके भी निकाल सकते है, तथा असल प्रतिमाका यादके पिछसे ऐसाभी अवदनकरलेतेहैं के हमेंस्वप्नम प्रतिमाजीने आके कहाके हम अमुक मुकामपर गाडि हुई हुं ' सो मुझे निकालो ऐसी कपोल कल्पित बातें बनाकेभी जमिनमें गाडि हुइ प्रतिमाका निकाल सकते है, ये कुछ आश्चर्यकि बात नही है येता सिर्फ आडंबरके जरिये भुगवत भोला लोगोंको भरमाके भवर जलमें डालनेकि बातें है यहांपर सहज खयाले होनेकि अगरहेके अगर जो प्रतिमाजीमें ऐसा जबरदस्त पराक्रम होता ता स्वमेव जमिनमेंसे निकलके उपर क्यों नही आति और सर्व दुनियाको जाहिर चमत्कार क्यों नहीं बतलायां ऐसी आडंबरी अंध कथाको ज्ञाता पुरुष स्वीकार कदापि नहीं करते हैं सत्य चमत्कारको नमस्कार होता है मगर असत्य बात कदापि विजय नही मिल सक्ती है इस परसेभी यति वगैरे मुर्तीपूजक लाग अनादि [प्राचीन] नही ठहरसक्ते है

[परवाने]

तांबापत्र तथा शिलालेख वगैरे परवाने लिखवाने का कारण ये हैं क जिस वखत मुर्तीपुजाका मत स्थापित होके पुण्य बख्शान दवा म आके चोतर्फ फेल गया तब मुर्तीपुजकोंके आचार्य वगैरेने विचार किया के सत्ताधीश होके आडंबर धारण नहीं करेंगे तो ये नवीन मत चिरकाल तक नही ठहर सकेगा, इस प्रयोजनसे मुर्तीपुजकोंके आचार्य वगैरेने जोतिष निमित्त वैदग जंत्र मंत्र तंत्र इत्यादि अनेक प्रयोगसे राजा बादशाह वगैरे को अनेक प्रकारके चमत्कार बताने लगे इन चमत्कार क जरिये तांबापत्र शिलालेख वगैरे परवाने लिखवाके सत्ताधिश बन गये सत्ताधिश बनके बाद छत्र चामर म्याना पालखि हाथी, घोडे रथ छडिदार चोपदार नकीब पट्टेदार सिपाई वगैरे राजा बादशाहोंसे

बक्षिस करनालिये और द्रव्यधारी हो के राज रिध्धी भोगवते हुवे और, श्री जैनके असली मुनियोंका लिंग (दरेश) और समाचारि छोडदिवी, और श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचिन सिद्धांतोंके कायदे विरुद्ध लिंग (दरेश) और समाचारि धारण करकें नवीन और आडंबर सयुक्त जैनके नामसे पाखंड मत चलाया है, लेकिन ये कार्य असली जैन मुनियोंका नही है कारण असली जैन मुनियोंकों कोई भी तरेका आगार नही " आगाराउ आणगारियं पवइये " ऐसा सिद्धांतका लेख हैं, इस वास्ते इसपरसें भी यति वगेरे मुर्तीपुजक लोग अनादि (प्राचिन) नही ठहर सकते हैं इसके आलावा फेर भी देखिये ! श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचिन असली सिद्धातोंमे जैनके असली मुनियोंका नाम जो चले हैं, लेकिन उसपरसे भी यति वगेरे मुर्तीपुजक लोग अनादि [प्राचिन] नहीं ठहर सक्ते हैं,

जैनके असली मुनिके नांव.

जैसे मंत्रवादि इच्छितार्थ सिद्ध करनेके तरफ लक्ष रख कर आनेक उपसर्ग अडगपनेसे सहन करते हैं, तेसे ही जो पुरुष अपनी आत्माकी सिद्धि करनेकी तरफ लक्ष रखकर एकांत मोक्षकी तरफ दृष्टी रखकर आत्म साधना करे उनको साधु कहे जाते हैं,

साधुको श्री सुयगडांगजी सुत्रके प्रथम स्कंधके १६ वे अध्याय में ४ नामसे बुलाये हैं,

सूत्रः– आहाह भगवं, एवं, से दंत, दवीए, वोसठ्ठका सति वच्चे १ माहणेत्तिवा, २ समणेतिवा, ३ भिख्खुतिवा, ४ णिग्रंथेतिवा, पढि

आइमचे करंत दंते दवीए वोसठ काएतिवच्चे माहणेतिवा, समणेतिवा, भिरव्खूतिवा, णिगत्थेतिवा, तन्ने बुही माहमुणी ?

अर्थ— श्री तिर्थंकर भगवान दमितइंद्री मुक्तियोग मिले अशुभयोग त्यागन किया हैं ऐसे साधुको ४ नामसे बुलाते हैं १ माहण समण ३ भिरव्खु ४ निग्रंथ

तब शिष्याने प्रश्न किया की अहो भगवान इन चारोंहीके अलग अलग गुण फरमाइये

१ माहण किनको कहना ?? समण किनको कहना? २ भिरव्खु किनको कहना ? ? और निर्ग्रंथ किनको कहना ! ४

सुत्र·——इति, विरए पाव कम्मेहिं पेज्ज दोस, कलह अम्याख्याण पेसुब परपरीवाए अरति, रति, माया मोस, मिथ्यादंसण सल्ला विरए समिए, सहिए, सदामत, णा कुसे, णोमाणी, माहणेतिवच•

अर्थ—तब भगवंत मोहणादिक चारहि शब्दका अर्थ व गुण अनुक्रमें फरमाते है कि हे शिष्य जो कायिकादिक सर्व क्रियासे निवर्ते है, सर्व पाप-कर्म, राग, द्वेष, क्लेश, चुगली, अवर्णवाद हर्ष, शोक, कपट, मुत्रामुत्र त्यादि मिथ्या इत्यादि से निवर्ते है पंच सुमतीसहित है सदा काल छ—कायकी और सयमकी यत्नावतहै क्रोधादि कषाय, रहित किसी भीगुणके गर्व रहित है उनको माहण अथात महात्मा कहेना॥

॥ माहण शब्दका अर्थ ब्राम्हणभी होता है, अर्थात इतन गुण युक्त होय उन्हें ब्राम्हण कहेना !

२ मत्र – एत्थेवि–समणे, अणिस्सिए अणियाणे, अदाणच अति-आयच मुसावायच, वहिंडंच, कोहच, माणंच, मायच, लोहच, पज्जच, दोषंचे, ईचेव जउजउ, अदाणाउउ अप्पणोपदेशहेउ ततो २ अदाणातो पुव्व, पडि विरिए पाणाइ वायाए दंत दविए वो सठ काए समणो-ति वच्चे.

अर्थः—अव, समण [साधु] के लक्षण कहते हैं, किसीके भी प्रति वध (नेश्राय-अश्रय) रहित करणीके फलकी वाछा रहित कपाय रहित (शात प्रणातिपात अर्थात हिंसा मृषावाद झूठ चौरी मैथुन क्रोधमान माया लोभ राग द्वेष इत्यादिसे सर्व था निवर्तें है और जो ऐसेही जोजो कर्मबंधके व अवगुणके कारण देखे उनसे पहिलेही निवृते इन्द्रियोंको दमन करे आत्माकी ममताकों वोसरावे (छोडे) उनको समण अर्थात साधू कहना.

३ सूत्रः—एथेवि भिख्खू अणुन्नए विणीए नामए दत दविए वोस-ठकाए संविधूणिय विरूवरूवे परिसहो वसग्गे अझपजोग सुधादाणे उवठिए, ठिअप्पा संखाए, परदत्त भोइ भिख्खुति वच्चे

अर्थः—भिख्खू अर्थात भिक्षूक उनको कहते है कि जो निर्बंद्य भिक्षासे शरीरका निर्वाह करते हैं, और जो अभिमान रहित और विनय नम्रता आदिसहित होते हैं. इन्द्रियोंका दमन करते है देव दानव मानवके किये उपसर्ग समभावसे सहन करके निरतिचार व्रतपालते हें. अध्यात्मयोगीहे मोक्ष-स्थान प्राप्त करनेके लिये सावधान होकर संयम तपमें स्थिर भूतहे और अन्य किसीके निमित्तसे बनाये हूवा आहार लेते हैं

४ सूत्रः—एत्थेवीणिग्गंथे एगे एगविउ बुध्धे संछिन्नसोए सुसमिए सुसामाइय आयवाय पत्ते विउदूहउ विसोयपालिछिन्ने णोपूयागसक्कार लभटी धम्मठी धम्म विउ, णियोग पडिवणे समियच्चरे दत दविए वोसठ काय निर्गथेति वच्चे

अर्थः—वनमिश्रके लक्षण कहते हैं सदाराम द्वेषरहित सर्वोसे तत्व सर्व या आश्रवका निरूपन किया अच्छी तरहसे आत्मा वेषम दरी सुमति-वत आत्मतत्वके ज्ञान शुभ्रआत्मके कारण द्रव्य और भावसे दानो प्रकारस आश्रवका निरूपन किया समाधि (चित्तकी निश्चलता सहित) महिमा पूजा सत्कार सन्मानकी इच्छा रहित एकांत निर्मराके धर्मके ही अर्थीसमा आदि दशविधी धर्मके भिन्न २ भेदके मार्ग मासे मार्ग अंगिकार करके उसम सम्यग प्रकारे प्रवर्ते दमितेन्द्रिय और कषायकी ममाता रहित इतन गुणवाले को निग्रंथ कहना

भगवंत फरमाया है कि, " सा एवमेव माणह नमह माणई मयतारा तिबेमी " अर्थात येही पद मोहा भयसे निवारनेको समर्थ, है लेकिन यति संवगी पिताम्बरि अगर सुरि सागर विजय ये नांव तो जैनके असलि प्राचीन सिद्धांतोमे कोइभी ठीकाणे नही चले है अगर यति वगैरे मूर्तीपूजक लोग प्राचीन होते तो ऐसे नांव सिद्धांतोमे दरज होनेके लिये क्या हरज था परंतु यति वगैर मूर्तीपूजक लोग प्राचीन नही होनसे यति वगैरे मुर्तीपूजकोंके नवीन नांव प्राचिन असलि सिद्धांतोमे कहासि दरज होवेंगे इस उपरसे पुर्ण निश्चे हुवाके यति वगैरे मुर्तीपूजक लोग अर्वाचीन (नवीन) हैं

पुर्वपक्षीः— क्यों जी आप लोग भी ढुंढक साधु स्थानक वासी साधु मार्गी बाविस समुदायके साधु इत्यादि नांवोसे कहलाते है ये तो नांव जैनके असली सिद्धांतोम दरज नही है तो प्राचिन कैसे बनते हो,

उत्तरपक्षी—तुमारा कहेना सत्य है मगर हमारे लेख उपर थोडा न्याय किजीये

महाशयजी ! देखिये ! ढुंढक साधु ये नांव तो मुर्तीपूजक लोग हम लोगोंके उपर द्वेषाधिपती होके पुर्ण मेहरबानीके साथ ईनायत (ब-क्षीस) किया हैं ईसका तुमसा भामे करम, और स्थानक वासी

साधु ये नांव तो ईस कारणसे प्रसिद्ध हुवाके जिस वख्त हम लोगोंके तर्फके श्रावक लोग मुर्तीपुजकोंके श्रावक लोगोंको पुछने लगे के आप लोग कोन मतके हों. तब मुर्तीपुजकोंके श्रावक लोगोने जवाब दियाके हम लोग (चैत्यवासी) हैं, देखिये ! संघपट्ट के ग्रथके पृष्ठ ७ वां लेने २ री "चैत्यवासी" ऐसा लेख है ऐसा कहने लगे पछातमें पुछनेसे उत्तर मिलाके हम लोग स्थानक वासी श्रावक है, कितनेक काल पिछे पुछनेसे कहने लगे के हम लोग मंदिर मार्गी हैं पिछे उत्तरमे जबाव मिलाके हम लोग साधु मार्गी है. कितनेक काल पिछे पुछनेसे कहने लगेके चौरासी गछवासी श्रावक हे ये नांव हाल वर्तमान कालमे भी चलता हैं तब उत्तरमे जवाव मिलाके हम लोग १* बाविस समुदायके श्रावक हे. ऐसा संवाद होता रहा लेकिन ये नविन नांव तो हुडावस्पणी तथा दुषमी पंचम काल के तथा भस्मग्रहके प्रभावसे तथा संसारी लोंगों के ताणा ताणके कारणसें श्री जैनके असली साधुके नांवभी पलटा पल-

१* बारा कालके प्रभावसे कितनेक उत्तम मुनि आर्य क्षेत्रोंको छोडके अन्य क्षेत्रोंमे उतर गये (चले गये) पिछे रहे हुवे मुनि सयमसे भ्रष्ट होके मुर्ती-पुजाका नवीन मत निकाला और इस आर्य क्षेत्रोंमे उत्तम मुनि की नास्ती हो गइ फिर विक्रम संवत १५३१ के बाद इस आर्य क्षेत्रोंमे ज्ञानचंदजी माहाराजका पधारणा हुवा माहाराज श्री के पधारणेसे इस आर्य क्षेत्रोमे श्री असली जैन धर्मकी और असली जैन मुनिकी वृद्धि बहोत होने लगी और एक आचार्य माहाराजसे सर्व मुनियोकी संभाल नही होनेसें प्रथम सम्प्रदाय स्थापित हुइ इस कारणसे असली जैन मुनियोका नाव लोगोंने बाविस समु-दायके साधु ऐसा नाव धर दिया लेकिन हम लोगोंका असली नाव तो जैन साधु है

ग्यो गये है, लेकिन उपरोक्त नवीन नांव हम लोगोंके नहीं हैं, हम लोगोंका तो असली नांव सिर्फ एक मैन साधु है इस सिवाय जितने हम लोगोंके-नवीन नाव जाहिरमे प्रसिद्ध है, वो नांम हुंडासपणी तथा दुःखमी पंचम कालके तथा भस्मग्रहके प्रभावसे तथा संसारिक लोगोंके ठगणा शास्त्रके सबबसे मगर हुवे हैं, और इन नांवोंसे व्यवहारिके साथ बोलना पडता है, इत्यादि कारणोसे हम लोग अर्वाचिन (नवीन) नही ठहरेगें, मेहरबान साहेब! देखिये!! मुर्तीपुजक लोग कहते है के साधु मार्गी धर्म नवीन है मगर मुर्तीपुजक लोगोंके बनाये हुवे ग्रंथोंसे हम लोग अनादि सिद्ध होते है, कैसी तमासा बात हैं हम लोग कुछ कथन नही कर सकते हैं इस लिखित संघ पट्टक ग्रंथके लेख निघ मुजब,

(काव्य ३ री,)

॥ मालणी ॥ —इह किलि कलि काल, व्याल वक्त्राल ॥ स्थिति मुखिगत सर्वे मिति नीति प्रचारे ॥ भसरव, नवाबोध प्रसरत्का गयोध ॥ स्थिगिति सुगतिसर्गे संगधि प्राणवर्गे ॥ १ ॥

भावर्थ—पेकलि काल पंचम आरा प्राप्त हुवा जैसा सर्पके मुखमें रहेन वाले प्राणिकी क्या सुखहै वैसा पंचम कालके मनुष्योंकि मिति तुक कागस तत्वादिक, देव गुरु धर्म दयादिक सुपर्यंथ अर्थात धर्म मार्ग गुप्त हो व्यायगा (तीव्र व्यापगा) प्रति और धम मिति कोरे गुप्त होवेगी नव नवा, कुलंप (खोरे मगव) प्रगट हावेंगे छद्मवमीर्योंकि हानि करके धम कि घरुवना करेंगे. ऐसे खोटे पंथो का उदय [प्रवरता] हावगा मोक्ष मार्ग श्रुत दया धर्म गुप्त होवेगा ?

॥ काव्य १७ ॥

॥ सादुर्ले ॥:—किं मिग्मोह मीताकि मंधबधिरा कियोग चुर्ण कृताकि दै वोपहता कि मंगटगिता कि वाग्रहीवेसिता ॥ कृत्वा मून्विपद-श्रुतस्पयदमीद्रष्टौसदोषामपि ॥ यावृत्ति कृपथा जडान दधंत सूयंति चैत कृते ॥१७॥

भावार्थः— क्या दिसा सुलि ये होगये हो क्या अंधे होगयेहो क्या बहेरे हो गये हो क्या योग तत्र वगैरे चूर्ण मुको वासखेप मस्तकपे डाल्के भोले लोगोंको वस्य करते हो क्या असुभकर्मके बल्से (दैवे हणाछो) मट बुद्धि होके सुद्ध द्रष्टिको पिछि खेचि दिखतिहे, ठगोकि तोरसे ठगंत हो विचारे भोले मुर्ख लोगोंको कुगुरु कुदेवके खेचे हुवे छ काय जीवोंको मारके हिंसामे धर्म प्रकासते हो इन भेष धारियोंने रुषिका भेष लेके पारधि के तोरसे साधु भेषके जरिये मृगवत श्रावकोंको ठगते है १* सुत्र सिद्धा-तोकी वाणी छिपाके कुपंथके टिकादि मकर्ण देखके कारण की स्थापना करके भम्मग्रह पिटीत भोले लोगोंको भर्माके जो चैत्य पोसाल करवाके अवो मार्गे चल्ते हे सिद्धातोंमे मदिर करवाण क्हा नही है १७

। काव्य २० मा ।

जिनगृह जैनवीब जिन पुजनं जिन यात्रादि विधिकृत दानं तपो व्रतादि गुरुभक्ति श्रतपठनादि चादतं ॥ स्यादिह कुमत कुगुरु कुग्राह कुबोध कुदेशनात स्फटमन मिमतकारी वर भोजन मिव विपलत्वनी

१* वर्तमानमे भी जैनके असली सिद्धात श्रावक लोगोंको वाचनेकी मुर्तीपुजकोंके तर्फसे साफ मनाइ है.

वेसव ॥२०॥

भावार्थः— भेन दुरसर्णीने जैनके मंदिर जिन बींबकी परुपना करके जिन बींब मरवाए और उ द्रव्य की हाणी करके पुजा करे करावे उ द्रव्य की हाणी करके धर्म मताकी इंद्री पोषण करनेके वास्ते उपाय करा है चौराशि गच्छकी उतपती हुइ परन्तु ये सब मम्मग्रह—असंजति की पुजाका अछरारे कारणसे भये है मोछे मार्गोक्ष मरमाके भ्रम दिसाके मंदिर कर वाके हिंसामे धर्म परुप्के,

हिंसा मार्ग चलता किया, मंदिरका द्रव्य गुरुके मत अंम की पूजाका द्रव्यसे अदार भरवाये है, ये अनधि मार्ग चालु किया फ्ला दान तप इवादि गुरुभक्ति भुतिपक्षनेकी पुजा पोथीपुजाणा इत्यादि कुमति कुगुरु कुशम्य छवाधी कुवचनासत मकारे पर्वी अक्सक घरछे मयन्या मयन्या भार नगर पंदनचर्च्या जैसे प्रधान भाजनमे विप मिलनेसे नुकसान करता है वैसे ये सुरी गुरुके इद भाम मिथिका नुकसान करके धंव मति नही जाने देते है ॥२०॥

काव्य २१ मी

मम्धरा— भाहृप्त मम्य मीनान्नीदक्षविधितवः विवसाद्धय जैन मंभाम्नारम्य स्थान पपर कामपन्तीए मिथ्या विधाय॥ गणास्ना भाणपायें मेमग्रितक निशा जागरादि स्पर्धम्प ॥ भयाएनीमगंनो स्पर्ध दाव प्रर्तेवरुपलोहाजीनयं॥२१॥

भावार्थः— जैसे मछीमार छडी [लकडी] का छडी डारी बांधके डारीके अंतम धांदेका अंकुश बांध देत है फिर अंकुशमे मांसका टुकडा

फसाके वो डोरी पाणीमे छोड देते है, उस मासके रसके प्रयोगसे मछि पाणीमेसे उपर आके उस अंकुडेमे फस जाती है, फेर उस मछलीको बाहेर निकालके मार डालते है वैसाही यति वगैरेका वेस मछीमार समान प्रवर्ण रुपडोरी लोहेके अंकुडारुप आडंबर मांसकी बोटीरुप जिन प्रतिमा की पुजा दिखाके जैसे मछी फदमे पडति है तैसे श्रावकोंको छ कायकी हिंस्यामे धर्म और वीवकी पुजा करवाके चर्तुगति ससारके फासेमे फसा दिया है. नाम ऋषिश्वर कहवाके धुर्त विद्याके अनुयोगसे खोटी रचना फलाइ है. और शत्रुजा गिरनारादिक जात्रा स्नात्रादि विधि पुर्वक पुजा रात्री जागरण वगैरे करवाके व्रत माडा है, ऐसे शट धुर्त विद्या करके वाछा करते है. अहो जैन वेषधारी वाहवा ऐसे कर्म कैसे करते हो ऋपीके भेषसे सर्व जगतका वचाव होता है लेकिन तुम लोग जिन वचन विरुद्ध कार्य करके जगतमे गत गुरु कैसे कहेलाते हो ॥२१॥

॥ काव्य ३० मि ॥

स्रग्धरा— सेषा हुंडावसर्प्पीण्यानु समयरु सभव्य भावानुभावा ॥ त्रिशांश्योग्रग्रहोयं खखनख मितिवर्ष स्थिति भस्मरासी ॥ अत्यंचाश्चर्यमेतं जिनमत हत्तयेत, त्समा, दुःखमाच्ये ॥ त्ववंपुष्टे श्रुदुष्टेह्यनुकिल मधुना दुल्लयौ जैन मार्ग ॥३०॥

भावार्थः— सुरीके मत चोरासी चले हे १ हुडासर्पणी पंचम आरेका दुसम समय २ भस्मग्रह ३ असंजति की पुजाका दसमा अछेरा ४ वा कानेव जाटा ५ ये पाच जोगोंसे भव्य जीवोंके भाव मद (कम) पडे हे चेईये कहके पांच आश्रवमे हिंसा मार्ग दिखाया, गुनतिसमा भस्मग्रहका जोर वहा माहवीर स्वामीके जन्मराशीपे नक्षत्र बैठा तिण कारण करके उन मार्ग प्रगट चल रहा हे सुध मार्ग और सो धर्म साखा छिय गइ उलटे मार्ग चले ये वडे आश्चर्यकी वात है और श्री जिनेन्द्र देवकी

थापि एक दयामे चली आती है आचारंग प्रमुख सिद्धांतोंकी साक्षीसे " सव्वेजीवा, सव्वेभुया, सव्वेसत्ता, नहंतव्वा; " इति केवली वचनात सिवा रस्ता नित्य चला आता है अनंत चोविसीकी वाणीकी नास्ती हुई अर्थात प्राचिन रस्ता गुप्त, भोगोको दुखी किये छ कायकी हिंसा क रके दुष्टोने पांच इन्द्रीका पोषण करनेका धर्म चलाया, अरे भाई जिन मार्ग मिलना मुसकिल हुवा, स्वर्गोपर मिथ्यात्व करके ये जगत भ्रम र हा है, कुंभारके चाक समान इस जगतको भ्याव दिसामे फिरा रहा है सुत्र सिद्धांतोका मार्ग छिप गया और प्रकर्णोकी नवी रचना हुई ।१०।

सज्जन जनोने पुर्ण विचार करना के मुर्तीपुजकोंके ग्रंथ मुर्तीपुजकोंकु बाधक होके मुर्तीपुजकोंके ग्रंथोंसे मुर्तीपुजक लोग अर्वाचीन (नवीन) सिद्ध होते है तथापि इन पाषाण स्वर्गोका पाषाणपना दुर नही होता है और श्री जैन श्वेताम्बर साधु मार्गी धर्म का नवीन पना हमेस पुकार करते हैं इन हट वादियोंको कैसा समजाना चाहिये,

देखिये ! महा बद मारा दुष्कालके प्रयोगसे इस आर्य क्षेत्रोंमे असल्ली जैन धर्मकी और असल्ली जैन मुनियोंकी नास्ति हुई और मिथ्यात्वका फलाव अतिशय बढ गया

पुर्वपक्षीः— क्योंजी इन आर्य क्षेत्रोंमे जैन धर्मकी और जैन मुनियोंकी नास्ति आम नास्ति तक हुई नही मगर ये बातों आप कैसे बयान करते हो इन बातों की कुछ साबुती बतलावोगे

उत्तरपक्षी— महाशयजी ! थारा न्याय किजीये के सबल बात क्यु मानेंगे देखिये ! मुर्तीपुजकोंके पक्षका संघपटक ग्रंथमे सुस्पष्ट है संघपटक प्रस्तावना प्रष्ट ७ ओली ८ " आगामस्से एतले स्मरण बच्चोके निग्रंथ मार्ग विरल थायथइ पडगो निर्ग्रंथ मकस्नपर वास्तं देवाभा अने ,

क कपोल कल्पित ग्रंथोंतेम निजप्या० उमाकरवामा आव्या ”

प्रस्तावना पृष्ट ६ ओली १३ मे हवे कहेवत छे के “ यथा गुरु तथा शिष्यो यथा राजा तथा प्रजा ” ते प्रमाणे गुरुओ शिथिलथता तेमना ताबा, नीचेना यतिओ, तेमना करता पण वधु शिथलथयाते ओ दवा दारु दोरा धामा वगैरे करिने लोकोने वशमा राखवालाग्या वेपार करवा लाग्या तथा खेतर वाडी सुद्धा करवा तत्पर थया, तेम छतातेओ पाताने माहावीर प्रभुना वारस चेलाओ तरीके ओलखावि पोतानु मान साचववा मांडया, अब तो हांपे तुमारे दिलकी तसल्ली हुइ.

पूर्वपक्षी — अजी साहेव वर्तमान समयके यति संवेगी पिताम्बरी वगैरे मुर्तीपुजक लोग आपके लेखानुसार नही हैं

उत्तरपक्षी — माहाशयजी ! किंचित गौर किजीये वर्तमानके यति संवेगी पिताम्बरी वगैरे मुर्तीपुजक लोग हमारे लेखनुसार निश्चे है, देखिये ! ढुंढक हृदय नेत्रांजन पृष्ट १७ ओली २४ मी का लेख, “सो कैसे बन जायगे ! क्यों की जिन ढुंढकोका प्राचीन पणेका एक भी निसान नही है कभी दिगंवर वारसा करनेको जावे तब तो कुछ विचार भी करना पडे परतु तुमरा न तो गांवमे घर और न तो सीम में खेत किस करतुतसे सनातन पणेका दावा करनेको जाते हो, इस लेखपरसे पुर्ण निश्चे हुवा के वृतमान समयके यति संवेगी पिताम्बरी वगैरे मुर्तीपुजक लोग अणगार (जैनके असली मुनी) पदवीसे भ्रष्ट है क्योंकि जैनके प्राचिन व असली आचारगादि सिद्धांतोंमे ऐसा लेख हे के “ आगाराओ अणागारियं पवइये ” जिस वखत जैन साधु की प्रव्रज्या ग्रहण करते हे उस वखत आगार धर्मसे आर्थात ग्रहस्त धर्मसे पुर्णपणे निर्वतमान होके अणगार अर्थात निग्रंथ धर्ममे प्रवेस करते हे, किंतु संसारिक कार्य करना ऐसी फर्ज़ेमी वात बाकी रही नहीं

है परंतु सर्वथा प्रकारसे संसार समधि संसारिक कोइ भी काय करना नही और दुसर के पाससे करवाना नही और करते को भस्म (अच्छा) समजना नही, ऐसे त्रिविध २ त्याग (नियम) होते है लेकिन कोइ भी श्वेताम्बर जैन मुनिको आगार नही रहा करता है, सायनका स्थान है के अब असली जैन मुनियोंके गावमे घर और सिवमें खेत काहांसे आयेगा क्योंके जैनके असली मुनि तो त्यागी है फेर गावमे घर और सिवम खेत वगेरे रखना काम तो भोगीयोंका है इससरस पूर्ण निश्चे हुवाके वर्तमान समयके यति संवेगी पिताम्बरी मुर्तीपुजक लोग जैनके साधु पदसे तथा सयमसे भ्रष्ट है कारण इन लोगोंकि लेख से ये बात सिद्ध होती है और मुर्तीपुजकोंके लेखस ही मुर्तीपुजकोंके यति संवेगी पिताम्बरी वगेरे लोगोंको हम लोग जैन साधु नही कहते कारण इन लोगोंका जैन साधु कहनेसे हम लोगोंको मिथ्यात्व लगता है सब मुर्तीपुजकोंकि लेखपरसे ये बात सिद्ध होती हैं के मुर्तीपुजकों के यति संवेगी पितम्बरी वगेरे लोग गांवमे घर और सिवमे खेत रख ते हैं, ईस लिये परिग्रहधारी को साधु नही कहना चाहिये, देखो' साधुकु कुसाधु और कुसाधुकु साधु कहनेसे मिथ्याव लगता है इस वास्ते इन लोगोंको साधु कहनेसे बेसक मिथ्यात लगता है फेर सुध भी समवायंगजी के तिसमे समवायंगजीमे फरमाया है क साधु नहीं और साधु नाम धरावे तो सित्तर कोडा कोड सागरोपम की स्थीतीका महा मोहनी कर्मकी उपार्जना करे यति संवेगी पितम्बरी मुर्तीपुजक लोग परिग्रहधारी होके साधु नाम धरावते है तब ज्ञानी पुरुषो के वच नासे ये लोग कठोर कर्मकी उपार्जना करने वाले हैं ऐसे कठोर कर्मीयोंको साधु कोन मुर्ख कहेगे, देखो। वर्तमान समयके यति संवेगी पितम्बरी लोग हमार लेखानुसार प्रत्यक्ष सिद्ध हुवे हे जिनकी तलास की किजिए,

पुर्वपक्षी:— मुर्तीपुजकोंके लेखसे आपने हुबेहुब सिध करके दिखलाये आपको धन्यवाद घटता हे,

देखिये ! श्री जैनके एकादस अंगादी प्राचिन असली सिद्धांतोंमे जिन प्रतिमाकी पुजा करणा ऐसा लेख कोई भी ठिकाणे चला नहीं हैं परंतु मुर्तीपुजाका आडंबरी मत क्या कारणसे चला हे ईसका हम हवाल मुर्तीपुजकोंके ग्रंथसे दिखलाते हे,

सयपट्टका प्रस्तावना पृष्ठ ५ ओली २१ मी से "पांचमा आरारुप अवसर्पिणी काल एटले पडतो कालतो हमेशा आव्या करे छे पण अगाउकाई आ जैन धर्ममां आविधांधल उभिथइनथी पण हमणानों पडतो काल साधारण रिते पडता कालना करता काईक जुदी तरे हनो होवा थी ते हुंडा एटले अति सय भुंडो होवा थी तेने हुंडावसर्पीणी काल कहे वामां आव्यो छे आवो काल अनंती अवसर्पीणी ओवीतताज आवे छे तेनो आचालु काल प्रात्पथयो छे ते साथे वीर प्रभुना निर्वाण वखते बेहजार वर्षनो भस्मग्रह ठेलो तेसाथेल्यो तेमजतेनी साथे असंयति पुजारुप दशमो अछरो पोतानु जोर वतावदा लाग्यो एमचारे संयोगो भेगाथवाथी आचैत्यरुप कुमार्ग जैन धर्मना नामे चोफेर फेला वामां ठयो"

इस लेखसे भी यति वगेरे मुर्तीपुजक लोग प्राचिन सिद्ध नही होते है. मुर्तीपुजक लोग हमेश अवाहन करते हे के साधु मार्गी (ढुंढक) की लुकाजीसे उतपति हे ईसका किंचित विस्तार दिखलाते हैं,

सासनाधिपति देवधिदेव श्री वीर प्रभूके निर्वाणसे लगाके च्यार सो सित्तर ४७० वर्षोके वाद, रांजा विर विक्रमाजीतका संवत चालु हुवा,

विक्रमसंवत् १५३१ के लगभग वीर निर्वाणसे दोहजार एक २००१ वर्ष होनेसे भस्म ग्रहकि नास्तिहुइ तब असलि जैन धर्मकि और जैन मुनियों कि उदय २ पूजा होनेका वखत आय पहोंचा तब गुजरात देशके अमदावाद शहरमें सिरोहि श्रीमान लुंकाशाह रहतेथे एक दिनके समय श्री जैनके पक्ष दस अंगादि प्राचीन असलि सिद्धांतों कि पढ़ना मूर्तिपुजकोंके भंडारमेंकि लुंकाशाहके हस्तागत हुइ (मिलि) तब लुंकाशाहने जैनके असलि सिद्धांतोंका अवलोकन (वाच) करके विचार कियाके, वर्तमान समयमें जो य लोग जैन गुरु कहलाते हे हिंसामे धर्म परुपते हैं, जिन प्रतिमा कि पूजा करवाते हैं आडंबरमें आत्मा सिद्धी मानते हैं गुरु पूजा पुस्तक पुजा वगैर करते हैं, करवाते हैं करते का अच्छा समझते हैं, और आरम्भके कार्यमें मुक्ति मानते हैं, इत्यादिक कारणोंसे ये लोग और ये धर्म श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचीन असलि सिद्धांतोंसे बरखिलाप हैं और इन गुरुओंसे और इनधर्मसे आत्म सिद्धि कदापि होनवाली नहीं हैं, इसलिये इन गुरु लोंका और इन धर्मका शिघ्र परित्याग करना चाहीये तब लुंकाशाहने कुगुरु और कुधर्मका त्याग करके इन आर्य क्षेत्रोंमें असलि जीन शासनका और दया धर्मका प्रथम [पुर्व] मोक्षस (उद्धार) किया और मिथ्यात तथा अज्ञान रूपतिमर (अंधेरे) का विनाश किया फर लखमसि भाइ रत्नसि भाइ प्रेमसि भाइ मोहनसि भाइ भाणसि भाइ खेतसि भाइ जीवराम भाइ शिवजी भाइ प्रेमचंद वगैरे अगेसरोंका लुंकाशाहने [फरमाया]के सुधर्मा भगवतिजीके जिनमे सप्तमका अधिकार देखते भस्मग्रहमें असलि जैन मुनि हे इसवास्ते मुनि वर्गोंकि तलासि करके इन आर्य क्षेत्रोंमें बुलाना चाहिए इन आर्य क्षेत्रोंमें असलि मुनिका पावन होनेसें धर्मका उद्योत (प्रकाश) होवेगा तब लखमसि भाइ वगैरेने इस बातकी पुर्ण शोधकरि करनेसे सिंध कि हैदराबादकि

तरफ मुनि श्री ज्ञानचंदजी माहाराज ठाणा २१ विससे विचरतेथे ऐसि खबर मिलतेके साथ अमदावादके कितनेक श्रावक लोग उक्त मुनि श्री के सेवामें पोहोचके अर्ज करके आर्य क्षेत्रोंमें असलि जिनधर्मकि हाणी होके मिथ्यात्व बहोत फेल गयाहे इस वास्ते आपने तकलिफ उठाके आर्य क्षेत्रोंको पावन करके दया धर्मका और जिनवाणिका प्रकाश करना चाहिये और मिथ्यात्व को हटाना चाहिये, ऐसि श्रावक लोगोंकि अर्ज़ मुनि श्रीने स्वीकार करके अमदावाद कि तरफ फौरेन विहार करा मगर रस्तेमें अतिसय परिसे उसन्न होनेंसे चवदा मुनि कातो देह अंत रस्तेमे होगया बाकि सात ठाणेसे अमदावाद पधारे शहरको पावन करके अमोघ धासरुप श्री जिन वाणीको अमृत रसनामे प्रकाश करके जिन मार्गको प्रचलित किया और मिथ्यात्व को हटाया तब जिन मार्ग कि चोतर्फ महिमा फेली और जिन मार्गकि उदय उदय पुजा सत्कार हूवा मुनि श्रीकेवक्षाणमें स्वमति अन्यमति हजोरो लोग आने लगे और कइ भव्यजिवोंको प्रति बोध हुवा और जिन मार्गका अतिसय जमाव पडा और जिन मार्गका झडा इन आर्य क्षेत्रोंमे मुनि श्रीने रोपा और जिन वाणि रूप नगारे चारु दिशामे घुडने लगे और समकितरूप वज्जा चौतर्फ फराटकरने लगी और असलि जिन धर्मका और असलि जिन मुनियोंका आदर सत्कार अतिशय होने लगा और कपोल कल्पित आडबरि जिन मार्गकी हाणी होने लगी मगर जिस वखत लुकाशाह असलि जैन सिद्धांतोंकि अमृत धारारूप वाणि प्रकास करतेथे उस वखत शिरोही और अरठिया गावके सघ यात्रा करनेंके वास्ते जाताथा उक्त सघका पडाव अमदावाद हुवा तब सघवि वगैरे बहोतसे मनुष्य लुकाशाहके पास सिद्धात श्रवण करनेके वास्ते जातेथे उसमेसें पेतालिस ४९ मनुष्योंको वैराग्य उसन्न हुवाथा और उन सर्व माहसयोने ज्ञान चदजी माहाराजके

पस विक्रमाब्दि वहांसे असलि जैन मुनि वृद्धि हुई और अनेक शहरोंमें असली जैन धर्म फैलगया ये बात मुर्तीपुजकोंकु सहन न, होनेस अपने तो थापकन थी जैनके असलि सिद्धांत वाचना नही ऐसी एकी फ्राबन्द किवि वो हास्यक बाति आवि है

पुर्वपक्षी —भी जैनके असलि सिद्धांत श्रावकोंने नही वांचना एसा मदोबस्त मुर्तीपुजकोने कराहै ये कहेना आपका साफ सायत

उत्तर पक्षी:—अभी यार झुठ बोलके हमको किसि राजाकी गमभा नी छिनानही है मगर मुर्तीपुजकोंके हमसे ये बात सिद्ध होती है देखो ' अज्ञानतिमिर भास्कर पृष्ट १९९ आलि सात ७ मीमें " और आगम विना अन्ययोग्य ग्रंथ लिख बादि करके प्रसिद्ध कर मीसम फेर जैन धर्मकी हानी होय " याका स्याल करो आगम [अर्थात जैनके असलि सिद्धांतकु कहते हैं] वांचनकि श्रावक वगैरे मन मनाइ नही होतितो ऐसे सब लिखनकि कोइ जरूरत नहिंथी मगर इसका मतलब इतनाही हैके जैनके असलि सिद्धांत [आगम] श्रावक वगैर साफ वांचना सुरुवा जाय तो इन मिथ्यावादियोंके अपाम कल्पित माफि मान्यिहोय भाव इसलिय श्रावक वगैरेने आगम वाचना नही एसा साफ मुर्तीपुजकोंकि तर्फसे मना करनाहै

पुर्वपक्षी— आपका फरमाना सत्याह आपने मन्यवाद कहा है समय समय अपकि जैन धर्मकी और अपकि जैन मुनियोंकी पुर्वीकाम दुन्नक मुर्तीपुजक बाग मतिक्रम सेठादर हाक विचार हम सर्वांके अपने

चक्रवर्ती राजरुप अपने मजबकी हाणी हुई इसवास्ते हरकजेसे उक्त मजबकि नास्ती करना चाहिये ऐसा विचारकरके असली जैन मुनियोको एसा ऐसा त्रासदियाके हमारी कलमसे कुछ नही लिख सक्ते हे परन्तु आत्मार्थी मुनियोंने समपरिणामसे परिसह सहन किये लेकिन इंग्रेजी राज हुवे के बाद मूर्तीपूजकोंके मूंग मूर्तीपुजकोंके हंडीमेंही सिजगये इत्यादि कारणोंसे मूर्तीपूजक लोग साधू मार्गी वर्गको कहेतेहें के ईन लोगोंकि उत्पत्ति लुंकाजीसेहे और नविन हे मगर लुंकाजीनेतो बादलमे छिपे हुये भाणकु प्रगट किया अर्थात भस्मग्रह और बारावर्षी माहा दुष्कालके सबबसे आर्य क्षेत्रोंमें असली जैन धर्मकि और असली जैन मुनि योंकि नास्ति होगइथी और असली जिनवाणी के उपर ताले लगगयेथे, और मिथ्यातरुप तथा अज्ञान रुप अधकार इन आर्य क्षेत्रोंमें छारहाथा तब लुंकाजिने मिथ्यात्व तथा अज्ञान रूप अंधेरे का विनास करके असली जिन वाणी रुप भावको जाहिर करके असली जैन धर्मको और असली जैन मुनिको प्रकासमान किये लुंकाजी शिवाय येसा कार्य कदापि नहीं होता तो क्या लुंकाजीने असली जैन धर्मको प्रकाशित करनेसे क्या असली जैन मुनियोंकी आदि लुंकाजीसे हुई ऐसा कदापी नहीं होगा मगर बिचारे क्याकरे पेटदुखता है, वो अजवान मागता है, ऐसे मुर्तीपूजक लोगोंमें असली जैन मुनियोंके गुण सहन न होनेसे निंद्या करना सुरूकरी और हम लोगोंको नविन ठहराते हे लेकिन मुर्तीपूजकोंमें अनादिका एक भी नाम निशान नही मिलताहे और इनोके लेखसेही ये खोटे ठहरते है.

देखिये ! प्राचीन अर्वाचीन निर्णयके वास्ते मुर्तीपूजकोका लेख क्या उपदा काफिहे इस लेखसे हमारे प्यारे पाठक गण निपक्षापत हो ज्ञान द्रष्टीसे अवश्य निर्णय कर लेवेंगे, लेख निचे मुजब:—

अज्ञान तिमर भास्कर प्रष्ट १८० ओली २ दुसरिमें "ग्रंथकार

जिसमतका मंडन करताहे मोमत तिसके समयमें प्रकट विद्यमान होता है और प्रथमारक मतका विरोधी होता है तब लिखताहै “

महासयमी ! देखो !! हम लोग जो नविन होवे तो मुर्तीपुजकोंके आचार्योंके बनाये हुवें ग्रंथ पढनेमें हम लोगोंकि निंदा कहांसे आवि लेकिन इस मतका तात्पर्य इतनाही हे के धुसरजमाना क्यौं नाहा पुन्यवन्त मुर्तीपुजकका मत निकला तब हम लोगोंका पुर्व मतवान पकाया और इन मिथ्यावादियोंके मतको पुर्ण पक्का पोहचके मतव होनेका समय आय पोंहोंचाया मगर अन्य मताकुयायोंका शर्म ग्रहणकरके मुर्तीपुजकोंनि अपना मतव कायम रखा और हम मार्गदेकि निंदा करना शुरू करि मुर्तीपुजकोंके लेखसे हि, सिद्ध हुवाके साधु मार्गी मत प्राचीन है और मुर्तीपुजकोंका मत अर्वाचीन (नविन) है

शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

मिथ्यात्व निकन्दन भास्कर

का

प्रथम भाग समाप्त

मिथ्यात्व निकन्दन भास्कर

का

द्वितिय भाग प्रारंभते

वर्ग ६ टा.

—ढूंढिये जैनि है या नहीं.—

खिये ! हमने कितनेक ग्रंथोंमें अवलोकन किया है. तथा यति सवेगी पिताम्बरी वगैरोके मुखसेभि सुनाहे के श्री जैन श्वेताम्बर साधु मार्गी (ढूंढिये) वर्ग जैनी नहीं है. कितनि बडी आश्चर्यकि बात है के हम कुछ बयान नही करसक्तेहे लेकिन किंचीत मात्र खुलासा करना चाहते हैं—

जैन कोन हे और कोन नही हे इसका नीर्णय देखिये ! ढूंढिये जैनी नही हैं ऐसा मुर्तिपुजकोंका लेख नीचेमुजब :—

रिसाल मजहब ढूंढिये प्र०२ औ० २० मी ढूंढिये लोग अपने आपको जैनके नामसे जाहिर करते है लेकिन जैनकी किताबोंसे ये लोग बिलकुल खिलाफ हैं.

ढुंडक हृदय नेत्राजन पक्षातके प्रष्ट १२९ ओळी ३— सच्चा धर्म जैन नहि तेरा धोकापथ चलायाहे अपने आपबना जोढुंढा लवजी आदी धरायाहे बाधी मुखपर पटी सतरा, विसमे पारोगाय हैं ॥ सी० ॥ १६ ॥

इत्यादि ऐसे अनेक ग्रंथोंमें उपरोक्त लेखानुसार लेख हम लोगोंपे

दरज किये हुवे है लेकीन खुद मूर्तिपुजकोंके लेखासे हमारे प्यारे पाठक गण निर्णय करेंगे, क, मनी कोनहे या कौन नहि है सो निर्णय कर लेवे देखिये ! निर्णयके वास्ते मूर्तीपूजकोंके किंचित मात्र लेख दरज करते है

इ० स० १९०८ फरवरी ता० ७ आत्मानंद जैन पत्रिकाका पुस्तक ९ का अंक ३ रेका लेख निचे मुजब प्र १९

—दिक्षा प्रकरण—

" मासीराम और गुलझराम दो दुढीये साधुवोके अमृतसरमें प्रवेसका सविस्तर वृतांत हम गतांकमें लिख चुके है अब उनकी शुद्धि ओर दीक्षाका समाचार संक्षेपसे लिखते हैं "

"पूर्वोक्त पापो दयस इनको जो २ अशुधी क्रियाये करनिः करनि पडीथी उनके शुधीके निमित्त गंगा स्नानार्थ जाना जरुरी था अब सर्वकि सम्मतिसे वह गंगाजी भेजे गये वहां के पंडाकी भहीयाम अपने गुरु दादागुरु आदिका नाम और आगमनका कारण लिखवा पवित्रविध जलसे स्नान कर पवित्र हो अत्यंत हर्षसे तारीख ११ जनवारी का अमृत सरमे वापीस आये" देखिये ! प्रगट जैन पित्रांबरी मुर्तीपुजकोका मिथ्यात्व ये ग्रंथ संवत १९६८ सालमे प्रगट करनेमे आया था केकिन इस ग्रंथका उत्तर आज तक मिला नही अगर मुर्तीपुजक सच्चे जैनी हाते तो उत्तर द ते परंतु उक्त ग्रंथ हमारे प्यारे सज्जनोको हमेसा यादगिरीके वास्त इस ग्रंथ मे दाखिल किया है

॥ श्री वीतरागायनम ॥
॥ श्री मंगलम परम ॥

श्लोक

अद्रोह सर्व भूतानां, कर्मणा मनसा गिरा ॥
अनुग्रहश्च दानंच, सतां धर्म सनातनः ॥१॥

अन्य मतके तिर्थोंका विजय जैन पिताम्बरी मुर्तीपुजकोके तिर्थोंका पराजय गगा माताकी जय, जिसके स्नान सेवा करनेसे जैन मुर्तीपुजक पवित्र होते हैं और उन पुरुषोंका कल्याणार्थ कार्यभी सिद्ध होता हैं देखिये! आत्मानंद जैन पत्रिका इ० स० १९०८के अक २ ३ वाचनेसे हमको कुनुहल प्राप्त हुवा के अक २मे वोहतसी कपोल कल्पित वाते दरज की है परणु ईण वातोंसे हमारेकु कुछ जरूर नही हैं किंतु जो पुरुष असली मतसे और सयमसे भ्रष्ट होवेगा, वो पुरुष असली धर्मकी या असली मुनिकि अवश्य निंदा करेगा, और मिथ्या लाछन लगावेगा, फिर कपोल कल्पित मतको अगिकार करके असयमी साधवोंको गुरु धारण करेगा, इस वातका कुछ आश्चर्य नही है (मिसाल) उत्तम कुलकी स्त्री कुलहीन होती हैं वो वेश्याका मकान ताकती है.

अक ३रे के लेखसे वह लिखते है दिक्षा प्रकरण "घासिराम और जुगलराम" दो ढुंढिये साधुओंके अमृतरसमे प्रवेशका सविस्तर वृतात हम गतांकमे लिख चुके है. अब उनकी शुद्धि और दिक्षाका समाचार सक्षेपसे लिखते है,

पुर्व कृत पापोदयसे इनकी जो २ अशुची क्रियाये कल्पित मत मे करणी पडी थी, उनकी शुद्धि के निमित गंगा स्नानार्थ जाना जरुरी था, अब सर्वकी समतीसे वह गंगाजी भेजे गये वहांके पांडोकी बहीयोंमे अपने गुरुदादा गुरु आदिका नाम और आगमनका कारण

न्मिसका पवित्र तीर्थ जलमे स्नान कर पवित्र हो, अतएव इससे तारीख १६ जनवरीको अमृतसरमे वापीस आये, "

देखिये ! अन्तमें तो मुर्तीपुजकोंका आचार्य पितांम्बरी आत्माराम सवगी हुवा है और उसे इन लोगोने सुरी पद दिया है, यों पुस्तकमें वाविस संम्प्रदायके पंजाबी जैन महा मुनियोंने समयसे विपरित (खाय) मतयुक्त देखके सम्प्रदायमें बाहर निकाल दिया था फिर इन लोगाने उसे अंगिकार किया था बस आत्मारामको कानसे अन्य मतोके तिर्थोपर या गुरु नानकके द्वारेपर भेजकर पवित्र किया और कितने ग्रामगाजन किये गये, और कागसे अन्य मतके रीतिसे उसका शरीर पवित्र किया और कोनत अन्य मतके तिर्थोंसे उसका कल्याणमें कर्य सिद्ध हुवा, अगर वा पवित्र नही हुवा होवे तो उसके सम्प्रदायमें दिक्षा लेनेवाले पवित्र कैसे होवेंगे कदापि नहीं,

पितांम्बरी आत्मारामने भी जो ग्रंथ बनाये हैं उन ग्रन्थोंमें अन्य मतके धर्मोकू अन्य मतके तिर्थोंकु व अन्य मतके देवोंकु व अन्य मतके गुरुको पवित्र नहीं कहे हैं और कोई ग्रथोंमें अन्य मतका व अन्य मतके तिर्थोका अन्य मतके देवोंको व अन्य मतके गुरुका अच्छी तरहसे खंडन किया है, परंतु आत्मानंद जैन पत्रिका का लेख अवलोकन करनेसे इसके भिन्न हुवा के आत्मारामका लिखना माफ स्वार्थ हैं,

पितांम्बरी वल्लभ विजय आदि मुर्तीपुजक लोग शत्रुंजा, गिरनार, अबुगढ, समेत शिखर आदि तिर्थोंको कल्याणका कर्य मासका दाता तरण तारण परम पवित्र मानते है, तो इन तिर्थोंसे धर्मीराम गुणस्राम ए दानो पुरुष भी पवित्र न हो सके, और उन दानाका कल्याणरूपी कर्य भी सिद्ध न होनेकतरह उनकु मध्यके स्नानसे पवित्र

करना पडा, हाय अपसोस! तो अब सेत्रुंजा गिरनार आदी तिर्थोंको माननेसे या सेवा पुजा प्रतिष्ठा करनेसे भव्य जीवोंकी पवित्रता और कल्याणार्थे कार्य कैसा सिद्ध होवेगा, इसपरसे हमकु पुर्ण निश्चय हुवाके जैन मुर्तीपुजकोंके सर्वत्र तिर्थ अपवित्र अयोग्य और अधोगती के दाता है.

पिताम्बरी वल्लभ विजय आदि मुर्तीपुजक लोग जो सेत्रुंजा गिरनारादि तिर्थोंको परम पवित्र कल्याणके कर्ता मोक्षके दाता तरण तारण उत्तमोत्तम मानते तो अन्य दर्शनीके तिर्थोंका शरण ग्रहण नही करते, परंतु मुर्तीपुजकोंने सेत्रुंजादि तिर्थोंको अपवित्र अधोगतीके दाता कुछ योग्य न समजतां अन्य दर्शनीका तिर्थ गंगाजीका शरण ग्रहण किया है, और घासीराम जुगलारामको गंगाजीके जलसे पवित्र करवाये है, हाय अपसोस! हमकु आश्चर्य प्राप्त हुवाके खुद अन्य मतके पुराणादी सिद्धांतोंमे कैसा अम्दुत अधिकार फर्मायिश किया है के अवलोकन कर्ताको पुर्ण आनंद होता है

माहा भारत का अधिकार

(श्लोक)

माताच सर्व भुतेषु, मनोवा काय निग्रहः ॥
पापस्थानक कषायाणां, निग्रहेण शुचिर्भवेत ॥१॥

अर्थ-सर्व जीवकी दया करता, मन वचन काया इस तिन जोग के विकारोंका विनाश करना, कषायादि सर्व पाप स्थानकका परित्याग करना, ईतनी वातां जितनेसे ये चिदानंद पवित्र होता है.

भावार्थ— धर्मसे या संयमसे भ्रष्ट हुवा जो पुरुष सर्वत्र सर्व जीवकी दया अंगिकार करेगा, और मन वचन काया ये तीन योगके विकारोंका विनाश करेगा, कषायादि सर्व प्रकारके पाप स्थानकका परित्याग करेगा, वो पुरुष परम पवित्र होवेगा परंतु केह तरेके पानी मनके उपर डालनेसे कभी पवित्र नही होवेगा, जैसाकी जलचर प्राणी सदैव जलमे निमग्न रेते हुवे भी कभी उसव्के कोई पवित्र हुवा नही कहता. देखो! आदित्य पुराणके विषये जो तिर्थ कहे हे उसी तिर्थोसे शुद्ध और पवित्र होता है,

(श्लोक)

सत्यं तिर्थं तपस्तीर्थं, तिर्थं मिंद्रिय निग्रहः ॥
सर्व भुतदया तिर्थं, मेवत्तीर्थं मुदाहृतम् ॥१॥

अर्थः— सत्य, तप, इंद्रियोका निग्रह, सर्व जीवकी दया इत्यादि तिर्थोसे आदमी परम पवित्र होता हैं

भावार्थः— धर्मसे या संयमसे भ्रष्ट हुवा पुरुष इन उपयुक्त तिर्थसे पवित्र होवेगा, लेकिन दुसरे तिर्थसे नही होवेगा, सत्यसे तथा तपसे तथा इंद्रियोंका विकार जीत करनेसे तथा सर्व जीवोकी दया करणेसे पवित्रता व शुद्धता होती है, लेकिन गंगादी तिर्थो के स्नान करनेसे पवित्र नही होता हैं ये सोचनेकी जगह हे के पार्वतीराम और सुगमराम ये दो पुरुष धर्मसे और संयमसे भ्रष्ट हुये है वो गंगाके स्नानसे कैसे पवित्र हुव होगे, कारण धर्मसे और संयमसे जो पुरुष भ्रष्ट होता है, उस पुरुषका हृदयकमल पुर्ण रीतिसे अपवित्र और मलीन होता है,

है, और उसका वदन भी विकारोकी शक्तिसे दुराचार कार्योंके विषे रममाण होताहै अब देखिये ! अंतःकरण जहांतक पवित्र और निर्मल नही हुवा वहांतक वो पुरुषभी पवित्र ओर निर्मल नहीं हुवा तब वदन-के उपर चाहे जितना पाणी डाल लेवे या नदीमेंहि रात्रंदिवस वास करले तोभी अंतःकरणका मलीन पुरुष कभी पवित्र नहीं होवेगा इस न्यायसे घासीराम व जुगलराम शिर्फ गंगाका स्नान करनेसे शुद्धान्त क-रणाभावसे कुछ पवित्र नहीं हुवे, वह अपवित्रहि है

जैन धर्मसे भ्रष्टहुवा पुरुष अन्य धर्मसे कभी शुद्ध और पवित्र नही होवेगा प्रभास पुराणमे देखिये ! क्या उत्तम अधिकार लिखा है

॥ श्लोक ॥

अन्यलिंगपरिभ्रष्टो, जैन लिंगेन सिध्यति ।
जैनलिंगपरिभ्रष्टो वज्रलेपो भविष्यति ॥ १ ॥

अर्थ—अन्य लिंगसे भ्रष्ट हुवे जो पुरुष है वो जैन लिंगसे सिद्ध होवेंगे परंतु जैन लिंगसे जो पुरुष भ्रष्ट हूवें है ऊसे वज्रलेपकी (महाक्रिया) प्राप्ती होवेगी

भावार्थ—अन्य धर्मसे ओर अन्य सयमसे भ्रष्ट हुवा पुरुष जैन धर्मका ओर जैन सयमका शरण ग्रहण करेगातो शुद्ध पवित्र होके सिद्ध पद पावेगा परतु जैन धर्मसे ओर जैन संयमसे भ्रष्ट हुवा पुरुष अन्य धर्म, अन्य देव, अन्य गुरु ओर अन्य संयमसे ओर अन्य तीर्थसे उसकी पवित्रता ओर सिद्धता कदापि नहीं होवेगी इहांपे सवाल होणेकी जगा है के घासीराम ओर जुगलराम ये दो इसम जैन धर्मसे ओर जैन सयमसे भ्रष्ट हुवे है सो ये कैसे गंगाजीके स्नानसे पवित्र हुवे है. इस

शास्त्का खुलासा जैनके एकादस अंगादि प्राचीन अमत्नी सिध्यताके मूल पाठसे आत्मानंद जैन पत्रिका पालेने न किया, ईसपरसे हमको पूर्ण निश्चय हुवाकि ये दोनुं इसाम हास्यक शुद्धोतकरणके अभावमें अपमिश्रहि है.

घासिराम ओर सुगलराम ईण दो ईसमोकु गंगाजीके स्थानार्थ भेजनेकी सम्मती देनेवाले, पवित्र समजणे वाले ओर इस वातकु मन्त्र-पण जाणन वाले ईन सर्वे जैन मूर्ती पुजकोंको जैनके एकादस अगादि प्राचीन सिद्धांतोके आधारसे तथा मूर्ति पुजकोंके महा पंडित विद्वान आग जो आचार्य हुवे है उन पुरुषोंने निकादि ग्रंथोकी रचना किनी है, ऊन ग्रंथोके आधारसेहि उक्त मुर्तीपुजकोंको हम ईस ठिकाणेपर मन्य मती, मिथ्यात्वी, हिंसाधर्मी, पाखंडी, अशुद्ध धर्मी इत्यादि शब्द कपर तो अयोग्य नहीं होगा

घासाराम ओर सुगलराम ये दोई इसम गंगाजीक पढोकी बाडीयोंमें आपके गुरु, दादागुरुका नाम ओर आगमनका कारण लिख-वाय (परंतु पंजाबी जैन मुनियाने दुराचारके कारणसे उक्त इसमाको सम्प्रदायके बाहेर निकालेहे वो कारण बहियोमें लिखवाया या नहीं ईसका हमकु पुर्ण संदेह रहा है, ये कारण लिखवाना अवश्यथा) अब ये दो ईसम दरसाल गंगाजी आके आपने गुरु या दादागुरुका स्मर्द करके पिंड भरायेंगे ओर वो शुद्ध गंगाजलसे हमेस पवित्र होवेंगे जैन पितांबरी मुर्तीपुजक संवेगी साधू लोगोंका एसादि आचार होवेगा, एसीही परपरा होवेगी ओर ऐसाही व्यवहार होवेगा तथा उनाके शिष्य प्रशिष्य तथा उनके आचार्योंने सिद्धांतोमें व ग्रंथोमें एसा लेख दरज किया जावेगा, ? धिक्कार है ऊन पुरुषोकु के जैन धर्म विरुद्ध मिथ्या आचरण करते हुवे भी बोधी एक जैन कहलाते है! किन्तु ऐसे दुरभिमा-

नी पुरुष कदापि नही हो सकते.

पितास्म्बरी वल्लभ विजय संवेगी आदि मुर्तीपुजक लोग कपोल कल्पित गाल वजाते है, के जैनमे आदु धर्म हमारा है, और असली साधु हम है, ऐसा कहते हैं लेकिन जैनके आदु और असली मुनि या श्रावक लोग हे वो सर्वत्र प्रकारे कितने ही दुःसह कष्टादिककी प्राप्ती होवे तो भी प्रत्यक्ष मरणकी भी बिलकुल पर्वा न करके अन्य मतके धर्मका, देवका, गुरुका, व तिर्थका शरण ग्रहण, कदापि नही करेगे और ईनसे पवित्रता होना भी नही श्रद्धेगे मुनि श्री गजसुकमालजी तथा श्रावक कार्तीक सेठ व कामदेववत समजणा, अन्य मतके धर्मका देव-का, गुरुका और तिर्थका शरण ग्रहण करणा और पवित्र होना ऐसा श्रद्धना ये नवीन और नकली मतका लांछन है, लेकिन असली जैन धर्मका लांछन नही है, जैन मुर्तीपुजकोंको कुछ शरम प्राप्त न हुइ के जैनके नामको लाछन लगवाया धिक्कार ! धिक्कार !! धिक्कार !!! हो

ये वात किस वजे पर हुई हे के कोई मनुष्यने इच्छापुर्वक भो-जन करके वापीस वमन किया उसे कोन अगिकार करता हैं, और उसे क्या पदवी दी जाती है, इस मिसाल पंजाबी साधुकी झुटी पतर-वाल्लीमे वमन की हुइ वस्तु अगिकार करते है, लेकिन ये नही समज-ते हैं के झुंटी पतरावल कोन उठाता हैं और उसे क्या पदवी मिलती है इसका विचार विद्वान पुरुषोंने निःपक्षपात बुद्धिसे करना चाहिये.

स्तवन.

राग–भूंडीरे भूख अभागणी लालरे ए देशी
मच्यो हुल्लर इण लोकमे, खोटा हलाहल धार लालरे ॥

मांच नही रस तहमे, मिथ्यात्वी कियो पोकार लाल्हर ।।मा।।१।।
कुंदन मुनि राज मुनि, निंदक जिन प्रतिमा शाय लाल्हर ।।
ते पिण ठिकाण आविया, किणो परिश्रम जाय लाल्हरे ।।मा।।२।।
एहवा ठिकाणे आविया, गुमान भाणो थाय लाल्हर ।।
एहवा मिथ्या ग्रेस मांकल्या, दश दर्शांतर मांय लाल्हर ।।मा।।३।।
तिन कग तिन गोमतु, मलो न सरवे मुनिराय लाल्हर ।।
छ कयारो आरम्भी, उत्तम गति नही थाय लाल्हर ।।मा।।४।।
चतुर विचारा चित्तमां, कोगो निर्णय एह लाल्हर ।।
तत्वातत्व विचारथी, कुगुरुने दीनो छह लाल्हरे ।।मा।।५।।
कुंदन माहव्यारी ए विमती, सुणजा सारा लोक लाल्हर ।।
दयापाळो छ्यमयनी, तो पामा भक्ति थाक मास्कर ।।मा।।६।।
सम्म पसठ उगणीस की ज्यष्ट शुक्ल मझार लाल्हरे ।।
धर्म ध्यान कर शोभतो, अमरावती शहर गुलमार लाल्हरे ।।मा।।७।।

विक्रम सवत १९६ कि साल्मम भिमसिंह माणकजा प्रसिद्ध किया हुवा जैन प्रबोध पुस्तकका तृतिय खण्डके प्रष्ट ९९४ मे, तप ९१ मां अहमद दशमी तप मलक मसनी भादवा शुदी दशमी, ना, दीवस यथाशक्तिये उपवासादिक करिने अंबिका देवि पास सगितादिक थी रात्री जागरण करवुं नालियर, केळी, मोदकादिक अकागी पास ढोंकवा बिम दिवस साधर्मीकने जिमाडवी साधुन दान आपी पारण करे अेवा देवीन कुंकुनी तिलक करवी थंमन करवु तेमपाताने पण अमन करवुं मन रेशमि चरणीयो बांधवी पहवो तथा बहु देवीने पधाविये दिपक करवा तप करवुं वगैरे ' वगैरे !!

इसी ग्रंथके प्रष्ट ९९९ म तप ९४मा, अेथीकम तप वांच कृष्ण पंचमीये मीनीम्श्वर पुजा पूर्वक अंबीकानी पुजा करी यथाशक्तिये एकासना

दिक तप करवु नैवेद्य तथा फल ढोंकवा उजमणे माधुने नवा वस्त्र अन्न पान आपी प्रति लाभवा अंबानी मुरति; वे पुत्र सहित तथा आम्र वृक्ष सहित करावबी पछी तेनु पुजन करवु.

इत्यादि श्री जैनके असली सिद्धातोमे विरुद्ध ऐसे अनेक मुर्तीपुजको के लेख हैं मगर ग्रंथ वढनेके भयसे ह्यापे किंचित दाखल किये है इस सिवाय फेर भी ख्याल करने की वात है, के श्री जैन धर्ममे सर्तोत्तम और अनादि "नवकार मंत्र" है. ऐमा श्री तिर्थकरोंने फरमाये है परतु इस मत्रसे जो जो मनुस्य अनुकुल है वो लोक असली जैनी कहे जाते है. और जो जो मनुष्य इस मत्रसे प्रतिकुल हे. वो लोक जैनी नही कहे जाते है मगर वटी भारी खेदाश्चर्यकी वात हे के जैन मासक मुर्तीपूजकोंने आखिरमे नवकार मत्रभी उडाना मुरू किया है, इस लिये मुर्तीपुजकोंको जैनी कैसा कहेना चाहिये मुर्तीपुजकोंका लेख निचे मुजव—

त्रिस्तुति—परामर्श—फिताव—प्रष्ट १हेला ओली
प्रथम—सूरी मत्र प्रजादेन खंटया मिशत मत—

देखिये। सुरी मत्रके प्रतापसे मुर्तीपूजक लोक सर्व कार्य की सिद्धि समजते है लेकिन नवकार मत्रसे नही. सर्व महासयोने हमारे सवाल पर किंचित मात्र ख्याल करना चाहियेके मुर्तीपूजकोंको "नवकार मंत्रका शरण लेनेके वास्ते जग शर्म प्राप्ति होती है क्योंकी असल जैनी होते तो "न-वकार मत्रका" शरण ग्रहण करते लेकिन श्री जैनके असली सिद्धातोंसे जो वरखलाप है उनोको "नवकार मत्रका" शरण काहेके वास्ते होणा इस ज-गे इतना कहना वस है,

लेकिन ह्यापे सहज सवाल होनेकी जगे हे के "सुरी मंत्र" का लेख श्री जैनके असली कोनसे सिद्धातोंमे है और कोनसे तिर्थकरोंने फर-

माया है और इस "सुरी मंत्र" का कोनसे तिर्थंकरोंने सर्वोत्तम और अनादि मान्य किया है इस मतलब खुलासा मुर्तीपुजकोन श्री जिनके मानित असली सिद्धांतोंके मुल पाठसे करना चाहिये.

इसलिये ! जैन कोन है या कोन नही है, इस निर्णयका बाल किंचित मात्र मुर्तीपुजकोंके लेख दरज किये है इन लेखों परसे हमारे प्यारे पाठक वर्गने सत्य समझ के साथ निश्चय करना चाहिये के मुर्तिपुजकोंके लेखोंसे मूर्तीपूजक लोग जैनी नही है ऐसे ठहरते है या नही ठहरत है

—:वर्ग ७ वा:—

ढुंढक नामकी उत्पत्ती.

देसिये । महाशयमी । जैनके असली मुनियोंका नाम ढुंढक नही है परंतु विरोध पक्षोने विरोधके कारणसे ढुंढक ऐसा नाम दिया है (तर्क) इस बात तुमारा कथन (कहना) सत्य कयपपरसे समझ (समाधान) करो । विरोध पक्षोके लेखानुसार सिद्ध करके दिखलाते है,

अज्ञान तिमर भास्कर प्रष्ठ २ छन ५ इनके रहनेका मकान टुटा फुटा पुराना था, इस वास्ते लोकोने ढुंढक नाम दिया है *

* महाशयमे हाल तक ऐसा ही विरोध चला हुवा है असली जैन मुनियोंको उतरनेका जगा और आहार (मांगन) मिलना बहोत मुशकल है

समीक्षा – पाठक गण मुर्तीपुजकोने अपना ऐब छिपाया है लेकिन हम जाहिर करते है देखो, देश गुजरातके शहरमे हाणेमे जैनके असली मुनि राजोका पधारणा हुवा, लेकिन व्हापे मुर्तिपुजकोका अतिसय जोर था तब यति संवेगी पिताम्बरी लोगोने ऐसा पका बदोवस्त कियाके उक्त मुनियोको उतरनेको कोइने जगा देना नही और अहार (भोजन) वगैरे देना नही और शहरमे रहने भी देना नही तब मुनि विहार कर गये शहरके बाहेर गयेके बाद ये खबर एक कुभारको मालुम हुइ वो कुंभार भागता भागता मुनियोंके पास गया पाव पकडके कहने लगा के आप ऐसी धुपमे मत जावो, तुमको बहोत दुख होवेगा तब मुनि कुभारके वहां गये उस कुभारके गिरा हुवा एक मकान था वहापे मुनियोंको उतारा दिया ये खबर विरोध पक्षोंको मिलि तब वो लोग मुनियोके पास गये और गैर बकने लगे और पातरे फोड डाले, व बहोत त्रास देने लगे परन्तु मुनि जनोंने मौन धारण करी तब वहाके सद ग्रहस्थोने उन लोगोका अपमान करके वहासे निकाल दिये वो लोग वापिस जाते जाते कहने लगे के ये लोग ढुंढमे उतरे हे इसवास्ते आज रोजसे इन लोगोंको ढुंढक पुकारते जावो ये नाम विक्रम संवत १५७१ के सालमे विरोध पक्षोका दिया हुवा प्रसिद्ध हुवा

देखो ! विरोध पक्षोके लेखसे पूर्ण सिद्ध हुवाके असली जैन मुनियो का नाम ढुढक नही है परंतु इस नामसे हम लोग नाराज नही है इसका कारण ये है की देखिये ! ढुढने वाला कहो या सोधनेवाला कहो, या हेरनेवाला कहो, या गवसणा करनेवाला कहो, या तलास करनेवाला कहो या अवलोकन करनेवाला कहो, या चिकतास्या करनेवाला कहो, या खोज करनेवाला कहो, इत्यादि शद्बोका भावार्थ एक है परंतु अन्यथा नही है इस जगे हम इन शब्दोको प्रतक्ष प्रमाणसे सिद्ध करके दिखावते है

(यथ प्रष्टांत) अब देखो। इस पंचम कालमें (काल युगम) आर्य क्षेत्रोंमें आगे बडे बड समर्थ दान राजा महाराजा हुए है परन्तु उन पुरुषों म बुद्ध (साधक) शक्ति नहीं होनसे दशाका सुधारा करना तथा अनेक नवीन अनेक प्रकारकी वस्तु प्राप्ति करना एस एस अनेक समर्थ कार्य वा पुरुष नही कर सकते य तद यथा इन आर्य क्षेत्रोंमें मिस रोजनस इरापीयन लोगोंका आगमन हुवा उस रोजसे आज तारीख तक अनेक प्रकारसें अनेक दशोंका सुधारा हुवा है, और अनेक प्रकारके हुनरोंकी या कलाकी वा विद्याकी प्राप्ति हुइ ह पर पृथ्वी परस्त ही अनेक स्थलोका ढुंढ ढुंढके अनेक प्रकारकी नवीन नवीन वस्तुकी प्राप्ति करके जाहिर करी है एस ऐसे अनेक प्रकारके समर्थ कार्य करके स्वदेशीयाका या भारत वासियोंको पुण सुखी किये है और वर्तमानमें करत हैं देखो। ढुंढक पुरुषोंकी कितनी नवर वस्त मगुताज है के हम कुछ बयान नही कर सकते है इस वास्त हम लोग ढुंढक मामस नाराज नही है, इस बातसे जैनके असली मुनि महाने जैनके असली सिद्धांतोंका पुरण मोथन करके हाणी कारक मिथ्या धर्मरहीत रिवाजाको राकनेका प्रयत्न करके जैनके असली रिवाजोंका जाहिरम प्रगट करके मुनि धर्मका या श्रावक धर्मका या धर्मका पुम सुधारा करणा सुरु किया सुधारा करनेका कारण य हे की मुर्तीपुजकोंके दरम्यान असली जैन धर्ममें अतिसय पोल्यता हो गया था और हाणी कारक मिथ्या धर्मरहित रिवाज अतिसय बढ गये थे उनके रिवाजोके कारण असली जैन धर्मका पुर्ण पसारा होना ऐसा असंभव हो गया था इस वास्त हाणी कारक मिथ्या धर्मरहित रिवाजोको रोकनेको जैनके असली मुनिमहाने, पूर्ण परिश्रम उठाया और सर्व स्थलोंमे इस बातका प्रसार करणा जाहिरमें सुरु किया ये समय मूर्तीपूजकोंको मिलनेसे जैनके असली मुनी धर्मसे या धर्मसे अतिसय विरोध करना सुरु किया फेर इन लोगोंके तन मनमें अतिसय द्वारा मत (धारा) उत्पन्न हुवा ये बात उत्पन्न होनेका कारण ये

है के मुर्तीपुजक लोगोसे जैनके एकादस अंगादि ताड पत्रोमे लिखित प्राचिन असलि सिद्धातोंका सोधन करणेको असमर्थ होनेसे तथा जैनके असली सिद्धातोंका सत्य अर्थकरनेको असमर्थ होनेसे जैनके असलि सिद्धातोंका सत्य उपदेश देनेको असमर्थ होनेसे तथा संयमादि पालन करनेको असमर्थ होनेसे तथा जैनके असलि मुनि जनोके अनुकूल (बराबर) प्रवृत्त न करनेको असमर्थ होनेसे मुनीयोके गुण

॥ सवैया ३१ सा ॥

ग्यान बढे ध्यान बढे पंडित सुजाण बढे जागेकों
कमाय जाणे तत सार पाया है ज्याकी है
करणी अपार वरणी न जाय मोपे ज्याका
जस गुण कहेत मोकुंअत नहि आया है मानतज
माया तज वीत परिवार तज अेतिबाता सोतजी
संतोस गुण गाया हैं कहेदास हरनाथ
साची जाणो येहिवात ढूंढ दुढ ढयोत तसार
जाते ढूंढीया कहाया है ।।१।।

आछि आछि वात लीनी करणी ते सुद्ध किनी
संसारीने प्रुठदिनी तीरीया जाणी भुडीया ॥ इद्री पच वस कीनी राखीन
कपाय रच क्रोधमान माया रच दश विध मुंडीया" ॥
पाखाण सम
रे खम सम दम अनंत उपम पम बेठेजिण दुढीया ॥
ससार समुद्र घोरक्षणमे उत्तरे पार
कहे भनु अणगार ताते कहिये ढुंढीया ।।२।।

जोगकी जुगत जाय ग्यान ध्यान सु हमाय प्रभुके चरन
ध्याय समहिकु सुहीया कंचन कामिनी त्याग जप तपस प्रीतीरस
रागद्वेस छोड ज्ञान सुधाग्यान ओढीया पेढहि किताव वेस
सप्तीमे दयापेस आतमा समान लेस करम कीया सहीया
सब मत ढुंढ ढूंढ करव्यो है तैतसार
तब मिल्यो केवल ग्यान तास मया बूडीया ॥३॥

इत्यादि कारणोकि असमर्थाइ होनेसे मूर्तीपूजकोंको ढुंढक पदमि-
लग नही तथा गुरूसे अस्थानदशा करना शुरु किया तथा ढुंढक ढुंढक
पुकारणा शुरु कीया तथा मिथ्या धर्मरहित अतीतस्य निंदनिक कुंठ ही गुच्छा
पुन चार केवल यथोक्त कल्पीत कुतर्कोंके संयुक्त लेखास भर हुवे शल्याद्धार
अंजन ना मादी योष पाय भर मारे ओर यत्रतत्र मार्दिर करके अपने दिलम
बड भारी चमकके साथ आनंद मानते हे के हमने विजयके थान मुल्कम
कमादिये है लेकिन दिलमे इतना नहि विचारते हेके परात्मक परत्व
सिसरपर अबहि फरेग देखो गुर्ती पूजकोंका मिथ्या कर्मका कैसा जगर
दस्त है हम कुछ ग्यान नहि करसकते ढूंढक हृदय नेत्रांजन टका पन
निचे सुनम.

॥ दोहा ॥

शल्योपचार गुरूने कीया, अंजनताकरे हम,
तो क्या ढुंढक हृदयमें अभिभी रहेगा भर्म ॥१॥

समीक्षा:—अर मरे प्यारे अमरजीमय हम लोगोके हृदयकमल भ्रमतो
अपार परमात्मा वीतरागी पुरुषोंके अमोघ धाग रूपअमृत वाणीसे मिलेहे
पण कुर होगयाहे इस बातमे किंचीत मात्र फरक समजना नहि अगर तेरेको
मिथ्याकी छाकअनसमें हमलोगोंके हृदयमे भ्रमन चर आता होय तो भी

वीरपरमात्मा वीतरागी पुरुषोंके फरमाये हुवे जैनके एकादश अगादि प्राचीन ताट पत्रोमे लीखीत असली सिद्धातोके मुल पाटसे आम सभामें दुर करके दिखला अगर भ्रम दुर करके नहि दीखलावेगा तो पंच परमेष्टी देवके अज्ञाके विरोधक होके अधोगत गामी होवेगा ओर प्रसिद्धमे मिथ्या वादि टहरेगा आगे जैनके माहात्यागी वैरागी आतमाअर्थी ज्ञानाभोनिधि उत्तमोत्तम असलि मुनि हुवे हैं उनमहात्मावोने शल्यो द्वार करताको किस करुणा दृष्टीसे छोड दिया है येह हम कुछ बयान नहिकर सकते हे लेकिन हम लोक तुम लोकेके पाससे हमारे निन्म लिखीत लेखोका व तुमारे तरफसे जो जैन विरुद्ध लेख छपे गये हे उन सर्व लेखोका तुम लोकोके पाससे आम सभामे तुमारे पाससे सिद्ध करवा लेवेंगे ये सत्य समजना.

वर्ग ८ वा.

चेइंय शब्दका निर्णय.

देखिये! इस पंचम कालमे इस शुद्ध निर्मल जैन धर्मकी किंवा जैनके असली सिद्धांतोकी रचना देखकर हमको पुर्ण खेदाश्चर्य प्राप्त होता हैं, सबब इस पवित्र जैन धर्म मे से कितनेक नकली मत निकलकर अज्ञानताका और मिथ्यात्वका ऐसा जबर दस्त गलबा मचा दिया है के तुच्छबातका निर्णय करणेमे अकल चक्करा जाती है मगर वितराग देवा

थिदेवोंके वचनोंपे ध्यान पहोंचानेसे नियत साफ होके समकित शुद्ध रहेती है अतएव 'चेईय' या 'चैत्य' इस शब्दने ईस वख्तमे ईतना मम्मा उठाया है के हम कुछ बयान नहीं कर सकते है मगर अछे अकल्ल वंदोके अकल्लमे एसा भँवर डाल दिया है के हम आता, कारण 'चेइय' या 'चैत्य' ये शब्द भी जैनके असली में प्राचिन सिद्धांतोंमे उक्त शब्दोंको अनेकांत अर्थी किया है मगर मुर्ती पूजकोने इस शब्दको एकार्थी किया है किंतु एक अर्थी करके भी जैन के असली और प्राचिन सिद्धांतोंके मुताबिक अर्थ नहीं करते सिर्फ 'चईय' या 'चैत्य' इस शब्दका अर्थ एक प्रतिमा करते मगर इन लोगोंको ऐसा अर्थ करना भी जैनके असली और प्राचि सिद्धांतोंकि आधारसे साफ लोप है, क्योंकि ये लोग ईस बातको करनेके वास्ते सिर्फ "हैमकोश" (चैत्य जीनोकस्तद्विंबं इति हैम वगैरे की साक्षी देते हैं, लेकिन असली सिद्धांतोंकी साक्षी इन लोग को ढुंढनेसे भी नहीं मिलती हैं मगर ध्यान किजीये प्रथम इन लोग के घरमे ही खास दो बाते है इन लोगोंके जो आचार्य हुवे है औ उनोंको ये लोग अमर सिंहजी कहते है उनोंने अमर कोश बनाया उसमे 'चैत्य' इस शब्दका अर्थ और ही किया हैं देखा 'अमर कोश पृष्ट ५९ श्लोक सातवा

(श्लोक)

चैत्य मायतनं तुल्ये, वाजि शाला तु मन्दुरा ॥
आवेशनं शिल्पि शाला, प्रपा पानीय शालिका ॥७॥

अर्थः— चैत्य, आयतन, ये दो नाम यज्ञ स्थानके है, ये नाम समे तुल्य लिंगी है, वाजि शाला, मंदुरा ये दो नाम घुड शालाके है

आवेशन, शिल्पि शाला, ये दो नाम कुमार आदिक शिल्पि जनोके घरके हैं, मपा, पानीय शालिका, ये दो नाम जल स्थान अर्थात प्याऊ के हैं ॥७॥

देखो ! इसके अल्लावा " शद्धस्तोम, माहा, निधि, कोश " ई० १९१४ के छपे हुवे की मृष्ट १६२ को जिसमे चैत्य शद्ध के १० दस अर्थ करे हैं

यत.

ग्रामादि प्रसिद्धे माहावृक्षे देवा वासे जनाना सभास्थ तरौ,
बुद्ध भेदे. आयतने, चित्ता चिन्हे, जन सभायां. यज्ञ स्थाने,
जनानां विश्राम स्थाने, देवस्थाने च,

सोचिये ! इस जगे " चैत्य " शद्धका अर्थ प्रतिमा ऐसा नही करा हैं, तो अब विचारका स्थान हे के कोशवाले भी 'चैत्य' शद्ध का अर्थ एक पक्षमे प्रतिमा ऐसा नही करते है तो सिद्धांतका तो कैसा करेंगे जैसा स्थान वैसा अर्थ होवेगा, तो फिर कोषवाले भी " चेईय " शद्ध को अनेका अर्थी मानते है, देखिये ! श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोके आधारसे 'चेइय—याचैत्य' इन शद्धोके ज्ञान वगैरे अर्थ होते हैं वो हम निचे खुलासा करके दिखलाते है सो सुज्ञ जन ख्याल के साथ पढीये

सूत्र श्री ठाणायंगजी समवायगजी मे ज्ञानी पुरुषोंने क्या फरमाया है सो देखो.

(गद्य पाठ)

एएसीण, चउवीसाए, तित्थयराणं,चउवीसं, चेइय, रुक्खा पन्नंता—

अर्थ – जिस जिस वृक्षोंके निचे चौविस तिर्थंकरोंको केवल ज्ञान और केवल दर्शनकी प्राप्ति हुई है, उन वृक्षोंमे ज्ञान गुण कहां है अगर आपे मुर्तीपुजक लोग 'चैइय' इस शब्दका अर्थ ज्ञान नहीं करते हुये प्रतिमा करोगे तो क्या तिर्थंकरोंके शरिरमे, मस्तकमे, किंवा मुखमें किंवा पैइठक द्वारा, प्रतिमाको अंदर घुसा दी थी सो प्रतिमाके प्रसाद से तिर्थंकरोंको ज्ञान प्राप्ति हुई, नहीं नहीं फेर भी नहीं, ये बात कदापि नहीं होने पास्ते हैं, वो फेर इस स्थानपे 'चेइय' शब्दका तो अर्थ निश्चय ज्ञानही होवेगा, मगर दुसरा अर्थ कदापि नहीं हो सकता है, फेर भी देखिये ! जिस वक्त असुर कुमारका मालिक चमर इंद्र पहेले देव लोक गया उस वखत छद्मस्त अरिहंत श्री महावीर स्वामिका शरण लेके गया है जिस वक्त चमर इंद्र प्रथम देव लोकमे पहोचा उस वखत पहेले देव लोकका मालिक सक्र इंद्रने चमर इंद्रका मारनेके वास्ते चमर इंद्रपे वज्र चलाया (फेका) सक्र इंद्रका वजर चमर इंद्रपे आने के साथ चमर इंद्र एकदम अतिसय पवराके वहांसे अपनी जान लेके अति सिघ्रके साथ भागता हुवा श्री वीर परमात्मा के बिलकुल नजिक आने के साथ अपना रुप परावर्तन किया अर्थात बिलकुल छोटा कुंथवे जितना शरिर बनाके श्री महावीर स्वामीजीके चर्णारविंदके निचे घुस गया, अपने बचावके वास्ते, मगर जिस वखत सक्र इंद्रने चमर इंद्रपे वजर चलाया उस वखत दिलमे सोचा के चमर इंद्र यांपे आ नही सकता है लेकिन किस जोरसे आया है तब अवधि ज्ञानपे दृष्टी फरमानेसे मालुम हुवा के छद्मस्त अरिहंत श्रीवीर वर्द्धमान स्वामीजीकी सहाय (ओथलके सरण लेके) यांपे आया है ये बात ज्ञानमे मालुम होने के साथ सक्रेंद्रने बहोत पश्चाताप करके अपने फेके हुवे वज्रको पकडनेके वास्ते पिछे दवडा सिघ्रगति जातिके साथ वो वज्र श्री महावीर स्वामीके अतिही निकट [पास] पहोंचनेके साथ वज्रको सक्रेंद्रने पकडली

पकड लिया वगैरं वगैरे ईसके वारेमे सूत्र श्री भगवतिजीमे तिन पाठ दाखल किये है वो निचे मुजब,

[पाठ]

नन्नथ्थ, अरिहतेवा, अरिहतचेइ आणिवा भावि अप्पणो अणगारस्सवा, णिसाए उट्ट, उप्पयंतिजाव, सोहम्मो, कप्पो.

भावार्थ – देखिये ! गौतम स्वामीजीने अरिहत भगवंत श्री माहावीर भगवानको पुछाके अहो भगवान असुर कुमार देवता सो धर्म देव लोक को जाना चाहे तो किसकी नेश्राय लेके जावे तब प्रभुने गौतम स्वामी को श्री मुखसे फरमायाके, अरिहत अगर छद्मस्त अरिहंत, अगर भावित आतमा अणगार (जैन मुनि) का सरण लिये शिवाय सो धर्म देव लोक तक नही जा सकता है.

सोचिये । माहेवान, अगर ह्यांपे मुर्तीपुजक लोक ऐसा अर्थ करेंगे के अरिहत, अरिहतकी प्रतिमा और भावित आतमा अणगार अगर ह्यापे ' चेईय ' शद्धका अर्थ प्रतिमा करेगे तो छद्मस्त अरिहंतको कहां पर छिपा के रखेगे और प्रतिमाको कोनसे खडेमेसे खोदके निकाले, ये भी इन लोगोंको अवश्य ही वताना पडेगा, खैर अगर ह्यांपे मुर्तीपुजक लोक कहेगे चमर इद्रतो सो धर्म लोक प्रतिमाकी नेश्राय लेके गया है तो देखो ह्यांपे सहज सवाल होनेकी जगा है, जो चमर इंद्र सो धर्म देवलोक प्रतिमाकी नेश्राय लेके गया तो, फिर जिस वखत सकेंद्रने चमर इंद्रके उपर वज्र चलाया तव चमर इंद्र प्रतिमाका शर्णे नहीं लेते हुवे वहांसे भागके प्रभुके चर्णाविंदके निचे जाके क्यों घुसा ये वात कसी हुई भला क्योकि तुमारे कथनानुसार तो देव लोकमे प्रतिमा सामवति होना चाहिये,

फेर भी देखो, ' तुमारे आचार्योंकी बनाइ हुई जो " अढीद्वीप की हकीगत है उसका पुस्तक शुम्न मुर्तीपुजक श्रावक भिमसिंह माणकने सचित्रसहीत छपाके मसिद्ध की हुई पुस्तकके पेसट ६१ म पत्रमे लिखा है के या धर्म देव लोकमे प्रतिमाकी संख्या मतावन करोड साठ लाख ५७६०००००० प्रतिमा सासवति है, साधिय! या धर्म देव लोकमे ज्यादा प्रतिमा सासवति होके चमर इंद्रको एक भी प्रतिमा शरण लेनेके वास्ते नहीं मिली तो या सर्व प्रतिमा उस वखत यहांसे कहां भागगई य कुछ खबर नहीं पडति है, सो यहांसे सिद्ध भागके प्रभुके चरणारविंदक निचे घुसके आखिरमे प्रभुका ही शर्ण चमर इंद्रको लेना पडा, मगर चमर इंद्रने प्रतिमा का शर्ण लिया ये कदापि कबोस सिद्ध नहीं हो सकता है.

देखिये! ' चेइय ' या चैत्य ' ईन शब्दोंका असली अर्थ श्री जैनके असली सिद्धांतोंके आधारसे ज्ञान और साधु होता है इसमे कोइ शक नहीं है,

ईसके अलावा फेर भी देखिये! दिगाम्बर जैनाम्नायमे श्री कुन्द कुन्दाचार्य हुये है, उनाने षट पाहुड ग्रंथकी रचना करी है, ईस ग्रंथके चौथे बोध पाहुडकी अष्टमी नवमी गाथामे स्पष्ट रितिसे ' चेत्य ' शब्दका इस अर्थमे प्रयोग किया है

॥ गाथा, ॥

बुद्धंजं बोहन्तो अप्पाणं चेइयाइ अयण्णंच, पंच मह व्वय सुद्धं, णाणमयं जाण चेदिहरं ॥८॥

अस्याथ संस्कृतः— बुद्धयत बाधयन्त आत्मानं चति अन्यत्र, पंच महा व्रत शुद्धं ज्ञानमयं जानीहि चैत्यगृहम ॥८॥

भाषार्थः— जो ज्ञान स्वरुप शुद्ध आतमा, को जानता अन्य जीवों को भी जानता है तथा पंच महा व्रतोंकर शुद्ध है ऐसे ज्ञानमइ मुनिको तुम चैत्य ग्रहजानो ॥८॥

देखिये ! दिगाम्बर अमनासे भी साफ तोरसे सिद्ध हुवाके चैत्य शद्धका अर्थ ज्ञान ओर साधु निसदेह होता है, इतनेपर भी हमारे वालमित्र मुर्तीपुजकोंके दिल का भर्म दुर नही हुवा तो कर्मोंकी गति है. कारण

" विनास काले विपरित बुध्दी " इस नायसे ही दिलका सतोत होवेगा

इसके अलवा औरभी देखिये सूत्र श्री भगवतीजी वगैरे जैनके असलि सिद्धांतोंमे क्या उमदा अधिकार चलाहैके प्रति पक्षीयोंका मुख तुर्तहि वद होजावे.

[पाठ]

"गुणा सिलानाम चेइय " "छत्त पलासनाम चेइय "

सोचिये ! इसपे ज्ञान किंवा साधु किंवा प्रतिमा ये अर्थ कदापि नहीं हो सक्ता है सबब ये नामतो बाग (बगिचे) का है जैसा स्थान होवेगा, वैसा अर्थ होवेगा मगर अन्य अर्थ कदापि नही होसक्ताहै

इसके अलावा औरभी देखो, मुर्तीपुजकोंके आचारियोंका वनाया हुवा "कल्पसूत्र " जोहै उसमे ऐसा लेख हे

(पाठ)

'गुण सिलानाम चेइय' इसपेभी अर्थ बगीचेका होवेगा दुसरा अर्थ नही होसक्ता है

मगर मुर्तीपूजक लोक उपरोक्त तिनो पाठोंका अर्थ प्रतिमांहि करेंगे क्यों कि ' गुण सिद्धनामा तिर्थंकर किंवा छव्वीस पच्चास नाम तिर्थंकर " इस नामके तिर्थंकर मत्र कलाकि चोविसिसें होगये होवंगे, तथा वर्तमान कालके चोविसीमेंभी हुवे होवेंगे और वो तिर्थंकर खडेमे पुसड गये होवेंगे वो हमारे मुर्तीपूजक भाई खोदके निकालेंगे अगर भाग्यसमे उन्के होवेंगे तो उक्त लोक हिंसाकतसे मिच उतारके उनोकी अवश्य पूजा करेंगे इसमे कोई तरहेका शक नहीं है मगर क्या करे बिचारे नविन और नकली किंवा खोटे मनकको हर सुरतसे हटवाद ग्रहण करके कलनेकि युक्ति करनाही चाहिये लेकिन खोट आदमी और खाटे प्रेम सत्य पुरुषोके किंवा सत्य केवलि इस मित कदापि नहीं होसके है,

देखिये ' श्री जैनका असली और प्राचिन सिद्धांतोके आधारसे तथा दिगाम्बर मतके आधारसे तथा कोषोंके आधारसे चईय- या चैत्य इन शब्दों का अर्थ खूब तौरसे साफ साफ ज्ञान या साधु, ही होताहै मगर हट ग्राही पक्षपाति मनुष्योंके भ्रम्म और भाव मंत्र मिथ्यात्व और अज्ञानके नसेमे गुम होगयेहै सो असली सिद्धांत कारोंके शुध और निर्मल प्रेम नजरमे नहीं आवे है

फेरभी देखीये ' मुर्तीपूजक लोग श्री जैनके असली और प्राचीन सिद्धांतोमेसे कूते पाठ मिलावना:—

श्री उपासक दशांग सुत्रमे आनन्दजी श्रावकके वर्णन में चइयाइ के पहले अरिहंत शद्ब और लगादिया है डॉ हार्नल साहब कि जिन्होने उक्त सुत्रका इंग्लीशमे अनुवाद किया है उन्होमे भी युक्ति ओसे सिद्धकिया है कि अरिहंत तथा चेइयाई ये दोनो शद्ब क्षेपक है उन महाशय इस अगमकी अनुवादके दोयम जिल्दकी मत्र ३८ पंक्ति १४ मे भाग ९९ में लिखा हैकि—

The words Cheiyani or arihant Cheiyani which the M. S. S here have appeared to be on explanotary interpolation taken over from the commentary which says the objects for reverence may be either Arhanti (or great saint) or cheiyas If they had been an original portion of the text, there can be little doubt but that they would have been Cheiyani

जिसका भावार्थ है की, शद्ध चेइयाइं और अरिहंत चेइयाइं जो हस्त लिखित पुस्तकोंमे है सो विदित होता है की ये शद्ध टिकासे लेके मिला दिये है. जिस टिकामे लिखा है की पूजनिय या तो अरिहंत (महर्षी) या चैत्य है यदि ये शद्ध मुल पुस्तकके होते तो कुछ सन्देह नही की ये शब्द चेइयाणि होता

देखिये ! चैईय शब्दका अर्थ ज्ञान और साधु होता है ईसमे कोई भी वजेका संदेह नही हैं, विशेप देखना होवे तो " दंडी दम्भ दर्पण " देखो—

—:वर्ग ९ वा:—

द्रव्य हिंसा भाव हिंसा निर्णय

दे खिये! हमने कितनेक ग्रंथोमे अवलोकन भी किया है और यति, संवेगी, पिताम्बरी, डिगाम्बरी, वगैरोके मुखसे भी सुना है के जिन प्रतिमा अर्थात तिर्थंकरोकी प्रतिमा की पुजा प्रतिष्ठा वगैरोमे जो छ काय की हिंसा होती है सो हमको किंचित द्रव्य हिंसा लगती है, मगर हमारे मन वचन और काया ये तिनो जोग प्रभुके भक्ति भावमे निर्मल है इस लिये हमको भाव हिंसा कोई भी प-केसे नहीं लगती है ये कहना और लिखना जैन मुर्तीपुजकका साफ (निश्चे) खोटा है. ईस लिये मुर्तीपुजकोंकि जो समर्थवान आचार्य उपाध्याय वगेरे आगे हो गये है उन पुरुषोंने मुनिवर्ग, यतिवर्ग, भावक वर्ग, वगैरोका भी जैनके असली और प्राचिन सत्प्रमाणित सिद्धांत वाचनेकी मनाई करी है मगर भी जैनक असली और प्राचिन सिद्धांत भावक वगैरे वर्गोंको वाचनेकी मनाई नही करते तो उक्त पोपोंका अर्थात हिंसा धर्मी मुर्तीपुजकोका पापरुपी अर्थात भंवर जाल खुल जाना और मुर्तीपुजाका मत सुर्वथा नष्ट [विनास] हो जाता, क्योंकि एसा परम पवित्र और प्रधान अधिकार आम तोरसे मुनि वर्ग किंवा श्रावक वर्ग वगैर मार्गानुसारीके ख्यालमे आ जावे तो वो लोग ईन

पोपोंका पोपपणा को, वजेसे स्विकार नहीं करते, इस लिये छांपे हम द्रव्य हिंसा और भाव हिंसाका खुलासा साफ तोरसे करते है,

पुर्वपक्षी:– क्यों जी श्रावक वगैरोको श्री जैनके असली सिद्धांत वाचना कहा कहा हैं सो बतलाईये.

उत्तरपक्षी – देखिये ! श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतों मे तिन प्रकारके आगम (सिद्धात–सुत्र) फरमाये हैं,

मूलपाठ—आगमे तिविहे–पण्णते -तंजहा–सूत्तागमे अत्थगमे–तदुभयागमे-ये तिन प्रकारके आगम (सिद्धात–सुत्र) प्रभुने भी थी मुख से फरमाये है इनका अर्थ॰सुत्ताके॰मुलपाठ–अत्था॰के॰पाठका अर्थ–तदु॰के॰ मूल पाठ और अर्थ दोनु सामल ईस प्रकारसे तिन प्रकारके सुत्र हैं, इन तिनो प्रकारके सिद्धातोकी अलोयणाकी विधि मुनियोंके या श्रावकोके वास्ते एक सरिखि फरमाई हैं ख्यालमें लिजीये.

। मुल पाठ ।

आगमे–तिविहे–पण्णते–तजहा–सुत्तागमे-अत्थागमे-तदुभयागमे एहवा श्री ज्ञानके विषे जे कोइ अतिचार लागो होय ते आलोउ–जंवाद्ध १ वच्चामेलियं २ हिणक्खर ३ अच्चक्खरं ४ पयहीणं ५ विणयहीण ६ जोगहीणं ७ घोसहीण ८ सुटुदिन्न ९ दुट्टपडिच्छियं १० अकालेक ओसज्झाओ ११ कालनक ओसज्झाओ १२ असज्झाए मज्झाईय १३ सज्झायेन सज्झायं १४ भणतां-गुणतां-चितवतां-ने-चितारता (विचारता) ज्ञान अने ज्ञानवंतकी अशातना किनी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥इति ॥

अब तुम सोचिये ! जो कभी श्रावक लोगोंको सिद्धांत वाचनेकी

मनाइ होती तो, सुत्रागमे ये पाठ ज्ञानकी आलम्ब नामे नही कहते मगर भावक लोग सिद्धांत वाचते है, सब तो मुनि महाराजके बराबर विधि पुर्वक ज्ञानको आलम्बण करते हैं, इस फसे खुब तोरसे सिद्ध हुवा क श्रावकोने सिद्धांत वाचना जो लोग भी जैनके असली सिद्धांत नही वाचते है वो लोग दरब हिंसा और भाव हिंसाका स्वरूप नहीं समझ सक्ते है मगर ज्ञापि हम किंचित खुलासा करते है.

देखिये ! महाशयजी ! इस तोरके मुनि हाथ उसे भाव हिंसा न-ही लगती है,

(पाठ)

गाम ष्वार्ण समणाए माहणाए संजमेणं तव्वसा ॥
अप्पाणं भावे मावे विहिरती ॥

अर्थ— ग० षदरस, स० साधु, मा० छ कायके जीवोको स्वतास मार नही दुसरेके पाससे मराये नही, और कोइ मारता होवे उसे अच्छा समजे नही, मन करके वचन करके और काया करके, ऐसा जिस महात्माने त्रिविध त्रिविध त्याग करके, सं० संजममे, त० तपस्यामे अपनी आत्माका रमण (तल्लीन) करते हुवे विचरते (फिर ते) है, उनोको द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा नहीं लगती है,

फेर भी देखिये ' जो पच महा व्रत धारण किये हुवे जो मा-निक आगमार महानुभाव मुनि महाराज है उन महात्माओको न हिंसा और भाव हिंसा कोइ भी प्रकार लागु नही होती है कारण मन मयारम्भ का त्याग त्यागि है, पुन ज्ञापि मुर्तीपुजकोंके ग्रंथोसे पंच महा व्रतोका खुलासा करते है,

जैन संप्रदाय शिक्षा– प्रष्ट ६१३ लेन १६मी " उनमेसे प्रथम माहाव्रत यह है की– सब प्रकारके अर्थात सुक्ष्म और स्थूल किसी जीवको एकेंद्रियसे लेकर पंचेंद्रिय तकको न तो स्वय मन वचन कायासे मारे न मरावे और ने मारते को भला जाणे."

" दुसरा माहा व्रत यह हैं की—मन, वचन, और काया, से न तो स्वयं झुट बोले न बोलावे और न तो बोलते हुवे को भला जाणे

" तिसरा माहाव्रत यह है की– मन वचन और कायासे न तो स्वयं चोरी करे ने करावे और न करते हुएको भला जाणे "

" चौथा मांहा वृत यह हैं की– मन, वचन, और कायासे न तो स्वयं मैथुनका सेवन करे, न मैथुनका सेवन करावे और न मैथुनका सेवन करते हुवे को भला जाणे "

" तथा– पांचवा माहाव्रत यह हैं की– मन, वचन, और काया, से न तो स्वय धर्मोप करणके सिवाय परि ग्रहको रखे न उक्त परि ग्रहको रखावे और न रखते हुवे को भला जाणे "

ईन पाच माहाव्रतोंके सिवाय मुनि माहाराज कोई भी वजेसे वरताव नही कर सकते है,

समीक्षा – अब देखिये ! अर्थे अनर्थे और धर्म अर्थ ये तिनो ही प्रकारसे मुनि माहाराज छ काय जीवोकी हिंसा स्वय करे नही और दुसरेके पाससे करावे नही और करते हुवेको भला जाणे नही मन वचन और काया करके सोचों। ऐसे माहानुभाव पुरुषोंको द्रव्य और भाव हिंसा लागु नही होती है.

पुर्वपक्षीः– क्यों की हिंसा शिवाय धर्मकी प्राप्ति नहीं होती है सो

रोकी कोनसी रजाहुई- फेरभी देखो ! नदी वगैरे मुनिमाहाराज उतरते हे. ऐसे कार्योका जो कोई वखत मुनि माहाराजको जो काम पडताहे तो उसका मुनि माहाराज प्रायश्चित (दंड) लेते हे; और मुनी माहाराज आहार विहारके वास्ते गमणा गमन अर्थात हलन चलन करते हे, ऐसे कार्य कियेके बाद इर्यावहिका प्रति क्रमण करके बादमे प्रायश्चित (दंड) लेते हे. और अपनि आत्माकी सूधता करते हे किंतु दस वैकालिकके चोथे अध्यन मे त्यागी पुरुषोके वास्ते ज्ञानी पुरुषोने क्या फरमायस कियाहे, सो देखो !

गाथा

जयचरे जयंचिठे, जयमासे जयंसए ।। जयभुजंतो
भासंतो, पावकम्मं न बंधई ।।८।।

अर्थः—यतनासे चलते, यतनासे खडे रहते, यतनासे बैठते, यतनासे सोते, यतनासे आहार करते, और यतनासे बोलते, इत्यादि कार्य यतनासे करते हुवे साधुको पाप कर्म नही बंधता है ।।८।।

जिन पुरुषोने, तिन कर्ण, तिन योगेसे अर्थात नव कोटिमे, सावज जोगेके अर्थात सावज कार्योके त्याग कियेहै. वो पुरुष यतना पूर्वक कार्य करते हुवेको द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा नही लगती है कारण वो पुरुष संसारिक सर्व कार्योसे किंवा छकायजीवोंके आरंभ समारंभसे सर्वथा प्रकारे निवर्तमान होगये है इसलिये.

देखिये श्रावक लोग. स्थानक कराते है मगर स्थानक कराति वखत छकायजीवोंका आरंभ समारंभ जो होता है उसका वो लोग प्रायश्चित (दंड) लेके अपनी आत्माको सुध करते है.

इसलिये ! द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा ये दानु भोछ स्वंसेवन भी नहीं और दुसरक पाससे सेवन करवाण नहीं, और सेवन कर्ताको भला नामवे मी नहीं, मनकरक, वचन करके, और काया करके ऐसी सर्वोत्तम, निर्वद्य और शुभ क्रियाके करन वाले माहानुभाव सर्व त्यागी पुरुषोंको द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा काईभी वनेस लगूनहीं होती है

देखिये ! मूर्तिपूजक लाग, मंदिरकनवाते है, प्रतिमा स्थापित करते है प्रतिष्टा करते है होमादिक करते है, स्नानसे, फल, फूल, पत्र वगेरे तुड वाके मंगवाते हैं, तथा स्वयमी ताडके लाते हैं, और प्रतिमाको न्हवाते है, घूप करते है, दीप करते हैं, स्वस्नाई करते है, रातका जागरण करते हैं, पुस्तक पुजा करते है, गुरूकि नव अंगी पूजा करते है, प्रतिमाकी पूजा करते हैं, गाजे बाजे करते है, संघ निकालके तिर्थ यात्रा करते है, इत्यादि कारणोंके वास्ते छकायकी हिंसा सयुक्त, धर्म निमित्त सावद्य करणी करते है, और फरमी कहते है के हमको किंचत द्रव्य हिंसा लगती है मगर भाव हिंसा नहीं लगती है, सवव हमारे परिणाम प्रभुकि भक्तिमे सुभ हैं इसलिये हमको भाव हिंसा नहीं लगाति हैं, ऐसा हमस अज्ञान करते है, ये कहना इन लोगोंका साफ सत्य हैं क्योंकि प्रभून ऐसी सावद्य भक्ति करनेके वास्त कोईभी सिद्धांतमे फरमायस नही किया है और अर्थ, अनर्थ तथा धर्म अर्थ छकायकि हिंसा करन वा कराने वाले और करतेका भला जानने वालोंके परिणाम सुभ हैं ऐसाभी प्रभुने कोई सिद्धांतमें फरमायसा नही कियाहै अवभी जैनके असलि और प्राचीन सिद्धांतोमे ये अधिकार नहीं हैं तो इस मिथ्या वादियोंका कथन सत्य ऐसा समजनेका भावेगा कदापि नहीं देखिये ! अर्थ अनर्थ और धर्म अर्थ छ काय जीवोंकी हिंसा स्वयं करे और दुसरक पाससे कराव और छ काय जीयोंकी हिंसा करनवालेको अच्छा समजे इन तीना प्रकारोंके परिणाम सदा सर्वदा मलिन रहते हैं अगर मूर्तिपूजक लाग स्याय तक करेगे के हमारे परिणाम, छ काय जीवोंके प्राण घात करनेके नही

है तब हम मुर्तीपुजकोंको पुछेगे के अहो भाइ हिंसा सिवाय तो धर्म की प्राप्ति नही होती है ऐसा तुम लोगोका साफ तोरसे लिखना और कहना है तब तुम लोग छ काय जीवोंकी यतना किस तोरसे करते हो सो दिखलाइये थोडा सोचिये! जैसा क्रिया कर्म करेगा वैसा परिणाम आवेगा जैसे परिणाम होवेगे वैसे कर्मोंका बंधन होवेगा इसमे कोइ तरेका फर्क समजना नहीं कारण तुम लोग जो धर्म करणी करते हो सो साथ उमेदवारीके पुर्ण स्नेह युक्त पुर्ण प्रेम युक्त धर्म चुस्तपणेसे और उत्कृष्ट भाव लाके धर्म करणी करते हो और तुम लोग धर्मके वास्ते छकाय जीवोके प्राण घात करते हो और तुम लोग हिंसा धर्म सेवन करनेवाले को माहान लाभ भी वतलाते हो तो फिर तुम लोगोको द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा क्यों नही लागु होना चाहिये अवश्य मूर्तीपुजक लोगोंको द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा श्री जैन के असली और प्राचिन सिद्धांतोके आधारसे निश्चय लागु होती हे.

समीक्षा — देखिये! मुर्तीपुजक लोग धर्मके वास्ते छ काय जीवोंकी प्राणघात करते हैं मगर द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा का कलंक दुर करने के वास्ते कैसा जबर दस्त इलाज किया है के कुछ बयान करनेका स्थान नहीं है देखो! श्री जैनके माहानुभाव असली मुनि माहाराज आहार निहार विहार वगैरेके वास्ते हलन चलन करते है, नदी वगैरे उतरते है तब हिंसा होती है, तो हिंसामे धर्म हुवाके नहीं, और श्रावक लोग धर्म स्थान करवाते है, उसमे हिंसा होती है तो हिंसा मे धर्म हुवाके नहीं, किंतु हिंसा शिवाय धर्मभी नहीं होता है देखो! मुर्तीपुजकोंका कैसा उमदा उपदेश है, मगर हमारे बाल मित्र मुर्तीपुजक लोग श्री जैनके असली सिद्धांतोका रहस्य समजनेके वास्ते हम छापे किंचित खुलासा करना चाहते है

देखिये! श्री जैनके तदरुप मुनि माहाराज आहार नेहार विहा-

र वगैरेके वास्ते इस्नन चलन करते है और नदी वगैरे भी उतरते है, मगर उक्त कार्योंको मुनि माहाराज मन वचन और काया ये तिनु जोगसे अच्छे नही समजते हैं अर्थात साफ खोट्य समजते हैं, और इसके बारमे सचे दिम्ससे पश्चाताप करके छ कायके जीवोसे क्षमा अर्थात माफी मागते है और उक्त कार्योंके बारमे इर्यावहिका प्रतिक्रमण करके प्रायश्चित लेते है अर्थात दंड लेके अपनी आत्माको शुध (निर्मल) करते हैं

और श्रावक लोग धर्म स्थानक करवाते वखत जो छ काय जीवोंका आरंभ समारंभ होता है, मगर उसका उपरोक्त सरिसा अधिकार समज लेना

देखिये ! द्रव्य हिंसा और भाव हिंसाके बारेमे हमारे मुर्तीपुजक भाइयोंने श्री जैनके सद्दस्य (असल्ये) मुनिराजोका द्रष्टांत लागु किया मगर ये द्रष्टांत क्यार भी वजेसे यां लागु नही होता है ये द्रष्टांत लागु नहीं होने की वजे ये है के हमारे वाले भिन्न मुर्तीपुजक भाई धर्मके वास्ते छ काय जीवोंके प्राण घात करते है मगर इस कायको मन वचन और काया ये तिनु जोगसे खोट्य नही समजते हैं, और इस कार्यके बारमे सच दिम्ससे पश्चाताप करके छ कायके जीवों पाससे क्षमा अर्थात माफी नही मागते है और इस कार्यके बारमे इर्यावहिका प्रतिक्रमण करके प्रायश्चित अर्थात दंड लेके अपनी आत्माको शुध (निर्मल) भी नहीं करते है, इस लिये उपरोक्त द्रष्टांत लागु नही होवे हुवे हमारे मुर्तीपुजक भाईयोंकी पाषाण धर्म करणीके बारमे हमारे वाल मित्र श्रावक गण मुर्तीपुजकोंके सर्वत प्रणित सिद्धांतोके आधारसे द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा निश्चय लागु होती है

(इत्यलम्)

—:वर्ग १० वा:—

[मुखपती विषय.]
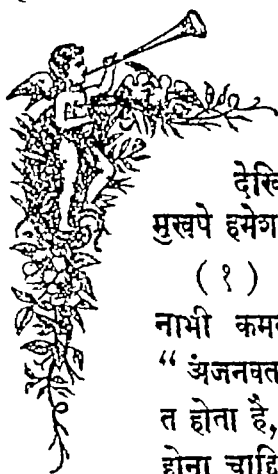
देखिये ! माहाशयजी ॥ मुखपति पांच कारण से मुखपे हमेश बांधि जाती हैं

(१) अवल तो, जीवोंकी यत्नाके वास्ते अर्थात नाभी कमलसे जो गर्म वाफ मुख द्वारा निकलती है. " अंजनवत " और उस वाफसे सुक्ष्म जीवोंका प्राणघात होता है, सो मुखपति द्वारा उक्त जीवोंका बचाव होना चाहिये,

(२) दुयम, श्वासो श्वास द्वारा मुखमे जीव वगैरे दुसरी कोई भी शाद्ध शुद्ध वस्तु प्रवेश नही होना चाहिये.

(३) तियम, सिद्धातोपे [शास्त्रों पे] अगर मनुष्य [आदमी— ईन्सान] वगैरोपे अपना थुक नही गिरना चाहिये,

(४) चतुर्थ जैसा कोइ चक्रवति बादशाह के राजमे माहान (वडी भारी) पदविका आदमी होवे, और उसको सरकार की तर्फ से वरिष्ट पदविका बिल्ला [पट्टा] बकसीस किया होवे वो बिल्ला दे-

सनेसे फोरन सर्व आलम [लोगोंका] मालुम (मान) होता हैं क ये अमुक मजबीका मनुष्य हैं ईसही मजेसे श्री देवाधिदेव वीतराग भग वान त्रिलोकी नाथ तिर्थंकर माहाराजने श्री जैन मुनिवरोंका सर्वोत्तम पदविका मुखपतिरुप चिह्ना [पट्टा] बक्षीस किया है, सो ये चिह्ना देखनेसे फोरन ज्ञात अथवा पहेचान हो जाती है क ये लोग जैन साधु हैं,

(५) पंचम श्री जैन मुनियोंको मरणान्तीक कष्ट आ पाडने तो भी स्वयंसे झुट बोलना नही दुसरेके पाससे झुट बुलवाना नही, अगर कोई झुट बोलता होवे उस भला (अच्छा) समजना नही,

ये मुख्य पांच कारण मुखपति बांधनेके समज लेना मगर दुसि ये ' हमने कितनेक ग्रंथोंमे अवलोकन किया हैं किंवा यति, संवेगी, श्वेताम्बरी वगैरेंके मुखसे भी सुना है क श्री जैन साधु मार्गी (ढुंढिये) क्यों हमेश मुखपर मुखपति बांधे रहते है सो ये भी जैन शास्त्रोंके बरखिलाफ है क्योंकि मुहपर हमेश मुखपति रखनेसे छमो छम जीव उत्पन्न होते है क्योंकि मुखपति बन्देकर कायम रखना अन्जान हो ये ही विरोधा भास है दुगम जीवकि उत्पती होती वो ज्ञानी पुरुष मुख पति मुहपर बांधने की रजा कदापि फरमाते नही, कियम हाथमे रखने से खुले मुख बोलना आता है और खुले मुख बोलने की ज्ञानी पुरुषों की रजा नही हैं तिर्थंकरोंके हुकमके सिवाय काम करना ये ही मिथ्या त्वका कारण है ईस वास्ते मुनिको हमेश मुखपर मुखपति बंधी हु रखना चाहिये मुखपति मेम बांधना ये जीवोंकी यत्नाके वास्ते है मगर मुर्तीपुजक लोग कहते है क अपना मुख पुस्तकको नही लगना चाहिये इस वास्ते मुखपति रखना हैं मगर जीवोंकी यत्नाके वास्ते मुखपति की कोई जरुरत नही है, ये कहना मुर्तीपुजकोंका शास्त्रोंसे

विरुद्ध (खोटा) है क्यौंकि मुखपति मुखको बांधना सो एकांता जीवों-की जतना के वास्ते है

पुर्वपक्षीः– क्यौ जी आप तो वडे जबानके बाके हो और टरेवाजी करनेको हुशियार हो, क्या जबानके ही जमा खर्च करोगे के श्री जैनके असली सिद्धातोसे सिद्ध भी करके दिखलावोगे.

उत्तरपक्षी – हा जी अवल तो जैनके असली सिद्धांतोका परमाण ालते है. दुय्यम मुर्तीपुजकोंके बनाये हुवे शास्त्रोंका भी परिमाण दि-ागे

पुर्वपक्षी – म्हेरबानीके साथ दिखलाइयेगा,

उत्तरपक्षीः– माहाशयजी ! खुब ख्यालके साथ अवलोकन किजीये-, जिससे पुर्ण खुलासा आपको मालम होवे,

देखिये ! अव्वल जीवोंकी यत्नाके वास्ते खुले मुख बोल्ना नही, त्र श्री भगवतीजीके सतक, सोला १६ वा, उदेसा वि २ जा मे गौतम ामीजी ने पुछा कीवी के अहो भगवान जिस वखत सकेन्द्र देवराजा आ क सेवामे हाजर होते है, तव वो खुले मुख भासण करे तो सावज (दो- सहित) के निर्वद्य (दोष रहीन) है.

। गद्य पाठ ।

गौयमा, जाहेण सक्के देविंदे, देवराया,
सूहुम कायं, अणि जुहित्ताणं, भासं भासई.
ताहेणं सक्के देविंदे देवराया, सावज भास भासई.

भावार्थ – अहो गौतम सक्रेंद्र देवराजा मेरि सेवामे हाजर होके खुले मुख बोले तो सावज भाषाका बोलनेवाला कहीये अर्थात हिंसा कारी

(जीव घातक) भाषा बोलता है ऐसा समझना

(अस्यार्थ टीका)

यां च्छ्र सर्वेद्र, मुख्य कार्य, वसवाया वृत मुखम्य भाव
मानस्यगी मंसर्ण तो निविषा भाषा भवति,

भावार्थ— जिस वखत सर्वत्र मुख ढाकके बोले तो वायु (हवा) कायके जिवोंकी रक्षा करनी निरवद्य भाषा बोलता कहिये, खुल्ले मुख बोले तो वायु कायके जीवोंको मारतां हुवा सावद्य भाषा बोलता कहिये

देखिये ! वायु काय वगैरे जीवोंकी यत्नाके वास्ते हमेस मुखसे मुखपति बांधके यत्न पूर्वक भाषण करना चाहिये। असकी सिद्धांतोंके न्यायसे मुखपति मुखपर बांधना सिद्ध हुवा

देखिये। दूसरा सबुत महा आश्चर्यकी बात है के इतना मुख अधिकार भी नजर नहीं आता है तो बारिक अधिकार नजर कहांसे आवे, कारण इन कामोंके द्रव्य और भाव दोनु नेत्र (आंखे) मिथ्यात्व की डाक [मसे] में गुम हो रही है लेकिन अब दासु नेत्रोंके परदे दुर करके अच्छी तेरे से गौर के साथ देखा के मुखपति हाथमे रखना या मुख पर बांधना इसका विचार न्याय के साथ करियेगा अगर ये बात तुमारे ध्यानमे नहीं आती हाव तो द्रव्य और भाव दोनु नेत्र अच्छी तरह खोल के देखो। सूत्र श्री भगवतीजी शतक नव • मा उद्देसा तेतिस ३३ मा समाप्ति अधिकार—

[गद्य पाठ]

तुम्मं देवाणुप्पीया ण्हमामि संसवतिय कुमाररस्स, परणं जत्तेणं,
चउरंगुल वज्जे निसमण प्पउग, अगाकेस कप्पह, तएणंम

कासवए जमालिस्सं खतिय कुमारस्स, पिउणा एव वुते समाणे हठे तुठे करयल जाव एवंसामी तहत्ति आणाए विणएण पडिसुणे इ२त्ता, सुरभिणा, गध्धो दएण, हथ्थपाए, परकालेइ२त्ता सुध्धाए, अठ पडलाए, मुहपोतियाऐ, मुहवंधइ२त्ता जमालिस्सखतिय कुमारस्स, परेण जतेण, चउरंगुल वज्ते निरकमणप्पउगे अगाकेसे कप्पई,

भावार्थः-- देखिये ! जिसवखत जमाली दिक्षा लेनेको तैयार हुवे थे उस वखत जमालिजीके पिताश्रीने कासप (नाई) को बुल्वाके कहेने लगे-के अहो देवताके वलभ जमालि कवर दिक्षा लेनेको तैयार हुवाहै सो तुमचार अंगुल शिखा की जगा के अर्थात दिक्षा की वखत लौचन करनेको काम आवे ऐसं ठिकाणे के केस छोडके वाकी केस कतरो तव उस नाइने जमालीजीके पिताका ऐसा वचन सुनके हर्षवत होके विनय सयुक्त अर्ज करके कहेने लगा के अहो सामीनाथ आपका वचन प्रमाण है ऐसी अर्ज करके सुगधिक [गुलाव जलवत) अचित [निर्मल] वस्त्र की आठ पुड (पट्ट) की मुखपतिसे मुख बाधके फेर जमालि क्षत्री कुवरके चार अंगुल प्रमाण की शिखा की जगा छोडके वाकीके केश कतरे (हजामत करी) शिर साफ किया.

समिक्षाः—सोचिये ! मूर्तीपूजक लोग हरवखत बकवाद करते हैं के मुखपति मुखको वाधनेका कोईभी जैन शास्त्रमे तिर्थकरोंने फरमाया नही हे मुखपतिको हातमे रखना ऐसा हमेश अव्हान करतेहे तो अब देखिये ! जिस वखत जमालजीकी हजामत नाईने वनाई तब मुखपती हातमे रखीतो एक हाथसे हजामत नही वनसक्तीहै तो अब मुखपति हाथमे रखना सिद्ध हुवा-या-मुखको वांधना सिद्ध हुवा हरगीज मुखपति हाथमे रखना सिद्ध नहीं होसक्ता हे;

पूर्वपक्षी—अजी थोड़ा ख्याल करो कान फटवाके मुखका मुख बांधि लेकिन डोरासहित मुखपति नही बांधी

उत्तरपक्षी:—देखिये ! तुमारा कथन साफ खायहे कारण कान फाड़ जो मुखपति बांधता तो क्हांपि ऐसा पाठ आनाथाक [पाठ] "अन्नुब मुखपोतिं धार्ग कन्नु कर्णई२था मुखमवई२था" एमा पाठ होता प्रमाण करते

पूर्वपक्षी:—अजी साहेब धागावाला होवेगा

उत्तरपक्षी—येभी तुमारा कथन साफ खोटा है, सबब क्हांपि ए पाठ होनाथा [पाठ] " अठ पुद्धर्णे धागण मुख मेवइ २ था " हम सत्य समझते

पुर्वपक्षी:—अजी साहेब गलेके पिछे गांठ दके मुखपति बांधि हाके

उत्तरपक्षी— येभी कथन तुमारा साफ खाय हे कारण गलेके ई गांठ दक बांधते ता क्हांपि ऐसा पाठ आनाथा (पाठ) "अठ पुद्ध मुहपोतियाण कव्वणं पच्छाणं बंधी वई २ मुख मवई २ था" एसा पाठ होता ता हम लोग येभी प्रमाण करते परतु तिन्नु बातामेंसे एकभी ब क्हांपि नही ह तो फर हम लोगोंको कैसा मंजुर करावो हो एसी खो बात हम लोग कदापि मंजुर नही करेंगे

देखिये ! जमालिभीन दिक्षा लेति वखत माईके पाससे शिर मुंड कराया मगर उस माईकुभी खुले मुख बोलन नहीदिया, किन्तु यत्ना पू काय करवाया, सोभिये गैसा उमदा काफी ईसाफ है; इस इसाफ्से तो भी जैनके साधि मुनियोंको हरगीज खुले मुख बोलना नही चाहिये, क्यों जब मर्द ... भी यत्नापुवक काय कराया जाताहै, तो फर मुनि महाराज का जि... ज्ये है उनका सब यत्ना पुवक करनाग्र ह, इस बातमें तो क्या

तरेका शक नही है, तवतो मुनि माहाराजोंने जीवोंकी यत्नाके वास्ते हमेश मुखके उपर मुखपति बाधके रखना चाहिये, ख्यालकिजीये जैन मुनियोंको मुखपे मुखपति हमेश बाधना जैनके असलि और प्राचिन सिद्धांतोंसे खुबतोरे सिद्ध हुवा.

सबुत तिसरा:- देखिये ! जिस वखत श्री वीर परमात्मा का पारणा पोलासपुरमे हुवा था, उस वखत श्री सासनाधि पतिके जेष्ट शिष्य श्री सासनके वजीर श्री गौतम साम माहाराज श्री वीर प्रभुकी आज्ञा लेके बेलेका पारणा लानेके वास्ते पोलासपुर नग्रमे पधारे और निर्वद्य भिख्या की गेवेषणा (सोधणा) करते थे, उस वखतमे "विजय राजाका पुत्र खेलते हुवेने भिख्याचरि को गमन (फिरते हुवे) करते हुवे गौतम साम माहाराज को देखे देखते के साथ सिघ्रगतिसे मुनिके पास आया और अर्ज करी के हे दयाल ईस भर दुपेरको आप काय के वास्ते फिरते हो तद श्री गौतम साम मांहाराजने फरमाया के हे भाई हम जैन साधु हे और निर्वद्य (दोषरहित) गौचरी (भिख्या) को फिरते है, तव ऐवंता कंवरने मुनि माहाराजसे अर्ज गुजारिस करीके हे दयाल पधारो मे आपको गौचरी दिलवाता हु इतनी अर्ज करके श्री गौतम साम माहाराजके हस्तकी अगुली ग्रहण करके साथ वार्ता लापके अपने मकानपे ले गये.

(पाठ)

ततेणं भगवंग गोयमे पोलासपुरे नयरे उच्चनिच जाव अडमाणे इंदगणस आदूर सामते तणंवीती वयती, ततेणसे अइमुते कुमारे भगवं गोयमं अदूर सामतेणं वीती वयमाणं पासतिरत्ता, जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवा गछतिरत्ता भगवं गोयमं एव वयासी केणं भते तुझे केणं

अदहमांणे, तवेणं भगवं गोयम अति मुत कुमारं एव वयासी अम्हेणं दे वाणुपिया समणा निग्गंथा इरिया समिया जाव बंभयारि उंचनिच जाव अडमाणे, तएणं, अति मुत्त कुमार भगवं, गोयमे एवं वयासी ए हणं भंते तुम्हेण जेणेव भई तुम्हं भीरवाद्भवे मी विकट्ठ भगवं गोयमे अंगुलि से गेन्हतिरत्ता जेणेव सयावे गिहे तेणेव उवागए,

देखिये ! तिवारे (तिस वखत) भगवंत गौतम स्वाम पोलास पुर नगरके विषे गौचरी के वास्ते गमन [फिरते] करते हुवे ईंद्र-स्थान (राजभवन) के निकट (पास) आते थे तिवारे एवंत कुमार भगवंत गौतम स्वाम को आते हुवे देखे अनुक्रम [रस्तेसे] से आते देखे जिस ठिकाणे गौतम स्वाम माहाराज थे उस ठिकाणे एवंत कुमार आये, प्रभुसे अर्ज करि के अहो प्रभु आप कोन हो और क्या प्रया जनके वास्ते गमन (फिरत] करते हो, तिवार गौतम स्वाम माहा-राज एवंत कुमार को ऐसा फरमाने लगे अहो देवताके वल्लभ हम श्रमण निग्रंथ [समता धारी साधु है] पांच सुमति और त्रिगुप्ति ये आठ वातके धारन करके ब्रम्हचर्य पालन करते हैं, और निर्दोष [दोष रहित] आहार (भोजन की) गवेषणा करनेको गमन करत है तिवारे एवंत कुमार प्रभु से अर्ज करते हुवे पधारो अहो पुज्य मे आपको भीक्षा दिलवाउ हु ऐसी अर्ज करके गौतम स्वाम माहाराज की अंगली एवंत कुमारने पकड़के जहांपे अपना स्वयका मकान है वहांपे मुनि के साथ वार्ता लाप करते हुवे मुनि को लेके आये

समीक्षा—देखिये ! जिस वखत एवता कुवरन भी गौतम स्वाम माहाराज साहेब की अंगुली पकड़के वार्ता करते हुवे अपने घरपे ले गये उस वखत क्या गौतम स्वाम माहाराजने तिसरा मकिन हाथ बनाके हाथ म मुहपति रखी, एक हाथमे तो झोली थी और एक हाथ की अंग-

ली एवता कुंवरने पकडी थी तद मुखपति कोणसे हाथमे थी अगर कोई दुसरा पुरुष आके उस वखत मुनि माहाराजको वंदना करता तथा प्रश्न पुछता तो क्या मुनि खुले मुख वोलते अगर एवंता कुंवरसे वार्ता लाभ किया तो क्या खुले मुखसे किया कदापि नही तो अव हाथमे मुखपति रखना किस तोरसे माना जावे अगर गौतम सामी माहाराजने जो मुखपति हाथमे रखी होवे तो ह्यांपे ऐसा पाठ होना था.

पाठ

" अठ पुडलाए मुहपोतियाण गौयमाणं हथं ठवई२त्ता "

ऐसा पाठ होना था मगर ऐसा पाठ तो नही है अगर गौतम साम माहाराज खुले मुख वोलते थे तो ऐसा पाठ होना,

पाठ.

"गौयमाणं खुलं मुखष्य भासं भासई२त्ता "

ऐसा पाठ होना था मगर ह्यांपे तो दोनु वातोमेसे एक भी वात नजर नही आति हे तो अव हाथमे मुखपति रखना कैसी मंजुर की जावे ख्याल करो जैनके असली सिद्धांतोंसे मुहपे मुखपति वाधना खुब तोरसे सिद्ध हूवा.

सवुत चौथा – देखिये ! मुर्तीपुजक लोग अपना ऐब छिपानेके वास्ते श्री गौतम साम माहाराजको ऐव लगाते हैं, के गौतम साम माहाराज साहेव खुले मुखसे भाषण करते थे मगर जिस वखत मिरगा लोढाको देखनेके वास्ते गौतम गये थे उस वखत मिरगा राणीके कहनेसे गौतम सामने मुख वांधा, मगर ये कहना मुर्तीपुजकोंका साफ खोटा हे सावुत निचे मुजव हे. विपाक सुत्रके पहेले अधेनका पाठ.

[गद्य पाठ]

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स धेने अंते वासी ईद भुतिनाम अणगारे जाव विहरति तत्तेणंसे, भगवं गोयमे, ताआवि अपे पुरिसे पासति आयमरठे जाव एव वयासी अभ्वीण भंते कई पुरिस सेजाती अपे जात अघ सवे एता मभ्वी मद्दण भंतेसे पुरिसे नातिभपे लातीअंधवे एवंस्स तु गोयमा ईहेव मिया गामे नगरे विजयस्स खत्तियस्स पुते मिया देवीए अत्तए मिया पुते नामदारए जाति अपे जाति अधरुवे नचणीण तस्स दार गस्स जाव आगि तिमिया, ततेणं, सा, मिया देवी जाव पडि जागर माणी विहरइ, ततेणंसे भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमं सतिरत्ता एवंवयासी इच्छामिण भंते अहतुम्मोहि अभ्भणुनाया समाणा मिया पुते दारगं पासामि, तिकद्दु, अहा सुहं देवाणु प्पीया, ततेणसे भगवं गोयमे समणेणं ममगंवया अभ्भणुणाया समाणो, इद तुटे समणस्स भगवन अंतिया तो पडि निरवमतिरत्ता अतुरिय जावसो ही यमाणे२ जेणव मिया गामं नगर तेणेव उवागच्छतिरत्ता मिया गामं नगरं मझमझेण अणुप्पविसतिरत्ता जेणेव, मिया देवीए गेहे तणेव उवागच्छतिरत्ता ततेणं सा मिया देवी भगवं गोयमं एजमाणे पासतिरत्ता — जाव एवं वयासीस विरसणं देवाणुप्पीया कि मागमण पयोयण — गोयमे मिया देवीए एवं वयासी अहणं देवाणु प्पीयाण तेव — मागए, ततेणं सा मिया देवी मिया पुत्तस्स दार गस्स अ — एपचवारि पुत्र सम्बालंकार विभूसियं करे,

विभूसिय — भगवता गोयमस्स पादसु पाडिते; एव वयासी एएण मम पुत पासह, ततणसे भगवं गोयम मियं देवी एवं वयासी नोखलु अहंदेवाणुप्पिया अहं एहतत पुत पासिउ, एग मागयं तस्थणं, जेसे तव अजेठ पुत

मिया पुते दारएजार्ति अधे जाति अधरुवे जइण तुमं रहसिंय सिमुमिघ्रं, सि रहसिएणं भत्त पाणेणं पडिजागर माणा२ विह२तिंत अहं पासिउ हव्व मागते ततेणं सामिया देवी भगवं गोयमं एव वयासी सेकेण गोयमा से तहा रुव णाणा वा तवसा वा जेणं ताव एसमठे, ममताव रहस करिते, तुम्पह माय गयए जाताण तुम्पे जाणह ततेण सगवं गोयमे मिया देवी एवं वयासी एवंखलु देवाणु प्पिया मम धम्मा यरिए समणेणं भगवया महा विरेणंजाव ततेण अहं जाणामि जाव चणं मिया देवी समणं गोयमेणं सिद्धं एयमठ सलवति, तावं चणं मिया पूत्त दार गस्स भत्तवेला जायाथा विहोथ्या ततेणं सामिया देवी भगवं गोयम एव वयासी तुम्पेण भंते इहंचेव चिटह जाणं अहं तुम्पमिया पूतं दारग उवद सेमि तिकटु जेणेव भत्त पाणघ्ररे तेणेव उवागच्छइ२त्ता वथ्थ परिय ट्टय करेति२त्ता कठस गडिय गिन्हति२त्ता विपूल असण पाण खाइम साइम भिस्स भरेति तकठ सगडिय अणुक ठमाणा२ जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छति२त्ता भगवं गोयमं एवं वयासी एहणं तुम्पे भंते मम अणुगच्छ अएिह तुम्पमिया पुतं दारग उवदंसेमि, ततेणं भगव गोयमे मिंय देवी पिठी उस मणु गच्छति२त्ता ततेणं सामिया देवी तंकठ सगडियं अणु कढमाणा जेणेव मुमिघ्ररे तेणेव उवागच्छइ२त्ता चउपाडेणं वथ्थेणं मुह बधे- सि२त्ता भगवं भोमय एवं वयासी तुम्पेण भते मुह पोतियाण मुह वंवह तवेणसे भगव गोयमे मिया देवीए एवं वुते समाणे मुह पोतियाइ मुह वंधेति- २त्ता तर्तेण सामिया देवी पर मुहा मुमिं घरस्सा दुवार विहाडेति तवेणं सामिया देवी पर मुही मुमि घरत्स दुवारं विहाडेति ततेणं गंधे निगच्छति से जहा नामए अहि ममेतिवा जाव ततोविणं अणि तरा एचेव, जावगंधे पणं ते ततेणं सोमिया पुते दारए तस्स विणं विपूलस्स असण पाण खाइमं साइमं

गोयमे अभिमुते समागते मि विस्मंसि समण पाण कठ मुच्छिते तेविन्हे अलण ४ भासरणं आहारति मिथ्यामसरीइ सति ततापच्छा पुयसताए सा णिमस्ताए परिमम तिनं पियल पुर्व आहारति, सतेप भगवं गायमम्म वेमिया पुर्न दारिया पासिच्छा

भावार्थ— दक्षिय ! पाथ भार ऋाल और थाय भारका मया (मतयुग) भी वीर परमात्माके बडे शिष्य इंद्रभूति एस भामग्र साधु (गौतम साम) विपरत (गमन करते) म उस वख्त म भगवान गौतम साम्न मन्म भव पुरुसको देखके क्षिमम विचार उत्पन्न हुवा, और तत प्रभु भी वीर प्रभुको भर्ज करते हुवे, कहने अहो भगवान केइ पुरुष जन्म भव जन्म भेवरुम्म हे, हा गौतम हे, अहो भगवान जन्म भंव पुरुसकोमम ममभे बताय है जिसे अहो गौतम इसही मृगग्रामके विषय, विजय क्षत्रिय भगा मात मृगा राणींका पुत्र, मृगापुत्र एसे भामका बालक जन्म अंध जन्म भवरुसमे है और वो बालक हलता चलता भि नही हे और उस बालक की बडी हुसियारी के साथ प्रतिपाल मृगाराणी (दीपाक्त) करति है, एस वचन श्री वीर प्रभुके गौतम सामने सुनतेके साथ उक्त बालक के दर्शन की इच्छा हुइ तद हात जोडके श्री शासनाधिपती से गौतम साम विनंती करत हुए अहो दयाळु आप श्री आज्ञा हुव ता मे उस बालक का दर्शने का जाउ तब प्रभुने फरमाया के जैसा सुख होय वैसा करो, तब प्रभुकी आज्ञा मिलनेसे पुर्ण आनंद प्राप्त हुवा, तब गौतम साम प्रभुके पाससे रवा

'क जम इसी की तोरसे चलते हुए इर्यां सुमतिका साधन करते

ाकी समा पुवक निषि नजर निहालते हुवे जिस ठिकाणे मृगा

मम मिरगा नगुके मध्य बजारके मध्य भागमे होके जिन ठिकाणे

पे मृगाराणिका घर हे व्हापे आये तव वो मृगाराणी गौतम सामको आतेहूवे देखके राणिको संतोष प्राप्त हुवा और राणि गौतम सामको कहेने लगी, अहो दयाल आप हमारे ह्यापे कोनसे कार्या अर्थ पधारे हो, ऐसि अर्ज करी तव भगवंत गौतम साम राणिको ऐसे कहते भये अहो देवताके वलभ तुमारा पुत्र देखनेको आयाहु तव मृगाराणि मृगापुत्रके शिवाय जो दुसरे चार पुत्रथे उनोको वस्त्र आभुषण वगेरे पहेनाके शिणगार सजके गौतम साम माहाराजके चरणार विंद, सेवन, करवाए अर्थात पगे लगवाके राणि अर्ज करनेलगी के हे माहाराज ये मेरे पुत्र हें सो आप देखो तव गौतम साम माहाराज मृगा-राणि प्रते कहेने लगेके हे राणिमे ये तेरे च्यार पुत्र देखनेको नही आयाहुं हे राणि जो तेरा वडा पुत्र मृगा पूत्र इस नामका बालक हे जन्मअध हे और तुमने उसको छांने गुप्तपणे भूहरे (तलघर) मे रख्खाहे और अन्न पाणि देति हूई प्रवृततिहे उस कुवरको मे देखनेको आयाहु तव वो मृगाराणि भग-वंत गौतम सामप्रते ऐसि अर्ज करति हुई, अहो गौतम वो कोण हैं, प्रत्यक्ष ज्ञानी पुरुष तथा तपस्वी पुरुष जिसने हमारा गुप्त अर्थ मेरा छाना गुप्त रखा हुवा बालक सो देवताको भी मालूम नही ऐसीं गुप्तवात आपको किसने खट प्रगट (खुलसे दार) करके वतलाई हे उसको आप जानते हो तव गौतम साम माहाराज मृगाराणिको ऐसे कहेते हुवे. अहो राणि निश्चे हमारा धर्मा चार्य समण भगवत श्री माहावीर स्वामीके फरमानेसे मेने ईस वातको जाणी तव मृगाराणिने गौतम सामके पास प्रसिद्ध पणे ऐसी वार्ता सुणी इतनेमे मृगा पुत्र बालक की भोजन की टेम हुइ तव मृगाराणी गौतम साम माहाराजको अर्ज गुजारिश करि के अहो दयाल आप कृपा करके ह्यापे विराजो तो मे आपको मृगापुत्र कुंवर दिखलाउ इतनी अर्ज करके जिहा भोजन शाला है व्हापे मृगाराणी आई और वस्त्र वदलाके लकडे का गाडा लेके उसमे वहोत सा चार प्रकारका भोजन भरके उस लडके के गाडे को साथ लेके जिस ठिकाणेपे गौतम साम विराजे थे वहापे आके गौतम सामको अर्ज करती

हुई अब अहो भगवान आप मेरे पिछे पिछे आवो सा म सुमको मृगापुत्र बालक दिखाव तब भगवत गौतम साम मृगारानीके पिछे पिछे चलत हुव तब मृगावती क्याटकी गाडीसेके ज्हांपे मुंहरा (तलघर) है यहांपे आइ वहांप आएक बाद बालके पार पुढ करके स्कतावर मुख बांधा रानीने स्वताबर मुख बांधके बाद गौतम साम माहाराजसे रानीने अरज करी के अहो पूज्य आपभी तब से मुख बांधो तब गौतम साम माहाराजने रानीका वचन सुनके वस्त्रसे मुख बांधा भगवत गौतम सामने मुख बाधेके बाद मृगा दर्शीन भूमी घरकी तर्फ पिठ करके उल्टे हातोंसे मूमि घरका दरवाजे के कमाड खोले तब वा भूम दवी मुमि घरके कमाड खोलते के साथ माहा दुरगध अंदरसे निकली वो दुर्गधि कैसी खराब है के मृतक सडा हुवा सर्पसे भी अतिशय ज्यादा ज्ञानी बयान नही करसके है ऐसी भयानक दुर्गध मुमि घरमसे निकली मगर मनुष्य कोई बनेस सहन न कर सके ऐसी भगवान्न मृगापुत्रके शरीरकी दुर्गधि फरमाइ है बादमे वो रानीने भोजन लाइ थी वो भोजन दुर्गध से व्याप्ति होनेसे वा भोजन मृगापुत्र मुर्छी होके वो भोजन स्वाद रहित मगापुत्रने किया भोजन किये के बद बापिस वमन किया वमन करते के साथ मुहमे स पु और रुधिर सामल भोजनके गिरा वो वमन किया हुवा भोजन वापि म मृगापुत्रने भक्षण किया ये सर्व दृष्टिकर गौतम साम माहाराजने उस मगा पुत्रको खुब गोरसे पूर्ने ख्यालके साथ देखा

समिक्षा— देखिये ! इस मतके स्वार्थके वास्ते मुर्तीपुजक लोग किसनेक अवर वस्त्र झु॰ बोलते है और सामप्यक वजीर भगवंत भी गौतम साम माहाराज सरिखे माहानुभाव पुरुषोंका कलंक लगाते नही डरते है वा फर दुसराके वास्तेतो कहनाभी क्या मगर ऐसी मिथ्या बक ॰॰ करनेसे कुछ चितामणिरत्नको बलक नही लगता है, इस वास्ते ग ॰ नीपुजकाय झु॰ मगट करता हु अतएव मुर्तीपुजक लोग कहेते ॰ ॰रानीके कहेनेसे गौतम सामने मुखपति बांधि मगर अरस

खुले मुख बोलते थे इसका खुलासा निचे मुजब है.

कलम १ पहेली:– देखिये ! माहाशयजी ! मृगाराणीके कहेनेसे गौतम साम माहाराजने जीवोंकी यत्नाके वास्ते मुखपति मुखपे बांधि नहीं सबब मृगाराणी कुछ जैन श्राविका नही थी और देखो ! जैनके सिवाय अन्य मतालवियोको मुखपति बांधनेसे जीवोकी यत्ना होती है और नाभी कमलके वाफसे वायु काय वगैरे सुक्ष्म जीवोंकी घात होती है और खुले मुख बोलनेसे दोष (पाप) की उत्पति होती हे इत्यादि भेदो (वारता) से अन्य मजब वाले लोक वाकफगार नही होते है, इस वास्ते मृगाराणीने जीवोंकी यत्ना करनेके वास्ते गौतमसाम माहाराजको मुखके उपर मुखपति बांधनेका उपदेश दिया नही है कारण मृगापुत्रके शरीर की महा त्रिकराल (अतिसय खराब) दुरगधि आती हैं सो उस दुर्गधिसे गौतम साम माहाराजको किल्लापना (दुःख) नही होना चाहिये इस वास्ते राणीने गौतम साम महाराजको मुख बाधनेके वास्ते अर्ज गुजारिश करी है.

पुर्वपक्षी – क्यो जी मृगाराणी जैन श्राविका नही थी ये बात आप कायधरसे कहेते वो,

उत्तरपक्षी – देखो ! गौतम साम माहाराजने मृगापुत्र की गुप्त वार्ता मृगाराणीसे जाहिर करते के साथ मृगाराणीने गौतम साम माहाराज से अर्ज करि के मेरे मृगापुत्र की गुप्त वार्ता देवतादिको को भी खबर नही है तो फेर ऐसा कोन ज्ञानी और तपस्वी पुरुष हे सो ऐसी गुप्त वार्ता आपसे जाहिर करि है, उन पुरुषोंको आप जानते है तब गौतम सामने मृगाराणी को उत्तर दिया के खुद मेरे धर्माचार्य धर्म गुरु माहाज्ञानी पुरुषोंने ये मृगापुत्र की गुप्त वार्ता खट प्रगटपणे जाहिर करके फरमाई हे सोचो ! जो मगाराणी जैन श्राविका होती तो तिर्थ

क्योंकि ज्ञानसे जाणकार होती तिर्थकरोंका सत्य जैनियोसे किंचित मात्र भी छिपा हुवा नही रहता है और जिस वखत गौतम साम माहाराज मृगाराणी के घर पधारे थे उस वखत मृगाराणीने गौतम साम माहाराजको वंदना नमस्कार कुछ करि नही है ईत्यादि कारणो के सबब से मृगाराणी जैन श्राविका नही थी देखो ! ये बात प्रत्यक्ष सिद्ध हुई

कलम २ दुसरी— जिस भूमी घरके विषे मृगापुत्र रहेता था उस भूमि घरके पास मृगाराणी और गौतम साम ये दोनु ईसम गये उस भूमि घरमे गयेके बाद अवल मृगाराणी ने वस्त्रके चार पुड करके साथ अपना मुख बाधा अत एव मगाराणीने चार पुड वस्त्रसे खास अपना मुख बांधे के बाद मृगाराणीने गौतम साम माहाराजको अर्ज गुजारिस करि के अहो दयालु आपको मेरे पुत्रके शरिर की दुर्गंधिसे कोई भी वखे की किलामना न होवे इस वास्ते आप भी आपका मुख बांधो— बांधे स्वरुप सवास होने की जगह है सोचिये ! मृगाराणीने कुछ वाउकाय वगेरे सुक्ष्म जीवोंकी यत्नाके वास्ते मुख बांधा नही सबब था किंनि नही थी, ईस वास्ते, परंतु मृगापुत्रके शरीरकी महा विकराल (अतिसेय खोटी) दुर्गंधि आती है उस दुर्गंधिके मजोजनसे शरिराम रोगादिक उत्पन्न न होवे किंवा दुःख उत्पन्न न होवे किंवा वो दुर्गंध सहन न होनेसे वदन घपराके कुमस्थ जावे और किलामना उत्पन्न हो जावे इत्यादि भयके सबबसे मृगाराणीने चार पुड वस्त्रसे खास अपना मुख बांधा इत्यादि कारणो के सबबसे गौतम साम माहाराजको मुखके उपर मुखपति होते के साथ भी मगाराणीने गौतम साम माहाराजको न बांधने की अर्ज गुजारिश करी है विचारिये ! सुगंध या दुर्गंध न आनि नही है, सुगंध या दुर्गंध मुखसे किसी भी नही जाती है सुगध या दु, र नाकमे अती है और सुगध या दुर्गंध नाकसे किंचि

भी जाती हैं ईस वास्ते नाक वांधो ऐसी तुछ बात, ऐसे पुरुषोत्तम माहानुभाव पूरुषोंको कहेना ये उत्तम लायक चातुर और ज्ञाता पुरुषों का काम नही है इस लिये मृगाराणीने गौतम साम माहाराजके मुखपे मुखपति होते के साथ भी गौतम साम माहाराजको मृगारानीने मुख वाधने कि अर्ज गुजारिश करि हैं

देखिये ! माहाशयजी सुत्र श्री विपाकजीके अधिकारसे हमेस मुखपे मुखपति वंधी हुई रखना ऐसा साफ साफ खुब तोरसे सिद्ध (सबुत) हुवा

माहाशयजी ! अब हम मुर्तीपुजकोंके मान्यवर आचार्योंके बनाये हुवे ग्रंथ प्रकर्णोंसे मुखपे मुखपति वांधना सिद्ध करते है

देखिये । प्रवचन सारो द्वार की ५२१ मी गाथामे कहा हे की " मुखपर, मुखपति, अच्छादन करकें वांधना चाहिये ।१। महानिशीथमे कहां है के मुखपर मुख वस्त्री का विगर प्रतिक्रमण करे, वांचना देवे या लेवे वदना–सझाय वगैरा करे तो पुरि मढका प्रायश्चित आवे ।२। ऐसा ही योग शस्त्राके वृति के प्रष्ट २६१ में लिखा हे की उडकर पडते जीव और मुख के उष्ण श्वाससे वायु कायके जीवों की विराधना (हिंसा) टालने के वास्ते मुहपति धारण की जाति है, ऐसे ही आचार दिनकर ग्रंथमे और शतपदी वगेरा आनेक ग्रंथोंमे लिखा है ॥३॥ और भी देखिये ! भुवन भानु केवली का रास जो हेमचन्दाचार्य की रचना नुसार उदय रत्नजीने सवत १७६९ मे रचा है उसकी ६६ मि ढाल मे भी देखिये ॥ढाल॥ मुहपति ए मुख वाधिरे. तुम वेशोछोजेम ॥गुरु णीजी ॥ तिम मुखङ्चा देइनेरे, विजा वेसा एकेम ॥गुरुणीजी ॥ मुख वाधि मुनि नियरेरे, पर दोष न वदे भाहि ॥ गुरुणिजी ॥ साधु

विन ससार मेरे क्या देकोदिठ क्या ।सुलखिजी ॥४॥ और ऐसा ही सुत्रसे धार कथन कथन दिव क्षिसाके एस क्षगेरोंमे कहा है ॥"॥ और भी देखा । मुनिसञ्जी विजयजी कृत हरिवस मच्छी के रास की दास सताइसमि के दोहे मे मुखपर मुखपति बांधना लिखा है [दोहा] सुख मबोधिजीयदा, मांडि निज रुप कर्म्म, साधुजन मुख मोमति, बांधि ह जिन धर्म ॥१॥ ६॥

देखिये ! माहाशयजी ! श्री जैनके असली सिद्धांतोंसे—या—मुर्तीपुजकोके साधआचार्योके बनाये हुए ग्रंथ मदर्थोसे मुखक उपर हमेशा मुखपति बांधि हुइ रखना ऐसा हमने खुब तोरसे सिद्ध करके दिखला दिया है—सो आपने पुर्ण ख्याल कर लिजिये,

पुर्वपक्षी:— क्योंमी मुखपे मुखपति रखनेका कारण तो इतना ही है पुस्तक बाचति वखत पुस्तके उपर थुंक पडना नही चाहिये पुस्तकप थुक पडनेसे ज्ञानकी असातना होती है इस वास्ते मुखपे मुख बन्धोध रखना चाहिये

उत्तरपक्षी:— माहाशयजी । हालतक (अभितक) आपको सुद्धा ख्या न बनवाया ज्ञानी पुरुष नही मिला है इस वास्ते थोडा ख्याल करके देखा श्री वीर परमात्माके निर्वाण के बाद नव (९ ०) सो वर्षोके पिछेसे सुत्र सिद्धांत लिखे गये है, मगर मुखपतिका अधिकार ता सिद्धांतोमे अवल्ल पत्ता चाला हे, देखो ! सुत्र श्री भगवतीजी उपपाचपनजी हमरे सिद्धांता न हे ९) पाठ निच मुजम,

। गद्य पाठ ।

भ'पविया पदिले दिशा परिले दिज गुर्मा

देखिये ! माहाशयजी ! अगर थुककी असातना निर्वाण करनेके वास्ते जो मुखपे मुख वस्त्रीका रखते तो प्रचिन असली जैन सिद्धातोंमे मुखपति का अविकार नही चलता, आपने मिथ्यातियों के फदमे पडना मत, देखो श्री जैनके असली सिद्धातोंसे मुखपति वाधना खुब तोरसे सिद्ध हुवा—

पुर्वपक्षी – अजी साहेब मुखपे मुखपति जीवों की यत्ना के वास्ते नही बाधि जाती है, कारण भाषाके पुद्गल तो चोफर्सी है और वायु काय के भी जीव चौफर्सी है तो चौफर्सीसे चौफर्सी जीव नही मरते हे इस वास्ते वस्त्रीका हाथमे रखना चाहिये, ये ही बात ठिक दिखाइ देती है.

देखिये ! माहाशयजी ! अभितक आपको श्री जैन के असली सिद्धातोंका निर्मल पुर्ण तौरसे बतानेवाला नही मिला हे तब आप अदद्वातद्वा भाषण करते हो मगर खैर अब आप पुर्ण ख्यालके साथ गौर किजीयेगा अवल तो जीवोंकी रक्षाके वास्ते मुखपर मुखपत्ति वाधना इसका खुलासा कि्ळके अधिकारमे छुटते ही कर चुके हे, मुर्तीपुजकोंके मान्यवर ग्रंथोसे भी सिद्ध करते है, देखो योग शास्त्र की वृति आचार दिनकर शतपदी वगेरे ग्रथोंमे लिखा हे के उडके पडते जीव और मुख की उष्ण श्वाससे वायु काय के जीवों की विराधना (हिंसा] टालने [निवार्ण] के वास्ते मुखपे मुखपति धारण की जाती है और भी फेर सुत्र श्री पन्नवणाजी के भाषा पदमे ज्ञानी पुरुषोंने फरमाया है के भाषा के पुगदल मुख के बाहेर निकले वहातक तो चोफर्सी है और भाषा के पुगदल मुखके बाहेर निकले के बाद आठ फर्सी हे, तो अब सोचो आठ फर्सी पूगदलोसे वायु काय के जीवों की और दुसरे भी सुक्ष्म जीवों की घात होती है, तो फेर जीवों की रक्षा के वास्ते मुखपर मुखपति हमेश रखना चाहिये .

देखिये ! असली सिद्धातों के और ग्रथों के आधारसे जीवों की रक्षा के वास्ते मुखपे मुखपति हमेश रखना सिद्ध खुब तोरसे हुवा,

पूर्वपक्षी:— अजी महरबान साहेब आपको धन्यवाद है आपने सू म तोरसे तो मुखपति सिद्ध करके दिखलाई है मगर डोरेका अधिकार तो कही नही दिखलाया इसि सिवाय मुखपति बांधोगे ऐसे य भी एक आ श्चर्यकी बात दिखाई देती है

उत्तरपक्षी:— महाशयजी ! कुछ दोस की दया किजीय, ख्यालके साथ भाषण किजीय, इसलिये, शास्त्रमें " रतो हरणं वा " ऐसा पाठ है मगर उसमे डोरी पो करके बांधना नही कहा है, फेर क्यों बांधते हो, सूजी फकीरोंके हाथमे रखो, और महासतिजी के साडिका अधिकार कहा है मगर साडीमें नाडा लगाकर बांधनेका अधिकार नही कहा है, तो फेर नाडा डालकर क्यों बांधते है, अलम्मइये, ओथा शास्त्रमें तो मागम अधिक र.बोहतसे चले है, तब आप वो कर्म विधि पूर्वक कैसे करते हो, प बात आपकी बुद्धिसे बारे आहीर मे बतलाना चाहिये [मिसाल] कोई श्रावक ने किसी मुनि को पुछा के अहो दयाळ आपने आहार (भोजन) किया तब मुनिने फरमाया हां आहार किया, देखो आहार इस शब्दमें तो चार ही प्रकारका आहार आ गया, मगर मुनि कुछ श्रावकको अलग ४ वस्तु नही बतलाते है, इस तोरसे मुखपति का अधिकार समज लेना देखो मुखपे हमेश मुखपति रखना खुब तोरसे सिद्ध हुवा

पूर्वपक्षी:— अजी साहेब ! आप तो जमानेके बडे चाके और हठीले दिखाई देते हो और पंडिताईका भी बड़ा भारी घमंड रखते हो तो फेर मुर्खकी तोरसे उलटे रस्ते से क्यों चलते हो इसिये रस्ते प होके डोरा सहित मुखपर मुखपति हमेश बांधना ऐसा स्पष्ट रितिसे क्यों नही दिखलाते हो अगर डोरी की नास्ती होवे तो आपने मौन धारन करना, नही तो फौरन दिखलाना चाहिये,

उत्तरपक्षी:— महाशयजी ! मुखबंध तो मिथ्या वादीयोका होवगा

गा, सत्यवादि तो सदा सिंह की तौरसे गर्जना करते ही रहेंगे अवल तुम को जैनके असली सिद्धांत के मुल पाठ से सिद्ध करके दिखलावेंगे, पिछे मुर्तीपुजकोंके ग्रंथोंसे सिद्ध करके दिखलावेंगे,

पुर्वपक्षी:— मेहरवानी के साथ दिखलाना चाहिये,

उत्तरपक्षी — माहाशयजी । खुब ख्यालके साथ हुसीयारिसे देखिये सुत्र श्री माहानिशियजी के सातवे अध्येन मे डोरा सहित मुखपति हमेश मुखपर रखना ज्ञानी पुरुषोंने फरमाया हे वो पाठ निचे मुजब.

[गद्य पाठ]

कणो ठियाएवा मुहणं तःगेणवा वीणाईरियं पसि कम्मे
मीछु दुकड चैथ भतंवा,

भावार्थ — माहासयजी । देखो ! क्या बात ह्यापे सिद्ध होती हैं असली सिध्दातसे—डोरा सहित मुखपति कानमे अटकाके हमेस मुखपर बाधके रखना चाहिये, ऐसा महानिशियमे ज्ञानी पूरुषोंने स्पष्टपणे फरमाया हे, अगर मुखपे मुखपति शिवाय जो इर्यावही की पट्टी पढे तो मिच्छामि दुक्कडं—का तथा एक उपवासका प्रायच्छित (दंड) आता है,— ह्यांपे सहज सवाल होने की जगा हे के श्री जैन के असली सिद्धातोंसे वो मुखपति डोरा सहित हमेस मुखपर बाधके रखना चाहिये, ऐसा खुब तोरसे सिद्ध होता है, मगर खुले मुख बोलना किंवा हाथमें मुखपति रखना सिद्ध कोइ भी वजेंसे नही होता है, परंतु जैन मुनिने खुले मुख बोलना ओर हाथमें मुखपति रखना ये बात वो— जैन पोपों के बनाये हुवे टिकादि गपोड ग्रंथोंसे ही सिध्द होवेगा मगर असली सिध्दातोंसे कदापि सिध्द नही होवेगा, महाशयजी ! सोचो जैनके असली सिध्दांतोंसे डोरा सहित

मुखपति हमेस मुख्पर बांधके रखना चाहिये खुब तारसे सिद्ध हुआ॰

माहात्म्यमी । मुर्तिपुजकोंके मान्यवर आचार्यों के बनये हुव ग्रंथ दि ग्रंथोंसे मुहपर डारा सहित मुखपति हमेस बांधके रखना चाहिये, एस सिद्ध करके दिखलावते है, मगर इस ठिकाणे पर इन लोगों की कोतक हर्मी त चतुराइ मी किंचित्र मात्र जाहिर करके दिखलाना चाहते है, क्षेम ओर निर्युक्ती का निच मुजब.

(गाथा)

चउ, रंगुल विहथ्थी, एय मुहणं तगम, पमाणं ॥
वीयं मुहप्पमाणं, गणण पमाण ईक्केक ॥

भावार्थः— देखिय। एक बिलास्त (बेंत) और चार अगुल, एसी मुखपति डारा सहित, प्रमाण युक्त हाना चाहिय, अर्थात प्रमाण युक्त डारा (धागा) सहित मुखपति हमेश मुखपर बधि रखना चाहिय,

समीक्षाः— मुर्तीपुजकोंके ग्रंथ स्वर्णे बगैरेमें भी डोरा सहित प्रमाण युक्त मुहप मुखपति हमेस बंधना लिखत है, मगर इस मुखप मुखपति बांधने मुर्तीपुजकोंका धर्म नाशि होती है, परंतु ये स्वय असल जैनी नहीं है अगर असल जैनी होते तो जैनका असली मान मंत्र जान्ते मगर मुर्तीपुजकोंने इस जगह पर इतनि चतुराइके साथ डारा सहित मुखपति मुखपर बंधना स्विकार (अंगीकार) करा है किस वास्ते जिस मकानमें जगर हावे ओर उस मकानको साफ करावे समत डारा सहित मुखपर मु ति बांधना चाहिये, क्यों की मुखमे [illegible] "रज्ज" (रेति) [illegible] जाने पावे, मगर मुखपति मुखपर [illegible] साफ कर तो भी मुखमे कचरा जाना [illegible] है, सबब मुखपति पर निकाल मागे तो मुखसा रहेगा

हे, ईस लिये अगर मुख वांधके कचरा निकालने की जरुरत होती तो ह्यापे ऐसा पाठ आना था के जिसको वांधके कचरा निकाल्नेसे मुख मे कचरा परवेस कोइ भी दर्जेसे करसके नही, वो पाठ ऐसा होना था

पाठ,

मुहपमाणेणंवा धटेणंवा मुह वंधइ२ उवासयेणंवा वज्जं कढई२त्ता ॥

ऐसा पाठ होता तो हम लोग अवष्य प्रमाण करते मगर ईस रितिका पाठ न होने पर ईन लोगोंने उक्त गाथा के पछात को दो पद हमेस मुखपे मुखपति वंधि रखना, नही रखे तो प्रायछित (दंड) आता हे ऐसे जो पद खास ज्ञानी पुरुषोंके फरमाये हुवे थे सो निकाल के पिछे मूर्तीपुजकोंके जैन पोप साम्राज्याचार्योने मिथ्यात्वके नसे के पगले पणेमे पिछले दो पद नविन वनाके उक्त गाथा मे वो पद दाखल करके, वो गाथा असली सिद्धांतो मे से निकाल करके अपने वनाये हुवे गपोड ग्रर्थोमे वो गाथा प्रवेस (दाखल) कर दिवी हे मगर ऐसी मिथ्या कारवाइ करनेसे कुछ हाथमे मुखप्रति रखना सिद्ध नही होता हे सबब जो बात असली सिद्धांत स्वीकार नही करे तो सब मिथ्या समजी जाती हे, मगर बिचारे मूर्तीपुजक लोग क्या करे जे कर तिर्थकरोके असली वचनो को अगिकार करे तो हमेस मुखपर मुखपति वांधना पडता है, और हमेस मुखपर मुखपति वांधि रखनेसे स्वाद रोकने की तकलिफ उठाना पडति है तब मुखपे मुखपति हमेस वांधि हुइ रखना नही ऐसा कायम किया है

इस की तपशिल विक्रम समत ७ वे साल ५१न विर समत १२वे साल २१ मे विधवे पाठमे मूर्तीपुजकोंका श्री सघ एकठा हुवा था, व्हापे सर्व संघने विचार किया के अपना लोग जो जैनका मुखपर मुखपति संयुक्त

मेष (दरस) कायन रखेंगे तो, ठिक नहीं-पडेगा-सबब मारा काळके प्रभावसे जो जैनके असली साधु अनार्य देशोंमें चले गय है सो जो कोम कदापि इस आर्य देशमें वापिस आ गये तो फर उनो की महाप्रमाधि कड़ करणी [कठिन] क्रिया और संयमका पालना और तप जप का करना और शरीरप मोर लगाना इत्यादि माहा घोर परिसे सहन करत हुवे लाग उनोको देखेंगे तो फेर अपनेको मान मानेगा, इस वास्ते उक्त साधवोंके आने के पहले दरस (भेष) वगेरे सर्व समाचारीका फरफार डालना चाहिये, कारण मेष एक नही मिलेगा तब असली २ समाचारी न्यारी न्यारी हो जा-वेगी, और आसे के साय उन लोगोंको अपन लोग नविन और नक ली ठेरा देवेंगे, ऐसा काम करनेसे अपने नविन और नकली मत की दिनपेदिन वृधि होवेगा, और पंचमत मे आत्माके साधनोंका बार बहेगा नही, ऐसा पुर्ण विचार करके, हाथमे मुखपति रखना मुर्तीपुज कोंने ज्यासे सुरु किया है ये गुरु मुख धारण मुर्तीपुजकोंने हाथमे मुखपति रखना सुरु किये के बाद ऐसा अव्हान करते ह के मुखपर हमेस मुखपति बंधि रखनेसे मुखमका थुक उस मुखपति का अमता है और मुखपति को थुक लगनेस छ मार्छीम जीवोंकी उत्पती होती है, मगर ये कहना उक्त लोगोंका साफ छोय हैं, सबब छ मोर्छीम जीवों के, उत्पन्न होनेके ज्ञानी पुरुषों ने चौद ठिकाणे (स्थान) फरमाये है मगर चौदा स्थानम "थुके सुवा" ऐसा पाठ नही है, तब छ मोर्छीम जीव उत्पन्न होन के, ज्ञानी पुरुषोंने चौदा स्थान फरमाये है मगर ये पंदरवा स्थान ईन लागोंने कानसे खडेमेसे खोद के निकाला है, ये कुछ खबर नही पडती है, तब तो ये लाग ज्ञानिसे बढकर ज्यादा ज्ञानी हो गये, कदापि नही, मगर ईन अल्प बुद्धिवाले मुर्तीपुजक लाग ईस ना खपाल नही करते है के जिस वखत मुर्ती पुजा वगेरे करते है तब मुंह पुजका मुख कास (पाय) बांधते है, बिना मुख-कास बांधके

शिवाय, सेवा, पूजा वगेरे नही की जाती है मुख कोस (धाय) बांधके पुजा भणाई जाती हे, सब मुख कोसको थुक लगता हे, और बडी पुजा होवे जब पुजाको कलाको बध देर लगति हे, तब ईन मुर्तीपुजको के न्यायसे तो उस मुखको ममे छ मोछींम अनंता जीवोंकी प्राप्ति होती है, अपसोसका स्थान हे के ये मुर्तीपुजक लोक जान बुज कर प्रत्यक्ष अनंता असन्नी पचेंद्रि जीवोंकी घात करते हे ये कितना बडा भारी अन्याय हे, इस अन्याय से ईनका किया हुवा सावज लोकी क धर्म सर्व नष्ट हो जावे मगर शास्त्रके अजान मनुष्य अंध तुल्य, हुवा करते हैं, जिनोको अपने बोलनेका और लिखनेका और कृतव्यका बिलकुल कुछ ख्याल नही रहता है तब वो आदमी आमे विचारमे पडता हे और भी देखो! ससार विवहारमे जैनी और अन्य मजबवा ले कितनेक देसोमे या कितनेक कुलोंमे ऐसा रेवाज हे के जिस वखत शादी [लग्न] होती है तब वो दुल्हा (विंद) अपने रुमालके अग्र भागको घडी करके हाथमे पकडके मुखके सामने रखता हे और भी देखो! राजा माहाराजके सभामे लोग जाते हे व रुमाल की घडी जमाके हातमे पकडके मुखके सामने रखते हे, ये भी एक मुख की यत्ना करनेका रेवाज प्राचिन कालसे चला आता है, तो धर्म कार्य करति वखत मुखपे मुखपति जीवोंकी यत्नाके वास्ते बांधना किस तोर-से खोटा ठहरेगा, सो बतलाना चाहिये,

इसके शिवाय और तुमको हम डोरा सहीत मुखपे मुखपति हमे स बांधके रखना चाहिये, अगर मुखसे मुखपति दुर रखे तो प्रायछित्त (दंड) लेना पडता हे वो पाठ निचे मुजब- महान सिथ चुलकाका

(गद्य पाठ)

कणोठियाएवा, मुहणतः गेणंवा. वीणाइरीयं पडिकम्मे,

मीछु दुक्कडं, प्ररिमंग्या

भावार्थ—देखिये ! डोरा सहित मुखपति कानमे भरकाके हमेस मुखपर बांधे रखना एसा साफ साफ मुर्तिपुजकों के सावज्याचार्योने कहा है अगर बिना मुखपर मुखपति भयात मुंखस जो इर्यावही की पढ़ी का उचारण करे तो मिच्छामि दुक्कडंका तथा दो पारसिका या यश्चित [दंड] आता है,

समीक्षा—मानमलजी देखो दुर्तीपुजकों के सावज्याचार्यो के बनाये हुवे गयाह ग्रंथ प्रकर्णोसे डोरा सहित कानमे भरका के हमेस मुखपे मुखपति बांधके रखना चाहिये नही रखे तो दंड आवे एसा खुब जोर शोर के साथ साफ साफ सिद्ध हुवा, इस के सिवाय और भी हम आंगे अन्य मतानुयायी के ग्रंथोसे जैन मुनिको हमेस मुखपर मुखपति बांधके रखना चाहिये, एसा सिद्ध करके दिखलाते है मान शमजी ! शिव पुराण की ज्ञान संहिता के अध्याय २१ के श्लोक ० ९ मे क्या लिखा है तुम द्रव्य और भाव ये दोनु नेत्र खोलके पुर स्वाध्याय के साथ जोर शोरसे देखिये, या नहीं नहीं गफलत में तुम्हारे नेत्र गुम हद जायगे तो तुमारा संवर दुर नहीं होवेगा वास्ते द्रव्य और भाव दोनु नेत्र पुर्ण खोलके अवलोकन किजीयेगा तो तुमारा स्नेह फोरन 'रफा' (दुर) हो जावे लेख ज्ञान संहिता का निम्न मुजब,

[श्लोक]

मुण्ड मलिन वस्त्रं च, कुंडिपात्र समन्वीत ॥
दधानं पुंजिका हस्ते, चालयन्ते पदे पदे ॥१॥

अर्थः— शिर मुंडित भैले (रज लगे हुवे) वस्त्र काष्टके पात्र हाथमे ओघा पग२पे देखके चले अर्थात ओघे से कीडा आदि जतुओ को हटाकर पग रखे ॥२॥

(श्लोक)

वस्त्र युक्तं तथा हस्त, क्षिप्यमाणं मुखे सदा,
धर्म्मेति व्याहरन्तत, नमस्कृत्य स्थित हरे ॥३॥

अर्थः— मुखवस्त्र (मुखपति) करके ढकते हुये सदा मुखको तथा किसी कारण मुखपति को अलग करे तो हाथ मुखके अगाडी रखे परतु खुले मुख न रहे और न बोले ॥३॥

समीक्षाः— देखिये ! अन्य मतानुयायोंके पुराणोसे भी जैन मुनि को मुखपे मुखपति वांधके रखना मगर खुले मुखसे रहेना नही और हाथमे मुखपति रखना नही, तो फेर हाथमे मुखपति रखना ये जैन वर्गसे वरखिलाप (विपरित) वात हुइ, देखो ! खुब तोरसे ये साफ साफ अन्यमतानुयायोके पुराणोंसे जैन मुनिको मुखपे मुखपति हमेस वंधि रखना सिद्ध हुवा,

[वांचि बयान ढूंढीये प्राचिन]

देखिये ! शिव पुराणको वेद व्यासजीने रचा है और वेद व्यास जी को होने को अदाजन पांच हजार वर्ष करिब हुवे हे, ऐसा कहेते हे, तो अव सोचिये ! के ५००० पांच हजार वर्षके भी अवल ढुढिये थे ये बात तो शिव पुराणकी ज्ञान सहितासे पुर्ण सिद्ध हुई सबब जैसा सरुप जैसा साधुका ज्ञान सहितामे बतलाया है वैसा सरुप वृत

माने मकस प्रमाणसे जैन साधु मार्गी (ढुंढिये) वर्गके मुनि। समने मि
स्ना है, सो फर इस न्यायसे तो ढुंढीये लोग प्राचिन अनादि सिद्ध
हुवे और मुर्तीपुजकोका लिखना और कहेना मफ साफ खोटा हुवा,
ईतना खुलासा होनेपर भी झुट बोलनेवाले को कदापि सबर [सदाप]
नही आता है, यो तो अनेक प्रकारके अन्यायसे झुट बोलगा

पुर्वपक्षी—अजी साहेब ! यद न्यायरत्नीने तो मस्रा कथन किया है
के ऐस आगे होवेंगे

उत्तरपक्षीः—महाशयजी ! कुलागामी शर्मके साथ मुजको छोडा तुमरे
कथना मुसार यदपि ठेस नही है तमर करो खुब वारस सबुत हुवा ढुंढिय
लोग प्राचीन है

इसलिये ! मुर्तिपुजक लोग अपने इस अरके मतलबके वास्ते और
भी जैन धर्मकी धमाहोल करनेके वास्ते और संयमी पुरुषोको अपमस प्राप्त
करनेके वास्ते और जैनके असलि सिद्धांतोको छिपानेके (सुकत ५) करके
भोले लोगोंको मिथ्यात्वकि भंवर मालमे डालनेके वास्त न्याय रत्न न्यायां
भोनिधिकि पदवि धारण करके, मिथ्याधर्मकि पंडिताईका पूर्ण धर्मद अज्ञानक
अस्त्र ज्ञान धारे पुरुषोंका अज्ञानके फासेम फसावेत है, मगर न्याय रत्न
और न्यायांभा निधि कि पदवि इन लोगोको किस मूर्खने दि है, परंतु इन
लोगोका पूर्ण अन्याय तापि हम प्रगट करते है देखो ! एक श्री विशालजीक
महेसे अप्येनम प्रगटराणिन मुल बांधा ऐसा अपलम पिछम भमिकार छोडके
विषमझ बिना ममक्ष एक छायसा पाटका इकबा (तुम्मेणमवे मुहपो
या पर्युप बंधेह) नियाफके पुस्तकोंमे दाखल करके विचारे भोले लागोको
। न्याकि आत्म प्रमाद है एक येदी मत नही समझेना, ये लाग ऐसी
बात हैसा क्योंकि परिक्षा करसेना, फेरभी मूर्तीपुजक लोग यह
अ. रा. य कि इसके फरमान करते है के सिद्धांतोंमे एक अक्षर भगर का

मात्रको जादकम करे अगर फेरफार करेतो अनन ससारि होता हे तो ये ोग असलि सिद्धातोंका कितना वडा भारि फेरफार करते हे. तो फेर इन ूर्तीपुजक लोगोंको किनने अनत संसारि कहेना चाहिये, और इतने परभी ही तो फेर जेनके असलि सिद्धातोको धक्का पहोचानेके वास्ते मूर्तीपुजक र्गमें, जैनक कथा भट्ट और जैनपोप और जड उपासक जो इनोंके साव ाचार्य हुवे हे उनोने टिका चूर्णी भाष्य निर्युक्ति वगैरे ग्रंथ प्रकर्ण" कोकी- ला शास्त्र " वनाके श्री जैनके असलि सिद्धातोंके विरुद्ध ऐसे ऐसे गपाडे मारे हेके उन गपोडोको श्री जैनके असलि सिद्धात किंचित मात्रभी कवुल नही करतेहे. तो फेर श्री जैनके असलि सिद्धातोंका स्वीकार (अगीकार) करने वाले पुरुष जैन भापक पोपोके गप्पाडे केसे मंजुर करेंगे कदापि नही तो फेर अव मुर्तीपुजक लोग जैन भाषके पोपोकि वनाई हुई निर्युक्ति वगैरे ग्रथ प्रकर्णके लेखोंसे हायमे मुख पति रखना सिद्ध करतेहे. तो क्या श्री जैनके असलि और प्राचीन सिद्धातोंके लेख खुट गये हे अगर गुम होगयेहे तो श्री जैनके असलि और प्राचिन सिद्धातोंके लेखोंसे मूर्तीपूजक लोग हाथमे मुखपति रखना सिद्द क्यों नही करसकते हे मगर क्या करे विचारे श्री जैन- के असलि और प्राचिन सिध्दातोका सर्ण लेवेतो मुखपे हमेस मुखपति वाधना पडताहे, इसवास्ते जैन भापक पोपोके वनाये हुवे ग्रंथ प्रकर्णका शारा लेके आप डुवते हे और औरोंको डुवाते हे.

सवैया २१ सा० पती नावाशिरपर नाथ होवेताकु कहे छत्र नाव सदाकाल छेया वापे राखेहे, मेदनिके शिसटिको छत्रपति जगकहे, प्रजा प्रति- पालकेवे, पुत्र ममराखेहे, पत्ती द्वारा नाव पाद, पतीसें उलटवहे, जगतमे सर्व वाकु विभचार दाखे हे, मुखपती नावपाय मुख अधिपतीथई, कुदन ज्ञानि जनवाकु, मुखपर राखेहे, ॥१॥

॥ दोहा ॥

मुखाधिपति जो हुवे रखे हस्तके माय
हस्ताधिपति हेसही, मुखाधिपति हेनाय ॥१॥
मुखधिपति मुख रहे, जीव असख्य न्यार,
मक्षिपाल इ बुताकी, सत्य मुख बचन उचार ॥२॥

॥ सवैया ॥ ३१ सा०

चरणको भूषणए, शिरपर धारस्यिो
बिसबीका भूषणए, चरणन सोवेहें,
आकनन पंसरए, अंगुठि अगखिरहे,

मुजरिको भुषणए, मुजबंध होवेहें, कानमे करन फूल,
पोंचामे पूणची होय, हीरा कंठ भूषणए, हारकण्ठे होवेहें,
अनेकाव बातएसि, कुंदन कहि नजाव, मुखहीका भूषणए,
मुखपती होवेहे ॥१॥

कुंडलिया छंद ॥ मिच्छाम्मति सोस्मे, प्रश्न कियो गणधर,
ईंद्र भाषे विभु, भाखे सुखे द्वार मा सावनके निरद दाख्यो, जतनी
तनि होय भी मुखसवि भाख्यो कुंदन सावज दाखियो, जी बलणो ए
मिच्छाम्पति सोस्म, प्रश्न किया गणधार ॥१ ।

दोहा

मिच्छाद्धार भी माखियो, एक सरिखी बात
अंतर ता. रालभो नही, मुख्य भाताभाल ॥१॥

सवैया ३१ सा०

मोर्त एक मुखसेति, दुरराखे मुखपति, चौथभक्त माहानसिन,
दटजिन भाख्यों है, फेरकहे छमो छम, उसन्नहोवे जीव,
मट्टिकि ओपमाजिन, सिध्धातमे दाख्योहे, खेल आदि वस्त्र लेप,
करि मट्टी मुख देवे, वाफके संजोग जीव, उपजेन आख्यो है,
मार्त दुरराखणोन, मार्त पेलि उपजेन, कुंदन पनवणां,
त्रिलोकि नाथ भाख्यो है ॥१॥

जुगल प्रकार कह्या पुग्दलके राजिन, चौफर्स अष्ट फर्स,
सिद्धातमे गावे है, सुक्षम स्थुल जीव, अष्ट फर्स सेतिमरे,
चौफर्स पुगदल्से जीवण हणावे हे, अष्टफर्स भाषा पुगदल,
अजत्ना याहीते होवे, चौफर्स भाषा पुदगल, मुखमाहे* पावेहै,
कुंदनकहे रे मुग्ध न्यायसे निहाल जोय, विवाह पन्नति माहे,
श्री जिन फरमावे है, ॥२॥ मृगालो ठोनिहालण,
गौतम गणधर गया, वदन वंदण तणो, पाठतिहा आवे है,
व्हापे गौतम मुख वांध्यो, मुढमति कहे इम, ठाम ठाम खुले मुख,
भाषण ठेरावे है, दुर्गंध विकाल आय, सके नही पासजाय,
राणि भूगद्वार आय, अर्ज फरमावे हे, दुर्गंध विरुध स्वामी,
आप मुख वाधो विभु, मुखमे दुर्गंध गया, दुःख नही पावे है ॥३॥
उत्तम पुरष होय, उत्तम प्रकास करे, नाकको प्रकासणोए असुभक होवे हे,
तिर्थंकर गणधर, समान्य मुनिंदसर्व, त्रीहुं काल खुले मुख,
भाषा नवरतावें है, देशव्रति वृतमाहे, खुले मुख भाषे नाहि,

---

* जाहा तक भाषाके पुगदल मुखके अंदर हे, व्हा तक चौफर्सी हे
बाहेर निकालनेके बाद आठ फर्सी होते हे, सो समज लेना.

खुले मुख भषणथी, व्रत भंग थावे है, तांणिकि कहणकरो,
पाठ है सिद्धांत माहि, तांणि मुख बांध्योते तो, मूड कहावे हैं ॥
मुनिको तो भेष देख, मुहपति रजोहर्ण, मोमिनको भेष भ्या,
भमुति लगावे है, ब्रम्ह पुत्र होव तब, गलमे जनेउ रास,
गुसाईको भेष बस्त्र, भगवां रखावे हैं, फकिरको भेष वस्त्र,
हव्यावस अंग धरे, पंडित को भव वस्त्र पापकु मगावे है,
कुमत कहेत द्रव्य, भेसस पिछाण होत, मुनिकेरा उपकरण
मायमे कहावे है ॥६॥

बंधे मुख हिरा अरु पाणक मोति मल्हार पितांबर जिर्णबर
रसवति सारको, बंध मुख मस्तकको, चिन्तावेकी चिंतामणी
बधे मुख केसर कस्तुरि, अत्र सारको, बंधे मुख सामको,
पागबिडु घर दुबे, बधे मुख हिरण, सो गुण हती पारका
कुदन कहेत न्याय, परख निहाल जोय बंधे मुख मुर्ख हल,
मोटा मारु दारको ॥७॥

बरडोके खुले मुख मूंमू करे धई फेर, फेर खुले मुख रहे
श्वानसुर स्यारको, भमय नेत्र धुनित, खुलेमे तो मुख रहे,
नदी बंधे मुख वाको, गभिनाल ब्याजका, रजेत हाड मांस,
बधे मुख गभिनात, उत्तम पुरुष धरन, कहेन असपरका,
कुदन कहेत परख, न्यायसेम वात करे, नही खुले मुख रहे,
निवन गिवारको ॥८॥

फेरभी वनिय ! जो लोग मुखपति बांधनेको इसप्रकार करते है, औ
ने प्रत्याख्यान [त्याग] करवाते है, जैसा पिताम्बरी शान्ति विजय
निवाकजी फलोदिया, साकिन, वरारा, जिल्हा चांदावाला का

मुखपतिमे डोरा सिद्ध नही होवे, न्हातक मुखपे डोरा सही मुखपति नही बाधना एसे त्याग करवाया हे, मगर वो इसम शास्त्रका अजान हे, इसवास्ते उसने ऐसे खोटे त्याग करे हे, मगर खेदार्यश्चका स्थान हं के, जिस इसमने चुनिलालजी फलो दिया वगैरेको त्याग करवाहे, मगर उनोके गुरु आत्मारामजीमे खास वाख्यानकि वखत मुखपे, मुखपति वाधना मंजुर कियाहे—मगर अपना थोथा घमड दिखलानेके वास्ते उलट परुपना करनी पडती हे,

पिताम्बरी आत्मारामजीने वाख्यानकि वखत मुखपति वांधना मंजुर कियासो लेख निचे मुजब—तपेगच्छ निवासि धन विजयजीका बनाया हुवा“ चतुर्थ स्तुति निर्णयशको द्धार ” प्रष्ट ५-६-औलि २०- संवत १९४० नीसालमा आत्मारामजिए अमदावाद समाचार छापामा, व्याख्यानके अवसरे मोहपति बांधवी हम अछि जानते हे पण कोई कारणसे नही बाधते हैं* एहे तुं, छपाव्यु, त्यारे विद्याशालानी बैठकना श्रावकोए आत्मारामजीने पुछयुं साहेब आप मोहपति वाधवि, रूडी जाणोछो तो वाधता केम नथी ? त्यारे आत्मारामजीए, तेने पोताना राणि करवाने कह्यंके,* हम इहासे विहार करे पिछे बाधेंगे* पण हजु सुधि वाधता नथी, ते कारणथी आत्मारामजीनु लखवु जुदुने बोलवु जुदुअने चालवुं जुदु आमने भास नथयुं इत्यादि” देखिये उक्त लोगोके स्वगछ वासि क्या वयान करते है औरभी देखिये! देशपंजाब, राशट नाभा* नाभासरकार मारफत पिताम्बरि वल्लभ विजयने छ ६ प्रश्नोका जवाव ढूंढियोंसे मागा था उन प्रश्नोके, प्रथम १मे क्या लिखता हे, देखो “ दिन रात मुह वाधा रहे—या—खुला रहे ” इति इस लेखसे साफ साफ सिद्ध होता हे के हमेस मूख वाधे रखना, ऐसा इनोके शास्त्रोमे भी लेख हे, मगर मुख वांधनेसे तकलिफ उठाना पडति हे इस वास्ते इन लोगोंने सत्य लेखोको छिपाके, मुखपे मुखपति नहो वांधना और हाथमे रखना, ऐसे खोटे खोटे लेख उनही शास्त्रोंमे दरज [दाखल] करके अव अपना

सत्य शिरोमणीपणा दिखाते है, मगर इनाके सरिखे इस दुनियामें सर्व लोग सत्यवादि हो जाय तो बेशक इस दुनियाका सत्यानास हो जाय, क्यों की जिनोक्त लिखना और व कहेना और व चलना और ये कैसे सत्यवादि है, के जो इनोके कर्म पड जाय तो बेशक जन्म मुधारना मुश्कल हो जाय—क्योंकि ये लोग ज्ञानीके और गुरुके और सिद्धांतोंके अज्ञाने विरोधि (विराधक) कहलाते हैं इस वास्ते इति—

मानी पुर्वोक्त तो मुखवस्तिको हमेस मुखपर बांधके रखना फर माया है मगर कितनेक लोग, इस बातों को अंगीकार नहीं करते हैं तब तो मरने खुसी की बात रही, काइ हाथमे रखेगा, तो कोई दुसरे ठिकाणे रखेगा और कोइ साफ मुखपति को उडा देवेगा, ईस निमित्त वाडे नकली पाठ निचे दाखल करते हैं खुलासे के वास्ते—

पाठ,

अर्थ—अहो भगवानजी हाथमे मुखपति रखे तो क्या फल की प्राप्ति होवे ?

पाठ—पाणिण मुहपोत्तियाणं धरंतस्स भंते किंफले ?

अर्थः—अहो भगवानजी मस्तक उपर मुखपति रखे तो क्या फल की प्राप्ति होवे २

पाठ—शिरसं मुहपोत्तियाणं धरंतस्स भंते किंफले २

अर्थ—अहो भगवानजी गले में मुखपति रखे तो क्या फलकी ३

... मुहपोत्तियाणं धरंतस्स भंते किंफले ३

अर्थः– अहो भगवानजी भुजा पर मुखपति रखे तो क्या फल की प्राप्ति होवे ४

पाठः– भुएेणं मुहपोतियाणं ठवइ२त्ता भंते किफले ४

अर्थ – अहो भगवानजी कमरके उपर मुखपति राखे तो क्या फल की प्राप्ति होवे ५

पाठः– कटीणं मुहपोतियाण ठवई२त्ता भंते किफले ५

अर्थः– अहो भगवानजी पावपर मुखपति राखे तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ६

पाठः– पादुकाणं मुहपोतियाणं ठवइ२त्ता भंते किंफले ६

अर्थ – अहो भगवानजी कान फडवाके मुखपति नांये तो क्या फलकी प्राप्ति होवे ७

पाठ – कनुफाडे वा मुहपोतिणं ठवइ२त्ता भंते किंफले ७

अर्थः– अहो भगवानजी मुखपति हमेस मुखपर बाधके रखे तो उस मुखपतिमे जीवकी उत्पती होवे किंवा नही होंवे ८

पाठ – किंभते मुहपोतियाण निरंतरेण मुह वंधइ२त्ता तस्स ठाणं जीवा ण उववणेति२त्ता ८

अर्थः– अहो भगवानजी कोई भी वजेसे मुखपति नही राखे तों क्या फलकी प्राप्ति होवे ९

पाठः– मुहपोतियाण नोठवइ२त्ता भंते किंफले ९

देखो ! मुखपति रखना या नही रखना या रखना तो किस ठिकाणे रखना ईसका खुलासा मुर्तीपुजकोंने जैनके एकादस अंगादि

तात्पर्योंम लिखीत माचिन और असली सिद्धांतों के मूल पाठसे ठाम ठाम सिद्ध करके दिखलाना चाहिये, इतनेपर भी ये लोग कहते है कि युरूक मुखपर पटी बांधके फिरते हैं इस वास्ते,

झांपे पटी बांधनेका प्रत्यक्ष प्रमाणसे गुण बतलाते है जो जिज्ञासु पुरुषोंने ख्यालमे लेने की कृपा करना चाहिये,

(दोहा)

पाटे बांध्या देखसो, मिटे दरदकी पिड,
रोगपणे विनासथी, निर्मल होय शरिर ॥१॥
कर्मरूपीयो रोग हे, ज्ञानरूपियो पाठ,
कुलन सत गठ बांधियो, मिले मुक्का ठाट ॥२॥

वार्ता—मगर इतने पर भी समजना नही, फेर भी देखो! श्री जैनके असली सिद्धांतोसे तथा मुर्तीपुजकोके मान्यपर आचार्योंके बनाये हुवे, टिकादि ग्रंथ प्रकर्णो वगैरोंमे भी मुखपर मुखपति बांधके धर्म क्रिया करनेका अधिकार सिद्धांतोंमे तथा ग्रंथकारोंमे ठाम ठाम चला है मगर मुर्तीपुजक लोग सिद्धांतोंके तथा ग्रंथकारोंके लेखाके बहुल (विरुद्ध) खुलेमुखसे धर्मक्रिया करते है, वोमीदेखिये झांपर ये लोग अपना पाल छिपानेके वास्ते सत्य शिरोमणीपणा प्रगट करते है, मगर दापे इनने भी जैनके असली सिद्धांतोंसे और मुर्तीपुजकोंके आचार्यों के बनाये हुवे ग्रंथ प्रकर्ण वगैरोंसे किंवा अन्य मतानुयायोंके बनाये हुवे ग्रंथोंसे डोरा सहित हमेश मुखपर मुखपति जैन मुनिको बांधके रखना चाहिये ऐसा खुब जोर जोर के साथ साफ साफ खुलासे वार हमने सिद्ध करके बताया है इसही दोरसे मुर्तीपुजकोने भी जैन के असली और मा[illegible] ग्रंथोके मूल पाठसे हाथमे मुखपति रखना ऐसा खुलासे वार

साफ साफ सिद्ध करके दिखलाना चाहिये, तब हम लोग ईन मुर्तीपुजको की विद्वता भरी हुई पंडिताइ की बाहादुरी समजेंगे, अगर सिद्ध करके नही दिखलावेंगे तो फेर इन लोगोको, तिर्थकरोके तथा ईनोके आचार्य वगेरोके आज्ञाके अराधक किस तोरसे समजना चाहिये इस वास्ते ईन मुर्तीपुजकोका पुर्ण दयाके साथ खेद प्राप्त होता हे के, ये मुर्तीपुजक लोग बिचारे अजाण पावर प्राणियोका आत्म सुधारा किस तोरसे होवेगा,

मुहपति निर्णय बतिसी.

[दोहरा]

मुहपति राखी हाथमां, जो बांधे नही मुख,
सांभल जो ते सात थइ, मुहपति निर्णय टूक ॥१॥
मुख वस्त्रीका सुत्रमां, भाखी जिन भगवंत,
उपयोग तेनो शुद्ध करे, ते साचो जिन संत ॥२॥
माहाराज माहावीरना, मुनि पटावृत जाण,
पटो बांधे मुहपति, जिन आज्ञा प्रमाण ॥३॥
अर्थ करो जो मुख पटी, का बांधो नही मुख,
हाथे केडे राखवा, किण आज्ञा धरो मुख्य ॥४॥
आज्ञा ए धर्म जो कहो, ते पालो जीन आण,
मुख बांधीने मुखपति, आज्ञा करो प्रमाण ॥५॥
खुल्ले मुख वदता मरे, असंख्य वायु काय,

शास्त्रयोंमे लिखीत माथिन और असली सिद्धांतों क मुल पाठसे आम सभामें सिद्ध करके दिखलाना चाहिये, ईसतरह भी ये लोग फरते है क ढुढक मुखपर पटी बांधके फिरते हैं ईस वास्ते,

आप पटी बांधनेका भत्यस प्रमाणसे गुण बतलाते है जो जिज्ञास पुरुषोंनि ध्यानमे लेने की कृपा करना चाहिये,

(दोहा)

पाये बांधा देखको, मिट दरकी पिड,
रोगपामे विनासता, निर्मल होय शरिर ॥१॥
कर्मरुपीयो रोग है, ज्ञानरुपियो पाठ,
कुंतन सत गठ बांधियो, मिले मुक्का ठाट ॥२॥

वार्ता—मगर ईतने पर भी समजना नही, फर भी देखा ! श्री जैनक असम्मी सिद्धांतोसे तथा मुर्तीपुजकोके मान्यवर आचार्योंके बनाये हुवे, टिकादि ग्रंथ मकर्णो बगैरेमें भी मुखपर मुखपति बांधके धर्म क्रिया करनका अधिकार सिद्धांतोंमे तथा ग्रंथकारोंमे ठाम ठाम चला है मगर मुर्तीपुजक लोग सिद्धांतोंके तथा ग्रंथकारोंके लेखाक मधुम (विरुद्ध) खुलमखुलस धर्मक्रिया करते है, शार्मीदेखिये शायर ये भाम अपना पाल छिपानेके वास्ते सत्य शिरोमणीपणा मग्न करत है, मगर यदि हमने भी जैनके असली सिद्धांतोंसे और मुर्तीपुजकोंके आचार्यों क बनाये हुवे ग्रंथ मकर्ण बगैरोंसे किंवा अन्य मतानुयायोंके बनाये हुए ग्रंथोंसे राग सहित हमेस मुखपर मुखपति जैन मुनिका बांधक रखना चाहिये गुरू तार जोर क साथ साफ साफ खुलासे वार हमने सिद्ध करक ा ह ईसी तोरसे मुर्तीपुजकोने भी जैन क असली और मा गर मम पाठस हाथमे मुखपति रखना ऐसा खुलासे वार

साफ साफ सिद्ध करके दिखलाना चाहिये, तब हम लोग ईन मुर्तीपुजकों की विद्वता भरी हुई पडिताइ की बाहादुरी समजेगे, अगर सिद्ध करके नही दिखलावेंगे तो फ़ेर इन लोगोको, तिर्थकरोके तथा ईनोके आचार्य वगेरोके आज्ञाके अराधक किस तोरसे समजना चाहिये इस वास्ते ईन मुर्तीपुजकोका पुर्ण दयाके साथ खेद प्राप्त होता हे के, ये मुर्तीपुजक लोग विचारे अजाण पावर प्राणियोका आत्म सुधारा किस तोरसे होवेगा,

मुहपति निर्णय बतिसी.

[दोहरा]

मुहपति राखी हाथमा, जो बाधे नही मुख,
साभल जो ते सात थइ, मुहपति निर्णय टूक ॥१॥
मुख वस्त्रीका सुत्रमां, भाखी जिन भगवंत,
उपयोग तेनो शुद्ध करे, ते साचो जिन सत ॥२॥
माहाराज माहावीरना, मुनि पचावत जाण,
पटो बाधे मुहपति, जिन आज्ञा प्रमाण ॥३॥
अर्थ करो जो मुख पटी, का बांधो नही मुख,
हाथे केडे राखखा, किण आज्ञा धरो मुख्य ॥४॥
आज्ञा ये धर्म जो कहो, ते पालो जीन आण,
मुख बाधीने मुखपति, आज्ञा करो प्रमाण ॥५॥
खुल्ले मुख बदता मरे, असंख्य वायु काय,

सावद्य भाषा ते कही, पचम अगनी मांय ॥६॥
जिवोंकी रक्षा हुवे, मुहुर्त द्वादश क्षेद,
मुख्य दर्शक यम ते, करो ये निचोड ॥७॥
दरेक शास्त्रमां मुखपति, कही तेनो छुं अर्थ,
तेह विचार कर्या विन, वस्त्रे करो अनर्थ ॥८॥
तुंगीयादि नगरी तणा, श्रावक चतुर सुजान,
उत्तरासण मुख कोश करी, पांचा वीर भगवान ॥९॥
आठ पडी कही मुहपति, भगवता अंग मोझार,
दोरो मांसी बांधवा, मुख सप्यो क्षणगार ॥१०॥
" ओघ निर्युक्तिक चुर्णी " मां, मुहपतिनु कद्दु मान,
चाऊ अंगुलने एक वेंत, दोरो मुख प्रमाण ॥११॥
' जैन तत्वादर्श " ग्रंथ छे, आत्माराम रचित,
अन्य मता पण वालस्य, तेमां कह्या अचित ॥१२॥
' माहाभारत " ना श्लोकमां, स्पष्ट अर्थ जणाय,
अर्थ अक्षर उचारतां, अगणित जीव हणाय ॥१३॥
येज ग्रंथमां वर्णव्यो, संन्यस्य मत अधिकार,
कपट तणी मुख पाटली, बांधणको आचार ॥१४॥
" निरावलीका सुत्र " मां, मद्द येम भाखत,
कपट तणी मुख पाटली, सोमिल नित बांधत ॥१५॥
जुओ " श्री मास पुराण " मां गौतम विषे कहत,
श्री माहावीर पासे जाई, मुहपति मुख बांधत ॥१६॥
वेद व्यास स्पष्ट कहे, जिन साधु आचार,
मुखबांधेली मुखपति धम सनातन सार ॥१७॥
शिव पुराणमां जाईलो कहयु येम निरधार ~

प्राण पहेला मुहपतिः मुख वांधण व्यवहार ॥१८॥
जैन हितेच्छु पत्रमां, उच डाक्टर विचार-
बांधी धातुनी मुहपति, करतां शस्त्रोपचार ॥१९॥
अजाण पणे एक वार जो, खुले मुख बोलंत,
तेने दंड इरिया वही; कपूर विजय कहंत ॥२०॥
मुख उघाडे बोलतां, सामायिकनी मांय,
सामायिक अग्यार दंड, शाध " समाचरी " मांय ॥२१॥
तुम प्रतिक्रमण सुत्रमां, श्रावकने व्रतमांय;
मुख उघाडे बोलता; अतिचार कह्या त्यांय ॥२२॥
एक वखत येम बोलतां, जो लागे अतिचार,
बोले वारंवारते, अणाचार निराधार ॥२३॥
अतिचारे इरिया वही, दंड तणो अधिकार,
अणाचारनो दंडशु, ते करजो विचार ॥२४॥
मुहपति विन मुख जो रहे, पडे मुख अपकाय,
वायु काय सचेत रज, मच्छर माखी हणाय ॥२५॥
विष्टा परथी मक्षिका, मुखपर वेसे आय.
अशुद्ध येवा मुख थकी, प्रभु भजन केम थाय ॥२६॥
मुख वांधी होय मुहपति थाय दयानो पोष,
अन्य जाणो पण देखीने, करे वस्त्र मुख कोश ॥२७॥
षड दर्शन समुच्य विषे, प्रगट कहेल जणाय;
लिंग जैननु मुहपति; मुख वाध्ये कहेवाय ॥२८॥
मुहपति मोढे होय तो, सौं जाने जिन सत,
माटे मुनिना मृतकने, मुहपति मुख वांधत ॥२९॥
मुख वांध्ये मन स्थिर रहे; लय लागे दिल माय,

प्रत्यक्ष फरक देख लो; किंचित संशय नांय ॥३०॥
श्रीजे मत मुकित हुय, लिये मुहपति पांघ,
जैन आराधिक लिंग है, समजे नहीं मर्दांघ ॥३१॥
इजी आलस्य छे घणा, लखता थाय विस्तार
विशेष माटे ग्रंथ छे; जुओ मुहपति विचार ॥३२॥
ओगणी येको त्रसमा गोंदल रही चोमास
मुनि मोहनजी ये रची, पचीसी कातक मास ॥३३॥

दखो ! बडे बडे अंग्रेज विद्वान भी इस विषय पर क्या लिखते है —

The religions of the world by Jhon Murdock L L D 1902 page 1°8 —

'The yati has to load a life of continence he should wear a thin cloth over his mouth to protect insects from flying into it

Chambers Encyclopaedia Volume VI London 1906 page 268 —

The yati has to lead a life of abstinence and continence he should wear a thin cloth over his mouth Sit

Mr A. F Rudolf Hoernle ph D Tubingen in his English Translation of Uvasagadasao Vol. II page 51 \ to No 144 write

Text muhapatti Skr mukha Patri lit a leaf f r uth a small piece of cloth suspended over the protect it against the entrance of any living

अंग्रेज महासय जॉन मुरडॉक एल. एल डी. इन्होने

" दुनियाके धर्म " पर साल १९०२ में एक ग्रंथ लिखाहै. उस ग्रंथके पृष्ट नंबर १२८ मे यति लोगोने किस तौरसे अपना आयुष्य क्रमण करना चाहीये यह लेख लिखा है. जिसमें वह स्थापित करते हैकी —

" यतीको ब्रम्हचर्येसे रहेने पडता हैं और मुखपर एक बारीक (पतली) वस्त्रीका बांधने पडता है ताके उडने वाले सूक्ष्म किडे मूखके अंदर न जावे " औरभी देखिये:—

चेंबर्स इन्सीक्लोपेडीया जिल्द नंबर ६ लंडन १९०६ पृष्ट नंबर २६८ में भी यतीके निस्वत नीचे मुताबक लेख हर्ज है:—

" यतीको अल्पाहार करके ब्रम्हचर्यसे रहेने पडताहै और मुखपर एक बारीक) पतली) वस्त्रीका बांधने पडता है, "

इन लेखोसे पूर्ण निश्चे हो चुकाके यतीको मुख पर वस्त्रीका बांधना फर्ज है

अब देखिये ! मुखपती किसको कहते है:—

मिस्तर ए एफ रुडोल्फ होर्नले इन्होंने " उपासंगदशा " इस ग्रंथका अंग्रेजीमे भाषांतर (तर्जुमा) कियाहै के. उस तर्जुमेके जिल्द २ पृष्ट नं ५१ नोट नंबर १४४ मे वह लिखते है के —

" मुखपती " जीसको संस्कृतमे " मुखपत्री ' याने मुखको ढक्कन याने सूक्ष्म जीव उडने वाले मुखके अंदर दाखल नहो इस गरजसे छोटा (तुकडा) कपडा मूहपर बांधा जाता है उसको मुखपती कहेते हैं

देखिये ! माहाशयजी खुले मुख बकनेवाले नाम भाषक कृतमि यति वगैरे मुर्तीपूजक लोकोके वास्ते कैसा काफी इन्साफ अंग्रेजोने दिया हैं ताके सर्व संदेहकि नास्ति करडालि है ताहामभी यति वगैरे मूर्तीपूजक लोक

हाथमे मुसपति रखनेकी मोंन मारते फिरते है क्योंकि ये लोक सर्वज्ञ भ-णित सिद्धांतका अवलोकन नही करते हुए, हुआ सर्वज्ञके पुत्र साधुआचार्य अर्थात गणोधराचार्य मुर्तीपुजकोके कल्पित केवलि या हुवे है उन्होंने जो टीका, चुर्णी, भाष्य, निर्युक्ति, ग्रंथ प्रकरणादि कचरा पटिके टेकरे बनाये है, उक्त टेकरोंकि उपर सवार होके कपोल कल्पीत कोंन मारनेके वास्ते मुर्तीपुजक लोग बडे कहे है, मगर हमको ऐसे येसा नमर आता है के जो मुर्तीपुजकों-के कहि कल्पके केवलि हुए है, उनीके पिछेके पिछेकि किया केवलीके मिथ्येही वस्तुता भयस्वकी मिश्रताके साथ नमर आति होवगी इसमेंतो कोई तरेका शक नहीं है, मगर मुखके सामनेकी वस्तु तो मायो दससे ही नमर आती है इस लिये उक्त इसमोंसे सर्वज्ञ भणित सिद्धांतोंका मधम नहीं हो सक्ता; मात्र सर्वज्ञ प्रभित सिद्धांतोके प्रतिकुल गणोधोके शिणगार टीकाकि रचना करके भव्यमार्गोको कुमार्गका रास्ता बतला गये है इसमें कोईभी तरेकि शंका नहीं है, ये भी एक मेरावर्णन स्थान है, मगर साम अफ-सोसके विशेष खुलासा नहीं करना चाहते है, सबर करो सबर करो !! सबर करो !!!

ॐ शान्ति ! ॐ शान्ति !! ॐ शान्ति !!!

—: वर्ग ११ वा :—

—जैनके असली श्रावकोका स्वरुप—

— ० —

[श्रावक. *]
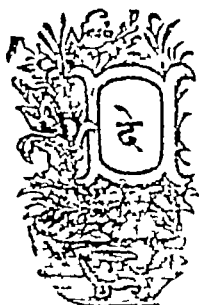
देखिये ! हमने मूर्तीपूजकोंके कितनेक ग्रंथोंमे अवलोकन भी किया है. और मूर्तीपुजकोंके मुखसेभी सुना है के जैन साधुको द्रव्य पुजा नही करना मगर श्रावकोंको द्रव्य पुजा अवश्य करना चाहिये. मगर ये कहना और लिखना मूर्तीपुजकोंका साफ खोटा है क्योंकि सर्व ज्ञप्रणित सिध्धांतोंमे श्रावकोंके गुण और लक्षण ज्ञानी पुरपोंने फरमाये है. उसमें मुनिराजोंकी सेवा भक्ति करनेका अधिकार है, लेकिन जिन प्रतिमाकी पूजा करनेका लेख किंचिन मात्रभी नजर नही आता है इस लिये श्रावको ने जिन प्रतिमा की जा कदापि नही करना चाहिये, किंतु ह्यापे किंचित मात्र श्रावकोंके गुण और लक्षणोंका स्वरुप दरज करते है, विपेश अधिकार देखना होवे तो जैन तत्वप्रकाश देखो:—

---

* ' श्रावक ' शब्दमे ३ अक्षर है श्र—श्राद्ध, व—विवेक, क—क्रिया अर्थात जिस मनुष्यमें श्रद्धा हो और जो विवेक पूर्वक क्रिया करे, सो श्रावक. अथवा श्रावक शब्द की ' श्रु धातु है श्रु—श्रवण करना, अर्थात जो मनुष्य धर्म कथा श्रवण करे- सो श्रावक

सेवामे अनुरक्त, ग्रहिणी (स्त्री) को धर्म मार्गमें प्रवर्तनेवाले; या कुल वधू जैसे अवगुणों की लज्जा यूक्त रहनेवाले, मर्यादा युक्त प्रवर्तनेवाले योग्य आहार (भोजन) व्यवहार. [व्यापार] करनेवाले, सत्पुरुषों की सगत करनेवाले, सदा सुसती (सु बुद्धी) वंत, महा बुद्धीवंत, कृतज्ञ (किये उपकार के माननेवाले,) षड्रीपु (काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, मत्सर, यह छे शत्रु) को स्व वसमे करने वाले. सदा शास्त्र के श्रवण करनेवाले यथा विधी धर्म के अराधनेवाले, महा दयालु, पाप से डरनेवाले, यह ' सागार ' (श्रावक) धर्मके आचार [आदरने योग्य गुण] बतांये. इन गुण युक्त होवे सो श्रावक

अनंतानु बधी, अप्रत्याख्यानी, और तीन मोहनीय, यह ११ प्रकृतीका क्षयोपसम होता है* तबजीव पचम देशविरती गुणस्थानको प्राप्त होता है, सर्व विरती (साधु) की अपेक्षा से देश विरती कहे जाते हैं

सागार—आगार युक्त धर्म सो सागार धर्म, साधूका मार्ग अणगारका है, अर्थात घरका त्याग कर, दिक्षा ग्रहण करे पीछे, तानें उम्मर जिनेश्वर की आज्ञामें चले त्री करण त्री योग से सपुर्ण पच महाव्रत पाले सो अणगार और श्रावक घरमे रहकर १२ व्रत हैं, उसमें से १—२ यावत १२ जितनी सक्ती होवे उतने ग्रहण करे, इसमें कर्ण—योगकी भी विशेपता नहीं हैं. मरजी होवे तो एक कर्ण, एक योग से, और मरजी होवे तो तीन करण, तीन योग से व्रत ग्रहण करे.

दृष्टात—साधू के व्रत तो मोती जैसे है जैसे मोती आधा—पाव ग्रहण नहीं होता है, लेना होय तो संपुर्ण लिया जाता है तैसे साधूका मार्ग

---

*अ—क्रोध-मान-माया लोभ-४=।।अः—क्रोध-मान-माया-लोभ४=।। मिथ्यात्व मोहनी-मिश्र मोहनी-और समकित मोहनी-३=।। जुमले ११ प्रकृति

जो अंगीकार करना धारेगा उन्हे पांच ही महाव्रत धारण करना पड़ेगा और श्रावक के व्रत सुवर्ण जैसा है शक्ती होय तो मासा ग्रहण करो, और इच्छा होय तो तोला भर वैसे ही, मरजी होय तो एक व्रत और शक्ती होय तो बारे ही व्रत धारण करो

समण सहीय साधु, उपासक सहीय भक्त अर्थात साधूकी भक्ति करनेवाले श्रावक होते है इसलिये श्रावकका दूसरा नाम समणोपासक भी कहा जाता है

श्री ठाणायंगजी सुत्रमें साधू ओंकी अपेक्षा से आठ प्रकारके श्रावक कहे है

आठ प्रकारके श्रावक,

१ ' अम्मापिउ समाणे ' साधू ओंकि सब कार्य आहार-पानी वस्त्र—पात्र—औषधी प्रमुखकी चिंता रख सात उपभाव और कदाचित प्रमाद वश होकर साधू समाचारी से चूक जाय तो आंखो देखकर भी स्नेह रहित न होवे, यथा उचित विनय सहीत हित शिक्षण देवे सो माता पिता समान श्रावक

२ ' भाय समाणे ' —हृदयमें तो साधूओंपर बहुत स्नेह रक्खे, परं तु विनय भक्तीमें आलश करे, और संकट समय यथा योग्य प्राण ओंसे सहाय्यता करे, सो भाइ समान श्रावक

३ ' मित्र समाण ' —कोइ कारण सिर साधू ओंसे रुस जाय परं तु अपने स्वजनोंसे भी साधु ओंको अधिक समजे सो मित्र समान श्रावक

४ 'सव्वति समाणे ' अभी मानी कठिन हृदयी, छिद्र गवेषी कदाचित प्रमाद वश साधु चूक जाय तो उस दोष को प्रकट करे सो शौक [illegible] श्रावक

[illegible] ' आय समाणे ' —साधुओंका प्रकाश शुभार्थ जिसके हृदयमें

यथार्थ विदित होय मूले नही सो अदर्श (आरसि काँच) जैसा श्रावक.

३ ' पताग समाणे ' साधु ओंके वचन का जिसको निश्चय भरोसा (भरवसा) नहीं. कुर्त्तो—पखन्डीयो के भरमाने से जिसका चित पताका की तरह फिर जावे. सो पताका समान श्रावक.

७ ' [illegible] समाणे' साधु ओंका सद्बोध श्रवण करके भी अपना असत्य आग्रह ([illegible] हुइ बात) का त्याग न करे, सो खीला—खूटा समान श्रावक.

८ ' [illegible] समाणे ' —हित शिक्षा देने वाले साधु ओंकी निन्दा करे तथा अयो[illegible] अपमान करे, कलह चडावे, सो अशूची भिष्टा जैसा श्रावक

इन [illegible] समान और खरट समान श्रावक मिथ्या दृष्टी है परन्तु साधुक[illegible] को आते है इसलिये श्रावक कहे जाते है.

' श्रावक के २१ गुण '

अखुद्दो रुवव, पगइ सोमो लोग पियाओ ॥
अक्रूरो भीरु असढ, दक्खिन लजालू दयालू ॥१॥
मझत्थ सुदिठी, गुणानुरागी सुपक्ख जुत्तो सूदिह ॥

विसेसन्नु वूधानुग, विनीत कयनु परहिय कारिये लद्धलखो ॥२॥

१ ' अखुद्दो'—अक्षुद्र, अर्थात क्षुद्र (खराब) स्वभाव [प्रकृती] करके रहित, सरल, गंभीर, धैर्यवंत, अपराधीका भी खोटा नही चिंतवे

' २ रुवव- रुपवंत, तेजस्वी, अंगोपाग की हिणता रहित पांचो ईन्द्री पुर्ण सुंदर और सशक्त होय,

३ ' पगई सोमो ' प्रकृतिका सौम्य—शीतल—क्षमावत शांत, सर्व से हिलमिल कर चलनेवाले, विश्वास निय होय

८ 'लोग पियाओ' ईस लोकमे पर लोकमे, और उभय (दोनो) लोकमे विरुद्ध निंदनिय दुःख प्रद होय सो काम नहीं कर १ गुणवंत निंदा दुर्गुणी मुर्ख की हांसी, पुज्य पुरुषों की ईर्षा, बहुत लोकाक विरोधी की साथ मित्रता, देशक सदाचारका उल्लंघन, सामर्थ्य हो स्वजनो की असाहयता, इत्यादि इस लोक विरुद्ध कार्य गिने जाते है १ सेवी कर्म, कोटवालपणा, ठेकादारी, धनकटाई, इत्यादि महा हिंसक कर्म इस लोक विरुद्ध नहीं भी गिने जाय तो भी परभवमे दुःख दाता होते है १ सात दुर्व्यसन के सेव * सो दोनो लोक विरुद्ध कर्म गिना जाता है ईन तिनो को छोड, सर्व जनको प्रिय वल्लभ लगे एसे काम उदार भाणाम से दान, निशुद्धसील नम्रभाव

* श्लोक—द्युतच मांसच सुराच वैश्या पापर्धी चौर्य परदार सेवा, एतानि सप्त कु—व्यस्नानि लोके, घोरातिघोरे नर्कं गच्छति ॥

अर्थ १ जुवा खेलनेवाले, या सट्टेके वैपारी घरका धन गमाके चोरी आदि कर्म कर इज्जत गमा दिवाल्य निकाल, राज पंचक गुन्हेगार बन, मर्यादि दुर्गतीन बन्ध जाते है २ मांस अहारी निर्दयी पशुओंकी घात कर त २ मनुष्या को भी मार डालते हैं और इन घोर कृत्यस नर्कमे जाते है ३, मदिरा—दारु पिनवाले शुद्ध बुद्ध भ्रष्ट हो मिट्टि भोगनका मुख्य बन, माता, भगनीस औरस व्यभिचार कर नर्कमे बन्ध जाते है ४ वैश्या गमनी जाती धर्मसे भ्रष्ट हो, धन मुष्टी अकर भमा और गरमी आदि रोगसे अकाल मृत्यु पाकर दुर्गतीमे बन्ध जाता है ५ पारधि शिकारी निष्टुर कठोर हृदयी बन अनाथ निरपराधी जीवोंका वध कर नर्कमे भमोंके हाथसे अपनी भी ऐसी ही दशा—खराबी कराता है ६—७ चोरी और परस्त्री गमन करनेवाला सब लोकोंमे निर्लज्य बन, राजो पंचका गुन्हेगार हो अकाले मृत्यु पाकर दुर्गतिको बन्ध जाता है, एस यह ७ दुर्व्यसनोका सेवन दोनो लोक विरुद्ध है

शुधाचार विनय नम्रतादि धारण करे,

५ 'अकुरो क्रूर द्रष्टीवाला नहीं होवे किसीके भी छिद्र नहीं देखे. छिद्र ग्राहिका चित सदा मलीन रहता हैं

६ 'भीरु पापका '—कुकर्मका लोकोपवादका पर भवका अनाचारका डर रक्खे. जो डरेगा सो ही पापसे बचे

७ 'असठ' मुर्खाइ पणा रहित होवे, दगा कपट नही करे, क्योकि कपटीका चित सदा मलिन रहता है, कपटी पर जगतका विश्वास नही रहता हैं, इस लिये सरल रहे §

८ 'दक्खीन' दक्ष—विचक्षण निधामे समजनेवाला, अवसरका जाण होय,

९ 'लचालु' लोकोंकी लज्जावंत, व्रत भंग की कुकर्मकी लज्जा धरे, लज्जावत कितना ही दुर्गुणी हुवा तो ठिकाणे आता हैं, लज्जा सर्व गुणका भुषण है, *

---

§ श्लोक—यथा चित तथा वाचो, यथा वाचस्तथा क्रिया ;
धन्यस्ते त्रितय येषां, विष वादो न विद्यते,

अर्थ—जैसा चित वैसा वचन और जैसा वचन वैसी क्रिया, इन तिनोमे जिनको विसवाद नहीं है, उनको धन्य है

* लज्जा गुणौघ जननी, जननी मिव,
स्वा मत्यन्त शुद्ध हृदया मनुवर्ते मानाम ॥
तेजस्विन सुख मसुनपि सत्य जन्ति
सत्य व्रत व्यस निनो न पुनः प्रति ज्ञाम ॥१॥

अर्थात्—लज्जा है सो गुणोंके समुहको उत्पन्न करनेवाली और अपनी माताकी तरह शुद्ध हृदय और स्वाधिन रहने वाली, प्रतिज्ञाको तेजस्वी और सत्य व्रत धारन करनेवाले पुरुष नहीं छोडते परंतु अपना प्राण भी सुखसे त्याग कर देते है.

१० 'दयालु' दुःखी प्राणीको देखकर अनुकंपा लावे, यथा श-क्ति साह्य उपजावे, बने वहां तक उसका दुःख मिटावे मृत्युके मुखसे छुडावे दयालु होवे, 'दया ही धर्मका मूल है'

११ 'मध्यस्थ' मध्यस्त प्रणामी होय, किसी भी अच्छी और बुरी वस्तुपर अत्यंत राग द्वेष न धरे, शुष्क-लुक वृति रखे, क्योंकि अत्यंत ग्रधी पणा अत्यन्त निबद-मजबुत कर्मोका बंध करता है, फेर भो छुटना मुशकल हो जाता हैं और लुख वृतिसे स्थील कर्मोका बंध होता है, सो विग्न छुट जाता है,

व्यासजी रणजिर्थसिहजीने कहा है-

जो समदृष्टी जीवडा, करे कुटंब प्रतिपाल

अंतर पर न्यारो रहे, ज्यों धाय खिलावे बाल ॥२॥

१२ 'सुदिठी' सदा सु-भली द्रष्टी रखे, किसीका भी बुरा नहीं चिंतावे, किसी भी पदार्थका विकार द्रष्टीसे नही देखे, सौम्य द्रष्टी नम्र रखे,

१३ 'गुणानुरागी' ज्ञानवंत, क्रियावंत, क्षमावंत, धैर्यवंत, वि-नीत, धर्म दिपानेवाला, ब्रम्हचारी, संतोषी इत्यादि गुणोंके धारक जो होवे, उनके गुणका अनुराग करे-उनपे प्रेम धरे बहुमान करे स्तव-न पर जावे किर्ती करे गुण दिपावे खुशी होवे की अपने समय एस उत्तम पुरुष की उत्पती हुई तो ईनसे अपने धर्मकी उन्नती होवेगा एसा अनुराग धरे,

१४ 'सुपक्ख जुत्ते' न्याय पक्ष धारण करे अन्यायी पक्षका त्याग करे कर कोई कहेगा की तुमने राग द्वेष करने की प्रथम मा ना करी और फिर अच्छेका पक्ष धारण करने को कहते हो ? उनसे कहा जाता हैं, की जेहरको जेहर और अमृतको अमृत कहनेमें कुछ

हरकत नही है, जो जेहर अमृत एक जानेगातो जरूर मिथ्यात्व लगेगा खोटे को खोटा और अच्छेको अच्छा जानेगा तवही खोटे को छोडेगा और सु पक्षी उसे भी कहते है की जिसको परिवार स्वजन कुटम्ब के लोग अच्छे धर्मात्मा शुद्धचारी धर्म कृत्यमे साहायके करनेवाले होवे,

१५ 'सुदीह' अच्छी दीर्घ--लंबी द्रष्टीवाला होवे कोई भी कार्य विगर विचारा नही करे जिस कार्यमे वहुत लाभ और क्लेश (मेहनत) थोडी होवे वहुत जन स्तुती श्लाघा करे ऐसा कार्य करे जो कर्ता कर्मके निपजानेको और फलको जाणेगा वो लोक अपवाद-से वच सकेगा विगर विचारे करनेवाला पीछे पछताता है,

१६ 'विसेसन्न' विज्ञानी होय अच्छी बुरी सर्व वस्तुका जाण होए क्योंकि अच्छी २ देखी और खोटीको नही देखी होगा वो खो-टीसे कैसे बचेगा? नवतत्वसे भी ३ जाणने योग्य ३ आदरने योग्य और ३ छोडने योग्य है; ईन तीन ही का जाणपणा विस्तारसे करना पडता है, गायका और आकका दुध सुवर्ण और पितल एक सा होता है अजाण ठगा जायगा *

---

* सवैया—कैसे कर केतकी कणेर एक कह्यो जाय,
आक और गाय दुध अंतर घणेरो है
पीरी हो तरेही पण रोस करे कंचन की,
कहा काग वानी कहा कोयल की रेट है.
कहा भानु तेज कहा आगीयो विचारो कहा,
पुनमको उजालो कहा अमावस्य अन्धेर है.
पक्ष छोडी पारखो निहाल देखो नीको करी,
जैन विना और वेन अतर घणे रो हैं.

१७ 'वृधानुग' अपनेसे गुण ज्ञानमें जो वृद्ध होवे उनकी से वा भक्ती कर तथा आप ज्ञान सत्य, सील, तप, धर्मादी गुणों करके वृद्ध होवे †

१८ 'विनीत' सबसे सदा नम्रभूत हो रहे 'धर्मका मूल विनय ही है' विनयसे ज्ञान, ज्ञानसे दर्शन (श्रद्धा) दर्शनसे चारित्र और चारित्रसे मुक्ती की प्राप्ती होती है,

१९ 'कयनु' किये हुये उपकारका मानन वाला होय; कृतघ्नी न होवे महा है कृतघ्ना महा मारा' इस कृतघ्नीका जबर बोजा है ऐसा जाण श्रावक उपकारीयोंके उपकारसे ऊरण होनेकी अभीलाषा रक्खे है*

२० परहियथे कारीये' जो श्रम करनेसे अन्यका हित और आपनेको दुःख होता होय तो अपने दुःखकी दरकार नहीं करता

† श्लोक— तप श्रुत धृति ध्यान विवेक यम संयमे
य वृद्धास्ते ऽत्र शस्यन्ते न पुन पलितां कुरे ॥ १ ॥

अर्थ—तपश्चर्यामें, धैर्यमें, शास्त्रमें, ध्यानमें, विचार व नियम [पञ्चखाण] में, संयम [इन्द्रीय दमन] में इत्यादि गुणों में जो वृद्ध (बुड्ढे) होय उनको वृद्ध [बडे] कहना परन्तु श्वेत, धोले बाल (केस) वालेको वृद्ध (बडे) नहीं कहे जाते है

* ठाणायंगजी सूत्रमें फरमाया है की तिन जनोंके उपकारसे उरण होना मुशकिल है, १ माता पितासे की जिनोने अति कष्ट सह पुत्रकी प्रवरती करी है। उनके उपकारसे उरण होने उनको सदा शुद्ध पावरदि तलका मर्दन कर स्नान कराये, फिर सर्वालंकारसे विभुषित कर भावय भोजन कराये किंबहुना जो जीवत रहे वहां तक उनको अपनी पिठपर उठाय फिरे किंचित मात्र मन नहीं दुःखाये तो भी उरण नहीं होय हां! जो

परोपकार करे कहा हैं की 'परोपकाराय पुन्नाय' परोपकार करना यह महा पुन्य उपराजनेका स्थान है

२१ 'लद्ध लक्खो' जो ग्रहण करने जैसा ज्ञानादि गुण है, उस का लक्ष पुर्वक ग्रहण करे, जैसे लोभी धनका, और कामी स्त्रीका लालची होता है तैसे श्रावकजी ज्ञानादि गुण ग्रहण करने के लालची होवे सदा नया २ ज्ञान ग्रहण करे, कहा हैं 'खंड खडे तु पडेतु' खंड २ कर के अर्थात थोडा २ ज्ञान ग्रहण करके भी बुद्धिवत थोडे कालमे पन्डित होते है, एकेक गुण ग्रहण करने से अनेक गुणका धारी हो जाते है, ईस लिये सदा नवीन २ ज्ञानादि गुण ग्रहण करनेको

श्री जिनेन्द्र प्रणित धर्ममे उनको स्थापना कर समाधीसे आयु पुर्ण करावे तो उरण होवे.

श्लोकः— अन्य लिंग परि भ्रष्टो, जैन लिंगेन सिध्यति ॥
जैन लिंग परि भ्रष्टो, वज्र लेपो भविष्यति ॥— प्रभास पुराणो—

उपकारका बदला देना चुकाया जाणणा २ सेठका को जिनोने दारिद्र पर तुष्टमान हो द्रव्य (पुजी) देकर या अनेक तरह साहाय्य देकर उसे श्रीमत बना सुखी कर दिया और कर्म योग वो सेठ दारिद्रता निर्धनता को प्राप्त हुये उनको वो अपना सर्व द्रव्य स्मरपण कर पावित्र की तरह चाकरी करे तो भी उरण न होवे परतु जिनेन्द्र प्रणित धर्मसे स्थापणा कर समाधी भाव युक्त आयुष्य पुर्ण करावे तो उरण होवे ३ धर्माचार्य गुरुसे की जिनोने फक्त एकहा आर्य धर्मका सब्दोध रुप शद्ध सुन के देवलोक मे पहोचाया वो देवता उन गुरु महाराज की यथा योग्य भक्ती करे परिसह उपसर्ग दुर्भीक्षादि से बचावे तो भी ऊरण नही होवे परंतु जो कवी धर्माचार्य जी जिनेंद्र प्रणित धर्मसे चलित हो गये होय उनको किसी भी योग्य उपायसे पिछे धर्म में स्थिर करे तो ऊरण होवे.

लब्ध लक्षी होना, सामायिक शुभ से लगी कर द्वादशांगका पढी थए, सम्यक्त्व की क्रिया से क्रमानुसार सर्व पूजा की क्रिया सकका अभ्यास करे पहिले चतुर्थ कुलमे देखिये वग नागरीका पालित श्रावकका कहा है, 'निग्गंथ पव्वयणे, सावय सेवी कोविए' निग्रंथ प्रवचन (शास्त्र) का पालित श्रावक पारगामी था और गणमर्ताओं को कहा है की 'सिलसिलंता बहु सुया' सिलसिलंवी बहोत श्रुतज्ञानी भा ी, इन वचनोंसे समझा जाता है कि आगे श्रावक श्राविका शास्त्र के जाण थे इसलिये अभी भी श्रावक श्राविकाको शास्त्र जाण होना चाहिये यह गुण युक्त होवे उनको श्रावक कहना, सभी युक्त गुण स्विकारना,

— श्रावकके २१ लक्षण —

१ 'अल्पईच्छा' —थोडी इच्छा—विषय तृष्णा शब्द रूपादिक का विषय धर्मी कर, विषयमें अत्यंत मग्न न होवे शुभ वृत्ति रहे,

- 'अल्पारंभ' छे कायका आरंभ कराये नहीं, अनथा दंड सेवन करे नहा, जितना आरंभ घटता हो उतना घटानेका उद्यम करे,

३ 'अल्पपरिग्रही' धनकी तृष्णा थोडी, कुकर्म कुव्यापार की इच्छा नहीं, जितना प्राप्त हुवा है उतनेपर संतोष रक्खे मर्यादा सकोचे,

४ 'सुशील' ब्रम्हचर्ययत, तथा आचार गोचर प्रशंसनिय रखे

५ 'सुव्रति' व्रत प्रत्याख्यान शुद्ध निरतीचार घटते प्रमाणसे पाले,

६ 'धर्मीष्ट' नित्य नियम प्रमाणे धर्म क्रिया करे,

७ 'धर्म वृति' मन वचन काया के योग सदा धर्म मार्गमें

प्रवृतता रहे,

८ 'कल्प उग्रविहारी' जो जो श्रावक के कल्प (आचार) हैं उसमे उग्र विहार करनेवाले अर्थात उपसर्ग उत्पन्न हुये भी स्थिर प्रमाण रक्खे

९ 'महा संवेगी विहारी' सदा निवृति मार्गमें तल्लीन हो रहे,

१० 'उदासी' संसारके कार्यमे सदा उदासीन वृति युक्त रहे

११ 'वैराग्यवंत' सदा आरंभ परिग्रहसे निवर्तने की अभीलाषा रक्खे,

१२ 'एकांत आर्य' निष्कपटी-सरल-बाह्याभ्यंतर एक सरिखे रहे,

१३ 'सम्यग मार्गी' सम्यक ज्ञान दर्शन चरीता मे रीते सदा प्रवर्ते

१४ 'सु साधु' धर्म मार्गमे नित्य वृद्धि करते आत्म साधन करे, प्रणाम से अवृत सर्वथा बंध कर दी है, फक्त संसार विवहार साधनेके द्रव्यसे हिंसा करनी पडती हैं * इस लिये साधू जैसे ही है,

१५ 'सुपात्र' ज्ञानादि वस्तुका बिनाश न होवे तथा दान फली भूत होवे.

---

* हिंसाकी चौभंगी-१ द्रवसे हिंसा और भावसे हिंसा सो कषाइ आदिका जीवका वध करे सो २ द्रव्यसे हिंसा और भावसे अहिंसा सो हिंसाके त्यागी मुनिराज को आहार विहार आदिक मे विनाउपयोग हिंसा निपजे सो ३ भावसे हिंसा और द्रव्यसे दया द्रव लिंगी तथा अभव्य साधु करे, ४ और द्रवसे भावसे दोनोसे अहिंसा सो अप्रमादि तथा केवल ज्ञानी मुनिराज पालते है.

छम्य लसी होना, सामायिक सुम से लगा कर द्वादशागार पठी सस, सम्यक्त्व की क्रिया स छमक्कर सर्व दुर्वी की क्रिया तकका अभ्यास करे पहिले चतुर्थ कुममे देखिये चरा नगरीका पालित श्रावकका का है, 'निर्गंथ पव्वयणे, सावय सेवी कोर्दीय' निग्रय प्रवचन (शास्त्र) का पालित श्रावक पारगामी था और राजमतीजी का कहा है की 'सिस्लवना बहु सुया' शिस्यवती बहोत शास्त्रकी मानी, इन वचनोंस समजा जाता है कि आम श्रावक श्राविका शास्त्र क जाण थे इसलिये अभी भी श्रावक श्राविकाका शास्त्रका जाण होना चाहिये यह ' गुण युक्त होवे उनका श्रावक कहना, सभी शुद्ध गुण स्विकारना,

— श्रावकके २१ लक्षण —

१ 'अल्पेच्छा' —थोडी इच्छा—विषय तृष्णा बहु स्वादिक का विषय कमी कर, जिसपमें अत्यंत मग्न न होवे तुम वृति रह,

'अल्पारम' छ कायका आरभ बधावे नही, अनथा दंड सेवन करे नहा, जितना आरंभ घटता हा उतना घटानका उद्यम करे,

३ 'अल्पपरिग्रही' धनकी तृष्णा थाडी, कुकर्म कुव्यापार की इच्छा नहीं, जितना प्राप्त हुआ है उतनापर सताप रक्ख मर्यादा मकावे,

४ 'सुशील' ब्रह्मचर्यवत, तथा आचार गोचर ब्रह्मविनिय रख

५ 'सुव्रति' व्रत प्रत्याख्यान शुद्ध निरतीचार घटते प्रमाणसे पाले,

६ 'धर्मीष्ट' नित्य नियम प्रमाणे धर्म क्रिया कर,

७ 'धर्म वृति' मन वचन काया क योग सदा धर्म मार्गमे

प्रवृतता रहे,

८ 'कल्प उग्रविहारी' जो जो श्रावक के कल्प (आचार) हैं उसमे उग्र विहार करनेवाले अर्थात उपसर्ग उत्पन्न हुये भी स्थिर प्रमाण रक्खे

९ 'महा संवेगी विहारी' सदा निवृति मार्गमे तल्लीन हो रहे,

१० 'उदासी' संसारके कार्यसे सदा उदासीन वृति युक्त रहे

११ 'वैराग्यवंत' सदा आरंभ परिग्रहसे निवर्तने की अभीलापा रक्खे,

१२ 'एकांत आर्य' निष्कपटी—सरल—बाह्याभ्यंतर एक सरिखे रहे,

१३ 'सम्यग मार्गी' सम्यक ज्ञान दर्शन चरीता मे प्रवीते सदा प्रवर्ते.

१४ 'सु साधु' धर्म मार्गमे नित्य वृद्धि करते आत्म साधन करे, प्रणाम से अवृत सर्वथा वध कर दी है, फक्त संसार विवहार साधनेके द्रव्यसे हिंशा करनी पडती हैं * इस लिये साधू जैसे ही है,

१५ 'सुपात्र' ज्ञानादि वस्तुका विनाश न होवे तथा दान फली भूत होवे

---

* हिंसाकी चौभंडी—१ द्रवसे हिंसा और भावसे हिंसा सो कषाड आदिका जीवका वध करे सो २ द्रव्यसे हिंसा और भावसे अहिंसा सो हिंसाके त्यागी मुनिराज को आहार विहार आदिक मे विनाउपयोग हिंसा निपजे सो ३ भावसे हिंसा और द्रव्यसे दया द्रव लिंगी तथा अभव्य साधु करे, ४ और द्रवसे भावसे दोनोसे अहिंसा सो अप्रमादि तथा केवल ज्ञानी मुनिराज पालते है.

१६ 'उत्तम' मिथ्यात्वी, सम्यक्त्वी आदिकसे गुणाधिक भेद है

१७ 'क्रियावादि' पुन्य पापके फलको माननेवाले शुद्ध क्रिया करनवाले

१८ 'आस्तिक्य' दृढ श्रद्धावंत जिनेश्वरके या साधुके वचन पर पुर्ण प्रतीतवंत,

१९ 'आराधिक' जिन वचन अनुसार करणी करनेवाले शुद्ध हृति

२० 'जैन मार्ग प्रभावक' तन, मन, धन, करके धर्मकी उन्नती करे

'अर्हतके शिष्य' साधु जेष्ट शिष्य, और श्रावक लघु शिष्य, एसे अनेक उत्तमोत्तम गुणके धारणहार श्रावक होते है.

—: वर्ग १२ वा :—

—सूरी मंत्र वगैरो कि उत्पाति—

देखिये ! बारा वर्ष महा दुष्कालमे जो मुनि संयमसे भ्रष्ट होगयेथे उनोमेसे एक जीवाजी गुरुने विचार कराके नविन मत निकाले सिवाय अपना गुजर नही चलेगा और आदर सत्कारभि नहि मिलेगा तो नविन मत कैसा चलाना चाहीये ऐसा विचार करके विधत्र पाटणमें माहा समर्थवान ब्राम्हण राम भट्टका पूत्र कृस्न भट्ट रहेता हे. उसके पास जाके विनंति करके कहेनाके हमारे प्राचीन जैन धर्मके विरुद्ध नविन मत निकालनाहे सो कैसा करना चाहिये तब कृश्न भट्ट बोलाके तुम प्रतिमाकि पूजाधारण करो और ये पाच बात तुमारे देवकी प्रतिमाको नहि होना चाहिये, येकतो प्रतिमाके हातमे शस्त्र रखना नही दुसरी प्रतिमाको कोइ वजेकि असवारी नहि होना, तिसरी प्रतिमाके सामग्री नही होना, चोथा प्रतिमाको भोग लगाना नहि, पांचवा प्रतिमाको रातका सुलाना नही, ये पाच बातकि प्रतिमाके पास नास्ति करके जिन मुद्रा ध्यानमें प्रतिमा स्थापित करो और में तुमको सुरिमंत्र देताहु सो तुमने होम करके ये सुरिमंत्र सुणाके पिछे प्रतिमाको मंदिरमे स्थापित कर देना सो तुमारा मत बडे धाम धुमसे चलेगा. तिवारे जीवाजी गुरु सुरिमंत्र लेके अपणे ठिकाणे आये और कितनेक अपने श्रावक बनाकर मदिर प्रतिमा स्थापित करि मंदिर प्रतिमा विर निर्वाणके बाद ८८२ वर्षसे और

हालतक कायमहे और उक्त तिनु बाते जैनके असलि सिध्धातोसे विलकुल बरखलाफ है और सुरिमंत्र वगैरे मत्र हालतक ये मुर्तीपूजक लोग सेवन करते है और मुर्तीपुजाका मत थोडे कालका निकला हुवाहे ये अधिकार शकराचार्यका हुवा जिन प्रतिमा स्थिर प्रकाश इस ग्रथमे हे. ये ग्रंथ हमनेवि क्रम समत १९४२ कि सालमे निजाम राजके नोरंगावाद शहरके रहित सेठ रत्न चदजी खुसाल चंदजी चंडालिके भंडारमे अवलोकन कियाहे जिस माहा सयको देखनेकि इच्छा होवे तो वहांपे हाजर होके देखे

(इतित्व)

—; वर्ग १३ वा ;—

॥ दिगंबर मतकी उत्पति ॥

देखिये ! श्री जैनके एकादस अगादि प्राचीन और असलि सिद्धानोको दिगंबरी लोग विरुद्ध तरीके मानतेहै. इनोमे एक कुंद कुदाचार्य नामका आचार्य हुवे है उनोके वनाये हुये ग्रंथोंको सिद्धात मानते है हमे इन लोगोसे कोइ वास्ता नहीथा इनोकी कुछभी वात लिखना हम मुनासब नहीं समजतेथे कि-

तु यह लोगही हमारी झदा छेद करते है अतःएव दो बाते इनाके बारे हमे अनिछासे लिखनी पडती हे क्या किया जाय जब खास करके मुह अंगली देव तो फिर क्या करे अतःएव हम यहां पर दिगंबर मतकी उत्पति वगेरेका कुछ हाल लिखते है पाठक गौरके साथ पढ़,

दिगंबर का हमारे उपर लेख

यान इंद्रियाके गुरु मलिन वस्त्र धारण करते है और स्नानभी नही करते है परंतु उनकी संख्या बहोत थोडी है व श्वेतांबर जैनियोंकी एक छातीसी शास्त्र है जैनीयोंकी दो बडी संप्रदाय अर्थात दिगंबरी और संवेगी श्वेतांबरोंका दुरीयाके साथ नही मिलना चाहिये वगैरे वगैरे

बाबु बनारसीदास इ स १८०? मथुराके धर्मो माहात्म्यम दिया हुवा जैन धमपर दिगंबरका व्याख्यान (हिंदि उपक्रम) हमे खेदके साथ कहना पडता है कि बाबु बनारसीदास जैस सुज्ञ सुशिक्षीत माहात्मयन जब एसा आक्षेप किया है तब औरो कि बात क्या कहे

उतपती

श्री वीर प्रभात्माके निर्वाणकी ६०० वर्ष व्यतीत हो गये थे उस वखतमे वसुभूती नामा एक आचार्य थे उनके १२५ शिष्य थे जिन मे से सममल एक (जो के दिगंबर मतका मुख्य आदिका कर्ता हुवा) एक समयका जिकर है के वो सैसमल साधु एक रत्न कंबल लायकर के आगा गुरुको बताया तब गुरु कहने लगे की हे भाइ एसा भारी मा लका वस्त्र साधुपर्के लिये अकल्पनिय हैं जिसे एसका साधुओ अपने उपयोगमे नही रखना चाहिये, क्योंके वितराग देवने एसा करना माफ

मना किया है अत:एव ये वस्त्र तेरे अनुपयोगी है वास्ते यह वापीस दे आवो, इसमे हित है परंतु सेसमलने वे रत्न कवलको वढिया समजकर वापिस न करते उसपर ममत्व भाव वढाया यत्नसे बांध रखी और आप वाहेर जावे और वापिस अदर आवे दोनो वक्त ममत्व भाव से सभालता रहा ऐसा करते वहोत समय व्यतित हो गया एकदा वो सेसमल साधु किसी कार्यको वाहर गया था पिछे से गुरु माहाराजने वे रत्न कवलको निकाल कर फाटके तुकडे २ कर और साधुवोंको पाव पुछने को दे डाले, सेसमल वाहेरसे मकान पर आया कवलको देखने लगा वे कंवल न मिलनेसे गुरुजीसे पुछा के मेरी कवल किसने ली है, तव गुरु महाराजने फरमाया की तुमनें कवलके उपर ममत्व भाव वढा दिया साधुवोंको चाहिये के किसी भी वस्त्र पात्रके उपर ममत्व भाव नहीं रखना योके ईसमे मनुष्य चारगति रुप संसारसे भरमण करता है इसी ममत्व भावमे तुमारा अहित होता हमने देखा अत:एव उसके टुकडे टुकडे करके साधुवोको पाव पुछनेके लिये वे टुकडे दे दिये गये है धन्य है जिन कलपी साधुवोको की वस्त्र तथा पात्र बिलकुल नहीं रखते है स्थिवर कलिप साधु वस्त्र पात्र रखते है सो संयमकी भावना तथा लजा रुप लक्ष्मीके लिये रखते हैं वस्त्र तथा पात्रके उपर ममत्व भाव करणा यह साधुका कल्प नही हैं क्योंकि उनपर ममत्व भाव करनेसे वे परिग्रकी गिनती मे हो जाता है और साधुको जाव जीव परिग्रहका त्याग है वस्त्र पत्रादि रखना वे केवल सयमके लिये है, न की उनपर ममत्व भाव वढाकर वस्त्र पात्रादिकके उपर संसारमे रुलनेके लिये अत एव हे देवाणु प्पीयातु ममत्व भावका त्यागकर यह सुनकर अपने मनमे द्वेप बुद्धिलाकर व्याख्यानके वक्त गुरुजीने जिन कल्पी साधुका वयान किया तव सेसमलने अविनयका सरण लेकर कहा की आप ईस मुजव क्यों नही चलते तव गुरु माहाराजने फरमाया की हे देवाणुप्पीया ईस पंच-

म ध्यानमे जिन कल्पीका पद विछेद है और इस पचम कालमे ये मन नही पाल सक्ता अतएव उसके मुवाफिक हम नही कर सक्ते है ति पर रोसमल्लने बहुत वाद विवाद गुरुजीसे करा उसको गुरुजीने बहुत समजाया नही माना केवल वामसकी द्वेष भावकी वृत्ति मगन होनेसे मे र प कोधरुप (चडाल) के वसमे होकर गुरुजीके पाससे निकल दिगमर वस्त्र रहित नम होकर चल दिया उसके साथ उसकी बहन भी नम होकर चल दी एक समय दोनो जने वस्तीमे आहार लेने का जा ते थे उस वक्त उस साध्वी को नम्न देखकर किसी वैश्याने सरमाने उसके उपर एक वस्त्र मकानके उपरसे गिरा दिया वस्त्र उसके उपर पडनेसे उसके भाईन जो पिछे फिरके देखा तो उसके उपर कपडा पडा हुवा नजर आया तब यो कहने लगा की एक वस्त्र रख तेरा नम रहना ठीक नही है जिस वक्त सेसमलने ये मत निकाला उस वक्त सिर्फ मोक्षका फर्क डाला यो चार बोल ये है केवली आहार न करे २ वस्त्रमे केवल ज्ञान नही ३ स्त्री को मोक्ष नही ४ जैन मतके दिगंबर आम्नायके सिवाय दुसरे को मोक्ष नही है ४ काल द्रव्य मुख्य है ५

बादमे ईसही मतमे एक कुमदचंद्र मुनि बहुत मत्सर पंडित हुए उसने असत्य अर्थात जैन धर्मसे चौरासी बोलका मुख्य फर्क डाला पिछेसे अब तक बहुत बातोका फर्क पड गया है,

॥ दोहा ॥

परली दिग पटसे सुन, बोल चौरासी फेर सर्व विषम बादे,
मयो मन तो बोत अंधेर

समय व्यतीत होते होते ईस मतमे से भी केई मत निकले है उनके मांय—

बीस पंथी तेरा पंथी और तारण तिरण वगैरे फिर वह सेसमल अपने को प्रसिद्ध करने लगा की मै जैनी हुं उसीसे ईनोकी नग्न होने की परंपरा चलने लगी और सेसमलने विश्वभुत और कोट वीर इन दोनोको प्रति वोध देकर अपने शिष्य बनाये जबसे ईनका दिगंब-र मत चला,

अब हम पाठकोके लिये असली दिगबर किसको कहेना उस का स्वरुप बतलाते हैं सो निचे मुजब—

असलि दिगंबरका स्वरुप.

हालके जमानेमे दिगबर मुनियोको जो दरेस हे वो द्वादस अ-ंगादिसे विरुद्ध हे और इस मजबकी वृद्धिका कर्ता कुंदकुंदाचार्य हुवा हे मगर कोपीन (चोला) कमडल ओर मोर पिछि वगेरे रखना पंडि-त कु साथ रखना वगेरे कार्य असली दिगबरके नही हे वर्तमान का-लमे जो दिंगवर कहेलाते हे कपोल कल्पित भासक दिगबर हे असली दिंगवर का स्वरुप निचे दिखलाते हैं,

---असल दिगंबरका स्वरुप---

जिन कल्पी मुनि [दिगवर मुनि] उसको कहते हे जो वज्र-रिषभ नाराच संघेण और समचोरस संठाण जिधन नव पुर्व * उतकृष्ट

* १ हाथी के उपर शिखर बद होदा (अवारी) होवे उतनी सुकी स्याही का ढिग करे उस स्याही से लिखा जावे उसे एक पुर्व कहा जाता हैं,

दस पुर्व के धारक घोरतप के धारक तिसरे पहेर गौचरी करे घर २ ब्रम्हचारी सम, दम, सम, के धारक नेत्र (आंख) मे प्रण, पावमे कंट्य, शरीरमे मास्य गोसी लगे तो निकाले नही देवक मनुष्यक तिर्यंचका महा कठोर परिसह उत्पन्न होनेस डरके पिछे हटे नही शरी मे रोग हानेसे दवा खावे नही, जिस मकानमे उतरे हावे, अगर उस पर अग्निका प्रकोप होवे तो आपके शरीरकी रक्षाके वास्ते बाहेर निकले नही, जिन ज्ञानके धारक होवे ज्ञानके बलसे सर्व बातको जा और अनेक लब्धिके धारक होये अगर उनके अंजलीमे १०० सा प डे पाणि के डाल देवे तो छिद्रा बच जावे परतु एक बिंदु जमीन गिरे नही और आहार पाणी लेनेको जावे तब आहार करावि बस बहेरानेवालेके हाथसे एक कण मुनि के अंजलिमे गिर जावे ता क रोज उसमे सबर करे लेकिन दुसरी वखत लेवे नही ईस बजेसे पाणी समज लेना, एक ठिकाण जितना अन्न पानी मिले उतने म ही स करना लेकिन दुसरे घर जाना नही शीत उस्नकी आतापना ले लेकिन शित कालमे गुफ्म कानमे म रहे और उस्न कालमे हवाके मकानमे म रहे नव कल्प विहार करे सर्वथा प्रकारे अमति पंथ धर्म उपदेश नही देवे छवि सम्पर्ण इन्द्रियोके विकारों को दमन क मगर औषध वगेरके योगसे इन्द्रि हिण होवे नही अगर छे महीने आ र नही मिले तो भी दिनता नही देखावे सुर धीर और थिर इंद्रादि आके डिगावे तो डिगे नही इत्यादि अनेक उत्तम गुणके धारक होके मुनि जिन कल्पि अर्थात असली दिगंबरी पदवी के धारक और अ धिकारी होते है, उसे असल दिगंबर कहेना चाहिये द्वादशागमी अनुसार जिन कल्पि पना (दिगंबर) आठ महिने से ज्यादा मा रहना क्योंकि उनोका मनोबलादि इतने पवित्र और प्रबल होते है उनकी ही शुद्धमे वे कर्मों का नास कर डालते है,

२ अगर इद्रकी इंद्राणी नग्न हो के मुनि के गोदमे खेले और कुचेष्टा करे तो भी सार्डि तिन क्रोड रोम रायमे से एक भी रोम राव चलित न होवे.

—o—

—: वर्ग १४ वा :—

मूर्तिपूजकोके ग्रंथसे मूर्ति निपेध.
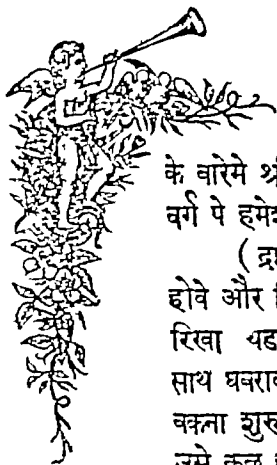
देखिये! मुर्तीपुजक लोग हमेश जिन प्रतिमाको सर्व मान्य करना चाहते है और प्रतिमा के वारेमे श्री जैन श्वेतावर स्थानक वासी (साधु मार्गी) वर्ग पे हमेश अव्हान करते रहते है,

(द्रष्टात) जैसा कोइ मनुष्य भर निद्रामे सोया होवे और किसी दुसरे मनुष्यने उक्त मनुस्यके उपर गारस रिखा घडा पाणी लाके एकदम डाल दिया तव वो मनुष्य साथ घवरावटके एकदम चमक्के उठतेही परमार्थ शुन्य ऐरगेर वकना शुरु कर दिया करता है ताके ऐरगेर वकति वखत उसे कुछ होस नही रहेता है, इसही वजेसे जिस वखत जैसा दिलमे आवे वैसा मुर्तीपुजाके वारेमे ढढीजी परमार्थ शुन्य वकना शुरु कर देते है और आम तोरसे गल्ला भी उठा देते है मगर ढंमीजी

इतना ख्याल नही करते है के, गत कालमे हमारे ग्रंथोमे क्या क्या लिखा है, और वर्तमान कालमे हम क्या क्या लिखते है और भविष्य कालमे हम लोग क्या क्या लिखेंगे, मगर इन तिनो कालके वार्ताका अर्थमे से क्या क्या नतिजा निकलेगा इस बातका हमारे जैन श्रावक लोकको थोडासा किंचित मात्र भी ख्याल नही है, मगर हमारे बाल मित्र जैन श्रावक भाइओ के ख्यालात स्थानपे अनेके वास्ते झोंप मुर्तीपुजक वर्गके चुस्त मूर्तीपुजक और प्रामाणिक पंडितका लेख निचे दरज करते है

देखिये ! "श्री अनुभव मार्ग उर्फ स्वानुभव दर्पण" विवचन करणार चुस्त मुर्तीपुजक प्रामाणिक पंडित "मि लालन" अनुवाद कर णार-माणेकलाल घेलेभाइ इस ग्रंथके पृष्ट ४७–९०–९१ का लेख निचे मुजब है सो मालुम;—

(देव क्यां छे)

तन मंदिरमां जीव जिन, मंदिर मुर्ती न देव ॥
राजा भिखारी थइ भमे, एवी जननी टेव ॥४२॥

भावार्थ—देहरुपी मंदिरमां जीव छे, एज जिन देव छे, परंतु (पाषाणमां) मंदिरमां (पत्थरनी) मुर्ती छे, ते देव नथी आश्चर्य छे के राजा भिख मागवाने (ज्यां-त्यां) भमे छे (खरे) ते थी माणसने (उलटी) टेवज पडी छे

परमार्थ-ये अपने देहरुपी सुन्दर मंदिरमे जो जीव है वो जिन देव है परंतु पत्थरके मंदिरमे पत्थरकी मुर्ती है वो जिन देव नहीं है आश्चर्य है के त्रैलोक्य के राजा हो के हर एक ठिकानेपे नाना प्रकारके मंदिरमे किंवा तिर्थोंमे देखता फिरते है और उनके पास याचना करते हैं, और भीक मांगते है के मुझको मुक्ति देना, परंतु यह

से निराले ऐसे पत्थरके मदिरमे पत्थरकी अचेतन मुर्ती क्या उनोको मुक्ति
नेक जुग व्यतिकर्ण हो जावे तो भी दे सकती नही है ऐसी भिक मंगते
वे व यात्रा करते हेवे भटकने जन्मो--जन्म वित गये परतु पत्थरके मदिर
ा वैठे हुवे, जो पत्थरके देव है, उनोने किसीको भी मुक्तिका दान दिया
हीं है मगर अपने पासमें स्वता का देहरुप मंदिरमें सचेतन जीव है ये
ी सच्चा देव है,

नथी देव देहरा विषे, छे मुर्ती चित्राम, ज्ञानी जाणे देवने,
मुर्ख भमे बहुठाम ॥४३॥

भावार्थः—देहरामां देव नथी पण मुर्ती अने चित्रामण छे, ज्ञानी पुरुषों देवने (पोतामाज छे एम) जाणे छे, अने मुर्खो (ज्या ज्या) मुर्तीके चित्रामणु होय तेवा घणा ठेकाणामें भमें छे—भटके छे-

परमार्थः—देखिये! देवल अगर मदिरमें देव (परमेश्वर भगवान) नहीं है, परन्तु पापाणादिक की मुर्ती अगर चित्राम (चित्र) है जो ज्ञानी पुरुष हैं वो देवको स्वयं [अपने] शरीरमें है, ऐसा खास जानते है, मगर मुर्ख लोग जाहा जाहा मुर्ती अगर चित्राम [चित्र] होवे ऐसे अनेक ठिकानेपे भटकते डोलते घुमते फिरते है.

—:फेरभी देखो:—

खरो देव छे देहमां, ज्ञानी जाणे तेह, तिर्थ देवालय देव नहीं,
प्रतिमां निश्चय एह ॥४४॥

भावार्थः—ज्ञानी सारी रीते जाणे छेके साचा देव तो देहमां (जीवरुपे) विराजे छे. तीर्थ स्थानमांके देव मदिरमां तो (धातु आदिकनी) प्रतिमांछे, एमतेनें खात्री छेः—

परमार्थः—देखिये '-अपने शरीररूप मंदिर (देवल) में आ सच्चिदानंद (जीव) है, वोही सच्चा देव है बाकिके कृतिम मंदिरमें किंवा तिर्थो [शत्रुंजा गिरनार-समेतशिखर-वगैरे] दवस्थानोंमें देव नहीं हैं परंतु-धातु-पाषाण्यादिककी प्रतिमा अर्थात चित्राम (चित्र) है एसा पुर्ण खात्रीके साथ ज्ञानी पुरुष जानते है, इसमें काईभी वजेका शक न-ही समजना, और इसका सेवन कोन करते है जोके मिथ्यात्वकी छाक [नसमें मूर्ख और अज्ञान वाके साथ बाल्यवत् ख्याल करते है; वास्ते ए बात अवश्य त्याग [छोडने] करनेके लायक है; इसलिये ज्ञानी पुरुषोने इसका अवश्य त्याग करनाही चाहीये-समीक्षा-साचिये ' महाराजजी ' इन मूर्ति पूजकोका साथ विलक्षणाके विचित्र प्रकारका चलण है के विचारशील पुरुषोंकि कुछ अकल काम नही कर सकति हैं क्योंकि इन मूर्ती पुजकोकी अभ्यंतर [गुप्त] की भषा औरकि और हैं और बास्य (प्रगट) की भषा लोकोंकों दुभानेके वास्ते औरकी और हैं कहिये साहेब ' अब इन मिथ्यावादियोंकि किसतारसे प्रतित कि जाय कदापि नही, क्योंकि इन लोगोंका कहेना औरका और-चलना औरका और और लिखना औरका और हैं, ये इनोके लेखोस खुब तोरसे सा बित होताहै; और मुर्ती पुजकोंकि इश्वर और परमेश्वर झुट और कपट ही है और ज्ञानी पुरुषोंकि आज्ञाका भंगकरना और भी जिनके असलि और प्राचीन सर्वज्ञ प्रणित सिद्धांतोंक पाठोंकि चोरिया करना य इन लोगोंके प्रधान है, अब कहिये साहब ' इन पाठोकी चोरी करनेसे क्यों कर अधोगती न मिले अभी साहेब अवश्यही मिलगी

पुर्वपक्षीः—अजी साहेब ' खुब सोच विचारके साथ कलम उठा-ना-नही तो आपको आगे हामकी दवा लेना पडेगा

उत्तर पक्षीः—महाशयजी ' हमारा तो कथन पुरीतारसे सच्चे-

पुर्व पक्षीः—अजीसाहेब ! आपके पास कुछ सबुति हैं या जबानी जमाखर्च ही हैं

उत्तर पक्षीः—माहाशयजी ! मुर्ती पुजकोंके लेखसे माकुल सबुती लिजीये.

पुर्व पक्षीः—अजी साहेब ! बराय मेहरबानीके साथ फरमानेकी तसदी लिजीये.

उत्तर पक्षीः—महाशयजी ! नेत्रोके पडल दुर करके पुर्ण ख्यालातके साथ पढीये.

देखिये ! माहाशयजी! आतमाराम ये एक तपागछ निवासी पिताम्बरी साधुथा और ईसे पुर्ण प्रामाणीक पुरुषभी मानते थे, और ईसका फोटु मंदिरमें दरज भी किया गया है और ईनोके तिर्थंकरों की प्रतिमां के बराबर पुजाभी करते हैं ये आश्चर्यका स्थानके मुर्तीपुजकोके जो गतकाल (भुत काल) मे पुर्वाचार्य हुवे है उनोका फोटु कोइ भी मंदिरमे दरज नही किया गया है और न उनोकी पुजा भी प्रतिमांके बराबर करते है मगर मुर्तीपुजकोने अपने पूर्वाचार्योंसे भी जादा आतमारामको तुल्य तिर्थंकरोके माना है तो कहीये साहेब ! इससे ज्यादे प्रामाणिक पुरुष किसे कहना चाहिये मगर इस आतमारामके बारेमे तथा गच्छ निवासी कर्ण लठी 'धन विजयजी अपने बनाये हुवे ग्रंथोंमे क्या लिखते हैं, सो नेत्रा खोलके वाचो तो सही—धन विजयजी कृत "चतुर्थ स्तुती निर्णय शंको द्वार" का लेख निचे मुजबः—पृष्ट १४४ लाईन २३ से ९४ तक —

एमा निश्राकृत अनिश्राकृत सर्व चैत्यमा त्रण थुइएं देव वंदन कह्युं छे तथा जिन ग्रहमा द्रव्य पूजा करी जघन्यादि त्रण भेदे चैत्य वंदना कही

नारवोने मन कल्पीत रुप विष्टाने उठावी हाथमां धारण करे तेने देखीने कोणि भव्य जीवने ते पामर जिव उपर दयानो अकुरो उत्पन्न न होय अर्थात निकट भव सिद्धियोने ते अवश्य करुणा आवेज अने जेने जे उपर करुणा आवे त्यारे, ते प्रते अवस्य उपदेश पण करे केमके कदाच जो दुराग्रही अभिमानी प्रति बोध पामिजाय तोते जीवनु काम थाई जाय अने, बोध, करवावा लाने पण मोटा पुण्यपार्जन रुप लाभ थइ जाय एहवु भगवानतु कथन छे।। अमने मोटु आश्चर्य थाय छे के राज नगर अर्थात अमदावाद प्रमुखना ज्ञान भंडारोमे ए धर्म सग्रहना प्राचीन पुस्तको छे तेमां ए पाठ ग्रथोमा प्रक्षेप कर पोतानी मन कल्पित बात जमाववाने नवो पाठ ग्रथोमा प्रक्षेपकरता भय न पामे परंतु उलटा एवा दुष्ट काम करी आनंद पामे तोतेने अन्य पाप करवामे पण श्यो भय होय जेम, जे प्राणी अन्यायमे आनंद माने ते प्राणिने न्याय वचन प्रीय न लागे तेम आत्मारामजी आनंद विजयजी पण पोतानी महत्ता वधारवाने नवा पाठ प्रक्षेप करवानी आदत प्रिय लागे छे.

समीक्षा — देखिये ! आत्मारामको मुर्तीपुजकोने सर्वज्ञ पद इनायत किया है अब मुर्तीपुजकोके सर्वज्ञ पुरुष हो के भी झुटका बोलना कपटका करना सयम विरुद्ध वरतना ज्ञानीके आज्ञाका भंग करना मिथ्या आडंबरका बढाना और जैनके असली और प्राचिन सिद्धातोंमेसे सर्वज्ञ प्रणित पाठोंको निकालके अपने मतलबके नविन पाठ प्रक्षेप करना, देखो ! ज्ञानिकी और सिद्धातोकी चोरीया का करना कहिये साहेब ! इससे निच काम कोनसा ज्यादे होवेगा ऐसे निच कार्य करनेवाले मुर्तीपुजकोके आचार्य और पुर्वाचार्य वगेरे हुवे है, तो इतर मनुष्य ऐसे निच कर्तव्य करे उनोका तो कहेनाइ क्या है.

पुर्वपक्षी — अजी साहेब ! आप इसके वारेमे कोइ सबुती भी दे सकते हो।

उत्तरपक्षी— हांजी ! सबुती द सकते है

पुर्वपक्षी— अजी साहेब ! साथ क्या फरमाइये

उत्तरपक्षी — माहाशयजी ! नेत्रोके पड़ल खोलके पढीये

देखिये ! सुत्र श्री भगवतीजीमे प्रभुके वास्ते शिया अणगारने दा निमित कोला पाक लाये, यहांपे कोला पाक बिजोरा पाक का सुक्ष्म अधिकार चल है मगर भगवतिजीकी टीकामे कुछ धर्मसि मंजार कम मार्जार कुकडा [कामडे] बिल्लीका मांस एसा अर्थ किया है तो क्या ? प्रभुने कोलेका पाक भक्षण किया है मगर कुकडका मांस भक्षण नही किया है किंतु मुर्तीपुजकोने तो भगवान को मांस आहार का खोटा दोष लगा दिया है तो दुसरोप झुठा कर्लक लगावे उसमे तो ताजुब ही क्या है

शंका:— अजी साहेब ! ये बात कदापि नही होनेवाली है,

समाधान:— हांजी ! इसकी सबुती " सम्यक्त्वसार " ग्रंथके पृष्ठ १३३ के प्रश्न १९मे भी देखो

फेर भी देखो ! खुद मुर्तीपुजक श्रावक भिमसिंह माणेकका छपा हुआ बारासो मुल पाठ कल्प सुत्रके पृष्ठ ९१मे का पाठ निचे मुजब.

[पाठ]

वासावासं पज्जोसं वियाणं नो कप्पई निग्गंथाणवा,
निग्गंथीणवा हट्ठाणं तुट्ठाणं आरोगाणं बलिया सरिराण
इमाओ नव रसविगइओ आभिक्खण (२) आहारित्तए
तंजहा:— खीर १, दहि २, नवणीयं ३, सर्पी ४, तिल ५
गुडे ६, महु ७, मज्जं ८, मंसं ९, ॥१७॥

ईसही ग्रंथकी उपाध्याय विनय विजयजी कृत सुख बोधिका टिकाका गुजराथी भाषांतर ग्रथका पृष्ट १११ का लेख–

(देखो)

तरूण अने बलवान शरीरवाला साधुवोने वारंवार नवरस युक्त विगयवालो आहार करवो कल्पे नही पण कारण पडये कल्पे:–

समीक्षा – देखिये! माहाशयजी! ये कैसी भयंकर बात है थोडे सोचो तो सही अव्वल तो हम आपे नवविगयके नांवका खुलासा करेंगे (विगयके नाव) दुध १ दही २ मखण ३ घी ४ (घृत तुप) तेल ५ गुड ६ (सर्व जातका मिष्टान) सहेत ७ दारु ८ मंस ९ [गोष] ॥

ख्याल करनेका स्थान हे के उपरोक्त लेखोंसे कारण युक्त जैन साधुको दारु और गोस [मास] सेवन करना सिद्ध होता है, मगर जैनके असली और प्राचिन सिद्धातोमे तो ये बात कही भी नजर नही आती है, और ज्ञानी पुरुषोंने तो साफ तोरसे फरमाया है के दारु और मांस सेवन करनेवाले जीव अधोगतिमे जाते है, तब ये बात किस तोरसे मजुर करनेमे आवेगी कदापि नही, मगर मुर्तीपुजकोने अपने बनाये हुये टिका चुर्णी भाश्या निर्युक्ति ग्रथ प्रकर्ण वगैरोंमे जो जो माहा विलक्षणी शुद्धा शुद्ध नविन पाठ दाखल किये हैं, उनोकी पुष्टाई के वास्ते श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंमे भी कपोल कल्पीत शुद्धा शुद्ध नविन पाठ बनाके दाखल कर दिये है और सर्वज्ञ भणित असली और प्राचिन सिद्धांतोमेसे कितनेक पाठ निकालके बाहेर फेक दिये है, देखिये! गुरुगो कैसी जबर दस्त हुशयारी करी है, के हम कुछ बयान नही कर सक्ते है, मगर जमाने हालमे मुर्तीपुजकोके पोल-

के फुटे ढोल विष मैदानमे मजाना शुरु हो रहे है,

पुर्वपक्षी— अजी साहब ये तो माहान आश्चर्यकी वार्ता है अगर इसका खुल्यासा नहीं करोगे तो हमको अवश्य जैन मजब छोडना पडेगा

उत्तरपक्षी;— माहाशयजी हम तुमारे दिलकी पुर्ण समझी करेंगे,

पुर्वपक्षी— अजी साहेब ! हम आपका पुर्ण उपकार मानेंगे.

उत्तरपक्षी— लिजीये भाई ! पढो तो सही

सुत्र श्री आचारगजीका श्रुत स्कंध दुसरा अध्ययन दसमेमे पाठ नित्ये मुजब—

पाठ— से भिक्खुवा भिक्खुणीवा जाव समाणे सेज्जं पुण जाणे ज्जा मंसंवा मच्छंवा भज्जि ज्जमाण पेहाए तेल्ल पुयपवा आए साए उवक्खडी ज्जमाणं पहाएणो खद्ध खद्धं उपर्स कमितुओभासज्जा णणत्थ गिलाणणी साए ॥६१९॥

समीक्षा— माहाशयजी ! देखिये ! ऐसे निच और अशुद्ध काम श्रीमतर्मत माहाराज स्वत्यासे सेवन करते नही है, और दुसरके पाससे कर वाते भी नहीं है और एसे निच और मलिन कार्य करनका उपदेश भी देते नहीं है और ऐसे कार्य करनेवाले पुरुषोंके हृदय कमल सदा सर्वदा कठोर और मलिन और अपवित्र मन रहते है और एसे पुरुषों का हृदय कमलमसे सदा सर्वदा दया माताकी नास्ती होती है, अथात एसे पुरुषोंमे दया माता हमेश अनंत जोजन दुर निवास (रहती) कर है मगर मुर्तीपुजक स्वाग कैसे निदयी है के हम कुछ बयान नही कर सक्त है ईनोके जो पुर्वाचार्य जो हरी भद्र सुरी हुवे है उनोने चवदा सो चमालिस १४४४ बोधियोका होम दिये है उसके उपर एक क मीने क्या कहा है सो देखो,

[सवैया ३१ सा]

हरी भद्र सुर जाने, कुर कर्म कियौपूर,
भूर वौध हौम दिये, वन्यौ मत्र वादी हैं ॥
देखो "कल्पलता" मे प्रगट कथा लिखी एह,
सज्मथी दुरताको, दई सुर गाद्दी है ॥
ऐसे दयावंतके, वनाये शठ माने ग्रथ,
तंत नही तामे, छाइ अविद्या अनादि हैं ॥
हिंसा विना धर्म न होय, ऐसे कहैं शठ,
हिंसा कहा तेरे दंढी- आतमाकी दादी हैं ॥१॥

फेर भी देखो। पुलाकनीयठाकी टिका तथा सघाचार की टिकामे सघके वास्ते माहा समर्थ चक्रवृति राजाकी सेन्याका विनास कर हालना लेख निचे देखो:—

[गाथा]

सघा ईयाणकजे, चुनी जाचक चट्टीसेनं ॥
पिक्रविउ मुणी महप्पा, पुतायलद्ध संपन्नो ॥

देखिये! माहाशयजी! ये मुर्तीपुजकोके पूर्वाचार्य वगैरे मुर्तीपुजक लोग कैसे महान दयावंत हैं के कोडा मनुष्य वगैरोंको प्राण मुक्त करते हैं और करनेका उपदेश भी देते हैं ईस वास्ते मुर्तीपुजकोने श्री जैनके असली और प्राचिन सर्वज्ञ प्रणित सिद्धांतोमे अनेक ठिकाणोपे अनेक कपोल कल्पीत मिथ्यात्वकी कलोलमे स्वछंदासे मनकी उछरग मुजब माहा विलक्षणी अशुद्ध और मलीन नविन पाठ बनाके दाखल

कर दिये हैं सिर्फ मतांध होके लोगोको डुबानेके वास्ते और ईस मत का स्वताका स्वार्थ सिद्ध करनेके वास्ते ऐसा धतींग खडा किया है,

फेर भी देखिये। मुर्तीपुजकोके आठ आचार्योने मिलके श्री महानिशिथ सुत्रका जीर्ण उधार किया है मगर इसही सिद्धांतमे बड आचार्योने मन कल्पीत नविन पाठ बनाके दाखल करके पक्षासमे मिथ्या मुक्रत दिया हैं विशेप अधिकार देखना होवे तो माहारमा आप राजजी माहाराज क्रत ' सत्यार्थ सागर " देखो

फर भी देखिये। सुत्र श्री ज्ञाताजीमे द्रोपदिके पृशाका अधिम र पत्र हैं मगर श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांताम जिन प्रतिमाका अधिकार नही है मगर ईन लोगोने नविन पाठ दाखल किया ह

फेर भी देखो। महानशियमे कुशील सेवन करनेका अधिकार मुर्तीपुजकोने दाखल किया हैं

फर भी देखिये। सर्वज्ञ भणित श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंमे मुळपतिके वास्ते ऐसा लेख था सो निचे मुजब—

॥ पाठ ॥

एगं, विहत्थी, मउरंगुलं, पयं, मुहपत्तियाणं, मउपुडाणं तगाम्न, पमाणं वत्तुदिसापत्ता, मुह मेपईरत्ता, मुहपत्तियाणं अकदन, करइ सा, पडिलेहि सा, मुहपतियाणं, एगं, महुतेज, गुहणं, विरहकालगं, मह चौमासियं पायछित्त,

परमागाय गुर मुख धारणा,

भावार्थ— एक विलाम और चार अंगुल एसा मुहपतिका वस

लेना और उसके आठ पुड करना फेर अपने मुखके प्रमाणसे तागा (डोरा) लेना वो तागा सयुक्त मुहपतिको कानमे डालके मुखपे बांधना चाहिये फेर मुखपतिको खोलके पडिलेहण करना चाहिये अगर जो मुखपति मुखसे एक मुहरत तक अलग रहे जावे तो लघु चोमासी प्रायश्चित आता है.

देखिये। इस मुताबिक श्री जैनके असली और प्राचिन सर्वज्ञ प्रणित सिद्धांतोमे मुखपतिके बारेमे ऐसे खुले अधिकार थे मगर जिस वखत मुर्तीपुजकोने मुखपतिका त्याग किया उस वखत श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंमेसे मुखपतिका सर्व पाठ निकालके बाहेर फेंक दिया, सिर्फ दो पद बाकी रखे वो निचे मुजब है,–

※ मुहपतियाणं पडिलेहित्ता ※ इतना पाठ तो सिद्धातोमे साथ मेहरबानीके मुर्तीपुजकोने सिलकमे बाकी रख दिया है. अगर इतना पाठ सिलकमे बाकी नही रखते हुवे " कर पोतियाण " ऐसा पाठ जो सिद्धांतों मे दाखल कर देते तो करपतिके नगारे चारु दिशामे बजना शुरु हो जाते, न मालम इनको ये बुद्धि क्यों नही आइ, क्या ये चोर कच्चे थे अगर जो मुखपतिका पुर्ण पाठ सिद्धातोंमे कायम रख देते तो मुर्तीपुजकोंको मुखपति जरुर बाधना पडती इसलिये मुर्तीपुजकोको श्री जैनके असली और प्राचिन सिध्दातोंमे सर्वज्ञ प्रणित पाठोकी चोरिया करना पडा मगर देखिये। इस विषयपर बडे बडे विद्वान अंग्रेजोंने भी क्या उमदा खुलासा किया है वो मुखपति प्रकर्णमे देखो, फेर भी देखिये। श्री जैनके असली और प्राचिन सिद्धातोंमेसे सर्वज्ञ प्रणित माहा बलवान और प्रभाविक पाठोंको मुर्तीपूजको ने बाहेर फेक दिये है, और उस स्थानपे कपोल कल्पित " पाठाक्षर " दाखल कर दिये है, सोचिये। पाठाक्षर दाखल कोन करते है, जिस माहा नुभावको परोक्ष प्रमाणका ज्ञान होवे, वो पुरुष पाठाक्षर दाखल कर सकता

है सम्य परोक्ष प्रमाणके ज्ञान वाले की भुल हो जाती है जो महा प्र-
प पाठांतर दास्ता करे तो प्रमाण करनमे भी आप मगर जो जिसकी वत
वीतराग दयानिधेय तिर्थंकर भगवानको प्रमाणका ज्ञान था ता फर सर्वज्ञ प्र
णित सिद्धांतोंमे पाठांतर की कोई भी बनेस कोई मसरत नही है, कि
प्रत्यक्ष प्रमाणके सर्वज्ञ ज्ञानी पुरुषोंकी तो कोई भी बनेसे भुल नहीं हुवा
करती है ता फर सर्वज्ञ प्रणित असली और प्राचिन सिध्धांतोंमे पाठांत
की कोई भी बनेस कोइ मसरत नहीं हुवा करती है,

पुर्वपक्षी— अजी साहेब ! आपको हाल पुर्ण ख्याल नहीं है-

उत्तरपक्षी— माहाशयजी । किस तोरमे

पुर्वपक्षी — अजी साहब । वस्तो। अर्थ भाषित अरिहंत और पा-
ठ गथीत गणधर अर्थके प्रकाश करनवाले अरिहंत है, और पाठके गुंथन
वाले गणधर है, इन वास्ते सिध्धांतोंमे पाठांत्तर होय उसमे कोई हर्ज नही
है

उत्तरपक्षी— माहाशयजी । गपाड पंथीयोंके फर्माये हुवे बहुरा भा
मत फेरा वाबा ख्याल रखो वस्तो । अरिहंत भगवानन अर्थ प्रकाशित
किया है मगर गणधर माहाराजन सिध्धांत गुंथ है, जिस वख्त गणधर मा
हाराजन सिध्धांत गुंथ थ उस वख्त केवली भगवान हाजर थ अगर गणधर
माहाराजको कोइ भी तरेकी शका उत्पन्न होती ता केवली भगवानसे पु
छकर संशय निवारण कर लेते, बाबा । जिस वख्त केवली भगवान विध-
मान [हाजर] हाय और केवली भगवानके जरिये संपुर्णतया पुर्ण समाधान
हो सकता है तो फर भी जैनके असली और प्राचिन सिध्धांतोमे पाठांत
की कोइ भी वजे की असरत नही है

पुर्वपक्षी— अजी साहेब । य मामला किस तोरसे हुवा है सो इसके
बारेमे किंचित खुलासा करनकी कृपा किजीये

उत्तरपक्षी — हाजी लिजीये.

देखिये। माहाशयजी। पञ्चम काल और हुडासर्पणी और बारा कालिका पुत्र मुर्तीपुजाका मजब (मत) प्रगट हुवा और जाहिरमें फैलने लगा मगर नविन मतके सबबसे किंवा सर्वज्ञ प्रणित सिद्धातोंके सबबसे किंवा निर्वद्य करणीके कर्ता तदरूप माहानुभाव पुर्वाचार्योंकी रची हुई मागधी भाषामें सर्वज्ञ प्रणित सिद्धातोंके अनुकुल, टिका, चुर्णी, भाष्य, निर्युक्ती, ये पाचो अंगोके मुर्यवत प्रकासके कारणसे मुर्तीपुजाके मतका प्रलय होनेका वखत आ पहोंचा, तब मुर्तीपुजकोके कपोल कल्पीत पुर्वाचार्योंने अर्थात गपोडाचार्योंने सर्वज्ञ प्रणित सिद्धातोंको छोडके चारो अंगोको निर्मुल अर्थात नास्ती कर डाली और ये बात मुर्तीपुजक लोग खास कबुल भी करते है मगर इस बातमें भी मुर्तीपुजकोने झुट और कपट सेवन किया है, सो निचे पढो तो सही—

* पितामबरी कर्ण कुटी—आत्मारामजी विरचित (कृत) जैन तत्व दर्शका प्रष्ट ३१४ लैन २९सका लेख निचे मुजब —

* प्रभावक चारित्रमा लख्यु छे के सर्व शास्रो उपर टिका लखी हती, जे सर्व विछेद गइ छे*

सोचिये। कैसा चतुराईके साथ लेख दिया है के अजाण मनुष्य पचम कालके सावज्याचार्योंके बनाये हुवे च्यारो अंगोको प्राचिन है ऐसा मजब लेवे, मगर नविन को तो नविन हैं ऐसे ही समज जावेगे—मगर प्राचिन कदापि नही समजे जावेगे. किंतु सावज्याचार्योंके बनाये हुये च्यारो अंगोको सच्चे नही समजते हुवे, इनोपे कोइ वजेसे प्रतित भी नही की जावेगी.

देखो! मुर्तीपुजकोने इतनी कारवाई करी, तादम भी मुर्तीपुजाका मत प्रबल पणेपे नही चढा, तब मुर्तीपुजकोके सावज्याचार्योंने सर्वज्ञ प्रणित

सिद्धांतोंमेसे, माहा प्रमाणिक और मख्यान पाठ निकालके बाहेर फेंक दिये और मनकी कलाल और उन्मरगकी तरगम कपोल कल्पीत नविन और कमी शुद्धा शुद्ध मनमाने पाठ सर्वज्ञ प्रणित सिद्धांतोंमे दाखल कर दिये, अगर मुर्तीपुजक लोक ऐसी कारवाई नही करते तो मुर्तीपुजक मत मृतक दशाको प्राप्त हो जाता, इसमे कोई तरफ शक नही था इस लिये मुर्तीपूजकोंको ये कारवाई अवश्य करना पडा मगर हम मुर्तीपुजकोंके सत्कार्योंका पुर्ण पण उपकार मानेंगेके, सर्वज्ञ प्रणित सिद्धांतोंमे कपोल कल्पीत शुद्धाशुद्ध नविन पाठ दाखल करती वख्त कोइ स्थानाप पाठका आदि मे "पाठांतर" ये शब्द दाखल कर दिया है, अगर ऐसा कार्य नहीं करते तो सर्वज्ञ प्रणित सिद्धांतरूप माणप मिथ्यात्वरूप रजपाके दमो दिश में अंधरा आ जाता, और असली जैन धर्मकी नास्ति होजाती क्योंकि किसी का भी मुर्तीपुजकोंके गुप्त कारवाई का भेद मालुम पडता नहीं किंतु मिथ्यात्व और अज्ञानसे मचनेका मारग कोई वनस किसी को भी नही मिलता ये निश्चय समजना

देखिये! "पाठांतर" इस शब्दका तात्पर्य इतनाही है पाठको अन्दर ते 'पाठांतर' सोचिये! "पाठांतर" इस शब्दसे ही मुर्तीपुजकों का पागकरणा जाहिर होके, भी असली जैन धर्मकी समय समय वृद्धि हो रही है

समाधान— देखिये! सर्वज्ञ प्रणित भी जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोमे कितनेक शंका भरे हुपे माहा विलक्षणी पाठ हैं, इन पाठोंके बारेमे हमारे दिलमे पुण शंका थी, मगर हमारी शंकाका अब साफ खुलासा माल हो गया, सबब भी सर्वज्ञ प्रणित जैनके असली और प्राचिन सिद्धांतोंमें माहा विलक्षणी शुद्धा शुद्ध पाठ हैं, जिससे भी जैनके अलौकिक माहा प्रमाणिक झंडे के उपर माहा कलंक रुप अंधेरा

चढके श्री जैन धर्म नष्ट (भ्रष्ट) होता हैं, ऐसे ऐसे सर्वज्ञ प्रणित असली और प्राचिन सिद्धांतोंमें जो जो माहा विलक्षणी शुद्धाशुद्ध पाठ है, और पाठांतर है, वो सर्व मूर्तीपुजकोने दाखल (प्रक्षेप) किये हुवे है, इसका पुर्ण खुलासा हम उपरोक्त कर आए है, अपितु असली जैन मुनि वर्गने किंवा श्रावक वर्गनें महा विलक्षणी शुद्धाशुद्ध पाठोंके अगर पाठान्तर वगैरोंके उपर कदापि श्रधा, प्रतित, नही करना चाहिये मबब ऐसे ऐसे माहा विलक्षणी और शुद्धा शुद्ध खोटे अधिकार अर्थात पाठ कदापि वीतरागी सर्वज्ञ पुरुष प्रकाशित नही करते है, ये निश्चय समज लेना चाहिये

देखिये। हम ह्यांपे अन्य समाजियोको भी निवेदन करते है के श्री जैनके सर्वज्ञ प्रणित असली और प्राचिन सिद्धांतोमे माहा विलक्षणी शुद्धाशुद्ध तथा खोटे जो जो पाठ किंवा पठांतर है वो सर्व मुर्तीपुजको के सावज्याचार्य वगैरोके दाखल किये हुवे हैं,

ईस वास्ते उक्त पाठोंका आश्रय लेके श्री जैनके असली मुनि वर्ग किंवा श्रावक वर्गके उपर आक्षेप करनेका दावा उठाना मत, किंतु ऐसे माहा विलक्षणी कार्योंके सामल उत्तम पुरुष नही रहा करते हैं,

अगर ह्यांपे कोई कहेगे के ग्रंथ कर्ताने अपने मजबकी पुष्टीके वास्ते कुछकाकुछ लिख मारा है ऐसे गाल बजाने वाले कर्ण लठीयों के दोने नेत्रोके पडल दुर करनेके वास्ते अछे विद्वान अंग्रेजका लेख दरज करते है, पढो निचे.

देखिये! कर्ण लठीजी! बनारसके अनेक विद्वानोके समक्ष जैनो ने जिनको "जैन दर्शन दिवाकरण" का आरे पद इनायत किया था उन–डाक्टर हरमनजेकोबी साहेबने अपने अजमेरके पब्लिक व्याख्यान मे क्या भलि भांती यह सिद्ध नही कर दिया है की जिनोक्त ग्यारह

अग बाहर उपागोंमे कही भी तिर्थंकरोंकी मूर्तीपुजनेका विधान नहीं है किंतु यह प्रथा (चाल) थोडे कालसे चली असी है अब ता रि सताप हुवा के नही, देखो डाक्टर साहेबके व्याख्यानका शुरु फिकरा,

No distinct mention of the worship of the idols of the Tirthankars occurs to be made in the Angas and Upangas

भावार्थः— अगो और उपागोंमे कोई खुलासा जिकर तिर्थंकरों की मुर्तीपुजनका नही किया है

इसिये ! बडे बड न्यायधीश विद्वान अंग्रेजोन भी इस विषयपर भी जैनके असली और माथिन सिद्धांतोंका अवलोकन करके खुब ता रसे साफ साफ निर्णय का जजमेन्ट (इन्साफ) सुना दिया है, सोचो ! पक्षपात रहित पुरुषोंको असली वस्तु रत्नवत खुत नजर आता है, ईतनपर भी मुर्तीपुजक लोग, पाषाण पुजनेका पक्ष नही छोडेंग सा फर ठेवकर्णकी पुछ पकडनेका ही न्याय हुवा

कोटीश धन्यवाद हैं डाक्टर साहेबको के असाध्य रोगकी परी तोरसे नास्ती कर डाली है आगे इन्याज करनेकी कोई भी जरूरत रही नहि है मगर भमविका राग कदापि नष्ट नही हो सकता है,

देखो ! इस विषयपर एक कवीने क्या कहा है सो

(साखी)

असल को छोडकर नकल पुजा करे ज्ञान दृयाल्से लेष जाद मछ अवतारकी सकल मदीमा कर, मीरके मीनको मार खावे नकल बाराराय देखकर देहरे, सुर देखावने लंगवाने, सिंघको मट सुन डार मारन चले; अघ नरसिंघ को वृत लावे, गाराका गणपति बनाय पुजा कर असल गजरामकी पीडसदे, कृष्ण राम कालकी नकल बनावके आप

नवंत होय दान देवे बंबीकू पुजीये, देवसु धूजीये. कालकुं व्यालकु
रलेवे जानता है पर मानता नहीं स्वादके सांत ससार साई. कहेत
म चर्ण कूछ कहेत आवे नही देखये जुल्म हैरान होई ॥१॥

ईश्वरके भक्तिके वास्ते वनस्पतीको नही सताना चाहीये, सबब
नसपतीमें ईश्वरका निवास है सो एक कवी दिखलाते है सो पढोतो
ही:—

कमलमें कमलनेन, मोतीयामे मदन मोहन, नरकसमें नरोत्तम,
गुल छबेमे बिहारी है, चंपेमे चतरभूज, गुलदा वदीमे दामोदर, गूलज
फरेमे जगननाथ, गूलतूरेमे मुरारी हैं, गेंदमे गोविंद, मालतीमें मोहन-
लाल, सेवतीमे सिताराम दोनोमे मुकटधारि हैं, केवडेमे केशव, गुलाबमें
गोपाल लाल, केशर और चमेलीमें बिराजे गिरधारी हैं ॥१॥

देखिये ! कोई मनुष्यने किसीके पुत्रको मारके उसे वापिस उस
पुरुषको वो मरा हुवा पुत्र अर्पण करेतो वो पुरुष संतुष्ट होके उसका
भला कदापि नही करेगा, इसही वजेसे ईश्वरके-पृथ्वी, पाणी, अग्नि-हवा
-वनस्पती-और हलते चलते त्रसजीव-ये छे ईश्वरके मुल अंग है और ये
ईश्वरके पुत्र हैं. इनको मारके ईश्वरको आर्पण करनेसे ईश्वर अपनेपे
सतुष्ट होके अपना कल्याण कदापि नही करेंगे, ये निश्चे समज लेना

समीक्षा:- देखिये ! माहाशयजी ! जाहां तक असली ज्ञानकी
प्राप्ति नही होती हैं तब तक असली तत्व भी हांसील नही होता है,
तो असली ज्ञान जरूर हांसल करना चाहिये. ये भी एक ख्याल करने
का स्थान है, के असली ज्ञान कब प्राप्त होता हैं के त्यागी वैरागी
निग्रथ संयमी मुनि की सेवा करे और उन महानुभाव पुरुषोंके मुखार
विंदसे सर्वज्ञ प्रणित सिद्धांतोको श्रवण करनेसे असली ज्ञानकी प्राप्ति
होती हैं,

पास लेके हाजर करना, तद पश्चात थोडे देरके बाद उक्त जनावरोने मुत्र किया वो मुत्र पकडके राजा साहेब के पास हाजर किया तब थोडासा मुत्र हतेलीमे लेके सरकारने मुखमे डाला मगर मुत्रका स्वाद अनिष्ट होनेसे तुर्तही सरकारने थू थू थू करके थूंक दिया, फेर नोकरोंको हुकम दियाके ये नही हैं दुसरा होवेगा, तद पश्चात जनावरोंने गोबर किया वो गोबर भी रुबरु हाजर करतेके साथ पुर्ववत सरकारने थू थू थू करके मुख साफ करके तुर्तही सेठको बुलवाके उक्त दोनु वस्तु दिखलाके राजा साहेबने पुछा के यही पंचामृत है, सरकार तर्फे पुछा होते के साथ सेठनें दरबारको अर्ज गुजारिश करीके ये दोनु वस्तु लायक फेंकने के है, लेकिन पंचामृत नहीं है, तब सरकारने कहा तो फेर पचामृत कोनसा है, सो दिखलावो तब तुर्तही सेठनें सोवर्ण भाजन मंगवायके उसी वखत गाय भेंसका दुध निकालके सुवर्ण के प्याले राजा साहेबको और आम सभा को भर भरके पिलाये, दुधके पिने से सर्व सज्जन जनोंको परमानन्द हुवा और सरकारनें सेठसे पुछाके ये पचामृत है, तब सेठजीनें अर्ज करीके साहेब ये एक अमृत हैं और ईसमेसे च्यार अमृतकी प्राप्ति होती हैं तद पृथ्वीपतिने फरमायाके अच्छा च्यार अमृत इसमेसे निकालो तद सेठजीने अर्ज गुजारी के अहो कृपानाथ ईसमेसे च्यार अमृत कल रोज प्राप्त होवेगे, ऐसी अर्ज करके सेठने सर्व क्रिया पुर्ण पणे करके दुसरे रोज राजा साहेब वगैरे सर्व सभा सद की सेवामे दुध १ दही २ छाच ३ मखण ४ और घी ५ ये पचामृत उपस्थित करे, राजा साहेब वगेरोंनें पंचामृतका सेवन करके सर्व माहाशय परमानंद हुवे, फेर सरकारने सेठजीको नग्र शिरोमणी पदवी ईनायत करके, बडा भारी ईनाम दिया, फेर सरकारने पचामृत प्राप्त होनेका विधान (विधि) सेठजीके पाससे अनेक मनुष्यों को पुर्णपणे शिखलाई. दरबारनें अपने शहरमे तथा देशमे आम तोर-

से पंचामृतका पुर्ण पसार करवाया वेशमें पंचामृतका पुर्ण पसार होने से अनेक उत्तम और पवित्र पदार्थोकी उत्पत्ती होना शुरु हुई और वक्त दम्र उत्तम और पवित्र पदार्थोंसे सुशोभित हुवा,

तात्पर्य:— वसिये ! रानासरीखा अपना भीन है मगर यजीव मन अज्ञानी कुगुरुवोंके फांसमें फसके मिथ्यात्वकि छाउमें अंधे सरीखा घट भ्रिमिमें फांफ मारता हुवा वृथा जन्म गमाता है, किंतु सेठवत सद्गुरुकी कृपा हानेसे पचामृत रूप सर्वज्ञ वाणीकी प्राप्ति होके अक्षय पद (मोक्ष) की प्राप्ती हाती है, इसवास्ते सद्गुरुकी सवा भक्ति अवश्य करना चाहिये

॥ श्लोक ॥

ऊत्तमा सम ज्ञानं, ऊत्तमो सम गुण ॥
ऊत्तमात्त्मं क्रिया, ऊत्तमोत्त्मं पद ॥१॥

ॐ शान्ति ! ॐ शांति !! ॐ शान्ति !!!

मिष्शास्त्र निकरन भास्कर का तिसरा भाग हायमंड प्राम प्रेसमें छपनेके वास्ते दिया था मगर किगर की मस्वीसे और खानि-यों कमथी आनेके रामपसे, छपनेका कितनाक काम दुसरे प्रेसमें देना पडा, या काम टेमसर तैयार नही होनेसे इस भागका शुद्धिपत्र हुवा नही, वास्ते सज्जन जनाने साथ छपाके सुधारके वांचन की तसदी लेवेंगे

इस ग्रंथमे शुद्धाशुद्धके किंवा न्युनाधिकके बारेमे जो मालूम हमको खबर देवेगे तो दुसरी आवृत्तीमे योग्य रितिसे सुधारा करनेमें आवेगा

॥ श्री ॥

मिथ्यात्व निकंदन भास्कर

तृतिय भाग

—:चमार पद विषय:—

देखिये ! मूर्ति पूजक लोक श्री जैन स्वेतांबर साधु मार्गी वर्गके मुनिलालचंदजीको हासीगावमे लालचंदरिख हुवाथा जो जातिका चमारथा सम्यक्त्वशलोद्धार पृष्ट १९। चमार लिखते है, अगर मूर्ति पूजकोके लेखोसे ये पद किसको मिलेगा इसका विचार— मूर्ति पूजकोके लेखनिचे मुजब—

ढूंढक हृदय नेत्रांजन, प्रतिमा मंडन स्तवन संग्रह, प्र० ३९ ओली २१ मे, अंशालेमे चमार जातीका लालचंद ढूंढिया, सम्यक्त्व शलोद्धार, प्र० १९ ओलि ३ रिमे, प्रश्न १० वा, भंगी चमार वगे-रोको दिक्षा देतेहो—

समिक्षा० माहाशयजी ! देखो ! जैसा जिसमे ऐब होता हे वो ऐब छुपानेके वास्ते, दुसरोपे वो ऐब डालना चाहताहै, मगर स्वताका घर शोधन किये शिवाय, कलम उठाताहे वो पिछे ही पश्चाताप कर्ता हे, उक्त लेखोका निर्णय, उक्त लोगोके लेखसेही करणा चाहिये, मूर्ति पूजकोका लेख निचे मुजब—

अवतरण: चम्म पंचगं एटले चर्म पाच नोऽयाभीमो द्वार कहे छे— मूल— अयं एल गावि महिषी, मिगाण मजिणंच पंचमं होई. तलिगा खलग वद्धे-कोसग किची यबीयंतु ॥ ६८३ ॥

चर्म—छासिनो चर्म, गाडरनो चर्म गायनो चम, मसना चम हरिणनो चर्म, एपाचना अजिनक० चामडो, होके० थायछे जम बीजा भादेशे करी, चर्म पंचक मयोजन सहीत कहे छे, एनाजे वस्त्रि के वस्त्रिया ते एक वस्त्रियो अने, तेना अभावे, वेहु अपना वर्गमिं ते, जेवार रात्रे भाग न देखाय अथवा सयवारोमे लिजाय, तेवा उजाडे जातां चोर, श्वापदादिकना भयथी उतावल्म जत कांटादिक थी पोतानो रक्षण करवाने अर्थे पगमां पहेरिये, अथ कोइ कोमल पगवाळो होय, ते, चालवाने, असमर्थ होय, ता प सीये, बीजो, खल्लम, ते खासडा ते, पगे व्याउत्थाय एटले, ब्याउर पग फाटी गया होय तो मार्गे जाता, तृणादिक, दुर्लभ थाय, अ अति सुकुमाल पुरुषने सीयासे दुलभ होय, ता पहेरवाने अर्थे रा बीजा, चमे क० वाधरि ते वाघडो धूटेला खासडा प्रमुखना माथ भजि काम आवे, चोथो कोसगए चर्ममय करण विशेषछे, ते कार ना नख अथवा पगने काइ लागवाथी फाटी जाय तो वे कोम आवा अंगुठे बांधिये अथवा नख प्रमुख राखवाने अर्थे दाभ बाने क्म आवे, पांचमो कित्तीयक्ति, ते कोइक मार्गमां दावानलना भयथी आहार करवाने अर्थे धारण करायछे अथवा पृथ्वी कायादिक सचि पणो थाय तेनी यतनाने अर्थे मार्ग मां पाथरिने बेसिये, अथवा मा मां चोर लोकोये वस्त्र लेइ लीधा होय वो पहेवारमां पण काम आ एने कोइक कृति कहेछे ने कोइक नत्ति कहेछे एवा बेनाम छे, एवि चर्म मांग चर्म पचक कयु । ९८३ ।

ए आसियो चर्म पंचकनु द्वार समाप्त अथु—इति—ये अधिकार प्रवचन सारोद्वारमे कहाहै, प्रकरण रत्नाकर, भाग तिसरमे ये प्र है, इ स. १८७९ ने संवत १९३४ कि सालमे मुम्बम मूर्ति पूजक श्रावक भीमसिंह माणकने ये पुस्तक छपाके प्रसिद्ध किया है और यही अधिकार 'श्रीस्तुति परामर्श' मष्ठ ६।७ मे दरज किया हुवा है

देखिये ! मूर्ति पूजक लोग कैसे जैनके असली सिद्धांतोके विरुद्ध लेख देते है, माहासयजी ! देखो ! जैन मुनिको कोइ वजेसे रात्री विहार करना नही, साख सुत्रश्री सुयगडांगजीका प्रथम स्कंद अध्येन । २ । उदेशा । २ । गाथा ॥ १४ ॥

(गाथा)

जथथ मिए अणाउले समविस माइ मुणिहि यासए चरगा अदु वाविभेरवा अदुवा तथसरी सिवासिया ॥ १४ ॥

भावार्थ

देखो ! मुनिविहार कर्ता हुवा चला जाता है. मगर जहापे सुर्य अस्त हो जावे व्हापे वृक्ष निचे रहे जावे, फेर सुने घरमे उतरनेका कामपडे, व्हांपे मच्छर वगैरेका तथा सर्प वगैरेका तथा अनेक तरेके डरने सरिखे शब्द होते होवे तथा सिंहादिक का खोप होवे ऐसे ऐसे अनेक तरेके, डर (खोप) किमासि होवे तथा मर्णान्तिक कष्टकी प्राप्ती होवे, तोभी मुनि उस परीसहको सुद्ध और स्थिर मनसे सहन करे, मगर रात्रीका स्थान छोडे नही ओर विहार कदापि करे नही, और भी सिद्धातोमे रात्री विहार करने की जैन मुनिको सक्त मनाइ है.

जैन मुनिको इसि वज़ेसे चर्म वगैरेके मोजे (जूत्ते) पेहनना नही, साखसुत्र दशवैकालिक अध्येन । ३ । गाथा ॥ ४ ॥

(गाथा)

अठा वएय नालीए छत्तस्सय धारऽणाठाए, तिगिच्छं पाहणापाए, समारंभंच जोइणो ॥ ४ ॥

भावार्थ

देखो ! शुवाखेलेतो १९ चोपड गजिपा वगैरे खेले वा ११ शिरपर छत्र धराव वा (छत्ता वगैर शिरपर रखता) २० वैद्गी करेतो २१ पांवमे चर्म वगैरोके पगारखि (जुते) पहनेवा २२ छकाय जीवोका आरंभ (हिंस्या) करेतो २३ अनाचार रूपना है (दोष) देखिये ! इस अध्यन मे ५२ बावन अनाचारका अधिकार चल्य है उसमे चर्म वगैरेके जुते पहननेमे बातिसमा अनाचार ज्ञानिने फरमाया है और भी सिद्धांतोमे चर्म वगैरेके जूते पहनने जैन मुनिको सक्त मनाइ है

जुते शिनेके वास्ते, अग्निमकोप बचानेके वास्ते बिछानेके वास्ते तथा पहरनेके वास्ते इत्यादि अनेक कारणोके वास्ते जैन मुनिको चर्म सेवन करणा नही, चर्म सेवन करने वाले जैन मुनियोंके हृदय कमल मेसे करुणा और दयाकी नास्ती हो जाती है और वो मुनि पचेंद्रि जीवोकि धकपर घात करनेके वास्ते तय्यार हो जावेगा कुछ नाजब नही है इसवास्ते जैन मुनिका काइभी कारणवश चर्म सेवन करणा नही चाहिये फेर देखो! प्रत्यक्ष प्रमाणमें मुसल्मीन लोगोका "सुवर" का चर्म वगैरे और हिंदु लोगोका "गाय" कावर्म वगैरे सेवण करना निसकुल बाधक है अर्थात कोइभी कबेस सेवन करना नही अब मुर्ति पुजक लोग "गाय"का चर्म सेवन करते है ये जैनके शास्रके खिलाप बात है फेर देखो ! मुर्ति पुजक लोगोके भावक लोगोको कितना फायदा हैके उनोके गुरु जुते शिव देवो फेर इससे निच दरजेका काम कोनसा बाकी रखे होवेगे

मूर्ति पुजकोके लेख परसे हमारे प्यारे पाठक धर्मनेही विचार करलेना चाहीयेके चमार वगैरेकि पन्वि किसको मिलती है ये पुन निर्णय करना ज्ञानी पुरुषोका काम है और निर्णय करके न्यायमें देना चहिये

—मुत्र विषय—

देखिये ! मूर्ति पूजक लोक श्री जैन साधु मार्गी (ढुंढक) वर्गके उपर पेशाव, अर्थात मुत्रके वारेमे कैसा कैसा आक्षेप करते है के हम कुछ इस आक्षेपकी तारीफ बयान नहीं करसकते है मूर्ति पुजकोका लेखनिचे मुजब समकत्व शल्योद्धार पृष्ट । १८ । १९

(७) पेशावसे गुदा (गांड) धोते हो
(८) लोच करके पेशावमे शिर धोते हो
(९) पेशावसे मुहपति धोते हो.

ढूंढक हृदय नेत्राजन-पृष्ट १९६:—

और जिस पात्रमें-जिमना (अर्थात खाना) उसी पात्र मे मूतना अब इनसे अधिक मंद बुद्धिवाले दूसरे कहासे मिलेंगे ?

माहाशयजी ! देखो ! इस जगह हमारे मोहन प्यारे मूर्ति पूजकोको इतने खुस रखेंगे के हदसे जादे, अहा मूर्ति पुजको अगर हम लोग तुमारे उपरोक्त लेखानुसार कार्य करते होवे तोभी पानीसे माफ कर सकते है मगर तुम लोग पेशाब पिते हो सो तुमारा पेट कायमे साफ करते हो, सो हमे बतलाना चाहिये जैसे तुम लोग मलिन हो, तैसे औरोको मलीन रखना चाहतेहो-वा-भाइ वा-तुम क्या कहेना चाहिये (दृष्टांत) देखो ! पेशाव कि नापाकि अर्थात असुचि जितनी मुसलमान लोग रखते है उतनी हिंदु लोग नहीं रखते है मगर मुसलमान लोगोका शरीर अगर कपडा पेशावसे भर जावे तथा जाय जरुरत अर्थात दिसा (झाडा) के वखत पेशावसे बैठक साफ करनेका काम पड जावे तो फेरवो इस म पानीके मिलनेसे कपडा तथा बदन (शरिर) साफ करके पाक (शुद्ध) हो सकता है, मगर पेशाव पिने वाला इसमे कैसा पाक (शुद्ध) हो सकेगा कदापि नहीं, तैसेही मूर्ति पुजक लोक पेशाव

पिवे है वो उन लोगोको पाक (शुद्ध) कैसे कहेना चाहिये, फेर मूर्ति पूजक लोग साधु मार्गी (ढुंढक) वर्गके उपर इमशा पाकरके साथ लेखि आक्षेप करते है के ढुंढिय साधु रातका पानि नही रखते हैं तो बेनके असलि सिद्धांतोमे जैन मुनियोको रात्रीको पानि रखना साफ मना है, साक्षी, दशवैकालिकजी उधारा घ्येनश्रीकि, अथ दश वैकालिक, अध्येन । १० । गाथा *

(गाथा)

तहेव असण पाणगवा, विविह खाइम साइम लभित्ता, होही अठोसुए परेवा त ननिहेन निहाव एजेसभिखु ॥ ९ ॥

भावार्थ

देखिये ! जैनसाधु जो अशनपाणिमेवा मिठाइ मुखवास (सुपारि वगेरे) येच्यार प्रकारका अहार लाये और विचार करेके रात्रीका कल मगर परसु काम आवेंगे ऐसा समज कर च्यार प्रकारका आहार रात वासिरखे नही, दुसरेके पाससे रखावे नही, रखतीका भला (अछा) समजे नही ऐसी क्रियावाला होवे उसे जैनसाधु कहेना चाहिये ॥ ८ ॥

सुत्रश्री उत्तराध्येनजी । अध्येन । ६ । गाथा । १६ ।

(गाथा)

संनिहच नक्कुव्वज्जा लेव मायाए संजए इति केवली वचनात

भावार्थ

देखिये ! जैन साधु च्यार प्रकारका आहार रात, मगर उसमेसे लेप मात्र अर्थात, हाथ वगेरेका सहजमे किंचित मात्र समरसनामी

वासी रखना नही ऐसा शास्त्रमे कहा है और चार आहारमेका आहार वासी रखे तो श्री जैनके 'नसिथ' वगैरे असलि शास्त्रोमे उसे ग्रहस्थी कहा है लेकिन साधु नही कहा है.

अब देखो ! मूर्ति पूजकोके पूर्वा चार्योके गपोडे-अगर येसे वाचनसे जैंन मुनि संयमसे भ्रष्ट नही होता होवे तो अवस्य होवे

आचारंगकि तथा नशिथ चुरण वगैरेमें साधुको बाविस बोल सेवन करणा कहाहे, कनेरकि कावको फिराके मंत्रसे सत्रु नामके मस्तक गिरादेना. मैथुन (स्त्री) सेवन करना, रातको आहार लेना. अनंत कायका दंड लेना मंत्र पढना, केला वगैरे फल खाना, कचा पानि पिना विना दिहुइ वस्तु लेना, जुते पेहरना, पान खाना, लोहारनि,ध मणधमणा, फुल सुंघना, स्नान करना, अनंत कायके झाडपे चढणा, आधाकर्मि आहार लेना, घृत वगैरे वासी रखना, धाड पडाना निधान उघाडना, अन्य लिंगीका वेस करना थंमण विद्या साधन करना, झुट बोलना ये बाविस बोल चूर्नमे चले है सो जैनके असलि सिद्धांतोसे विरुद्ध है ये अधिकार समकित सार ग्रथमेभी दरज किया हुवा है ऐसे ऐसे कपोल कल्पीत कार्य करनेवाले लोग श्री वितरागके वचन कैसे अंगिकार करेंगे. अगर जो वितराग देवके पूर्ण वचन अंगिकार करेतो वदन (शरीर) पे पूर्ण कष्ट उठाणा पडता है इस वास्ते मूर्ति पुजक लोग श्री वीतराग देवके वचन अंगीकार नही कर सकते है मूर्ति पूजक लोक श्री वीतराग देवोके वचनोसेभी विरुद्ध वरतते है तोभी श्री जैन साधु मार्गी वर्गपर पेशाव वगैरेका आक्षेप हमेश करते हैंमगर मूर्ति पूजक लोग 'रात्रीको पानी' रखके पानीके ओटसे पेशाब (मूत्र) पिते है उसकि इन लोंगोको कुछ खवर नही है इस लिये मूर्ति पूजकोकु जाण-णेके वास्ते, मूर्ति पूजकोका लेख नीचे दरज करते है.

—श्राद्धविधी प्रकरण प्रष्ठ १०२ कालम—

अणाहार (आहार नगणाय अेवी) चीजो नांनाम-लींबडानु पंचाग (मूलपत्र फुल फल अनेडाल) पेशाव, गलों, कडु करियातु

अतिबस, कादानिछाल, चोमेट चंदन, राल, हलदर, रोहिणी, वग वगेरे अणाहार जाणवा, ते चउविहार, उपवास वाल्ान पण रामादिक कारणे वापरवा कल्पछे, व्यवहार कल्पनी हविना-चाया सरमा पण कहेल छे

—ः श्राद्धविधि मष्ट ११६ कारेल्स:—

हवे अनाहार वस्तु व्यवहार मा गणायछे ते आरित-खीवरयान पचांग (मूल छाल पत्र फुल फल) मूम, गलो, कडु, करियातु, अतिविष, कूढो, चीड, सुखड, रक्षा, हलधर, रोहणी, उपलेट, वग त्रिफला, वगेरे वगेरे

मुर्ति पूजक श्रावक, भीमसिंह माणके वि समत १९६२ माहावदि ११ इसवि सन १९०६ कि सालमे 'प्रतिक्रमण सुत्र' छपाके मसिद्ध किया है उसका मष्ट। ४७८। ४०९ पिछाब पिन्। लिखा है लेख निचे मुजब

गाथा

खाइमे भचोस पलाइ, साइमे, सुठी, जीर अजमाइ॥
महु गुड तबोलाई, अणाहारे मोयनिंबाई ॥ १५ ॥
॥ दार ॥ ३ ॥

हवे अणाहार वस्तु कहेछे, अने पूर्वे कहे लक्षणे आहारमांहेला कोइपण आहारमा न आवे, परंतु चउविहार उपवासे तथा रात्रीने चउविहारे वावरी कल्पे, ते अणाहार वस्तु जानवी, तेना नाम कहे छ (अणाहारेके०) अनाहारने विषे कल्पे ते वस्तु कहछे (मोयके०) लघु नीति जाणवी, अने (निंबाई के०) निंबादिकते निंबनी सर्व पानवां प्रमुख पांचे अंगर सर्व अनाहार वस्तु जाणवी, आदि शब्द

थकी त्रिफला, कडु, कारियातु, गलो, नाही, धमासो, केरडा मुल, वोर शालि मूल, वाबलछाली, कथेर मूल चित्रो, खयरसार, सुखड, मलयागर, अगरुचिड, अबर, कस्तुरि, शख चुनो रोहणीत्रज, हलिद्र पातली, आसगधी, कुदरु, चोपाचिनी, रिंगनी अफिणादिक, सर्व जातिनाविष, साजीखार, चूनो जाको, उपलोट गुगल, अतिविष पुयाड, एलिओ चूनिफल, मुरोखार, टंकणखार, गोमुत्र आदेदेइने सर्व जातिना अनिष्ट मुत्र, चोल, मजिट, कणयर मूल, कुआर, थोअर अर्कादिक पचमुल, खारो, फटकडी चिभड. इत्यादिक वस्तु सर्व अनिष्ट स्वादवान छे, अनेइछा विना, येचीज मुखमा प्रक्षेप करिये ते सर्व अणाहार जाणवि, एउपवासमा पण लेवी सुजे, अने आयबिल मध्ये पाणहार पचखाण कर्यापछी सुजे,ए आहारनु त्रीजुद्वार थयु उत्तर भेद अठार थया ॥ १५ ॥ ये ग्रथ प्रासिद्ध कर्त्ता उपरोक्तमें प्रवचन सारो द्वार ग्रथाकि साक्षी देता है,

देखिये ! मूर्ति पूजकोके पूर्वा चार्य वगैरोनें जो ग्रथ प्रकर्ण वगैरोंमे अणाहारके लेख दाखल किये है वों लेख श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचिन असलि सिद्धातोसे साफ विरुद्ध है मगर क्या करे विचारोंसे सुद्ध समम वृतनेम बराबर पालनेकि शक्ति न होनेंसे हर वजेसें जैन साधु श्रावक नाम धरवाके इस वैभवका निर्वाह करते है मगर तथां चौ विहारमे चौविहार उपवास वगैरेमे चार १ आहारमेसे एकभी आहार मुखमे डालना नही मगर मूर्ति पूजकोने जो अणाहार वस्तु वतलाई हे उसमेसेभी कोई वस्तु मुखमें डालाना नही, जो चिज इच्छासे अगर इच्छा शिवायभी मुखमे डाली जावेगी वो सर्व वस्तु चार आहाराकि गिनातिमे आवेगी, मगर च्यार आहारके बाहेर खानेपिनेकि एकभी वस्तु ज्ञानोने नही वतलाई है तव मूर्ति पूजकोका लेख कैसा सच्चा समजा जावेगा, कदापि नहीं,—सोचो ! रात्री चउ विहारमें तथा चउविहार उपवास वगैरेमे " मूत्र " (पेशाब) पिनेका श्री जैनके असलि सिद्धातोमे कोईभा ठिकाणे लेख नही है

मगर मुर्तिपुजकोंने " मूत्र " [पशाब] वगरे पिनकी बहादूरी पतकाके जैन धर्मको मलिन कर डाला है, और नास्ति होने सरिखा बतला भी दा डाला है, मगर जैन धर्मके असलि मालिक साधु मार्गी वग है वा जैन धर्मको मलिन और [नष्ट] कदापि नही होन देंगे ये सत्य समझना चाहिये

देखो ! " गो मुत्र आदी पेहने सब जातिना अनिष्ट मूत्र " इस लेखमे हम लोग [किंचित] मात्रमी नही समझ है तोसमाधानि के लिये हम मूर्ति पूजकोका प्रश्न करना चाहते है

[प्रश्न]

[१] सर्व जातिका अनिष्ट मूत्र किसको कहेना चाहिये ?

[२] मूर्ति पूजक वर्गके मूत्रको सर्व जातिका अनिष्ट मूत्र समझना चाहिये ?

(३) दिगाम्बरि वर्गके मुत्रको सर्व जातिका अनिष्ट मुत्र समजना चाहिये ?

(४) साधु मार्गी वर्गके मुत्रको सर्व जातिका अनिष्ट मुत्र समजना चाहिये ?

(५) म्लेच्छ वर्गके मुत्रको सर्व जातिका अनिष्ट मुत्र समजना चाहिये ?

(६) भंगी चमार, वगैरे निच वर्गके मुत्रको सर्व जातिका अनिष्ट मुत्र समजना चाहिये ?

(७) शूर [शुकर] गधा, कुत्ता वगैरे तिर्यंच जातिके मुत्रका सर्व जातिका अनिष्ट मुत्र समजना चाहिये ?

अब हमने सर्व जातिका अनिष्ट मुत्र किसको समजना चाहिये इसका खुलासा और इष्ट तथा सर्व जातिका अनिष्ट मुत्र, रात्राको चउविहार तथा चउविहार उपवास वगेरेमे " पिना " ऐसा जैनके प्राचिन असलि सिद्धातोके मुल पाठसे खुलासा आम सभामे करके दिखलाना चाहिये, इसमे सत्या सत्यका पूर्ण निर्णय होके उत्तम मध्यमकि जाहिरमे आम लोगोको खबर होवेगी.

—वेश्या पुत्र विषय—

देखो! मूर्ति पूजक लोक साधु मार्गी मजब (मत) कोवेश्या पुत्र समान कहेतेहै, सो लेख निचे मूजब समकत्व शल्योद्धार प्रष्ट —४—ओली—२०—मेका—लेख

" इसपरसे सिद्ध होता है कि कुमतियोने दया मार्ग नाम रखके मुख बंधोका जो पथ चलाया है, सो वेश्या पुत्रके समान है जैसे वेश्या पुत्रके पिताका निश्चय नही होता है ऐसेही इस पथके देव गुरुकाभी निश्चय नही है इसमे सिद्ध होता है कि यह सन्मुर्च्छिम पथ हुडा अवसर्पिणीका पुत्र है "

समिक्षा० देखो! केसा उमदा अकलवारिका लेख है के' जिसका लेख उसेहीको हतक पहोचाता है सन्मूर्च्छिम मनुष्य 'केवली शिवाय किसीके नजर आते नही है, और हमलोग सारि दुनिया [जगत] को नजर आते है तो येभी लिखना इन लोगोका गलत है, और कुमति किसको कहते हे के दयाके द्वेषि होवे, ये कथन पिछेकर आये है मुख बाधना इनके आचार्योके लेखोसे सिद्ध होता है मगर इनोके द्रव्य और भाव नेत्र गुम हो गये होवेंगे,तो इनको नजर नही आते होवेंगे, ये कथन पीछे कर आये है, और मूर्ति पूजकोंने इनोके देव-गुरु-धर्म कानिश्चे श्री जैनके एकादस अगादि प्राचीन असली सिद्धातोसे सभामे करना चाहिये, वेश्या पुत्र किसको कहते है के

जिसकी माता "विभचारणी होवे" अर्थात अपने पतीको छोडके दुसरेके घर में घस जावे और फेर उसके पतियोका कुछ सुमार नहीं होव ऐसा एक कविने कहा हे के (दोहा) एक छाड दुजामे हमीं, गिनती नहीं हे सोने आसि, वश्या पुत्रहोंही की नाव, मात बाव को नहीं है ठांव ॥ १ ॥ ऐसीही उत्पत्ती आतमारामकी है तब वो साधु मार्गी मजबका वेश्या पुत्र कहलाता है

देखिये ? दुर्बोधी मुख चपटीका, इस ग्रंथमे आत्माराम सिताम्बरीकि उत्पत्ती दाखल कि हुइ है उसमेसे किंचित अधिकार इस जग दाखल करते है विसेष अधिकार देखना होय तो वह ग्रंथस देखलेना, लेखानेके मुजब

' एक गुजरान वालका क्षत्री जातका कुमाई जीरामामल अगलाकि नगावपर मसुल्लिया (नाकेपर) बतके आ रहा उसका एक गणेश क्षत्री नोकरथा उसकि स्त्रीसाथनके साथ दोस्ती होगइथी सब मालकने निकाल दिया फेर वो भाजा मारने लग गया उनके एक पुत्र हुवे बेटेका नाम "दिता" जिसका गुरुजीने "आत्माराम" नाम दिया वगैरे वगैरे"

देखा ! जैसी जिसकी उत्पत्ती होती है वो वोंस दुसरेका लगाना चाहताहे मगर हमारे प्यारे पाठक गण आपही विचार कर लेवेंगे के वश्या पुत्रवत कोन हे और किसके वंश गुरुका पत्ता नही हे

कुशिल विषय –

देखिये ! मूर्ति पूजक वर्गके पितम्बरी अमरविजयने महासती जी श्री पारवर्ताजी को 'वेश्या' कि उपमा देके मशकरी (चाशा) करी है दाखल निचे मुजब, ढूंढक ह्रदय नेत्राजन ' भाग द्विविय प्रष्ट–२३ । २४ का लेख

॥ "त्रण पार्वतीके—चारचार निक्षेप" ॥

अब " देखिये कि—१ शिवस्त्री । २ वेश्या । और ३ ढूंढनीजी । यह तीन— ' पार्वती ' और तीनोंके—भक्तके, चार चार निक्षेपका स्वरूप दिखावते है जैसेकि—महादेवजी की स्त्रीका नाम है पार्वती, सो ढूंढनीजीके मतव्य मुजब—नाम होगा और जैन सिद्धांतानुसारसे तो नाम निक्षेप ही होगा, परंतु दूसरी स्त्रीमें किया हुवा यह पार्वतिजीका नाम तो ढूंढनीजीके मतव्य मुजबभी—नाम निक्षेप ही होगा, और यह पार्वता जीका—नाम, हजारो स्त्रीयोका देखनेमेभी आता है तोभी एक दो स्त्रीयोका मुख्यत्वपणा करके समजाते है जैसेकि—कोई खुबसुरतकी वेश्या है उसने नामका निक्षेप किया है—पार्वती और एक ढूंढनी साध्वीजीमेभी वही नामका निक्षेप, किया गया—हैपार्वती ।

देखो ! अमर विजेने, निक्षेपका आस्रा लेके मति पार्वतिजीकी कुचेष्टा करी है, मगर इसको, निक्षेपका स्वरूप दिखलानेकि जरुरत होति तो,वेश्या शिवाय दुसरा लब्ज नही मिलताथा, मगर विचारा क्या करे अगर जो उत्तम लब्ज दाखल करता तो मूर्ति पूजकोंकि पोल कहांसे खुलति, सोचो, पार्वति जीको वेश्याकि ओपमा देके कुचेष्टा करनेका तो कारण ये हेके इसका गुरु 'आत्माराम था उसकिससारकि माता तो खातण [सुतार] थी और पिता क्षत्री था ये वुकमफल [वेश्या पुत्रवत] काथा, ये ऐब छिपानेके वास्ते इसने ये कारवाइ करि है, लेकिन ऐसी कारवाइ करनेसे असलि कलक दूर नही होता है जैसा कोयलेको धोनेसे कदापि सुपेद नही होवेगा वैसा समज लेना

मगर इतने पर भी अमरविजयने संतोस धारण न कर्यो फर स्व लिखता हे, देखो ! छेला निचे मुजब–त्रुढक हृदयनेत्रांजन प्र १८५–ओली ९ मीका लेख—

" अब इस बातमे आद्य तपास करना होवे तो तु ही तेरागच्छ आचरणका देखके, अनुभव करके हमारे मुखसे किस वास्ते ध्याता हे ? और अधिक तपास करनेकी मरजी होवे तो, मारवाड मालवा, काठियावाड, दक्षिण, आदिमे फिरकर देख ले की, मुख दया, दया, पुकारने वाले इस चौथे प्रतमे कितने पक्क हे "

समीक्षा–अरे भाइ अमरविजय पारवतिजीने तो उनके सम्यख आचरणको देख लिया हे मगर तेरे गुरु का पिता हात्री और माता सुतारण (खातण) हे सो तु ही तेरे गुरु के जन्म वगैरेके आचरण का सुधारा करवा क दिखा दे, हम हमारे मुखस क्या बयान करे, मगर इस दुनियामे सारा मालम, दया वगैरे का पोकार मुखसे ही करते हे मगर हमेश कहे के हिंस्या वगैरे का पुकार तु तो बैठगसे ही करता होवेगा देख ! अभिनके असली साधु तो अपना प्राण घात कर डालेंगे मगर प्रत मंग नही करेंगे, सबब प्रतका मंग करनेस ज्ञानी पुरषोंने दुर्गति फरमाइ हे, और एक सामान्य कविने भी कहा ह

दोहा

पर नारी प्रम मइ, दन करी कुछ ओर
प्रम स्यान भरपण करे, सो ही नर्क कि ठोर ॥१॥

और अन्य मतमे भी एसा ही फरमाया हे,

श्लोक

वरंशृगो परि त्यागो, नतु सिलं खडन, प्राण त्याग क्षण दुःखं, नर्क सिल खडण ॥१॥

भावार्थ- देखिये ! मस्तक कटवाके प्राण छोडेना, मगर सिल का खडण [भग] कभी नहीं करना चाहिये जिवका त्याग करनेसे क्षण [थोडा] मात्र दुःख होता है मगर सिलका खडन करनेसे नर्को-दिकका चिरकाल तक दुःख देखना पडता है

अहो अमरविजय देख इतने पर भी नही मगरतुमारे पूर्वाचार्य वगैरोके बनाये हुवे ग्रथोमे स्त्री सेवन करनेका लिखा है, साक्षी० वृति कल्पनी चुर्ण मध्ये साधुको कुसिल सेवन करकेका लिखा है

तथा माहानिसीथ मध्ये पण कुशील सेवन करणा कहा है नव आं-गीभोग मंजरीमे भी कहा है फेर भी देख तेरा गुरू आत्मारामने भी ऐसा लेख दिया है, लेख तिचे मुजब—अज्ञान तिमिर भास्कर प्रष्ट-२८४ ओली २२ का लेख " जसव्वहान सुते पडि सिद्ध, नय जिव वह हेउ तम्य पिपमाण चारित्त धणाण भणियंच ॥८४॥ जो वस्तु सर्वथा सर्व प्रकारसे सिद्धातमे निषेध नही करी है मैथुन सेवन वत् उक्तच निशीध भाष्या दौ " —

देखो ऐसे ऐसे ग्रंथ बनाने वालोको ऐसे ऐसे लेख देने वालो को और इनोको सत्य समजने वालोको हम लोग ब्रह्मचारी कभी नही मानेगे मगर उपरोक्त तिनु ग्रथ हमारे पास हाजर नही होनेसे पाठ सयुक्त लेख दाखल नही किये है, अतःएव कंवल प्रभा आचार्या कावना हुवा " जिनपिंजरके " है उसमे भी कुसिल सेवन करण

लिखा है जिनपिंजर के एकविसमे स्तुकम " स्मसनपापविसमात
पति वचनात, अर्थात मुझे की सेवन करन की इच्छा होवे तो इसका
समरण करनसे तेरा मनोवछित पुर्ण होवेगा, देखा ' रामचंद्र इस
नवकारमंत्र और चोविस तिर्थकर वगैरोंके सामल्लवस समरण काम में
आते है इस स्तोत्रके छातिस अंग है और नवकार के चालिस अंग
है इनोके समरण करनेसे लिखे मुताबिक काम होता है और इसका
अनुभव हमने पुर्ण हो चुके है अगर इस विधीसे जो साधु और
श्रावक श्रमण करेगें वो येसक व्रत प्रत्याख्यानसे भ्रष्ट होवेंगे, और
दुर्गतिकी प्राप्ति कर लेवेंगे, येसा समव है कारण जिस महात्मा
पुरुषों के समरण करनेसे अपने आत्मा की सिद्धि मानते है, उन
पुरुषोंका विपरीत समरण करनेसे दुर्गति ही मिलगी इसमे कुछ
शका नही है हमने कितनेक साधवोंको तथा श्रावकोंकु देखा है, इ
स्थाण, ज्ञान, ध्यान, समायक, प्रतिक्रमण, किवस्त भी य विधि सेवन
करते हैं मगर श्री जैनके असली सिद्धांतोंमे तो य विधि नही है
और ऐसी विधि सेवन करणे वालोंको श्री भ्रष्टाचार करने वाले
कहे है—

सास्त्र सुत्र उत्तराध्येन अध्येन दुसरा और गाथा विसमि

गाथा

सुसाणे सुन गारेवा, रुक्ख मुले वएगउ, अकुकुआ
निसिण्ज्ञा नर्व बिता सण्परं ॥ २० ॥

भावार्थ—हेराम ' स्मशाण [मसाण] में तथा सुने घरमें तथा वृक्ष
के निचे, राग द्वेष रहित, एकांत बैठक, ज्ञान, ध्यान वगैरे करें

मगर ज्ञान ध्यान वगैरे करति वखत साधु तथा श्रावकने कुचेष्टा करना नही अर्थात ज्ञानिके फरयाइ हुइ विधि से विपरीत विधि सेवन करे तो वो सर्व विधि कुचेष्टामे समजी जाती है, और आवशक सुत्रमे श्रावकके आठमे व्रतमे भी कहा हे के "भंड कुचेष्टा करी होय" इतिवचनात प्रतिक्रमण वगैरे मे विधि उपरांत नवीन विधि सेवन करे उसे कुविधि कही जांती हे, वो भी कुचेष्टामे गिनी जांती हे, उनो को जैनके असली सिद्धांतोके आधारसे भांड की ओपमा मिलती हे, इस वास्ते सझाय, ध्यान, वखान, प्रतिक्रमण वगैरे धर्म कार्योमें जिन पिंजर वगैरे की विधी सेवन ही करना चाहिये,

फेर भी देखो ! जिन पिंजर वगैरे सेवन करने वाले साधु लोगोको रात्रीके समयमें दरेश वदला के इसकयाजीके वास्ते फिरते हुये हमने देखे हे और उनोके अनुयाइ श्रावक लोक भी ऊनोके साथमे फानस लेकर फिरते देखे हें वो श्रावक लोक उत्तम साधुके उपर द्वेष भाव भी रखते हे उनोके उपर मुनि श्री भजुलालजी सामीने ऐसा फरमाया हे

सवैया

एक मुनि संगभक्ति, कारण ग्रहस्थ जाय, करे निगरानी, घरनार पर नारीकी, एक मुनि संग निशागमन ग्रहस्थ करे, दोनु भोगे नारी मन उमंग उचारकी, उत्तमसे खेटा करे, छपटीको पक्ष ग्रहे नारी को रसिक नर महिमा करे जारकी, भणे मुनि भजुलाल सुणो हो श्राविकजन, मुनि भडवा ग्रहस्त जार, दोनु जावे नारकी ॥१॥
दिनके हे अंत और रातके हे कंथ प्यारे, महत कहायवे, तो, करत उचारणा, सिलकि स्नानसेति, तिरणो तो होवे नहीं,

नारिकि स्नान सेवि मुगत पधारणा, चाव विर्येसग रखे मन्यमति
वाके पखे, सकस्के संमोग करत मिचारणा भणे मुनि
मजुस्मल मुगदार्यगसासि दिये, साव मिठा पचवाधे निमकी
ये भारणा ॥२॥ जिन पिंजरादि पच, मोग मंजरिकुं देख
अंत्र मत्र तत्र जादि सुदि मस्त पढना, धर्म कर्म सर्व मना,
विर्यस्य समझना, उंच निच नहीं रखे, उत्तम क्रिया साचना,
उपर सफाइ और अंदर मेलाइ भाइ, आडंबर वेलाय मोले,
जिव फास पावना, भणे मुनि मजुभम, मनत ससार रुले,
सिद्धांतक नायसे, निगोद सर्भ भारणा ॥३॥

पुर्वपक्षी—क्यों श्री साहेब कितनेक मुनि महाराज रात्री विषय मकानमे अकेले ही रहेते है मगर उस मकानमे ग्रहस्थ को रात्रीके समय रहेने नही देते है इस का क्या सबब है मम्हा इस परसे हम ज्ञात होता है के बेसक वो लोग रंडिबाज है कुशिल सेवन करनेके वास्ते रात्रीके समय एकेले रहते है उत्तरपक्षी—माहानमर्मी! अगर रखा कुछ हास की दवा को तो तुमारा मगज ठिकाने पर आवे, देखो! तुम भी नक्षियजी वगैर थी जैनके असली सिद्धांतोंमे श्री वीर प्रभुने भी फुरमस फरमाया है की जिस मकानमे मुनी ठहरे होवे उस मकानमे रात्रीको अपने पास ग्रहस्थि नहीं रहेने देवे, सोचो, चौथ आरेमे ग्रहस्ती लोग अपनि अपनि मयक "पोषध शालामें धर्म ध्यान करतेय मगर मुनि महाराजके पास रात्रीका ग्रहस्थ रहकर धम

ध्यान करते थे ऐसा अधिकार पुर्णपणे सिद्धांतोंमे नजर नही आता है मुनि महाराजने रात्रीके समय ग्रहस्तीको पासनहीं रहने देना इसका ये सबब हे मुनि महाराजके संयमका रस्ता अतिसय सुक्ष्म (बारिक) है, सो अल्प बुद्धिवाले दुपक्षी ग्रहस्त के ख्याल में नही आवेतो वो बाल बुद्धि दुपक्ष वाला इसम बाहेर जाके खोटी २ निंधा करने लग जावे मगर जमाने हालमे असली जैन धर्मकी किंवा असली जैन मुनिगोकी खोटी खोटी निंदा होनेका सबब ये ही है वास्ते मुनि महाराजने रात्रीके विपय ग्रहस्तीको पास नही रखना चाहीये लेकिन ग्रहस्तके स्वयं मालकिकी पोपध शाला की नास्ती होनेसे जिस मकानमे मुनि उतरते हे उस मकानमें रात्रीके विपय श्रावकोको धर्म ध्यान करने के वास्ते मनाइ नही करते हे मगर जमाने हालके समया नुसार देखनेसे मालुम होता है के जिस मकान मे मुनि महाराज उतरे होवे उस मकानमें रात्रीके समय ग्रहस्तीको पास रखनेसे संयम करणि मे किंवा ज्ञात ध्यान मे पुर्णपणे खल (हानी) पहोचति हे सबब जमाने हाल मे नव आगीभोज मंजरी किंवा जिन पींजर वगैरे का सुत्र तोर जोरसे किंवा धाम धुमके साथ वरावर तारा चल रहा है और ये सेवन करने वाले पुरुप आत्म ध्यानी असली और उत्तम मुनि महाराजके पुर्णपणे दुसमन हे और इन लोगो का इलाज पहोचे न्हातक उतम मुनिको संयमसे भ्रष्ट करनेका उपाव करते है ऐसा कार्य करने का ये सबब है कि उक्त लोग जो स्त्री सेवन करने वाले कुशिलीये मुनि है उनोके पुर्ण पढाये हुवे कावली तोते और काशमिरी काग हे तब वो लोग उतम मुनियोको महान त्रास देते है उसका नमुना देखो तो सही प्रथम मुनिका कृतव्य कहते है आठ प्रहरमेसे एक प्रहरका काल गौचरी वगैरेमें व्यतित करना और एक प्रहरका काल नींद्राव-

करनेको लगजातेहै, तद मुनिराज विचार करते हैके ऐसे स्खलित पुरूषोंको ग्रापे नही रहेने देते तो अपने चे नाहक कर्म कायके वास्ते बाधते और ज्ञान ध्यानकी हाणि कायकेवास्ते होति, इत्यादिक प्रश्चाताप के साथ वापिस सयनकर देतेहै, मगर काशमीरी कागोका कार्य वध नही होता है, बादमे मुनि माहाराजको निद्रावस जानके वो कावली तोते और काश्मीरी काग दोनु इस्कबाजी करनेके वास्ते रफूचोल जातेहै पश्चातमे मुनि माहाराज जाग्रत होगये और उनोको पुछने लगेके तुम काहागयेथे तववो दुर्गतिदाता क्याकहते है के आप मुनिराज होके प्रतक्ष झुट बोलतेहो, आपको कोई स्वप्न तो नहीं आया है, हमतो हाके झापेहै, साधुको झुट नही बोलनाचाहीये, ऐसे सत्यवादी बनते है, कोटीम धन्यवाद है आपको और आपके पढाने वालोको, के आप दोनु पूर्ण सत्यवादीके पूत्रहो और उत्तम गतिकि नास्तिकरने वालेहो पूर्ण बाहादूरी येतो दुर्गति संजोगीयोंके रात्रीके क्रर्तव्यहै, मगर दिनकोभी उत्तम मुनि राजोमे खेटाकरते है, देखो; मुनिके शरीरसे किंवा वस्त्रसे, किंवा पात्रमे किंवा पाठसे, किंवा पोथियोसे, किंवा ओघापूंजणीसे, किंवा उत्तरे हुवे मकानसे ईत्यादि प्रयोगोसे खेटा करते है, फेर मुनि बाहेर निकलतेहै, जैसामंत्रवादि मंत्रसे कार निकालतहै इस मुजब कारनिकालतेहै इसके शिवाय गौचरीमे साथ रहेके अनेक प्रकारकि खोटी कारवाई करतेहै इत्यादि कारणोके प्रयोग (प्रसग) से वो कावलि तोते और काश्मीरी काग उत्तम मुनि राजोंसे अनेक तोफानेके साथ खेटे करके दुःख देतेहै, फेर उनोकों नवमे तथा दसमे तथा इग्यारमें वृतमे तथा अनेकप्रकारकि सोंगनदेके पूछोके आप जिन पिंजर वगैरे विधिसहीत सेवन करते हो और इसके जरीये उत्तम मुनीयोंसे खेटे करके तकलिफ देतेहो ऐसा पूछनेमे वोलोग फोरन झूट बोलते

है, या लोग क्या जानते है के हमारे कतव्य कवराभी नहीं आता है तो मनुष्यकि तो क्यामगदूरहै, खरगोसवत्-- [द्रष्टांत] जैसाके खरगोस [ससा] केपिछे पारधि पकडनेके वास्ते दो जाताहै, तवय खरगोस दोडने लग जाताह दोडते दोडते थक जाताहै, तब अपने कानस अपनि आंखे ढांकलेताहै, और अपने दिलम मानताहै के मा दुनियांमे किसीको नही दिखताहै मगर पारधि उस समका फौरन पकड लेताहै इसही वजेसे यो कावाले दोत और काश्मीरी काग दिलमे विचार ते है के हमारा कतव्य किसीको नही मालुम पडताहै मगर उत्तम मुनि राजोंसे किंचित मात्रभी छिपानही रहताहै, मगर उत्तम मुनि राजोंका फर्ज हैके किसीकोभी तकलिफ नहीदेना यो कावाले दांत किंवा काश्मीरी काग जिंदा करेतो चुप करनेदो आपनका तो दुवका फायदा है एसे विचारके साथ उत्तम मुनि सताप धारन करतेहै, अब कहिये, महासयजी, कावालिन दोतोंका और काश्मीरी कागोंकी उत्तम मुनिराज सगत कैसिकरे और पासमेभी कैसे रखे यथातथ्यार करते समकहै उत्तर यही आपका फरमान पूणसत्यहै जिनाजिक यादि वाले साधाका और कावलि दातोंका और काश्मीरी कागोंकी कोईभी वजेसे संग नही करना चाहीय, इनीका सदासर्वदा काला मुख करते रहेना चाहीये इनाकासगकरनसे मुनि सिद्धि सेव मसे भ्रष्ट होवेंगे इसवास्ते उत्तम मुनिराजोंसे मेरी यही विनंती है के धमनष्ट और दुष्ट पुरुषोंसे सदासवदा बचके रहेना चाहीये वैसी मेरी विनंतीहै अगर ऐसे लज्जित पुरुषोंका प्रसंग पाडजावे तो फौरन मकानके बाहर निकालनेकि कृपाकरते रहेना मगर कोईभी तरसे मुलायजा रखना नही येमरी धर्मरसकी अरज ध्यानमें रखना

[सवैया]

एकएक मानव ऐसाइहोयके, साधकें स्थानक आयरहे है,
छिद्र जाणनिपेख्यो नाहके, काल अकालही आयेकरे है,
कोयक छिद्र कान परे जद, निछेह साधुको नामधरे है,
सोच विचार करोनर उत्तम, एक ननोसेदोप हरेहै ॥ १ ॥

देखिये, कृपानाथनिंच कृतव्य करने वाले दुष्ट और खलित पुरुषोको सबकोइ निषेध करनेके वास्ते फरमातहै, इस वास्ते मेरीउपरोक्त अर्ज स्यलम अवश्य रखके कावलि तोतोंसे और काश्मीरी कागोंसे बचके रहेना चाहीये, मगर संग नही करना चाहीय

देखिये! एसे ऐसें शास्त्रके बनाने वालोको, और मत्यममजने वालोको और इसरितीमे वरतने वालोको, श्रीजैनके असलि सिद्धातोके आधारसे–साधु–या–श्रावक कभी नही कहेजावेगे, एक पक्षमे दुर्गतिदाता कहेनापडेगा, इत्यादि कारणोंमे ऐसे २ चमत्कारी बनाव बनतेहैके कुछ अमल काम नहीकरतिहे, देखो! जिस वखत हम बराड –या–झाडिकि तर्फथे, तव यतिलोकोने हमारे पुर्ण आत्मरक्षकको "जिन पिंजर वगैरे सरूके" उन्होंनें उनोका पक्षकार करलियाथा, फेर हमारे, उपर, महाभयकर खोटा तोफान ऐसा ला डालाथाके मुनि पदसे भ्रष्टहोवे इसमे तो कुछ ताजब नहींहै, मगर ग्रहस्थ पदसे भ्रष्ट होकरके हदपार जानेकी वखत आ पहोंचीथी, और हमारे आत्म रक्षकके पक्षकर हमारे उपर खोटेलेख देनेंको तय्यार हुवेथे मगर वोलेख हमारे हस्तागत होनेसे गोर (विचार) कियाजावेगा वे बनाव " जिन पींजर वगैरेकाहे लेकिन हम फोरन खानदेशमें जाके हमनें हमार चोतर्फसें बचाव करलियाहै, इतने परसेही, पाठक गणने गौर करलेना चाहीये, विशेष लिखनेसे बहुतेक जीवोंको त्रास उत्पन्न होवेगा, इसवास्ते छापेसवर रखना ठिकहे, लेकीन सत्यका

नराजय कदापि नहीहो सक्ताहै मेरे भाई अमर विजे एक! तुमार एक आर्योके श्लोकोमे, तुमारा मूर्तिपूजक वग, ब्रह्मचारीपदम भ्रा ठहरवाहै, इसवास्त अवश्य तुमने तुमारे भरको पूण सुधरा करा केर दुसरोकी तर्फ द्रष्टी पोहचाना योग्यथा, एसा करनेसे तो इस फायदा प्राप्ति होवा मगर और, श्री जैनके असलि सिद्धांतोंका न्याय एसा है—फेर देखो, जिनपिंजर सेवन करने वाले उत्त मुनियोंके दुसमम पूर्ण होते है

देखिये, श्री जैनके एकादस अंगादि प्राचीन असली सिद्धांतोंमे सिवाहेके, सिद्धव्रत [ब्रह्मचार्य] को कायम रखनेके वास्ते अपघात [प्राणका त्याग] करके मरजाना मगर ब्रह्मचार्यका भंग नही करना, साक्षी, ठाण्यांगजीके दुसरे ठाणकी, पाठ निचे देखो!

[पाठ]

होठाणाई अपडि कठाई पनेत वेहाहा वहानसे, गिरपठे

भावार्थ

देखीये! सिद्धव्रत [ब्रह्मचार्य] कायम रखनेके वास्ते, फांसि वगैरे क प्रयोगसे प्राणघात करडालना, मगर ब्रह्मचारी पुरुष ने स्त्रीसेवन करना नही, देखो! असलि शास्त्रोंमे स्त्रीसेवन करनेकी सख्त मनाई है मगर मूर्तिपूजकोके पुर्वाचार्य स्त्रीसेवन करनेकी हुवेहूब रजादेते इसवास्ते इनोको सावद्याचार्य कहेनेमे आतेहे, और इस आज्ञानीयोका वचनभी प्रमाणनही करनेमे आतेहे, और ऐसेंही इनोके लेखके आधारसेंही कुशिल [स्त्री] सेवन करनेवाले हुवे हुव ठहरते हैं, देखो!

! श्री जैन श्वेताम्बर साधु मार्गी वर्ग तो श्री जैनके-असलि सिद्धांतोंके आधारसे ब्रम्हचर्य पालनेवाले सिद्धहोते है, सो चोश्रीजिनके असली मुनियोका शिलपालनासिद्धहूवा-

फेरभी देखो! परस्त्री सेवन करनेवालोके कैसे कैसे फजिते होते है

— कवित्त —

कायाते कामजात, गांठहुसे दामजात, नारीहूसे नेहजात, रुप जात रंगसे, उत्तम सवकर्म जात, कुलकेसव धर्मजात, गुरू जनसे शर्म जात, अपनि मति भंगसे, रुपरंग दोउजात शास्त्रसे प्रतीत ज्ञात, प्रभुजीसे स्नेहजात, मदनकी उमगसे, जपतपकी आश जात, शिवपूरकोवास जात, भुषणविलास जात, परकामनिंक सगसे ॥ १ ॥

भ्रातगण! परस्त्रीके दुर्गुण केवल एकही कवित्तमे हुवे हुवे दिखला दियेहै, मगर इस विषयका जितना वर्णन करेवो थोडाही है, इसके निषेधनसे सदासर्वदा लाभदायक होता है,

(लावनी)

मतकरो प्रीत परनारविष कटारी, है सकल रोगकी खान माहा दुःख कारि,

औषधि अनेक है, सर्प डसनेकी भाइ, परप्रसके कामकी औ कोइ दवाइ, गये सगे भानवो, जीवितफेरकोआइ, परप्रसके नैनक बानसे होयसफाई, येरोमरोम विषभरी करोमतवारी ॥ १ ॥ है इस्क यहतन मनधन हरलेय मधुरबोलीमे बडुहांकाकरे शिकार उमर भोलीम, करदिये हजारो ढेर पोट होलीमे लाखोंका दिल करडी या कैद चोलिमे, गई इस कर्ममे लाखोकी जमीदारी ॥ २ ॥ हैइस्क होगये हजारोके बलवीर्यका छारा, स्मसोका इसने वंश नाशकरडारा, बंधगया प्रेम इस्कने देसबीगारा, भारत गारत होगया इसीका मारा करदिये हजारो इसने चोरजुवारि ॥ ३ ॥ हैसक ० इसपरनारीने मधमांस सिखलाया, सबधर्मका इसने धु मिलाया, और दया सना स्मस्माको मार भगाया, ईश्वर भक्तीकामुल नाशकरवाया, हो इसके उपासक (सेवाकरनेवाले) दुर्गतिके अधिकारि ॥ ४ ॥ हैसक ०पर नव जावनको नैनसेनसे लावे और धनवानोको चट्ट गट्ट करजावे, धनहरन करे फिरपिछे राढवताथे, करसीन पांचवो जुतेमी लगावे, फिरमार लगाये पुलिस पुकारी ॥ ५ ॥ हैसक ० फिरक्रिया पुलिसनेखुब अति सत्कार, होगइ सजागिलगया मजा इस्ककामारा, जाखुदोय,यो सज्जन कराविचारा, दोलाग झुठको सत्यवचन स्वीकारा, अब तजोकर्मसब अनिनिन्दित दुखकारि ॥ ६ ॥ हैसक ०

॥ सवैया ॥

ज्ञानसे शठमानननमें, बलतेजकी हानि सबैकरडारी, सपति नि उ धनन कुलकाटन उपग मातवि मारी, व्यपसमय मनमोल नमें सपनाज समानिशा अधियारी शीलसो उत्तम रत्न नसे, कता ा र्ति व्यभिचारी ॥ १ ॥ मसामखेरु मुराइचसे, बुरिन मन गणि ा भाग, रहिकला परविनसहा, रविहीन — नघर्म अधम

विचारी, लाल हरे शुचिता, तनकी, जनरुप हरै रुकरें अपकारी, यार दुखारी भिकारी करै, घरतौ हूनचेतलहै व्यभिचारी ॥ २ ॥

(श्लोक)

दर्शने हरंती चित्त, मशने हरंतीबलं, सगमे हरतिवीर्य, नारि मत्यक्षराक्षशाः ॥ १ ॥

भावार्थ० देखनेसेचित (दिल) को खेंचलेतीहे, खुसिहो नेसेवल (ताकद) को खेंचलेति है, और संभोग [सेवन] करनेसे विर्य (शरिरका राजा) को खेचलेतिहे, येतिनो वातोका नास होनेसे मनुष्य किसिकामका नही रहेता है, इस वास्ते स्त्रीको राक्षसणी कहीहै इसलिये! इसका अवश्य त्यागकरना चाहीये, फेरभी देखिये! सत्यातर, अंगसंयुक्त भमरन करने वाले पुरुपोको तो ज्ञानि पुरुपोने भांडतुल्य फरमायेहै, मगर इसके वारेमे कविर दासजीभी क्याकहेतेहै सोसुनो तो सही.

(दोहा)

मालामें चालाकरे, मुखमेभजे हैराम, दास कविरा यउकहे,ये ठगवाजी के काम ॥ १ ॥

— भावार्थ —

देखो! बुगध्यानि पुरुष, जैसा वगला पाणिपे वैठके एक चित्त मच्छीके उपर लगात है, इसहिवजेसे उक्तध्यानि पुरुषमाला हातमे लेके

एकध्यान स्त्रीके उपर लगावेतेहै, अजीसाहेब कैसाभला, मान्यहावमे केड पर्णसे लगाके मस्तकतक और मस्तकसे लगाके चर्णतक लोमकरतों उनोको पुछो अहो माई तुम समरण करते हो के लेस करते ह, तबवोलोग कहेते हैके अजीसाहेब हमारे शरिरमे सुजली चलतिहा हमखुजातेहै, ऐसेदुर्वरी धुर्ताइकेसाय हुग्बोलतेहै, परतु सो लोम हानमे मालमलेके ऐसे माहात्मा भक्तजनके बैठेहै के, इस दुनियामें इनकेसरिस। कोइभी भक्त नही है, मगर वोलोग एकातम बुगला भक्तहै जैसी बुगलेकि नजर मच्छीपर रेहतीहै वैसी बुगला भक्तोकि नजरपरस्त्रीयाप रहतिहै, इसवास्ते उन बुगला भक्तोको प्रभु भक्तनही कहेना चाहीये, मगर धमठग कहना चाहीये धमठग का ना उक्त लोगोके वास्ते कदापि अयोग्य नही होवेगा,

देखिये ब्रम्हचर्यसे भ्रष्ट पुरुषोंका किसीत हवाल सम्यक यलस्व समाप्त करनकि रजाछेवाडु,

(गाथा)

बम्भचेर भठा, पायपडति बंभयारीण, तेहुतीहुग्मुह वाही पण दुलहातेसि ॥ १ ॥

(भावार्थ)

देखिये; जो पुरुष ब्रम्हचर्य (शील्व्रत) सभ्रष्टहै, फेर वो पुरुष ब्रम्हचारि पुरुषोंके पाससे पाव पडवावे तो, परभवमे हावना

टूंटा और पांवकालुला (पंगु) और जवानका मुकाहोता है, फेर वो उक्त पुरुषको परभवमे धर्मकि किंवा समकितकि प्राप्ति भवांतरमेभी मिलना मुसकलहै,
सुर्त्तागण! कहीये आप साहवानोंको केसा केसा उमदा मजा मिलता है, सुनिये ! धनकि नास्ति, धर्मकि नास्ति, शरिरकि नास्ति, इजतकि नास्ति, मान पानकी नास्ति, बुद्धि किवलकि नास्ति, लज्या शर्मकि नास्ति, ज्ञानध्यानकि नास्ती, इत्यादि अनेक उत्तमोत्तम गुणोकि नास्ती होती है और व्याजमे जूतियां पडति है, जेलभी मिलताहै और शरीरमें रोगादिककि उत्तपति होती है, और मरेके वाद फेर दुर्गति मिलति है, प्रायःयही दुर्दशा वेश्या और परस्त्रीयोके प्रेमियोंकी होति है, परशोक ! कि भारतवर्ष, धनाड्य और उत्तम महाशय स्वतः अपनी आंखोको वंद करके अर्थात मिचके किंवा मुंद करके, इस विषय कुपमे गिरते जाते है, यहा तदाकि अन्तमे वडवडे पदविके धारक पिताओंके नामको धक्का लगाते हुवे, इसके जरिये अनेक कुव्यसनोकी प्राप्ति करते हुवे आप वडे घर (कारावास) मे विश्राम लेते है, जदऐसे ऐसे सद्गृहस्थ ऐसे ऐसे कार्य सेवन करते है तव औरोका वचाव कैसा होवे और कोन करे.

हाय ! खेदाश्चर्यका स्थान है के, जमाने हालमे देखो जिन पिंजर वगैरोके जरिये, विषयविकार सेवन करके, हमारा भारत गारत हो गया है, परशोक ! परशोक !! परशोक !!! हे प्रभु इस विषय विकार रुप चंडालकि पूर्ण नास्ति होके इस हमारे भारत वर्षमे पूर्ण धर्मकि वृद्धि कव होवेगी.

धर्मकि, जय ! जय !! सदा जय !!!

—ः विजय पराजय विषयः—

देखिये ! मूर्ति पुजक लोग कहेतेभी है और लिखतेभी हेके साधु-मार्गी (ढूंढक) वर्गका कोईभी वखत विजय हुवा नहीं है

और 'दुढक हृदय नेत्रांजन " नृ० १९१ मे मुनि पंयामालखाइ बारेमेंभी अमर विजयने लेख दिया है, मगर ऐसे पंडितोसे सोसायग लेना मुसकल हे, देख ! पयासालजी तो बडी भारी बात है, मग हमारेसे तुमको सामना लेना मुसकील हो गया है, हम तेरेको विक्रम सवत १९६७ कि सालमे ९ मम्र कियेथे उसका उत्तर न देता, माफोजे बाम्म पिरथीराज बगतावरमल्ने पब्लिक पारर मारफत नोटीस दिलवायाथा उसके उत्तरमे हमने जवाव दियाथाके, तुमारे गुरु अमरविजयके समक्ष खुलासा करेंगे मगर तुम और तुमार श्रावक दोनुभि गुम होगये, मगर फिर जवाब नदिया, फर स १९६८ कि सालमे चोपडे वाले आदमसजी बोथराने इलागेसे चर्चा करनेके वास्ते अरे माइ अमरविजय तेरेको और तेरे श्रावकोको रजिष्टर दियाथा और उसमे तुझे पंच परमेष्ठिकि सोगनभी डालिथी मगर पंच परमेष्ठीकि सोगनकि नास्ती करकेभी जवाब न दिया सोगन और मिरणो साम कि हि होति हे, मगर पच परमेष्ठीकि सोगनका पालन तो जैनि ही करते है, दुसरोंसे इसका पालन नही हो सक्ता हे नास्ति कोंरकि नकल निचे दरज करते है

Notice

That you muni Kundanmal

Lay a printed notice to our client, Pruthwiraj Baktavarmal jain Swaitambari Mandir Margi of Akola of the 15 th September 1910 by questions the first 5 of which are clearly defamatory and false pubished at Akola on the 5 th october 1910 and thus committed an offence under Section 500 of the Indian Penal Code and also under Sec 153 A of the same code That the manager Babaji printing Press in knowingly publishing the notice has abeted the offences Both of you are therefore required to explain within a week from receipt of this notice why you hould not be prosecuted

---

for libel and promoting enemity between different classes of His Majesty's Subjects

AKOLA (Sd) in English
19 10 10 Pleader
for Pruthwiraj Buktavarmal
Vice chairman of the Akola
Jain Swaitambar Sam sthan

तर्जुमा नोटीस अंगरेजी:—

नोटीस

के तुम मुनि कुदनमलनें एक छपा हुवा जाहिरात हमारे पक्षकार पृथ्वीराज बखतावरमल जैन श्वेतांम्बरी मंदीर मार्गी अकोला वालेको तारीख १५।९।१९१० का सवालोसे भरा हुवा दिया, जिसके पहेले पांच सवाल तो बिलकुल बदनामिके लायक और झुटे है जोके आकोलेमे तारीख ५।१०।१९१० को जाहीर हुवे जिस वजेसे ताजीरात हिन्दके दफा ५०० और उसी कोडके दफा १५३ (अलिफ) के जुर्म के तुम मुर्तकिब हुवे और वात्राजा प्रिन्टिग प्रेसनें जानकर यह जाहिरात छापा है इस वास्ते वहभी यह गुन्होंका अयानत दार है इसवास्ते आप दोनो यह नोटिस मिलनेपर एक हप्तेके अन्दर जवाब देवके आप सरकारके न्यायाके मुक्तलिफ वर्गोमें दिदोदानिस्ता दुष्मनी वढाने चाहते हो इसलिये आपके उपर क्यों मामला नहीं चलाना चाहिये.

आकोला सही (अंगरेजी)
१९।१०।१० वकील

तर्फे पृथ्वीराज बखतावरमल
व्हाइसचेअरमान अकोला जैन स्वेतांम्बरी संस्थान

उपर दर्ज किये नोटीसका जबाब दिया गयाथा सो निचे मुजब

नोटीस

बोदवडहून खालि सही करणार नोटीस देतोकि आम्हालाम मूर्ति पुजक पृथ्वीराज मकतायरमल याने वकिल चावरे मर्फे अम्हास नोटिस कळ्वी ती नोटीस ता० २ । १ । २० इसवी राजी मिळाली परंतु जैनचे एकादम अंगादि शास्त्रिन असली सिद्धांताचे विरुद्ध ज्या ज्या गोष्टी मुर्ति पुजणाऱ्या लोकानें छपउन जाहिर प्रसिद्ध कलीमाहे मार्गीन गोष्टीने आमच्या सर्व जैन लोकास, मोठा भारीक्म पोहोचत आहे याकरिता मुर्ति पुजक लोकाचे मान्यवर आचार्यचे कलेले शास्त्रांतुन काढून मुर्ति पुजक लोकाचा गुरु अमरविजय याजला आम्ही ता० २५ । ९ । १० ई० रोजी जाहिर नव ९ प्रश्न कले आहे आमच्या प्रश्नांचे उत्तर न देता आपल्या प्रश्नास पृथ्वीराज वगतायरमल खाते ठरवित आहे परंतु असखेप्रश्न पण खरे आहे परंतु नोटास करणाऱ्या समक्ष सुल्लामा करण्याची अम्हास कार्ही ग्रस नाहीं नोटीस करणाऱ्याचा गुरु अमरविजयचे समक्ष सभेंत किंवा कोर्टांत असचे प्रश्न मुर्ति पुजक लोकांचे मान्यवर आचार्याच केलेले शास्त्रानें अम्ही सिद्ध करण्यास तयार आहो नाटिस करणार पृथ्वी राज वगतावर मल यानें वकिल चावरे तर्फे अम्हास खोटी नोटिस देउन त्रासदिला आहे या करितां कायदेशिर इलाज करता याल ता: २५ । १० । २० ई

(सही मराठी) मुनिकुन्दनमल
मु॰ नंबोतस मरेठी नोटीसकाचरजुमा हिन्दीमे दरमजेस —

— नोटीस —

बोदवडस निचे सही करणवाला नोटीस देताहै आकाके माने मूर्तिपूजक पृथ्वीराज बगतावरमल इसने वकिल चावरं मार्फत

हमको नोटिस दिहै. वो नोटिस ता. २०। १०। १० ई.को मिली लेकेन जैनके एकादस अंगादि प्राचिन असलि सिद्धांतोके विरुद्ध जा जो वाते मूर्तिपूजक लोकोने छपाके जाहिर प्रसिद्ध करीहे पिछली बातोसे हमारे सर्व जैन लोकोको वडाभारी धक्का पोहोचताहै इसवास्ते मूर्तिपूजक लोकोके मान्यवर आचार्योके बनाये हूवे शास्त्रोमेसे निकालके मूर्तिपुजक लोकोका गुरु अमर विजय इसको हमने ता. १५। ९। १० ई को जाहिर नव प्रश्नकरे हे हमारे प्रश्नोके उत्तर नहीदेते हमारे प्रश्नोको प्रथिराज वगतावरमल खोटे ठहराताहे लेकिन हमारे प्रश्नपूर्ण सच्चे है लेकिन नोटिस करणेवालेके समक्ष खुलासा करणेकि हमको कुछ जरुरतनही हे नोटिस करणेवालेका गुरु अमर विजयके समक्ष सभामे तथा कोर्टमें हमारे प्रश्नमूर्तिपुजक लोकोके मान्यवर आचार्योके करे हुवे शास्त्रोसे हम सिद्धकरणेको तय्यार है.

नोटिस करनेवाला प्रथिराज वगतावरमल इसने वकिल चावरे मार्फत हमको खोटा नोटिस देकेत्रास दियाहे इसवास्ते कायदेसर इलाज कियाजावेगा—ता २५। १०। १९१०

सही मरैठी (कुंदनमल)

माहासयजी! देखो! विजय किसको कहेतेहै. और मूर्तिपूजकोका लिखना सच्चाहे याखोटा इसका पूर्ण विचार ज्ञातापूरुष आपहिकरलेवेगे मगर मूर्तिपुजकोसे साधु मार्गी (ढूंढक) क्योंकि

फूटनोट—हमने अंगरेजी नोटीसका जवाब वकिल चावरेको दियाथा सवव यह थाके नोटिसके उपर जो अंगरेजी सहीथी सो बराबर मालूम नहीं हुई इसवास्ते.

कोई मसलमी पराजय हुइ नही और होवेगी नही इयलम

—— जवाब दावाविषय ——

देखिये! पिताम्बरि मतम विजयने एक ' जवाबदावा " नामकि छोटिसि किताब छपवाके जाहीर करीहे मगर जवाब दावा एसा नाम वनका रखरव सो येह नजर आताहे के साधु मार्गी वर्गेस जवावमन मगर जवाबलेना सो दुसरा और जवाब देनकि मुसिबत उठाणापस सबब मूर्तिपुजकोंके पूर्वाचार्य वगेरेने जो निकादिग्रंथ प्रकरण वगेरे बनायेहे उनाम भी जनके एकादस अंगादि माचिन असलि सिद्धांतोंसे जो वो विपरित अधिकार दाखल कियेह उनविपरित अधिकारोंका साबता मिलनेकेवास्ने कैसा जबरदस्त इलाज ठियाहे देखिये भीमिर मजुके सचावितम पाठ देवादि समासमाण माचाय हुयेहे उन महापुरुषोने भी जैनके एकादस अंगादि माचिन असलि सिद्धांतवादपत्रोंमे लिखवायेथ सबब असलि सिद्धांतोंकिनास्ति नही होना चाहीये मगर उनमसे कितनेक असलि सिद्धांतोमे मूर्तिपुजकोंके पूर्वाचार्य वगैरोने अपन स्वार्थवास्ते नविन मनकल्पित पाठ दाखलकरके वो सिद्धांतवा पित्तवादपत्रोंमे लिखवाके भंडारोमे दाखलकर दियेहै और हालभी असलि सिद्धांतोमे यत्तोग नविनपाठ दाखलकरतेहे इसकामी इनसे लोगोंने जवाब लेनाचाहतेहे—और श्री जैनके एकादस अंगादि माचिन असलि सिद्धांतोंमे जो जो विपरित पाठहे वा सर्व मूर्तिपुजकोंके पूर्वाचार्य वगैरेने दाखल कियेहुयहे इसबातमे कोइवरेकिसका नही समजनाचाहीये इत्यादिकारणोंके सबबसे जवाबका दावा मूर्तिपुजकोंसे हमही करना चाहतेहे

——श्याद् वाद् विषय——

देखीये! मूर्तिपूजक लोग श्याद वादकाआसरा लेतेहे मगर श्यादवाद इसे कहेतेहे [illegible] दोनु बाते सत्यहोना चाहीये उसे श्याद वाद कहाजा-वेगा, जैसे [illegible] मातातो-दो-थी-एक तो देवानंदाजी और दुसरे [illegible]. देखो! देवानंदाजो तो मोक्षगयेहे और त्रसलादेवी [illegible] गयेहे—अब जिसजगे मोक्षकी आस्तिहोवे-गा व्हांपे [illegible] नास्तिहोवेगा, और जिसजगे देवलोककिआ स्तिहोवेगा [illegible] नास्ति होवेगा फेरभी देखो! जैन मुनियोको चातुर्मासमे [illegible] के जैनके असलि सिद्धातोंमे मनाइहे, मगर संयम वगैरे [illegible] ने ठाणायंगजीके पाचवे ठाणेमे पाचकारणसे मुनियोंको [illegible] विहार करनेके वास्ते श्रीविर प्रभूने फरमायाहे जिस जगेविहार [illegible] करणेकि आस्तीहोवेगा व्हांपे विहार करणेकि-नास्ति होवेगा [illegible] पे विहार करणेकि आस्ति होवेगा व्हापे विहार नही करणेकि [illegible] ति होवेगा इसतरेसे अनेक अधिकार समजा लेना मगर दोनुबाते सत्यहोनाचाहिये अगर एकबातसत्य और एकबा-त झुट होवेगातो व्हापे श्यादवाद कदापिलागु नहीहोवेगा, जैसाके-अठारा पापसातकुविसन वगैरेसेवन करने वाले जीवोको दुर्गतिमें जाने वाले कहे हे मगर अठरा पापसातकुविसन वगैरे सेवन करनेवाले जीवमोक्ष जावेगे ऐसा कदापि सिद्धनही हो सकताहे, जहांपे पाप वगैरे कि आस्तिहे, व्हापे मोक्षकी नास्तिहे और जहापे मोक्षकि आस्तिहे व्हापे पाप वगैरेकि नास्तिहे, इसलिये दोनुबाते सत्यहोवे व्हापे श्यादवाद लागुहोवेगा अन्यथा स्थानपे श्यादवाद लागुनही होसकता हे.

——अमरविजयको सुचना——

देखिये! अमर विजयने ढूढक हृदयनेत्रांजनके प्रथम पृष्ट ३१ म दोनु कान्फरन्सकी सुचना करिहे और भाग दूसरे कमपृ० ७ म लिखताहे "परंतु इम ढूढक भाइको भलाइक वास्तुशुले करनेकि और मंत्रसिकटकरछेनेकिमला मध्यकरके" फेर अगले पृष्ट ३४ । ३५ म इसीपुकार दाखल्ल कियाहे, इत्यादिकारणोसे हम अमरविजयका विदित करतेहेके उपरोक्त तेरे लेखानुसार तुझे कार्य करणेका अमांस हम आपहीचाहे, येअमुल्यसमय खोना तुझेठिक नहीहे —सा—श्रीजैनके एकादस अंगादि वाइपणोमे लिखित प्राचिन सिद्धांतोंके मुलपाठसे अम समाकेमध्यमें हमारे निन्मलिखित लेखानुसार निर्णयहोना चाहीये, तबतो तेरिखुबिहे

——स्वधर्मिको सुचना——

देखिये! महासयजी! श्रीजैन स्वेताम्बर स्थानकवासि (साधु मार्गी) अर्थात हमारे स्वधर्मि मुनिवर्ग —व—श्रावक वर्ग—मेसे कितनेक मुनि —व— श्रावक, हमेस, जिज्ञासु ज्ञात पुरुष—चर्चावादि मुनियोंका —व— श्रावकोंको, फरमायसकरते हंके, येकोंग, कोपिहे, अभीमानिहे अज्ञानिहे सिर्याराग द्वेष बढातेहे और अनेरेकि फजूल निंद्याके करिवे (निंद्याकरके छेद छापकरके टैटोका घर बढाते है और नाहकर्म बांधतेहे दुसरा कोई अपने धर्मके उपर चाहे जैसा हमला करेतो कामे देखो, मग्र आपुनमेंतो अपने आत्मध्यानमें मस्तरहेना चाहीये, (दृष्टांत मगर को कुत्ताने असमेको काट्यातोक्या! वापिस उसे काटना चाहीये कदापिनही, हालमुमारे स्वधर्मी बंधु असल मतलबसे अजाणहे इसवास्ते ऐसी पामम धर्मेकि वार्ता जाहिर करतेहे, ऐदरम्यर्यका स्थानकेके अ कुतमे गपनको काटतो वापिस उसकाटना नही, येकहेमातो ठिकहै

मगर कुत्तेके काटनेसे जोदर्द उत्पन्न हुवाहे, उसकि नास्ति करके आगे फेर कुत्तानही काटे ऐसा इलाज करते रहेना ये ईन्सानकायोग्य फर्ज-है, अहो ज्ञात पुरुषो तुमारे सरीखे जो हमारे स्वधर्ममें सर्व बनजावे तो, हमारा स्वधर्म तुर्तही पयालमें घुसडजावे मगर श्री जिन सासनके स्थंभतो चर्चावादि मुनिमहाराजही है, देखिये! संवेगी राजेंद्र सूरसे, मुनि नदलालजीने सामनालेके जावरा १ मंदसोर २ जिरण ३ निमच ४ जावद ५ निंबेहडा ६ ये –छ– क्षेत्रोंपायाबंध रखे नहींतो इन क्षे-त्रोका तुम लोगोको सप्नाभि नहीमिलता, बस! देखो! ऐसे २ अनेक हेतु देदेके चर्चावादिगोको कायल करना चाहतेहै, मगर ऐसे असमर्थ और अल्प बुद्धिवालोंसे वो सासनके स्थंभचर्चा वादि मुनिमहाराज वगैरे कायल कदापि नहीहो सकते है—सोचो! जूं—के भयसे कुछ नंगे नहीफिरते हे. और सिंहके भयसे मुलकगिरी बंधनही होतीहै, इसही वजेसे स्वधर्मका सुधारा करनेके वास्ते मर्णान्तिक कष्टकिभी परवानही करते हुवे, स्वधर्मका सुधाराचर्चावादि मुनि वगैरे हमेसकरते रहेते है, हम उन माहात्मावोंको वारंवार कोटिस धन्यवाद देतेहै,

अतः एव – हमारे स्वधर्मिमुनिवर्ग –या– श्रावक वर्ग ये दो-नुं मामल होके कैसा कथभा (गलबा) स्वमजव (मत) मे मचादीया है के हमकुछ बयान नही करसकतेहै मगर इन माहाकेवलीयोके बुद्धि-का किंचित नमुना दिखलातेहे, देखिये! ये, ढिलेहै, येपोलेहै, इनोमे संयम नही है, इनोमे सयमहैये स्थानकसे उतरते है, ये स्थानकमे उतरते नहीहे. येदेशीहे, ये परदेशीहे, इनकि ढुंढिसिखर गईहै, इनोकि ढुंढि नहीं शिखरीहै, ये भागवानहै और ये कुछ नहीहे येपास्थेहै, और ये उत्कृष्टहै × ये श्रुतकेवलिहै, ये हिणबुद्धिहै, इनकिसेवा वंदगीकरना,

---

× देखिये! इस पंचम कालमे उतकृष्ट चारित्रकि नास्ति हो गई है तो इस कालमे उतकृष्ट चारित्र कांहासे आया, उत्कृष्ट चारित्रकेवलि

और इनकिसवा बन्गी नहीकरना इनक पासजानेसे दयम्यदिखना और इनोके पास जानेसे नर्कमिलेगा वास्तेइन्कपास जाना आर इनक पास नहीं जाना य कुबुद्धिके दाताहै य सुबुद्धिके दाताहै, इनक पास धर्मध्यान करना इनोके पास धर्मध्यान नहीकरना चाहीये अगर किसीन दवाला निकाला हावेतो उदयाग्त स्वारिके पास रकम कदापि जमा नहीं करना चाहाय ऐसे ये दवाग्न स्वोरिय है और ये साहुकार, इनोको वं ना नमस्कार करना और इनोको वंदना नमस्कार नहीं करना चाहीये इत्यादि स्वोन्स्लिोनि नियाके जां ये अनेक प्रकारस मात, मके आपसम रागद्वषकिवृधि करके स्वघमका सत्यानास करदालाहै, ऐसनष्ट (स्वोन) मनुष्योसे मतापमे स्वधनका सत्यानारा हाकरके स्व धर्मके भावकस्याग इस, हाथाडाम (आपसका झगडा) करजरिय भ्रमि भ्रष्टाके, स्वधर्मके उगरमे सरघा वतरके अन्य धर्मका अंगीकार करना चाहते है,

---

भगवानका होताहै जो मुनि इस पंचम काल्मे उत्कृष्ट चारित्रकि फरषी धारण करके कहेके हम उत्कृष्ट साधुहै, वो मुनि दुसर मारावक्ष भागल समजलेना और जो श्रावक रागके वसमे हाक कहेक वे मुनि उत्कृष्ट है, वो श्रावक दसर बृतका मागल समजलेना और वो दादु मारामोहनी क्रमकि उपार्जना करने वालेहै, समवायंगजी सुत्रको, फरमी देखिय चौथे आरेमे श्रीवीर प्रभुने पना अणगार सरिस्वा हास्या पुरुषोका सामान्य चारित्रके पालनेवाले सिद्धांगोमे श्री प्रभुने फरमाया है तो देख पचमकालमे उत्कृष्ट चारित्र कहासेआया अगर येमन कस्बिा उसकृष्टोने काइस्वडेमसे नविन उत्कृष्ट चारित्र खोदके पैदाकिया हामोगा तो ज्ञानिगमहै, मगर अपनि महीमा पुजाकेवास्ते स्वता छुट वास्तेहै, और श्रावकोंके पासछे मुट मुस्वातेहै, मगर ईर्ष,

वाजी-साहेब वा- क्यावात है आपकि येही आपका वीतरागी-पणा येही आपकी समता —या— क्षमा —या— वच्छलतापना ऐसेही कार्योसे तुम धर्म वृधि करोगे रंगहै तुमलोगोको इसवजेसे हमारे स्वधर्मकि दिनपेदिन हिनता होकर परलयहोने सरिखिदशा आपहोचिहै और दिलचाहै, उस, मजब वाला, हमारे मजबके उपर आक्षेप करके खडाहो जाताहै, मगर ऐसे निर्मल और पवित्र और पाकधर्मके उपर मगदुरहै के कोइ आक्षेप करनेको खडाहोवे मगर तुमारि वदोलतसे हमारे स्वधर्मके उपर जुतियां —व— सोटेवरसतेहै, वासाहेब —वा— येही आपका वीतरागी पना और धर्मध्यान है और इससे क्या मोक्षकि प्राप्तिहोतिहै कदपि नही और रागद्वेषका फल सर्व ठिकाणे एक सरिखा लगताहै, मगर प्रथक प्रथक नही लगताहै, अतः एव हमारे स्वधर्मके उपर अन्य धर्मकि तर्फसे जो मिथ्याकलंक लागु होतेहै, उन मिथ्याकलंकोकि नास्ति करनेके वास्ते चर्चावादि मुनिमहाराज पायावंध हुसियारहोके खडे होते है, तव हमारे स्वधर्मके पोपमहंत माहाराज तोर जोरसे माहान पोकर उठातेहै के अरे भाइराग द्वेष वढताहै, ऐसिवकवाद करनेका कारन ये है के जो जो हमारे स्वधर्मके वडे वडे महंत माहातमापुरुषहै वो लोगतो हमेस अपनि महिमामेही मगन रहतेहै, आगे श्रीजिनमार्गका हाल चाहेवैसा क्यो नहो अपनितो महीमाहोना चाहीये, महिमाकितोफगी देखो! अमुक महाराजके चोमासेमे महाराजश्रीके दर्शनार्थ दसहजार आदमि आये, और पंदरे हजार रूपैये खर्च हुवे अर्थात १५ हजारकि धुड उडी और धाम

कपट और झुट इत्यादिहिण वातोसे जन्म नही सुधरताहै, ऐसा श्री तिर्थंकर महाराज खासने फरमायाहै,

घुमके साथ खुबमाल खाना खावे, और मजा उडावे, देखो अन्यमतलोकवास्ते ऐतोम बडा भारी उपकार करवातेहै पर्युषण पर्वमे कसाई खाना इत्यादिक भट्टियां वगैरे बंध करवाते है मगर स्वताके वास्ते तो वोम, कैसे मजा देखो! स्वताकि महिमाकवास्ते श्रावकादि सर्व जो पर्युषण पर्वमे भट्टियां चलतीहै और महा आरंभ समारंभ होके त्रसथावरादिछ कायके अनंते जीवोका घमसाण होताहै, इसबातको बंदकरनेके वास्ते असमर्थहै,क्योंकियेकाय बंधकरवदेवेतो उनोकि महीमा पूजा कमहो जावे और महंत तथा महात्मा पदविका फर्क पहोंचे इस वास्ते वो लोग इस बातको बंदकरणेके लिये स्वप्नमें और इन लोगोंकेपास धर्मकेपैसे खानेवाले दलाल हमेसे जो इन लोकों कि महिमा बढाते रहेतेहै, उन लोगोंको येलोग अपने मातबर (मालदार) श्रावकोंके पास नाणादिलवानेको बडेमजबुतहै, देखो! पांच आश्रवद्वार सेवन करतेहै उनोको लोभाश्रवद्वार सेवन करने के वास्ते नाणे कि मदद दिलवाते है, बड आनंदकेसाथ अगर स्वधर्मका मिथ्या कलंक दुर करनेका जोकोई इलाज करनेके वास्ते न्यायाधिश साहेब और महंत महाराजसे अर्ज करेके गरिब मनाजके महान खमकी ठामहैसो इसमे आपके तर्फसे पूर्ण मदत मिलना चाहीये, तबमहंत महाराज हुकम फरमाते है के अरे भाई येकामराग द्वेषका है, इस काममे तो मुनिने मौन साधन करना चाहीये सोचिये! पांच आश्रव द्वारसेवन करनेके वास्ते नाणेकि मदत दिलवानेमे मदत माहाराजको उत्तम गतिमिलेगी और स्वधर्म सम्यक्तके कार्यमे पूर्ण मदत देनेसे क्याअधोगति मिलेगी, कदापि नहीं, मगर बड बडे मुनि वर्गमे अकलका पात्र और वो महिमा पूजाके

लालची और शास्त्रके असलि रहेस अजाण, खेदाश्चर्यका स्थान है के इस दसासे हमारे स्वधर्मकी उन्नतिकि नास्तिहोके चिरकालमें हमारा धर्म पयालमें उत्तर जावेगा ऐसाभान होताहै और इसिही दसासे हमारे स्वधर्मकि नास्ति करनेके वास्ते अदना आदमीभी कमर बाधके खडा हो जाताहै और इनोके श्रावक लोगभी स्वधर्मकि उन्नति करनेके बारेमे तन, मन ओर धन आर्पण कदापि नही कर सकते है कारन इन लोगोंके पासमें धर्मका पैसा खाने वाले दलालोंको महत पैसा दिलवाते है तथा अपनि महिमां पूजाके वास्ते पैसा खरचाते है तब धर्म उन्नतिके तर्फ पैसा कैसा मिल सकेगा [मिस्सलन] तिनलोके पतिको पूर्ण सुख नही मिला करता है, इसवजेसे समजलेना मगर हमारे स्वधर्मके बडे बडे महंत माहात्मा पुरुषोंनें महा वितरागपद धारणकर रखाहै, लेकिन किंचत मात्रभी सराग दसाका त्याग नजर नही आताहै, तो वीतराग दसातो इसकालमें सप्नमेभी कहाहै, खेर, अब हम हमारे स्वधर्मके आम मुनि वर्ग किंवा आम श्रावकवर्गाकि सेवामे हमारि विनति निवेदन करते हैं के अपने स्वधर्मके उपर जो मिथ्या कलंक लगायाहै इसोकि नास्ति करके अपने स्वधर्मकी उन्नति पूर्णहोवे ऐसाकार्य करनेके वास्ते पायबध खडेहो तब तुमारि बाहादुरिहै, आपाकि सेवामे आपको जाणनेके वास्ते किंचित सिद्धांतोका न्याय देतेहेसो देखो सुत्र श्रीभगवतिजीमे श्रीवीर प्रभूनें गौतम स्वामको श्री मुखसे फरमायाहे, के अहो गौतम तुम चर्चावादिमे समर्थ हो, और पाखंडियोके मान मर्दन करनेवाले हो, और श्रीवीर परमात्माके चवदा हजार शिष्यथे उनमेसे च्यारसो वादिशिष्यथे अर्थात हमेस चर्चावार्ता करनेका ही उन माहानुभाव पुरुषोंको कामथा मगर उन चर्चावादि मुनियोंको श्री वीर प्रभूने रोके नही, के तुमये क्या काम करतेहो, इससेराग द्वेष बढताहे, ये कहेना असमर्थोका कामहै

यह ग्रंथ निर्विघ्नताये समाप्त हुवा इस लिये
– क्षमापन्नादि उपदेशी चाविशो –

कोयल्ल परवत धुं धलरेलाल पे वेसा पळा ऋषभ देव नद मारवन अजित अजित चित पावदा भवक जिन, विभा समव प्रभु निर्मल अळ, अभिनदन वदम मावहो, भवक जिन ॥ १ ॥

करो पछी राल मत खामणारलाल निश्चे लवा पारहो-भ
चौम्यासी लक्ष जिवा ओंपसूरेलाल राजा मत्राधार हो-म-॥ ॥
करो पछी राम्य मत खामणारेलाल ॥पटव॥
त्रिकर्ण विशुद्ध समाधिनेरेला सहापि दूर निवारहो-म
क्षमा कंला दिर्धाळनेरेला तिचे विवहार हियेधार हो-म-॥१॥ क०।
सुमत सुमत दातार छेरेला छठा पदम प्रभु देवहा-म-
सुपार्श्व सुख कार छेरेला चरसाचवा प्रभुजी सेव हो-म-॥४॥क०॥
रायसी देव शीतल मानियेलाल कदापि मवि याय हो-म
बाशमने थिर कारनेरेलाल निश्चे पछी समाव हो-म-॥५॥क०॥
नवमां सुमतिनाथ पदसारेला दसमां सिवल नाम देव हो-म
इग्यारमां श्री इस माय पदसारेला बारमां वास पुज्य वन्दतोमचा॥६
॥ कदापि पछी नवि सधरेलाल चौमासि समाय हो-म
भावम नित्य करो मायसूलम ग्रहुवा दुर छिटकायहा-मा ७॥क०
तेरमां विमलनाथ वंदसारेलाल चवदमा अनंत नाथ वन्दहा-भ
पंदरमां धर्मनाथ वंदसारेलाल शांति शांति दातार हा-मा॥८॥क०
कदापि चौमासि मवि खमरेलाल संवत्सरी शुद्ध समाय हा-म
संवत्सरी उलघतामारेलाल समकित हार्थी जायहो-म-॥९॥क०
सतरमा कुंथुनाथ वंदसारेलाल अठारमा अरनाथ वन्दहो-म
उगणिसमां मल्लिनाथ वंदसारेलाल विसमां मुनि सुव्रत वन्दहा मा॥१०
पम करपि माहु चौकछेरेलाल समकित विनाजाण हा-म
समकित निवेछे माथ निरेलाल ज्ञानि वचन प्रमाणहो-मा॥११॥क

इकविसमां नमी नाथ वंदसारेलाल. रिष्ट नेमि गुण थिरहो–भ-
पाखंड भंजन पासछेरेलाल सासण पति महावीर हो–थ–॥१२॥क०
समकित राखो निर्मलिरेलाल. होवे कारज सिद्धहो–भ--
उतकष्ठ पंदरे भवेरेलाल. पामो अवचल रिद्ध हो–भ–॥१३॥क०
अनंत सिद्धाजीने वंदसारेलाल. जैवंता जग दिसहो–भ-
आचार्य उपाध्याय सर्व साधजीरेलाल. नमन करु निसदिसहो -भ-॥१४
पुज्य सौभाग सोभा निलोरेलाल मणि गुण परणता सदो-भ-
तस चर्णांबुज कुंदन नमेरेलाल. पुरो हमारी आसहो –भ- ॥ १५ ॥क०॥

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!
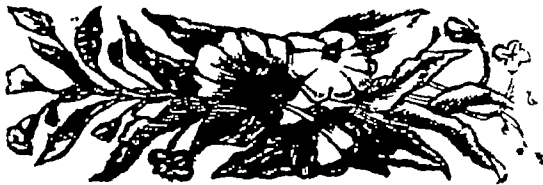
सूचना.

देखिये ! वरोरा श्री सघने मुनि श्री को खानदेशसे इस प्रांतमे पधारनेके वास्ते अति अग्रहके साथ प्रेमपुर्वक विनती करि, उक्त विनती के उपर मुनि श्री ने ध्यान देके अपने चर्ण रज्जसे ये क्षेत्र पावन किये, मगर मुनि श्री का वनाया हुवा माहा प्रभाविक ग्रथ स्त्र वर्गका आम तोरसे फायदा पहोचना इसलिये छपवाके पवलिकने जाहिर करने के वास्ते, वरोरा श्री सघ कटीवंध होके खर्चके वास्ते पटी करी मगर नाणा कम होनेसे उक्त पटी प्रात वराडके कसवा धामक भेजी गइ उक्त पटी धामक जातेके साथ ज्हांके अग्रेसरोंकी वदवलतसे मृतक दशा को प्राप्त हो गई, मगर लघुवय धर्म चुस्त सेठ केसरीमलजी साहेव गुगलिया तटस्थ होके पुन रपि पटीके जन्म दाता होके, जिन मार्गका पुर्ण उद्योत किया,

देखो ! वरोरा श्री सघ और उक्त सेठजी साहेव को कोटिस धन्यवाद है के सदा सर्वदा धर्म उद्योत कार्योमे कटिवध बने रहते है.

आपका सेवक

जैनी डालचंद.

[illegible]न	नाम		रकम रु.
२१	खेमराजजी दिपचंदजी	—	॥
	येवती		
२२	कोजीराम चतुरभुज	—	५
	मंगरुल चवाला		
२३	बखतावरमल जिवराज	—	५१
	वट फळी		
२४	अखेचंदजी दिपचंदजी	—	२१
२५	जवारमलजी हरकचंदजी	—	१५
२६	छोगमल नथमल	—	२
	नेर परसोपत		
२७	सुरजमलजी चांदमलजी	—	२१
२८	हरकचंदजी ग्यानचंदजी	—	११
२९	रिधीचंदजी गणेशमलजी	—	४
३०	अमोलकचंदजी सोभाचंदजी	—	५
३१	केसरीमलजी गंगारामजी	—	५
३२	साहेबचंदजी मुथा	—	१
	नांदगाव खंडेसर		
३३	बखतावरमल शेषमल	—	११
३४	अमेदमल केसरीमल	—	४
३५	परतापमल चंपालाल	—	२
३६	पुनमचंद जवानमल	—	१
३७	कोठारी कुंदनमल	—	७
३८	लालचंद गोळेचा	—	१
३९	पन्नालाल रुणवाल	—	१
४०	मगराजजी सुगमलचंद नाहटा	—	२

अ. नं	नांव	रकम रु.
५७	कस्तुरचंदजी दिपचंदजी	१
५८	शिवलाल मेघराज	२
	धनज	
५९	नथमलजी कालुरामजी	१
६०	हजारिमलजी पेमचंदजी	१
	वामनवाडा	
६१	अगरचंदजी नवलमलजी	२
६२	हिरालालजी गोपालजी	४
	उत्तरसाडी	
६३	उदेराज पारसमल	२
६४	हरखचंद आसकरन	१
	पिंपळगांव	
६५	बखतावरमल केसरीमल	२
	मांगला	
६६	पन्नालाल परतापमल	३
६७	मुलचंद नंदराम	२
६८	अमरचंद कनकमल	३
६९	मगलचंद दिपचंद	२
७०	गाडमल केसरीमल	१
७१	जोरावरमल रघुनाथजी	१
७२	जोरावरमलजी मेघराजजी	१
७३	कुंदनमल अमोलकचंद	१
	टिटवा	
७४	रामचंद मोतीलाल	११

म नं	नाम	रुपया
	येरड	
७५	धनेचंद रूपचंद	१५
७६	राजमल भैस लिख	१
७७	नपमल हिराजल	१
	दांजा	
७८	भिमरीमलजी बलताजमल	॥
	दाला	
७९	परसामल कुंनमल	५
८०	गाबाधन गेकचंद	११
८१	भोगमल गुनाबचंद	२
८२	पुनमचंद मोरया	२
	पोहर	
८३	जोधारमल पुनमचंद	९
८४	मुनानमल रूपचंद	११
८५	भादमल भारमल	५
८६	कल्पानमल चाकमचंद	४
८७	नथमल सोनमराम	१०
८८	पुनिमजी मिसरीमलजी	१
	चिरली	
८९	रणजितमल मुनिलाल	२
९०	भागचंद फौजमल	२
	मालगांव	
९१	रामराम चैंपमल	११
	भानेगांव	
९२	सिरानजी गुमानचंदजी	२
९३	हजारीमलजी भवानमलजी	२

अ नं.	नाम,	रकम. रु.
९४	रिखबरन नेमिचंद	२
९५	भेरोदानजी मनरूपजी .	२
	वाभुलगांव	
९६	अगरचंदजी मिलापचंदजी	५१
९७	हणवतमलजी हिरालालजी	५१
९८	फौजमलजी पुनमचंदजी	२१
९९	आसाराम पृथिराज	[illegible]
१००	कुंदामलजी चंदनमलजी .	२१
१०१	जवारमल फौजमल	११
१०२	जोरावरमलजी चुनिलालजी	७
१०३	मुलचंदजी चंदनमलजी ..	११
१०४	फौजमल बालचंद ..	११
१०५	सुरजमल केसरीमल ...	२
१०६	कानुगचंद पेमराज ...	२
१०७	मंगलचंद नेहराम .	५
१०८	पुनमचंदजी रूपचंदजी	१
	कुन्हा	
१०९	हजारीमलजी बोरा .	५
	किणी	
११०	जुगराजजी मुलचंदजी कांकरिया .	२
	सांवगी	
१११	परतावमलजी चुनिलालजी	११
	सुखली	
११२	किसनलालजी कोठारी	२
	कोटंबा	
११३	अगरचंद पुनमचंद गुगलिया	००

अ नं	नाम	रकम रु.
	पिंपरी चिमना राजारी जिला औरंगाबाद	
१२९	दर्वीचंदजी नंदरामजी (मार्फत) बच्छराजजी चंदनमलजी फुलपगर औरंगाबाद —	५०
१३०	राजमल मुन्नालाल कोटेचा बिड निजाम स्टेट - -	५
१३१	गमालाल किसनलाल बिड निजाम स्टेट- - -	१

उपर दर्ज किये हुये महाशयोंमेसे निचे नाम दर्ज किये हुवे के तरफसे उनके नामके उपर लिखी हुई रकम अभीतक पोंहची नहीं है.

तपशील.

१	बुधमलजी बिरदीचंदजी घामक —	१०१
२	गंगाराम केसरीमल नेर परसोपंत —	५
३	साहेबचंद मुथा नेर-परसोपंत —	१
४	मिसरीलाल लछमनदास मोजर —	४
५	खजोरीमल्ल बिजराजजी —	११

पुस्तक मिलनेका पत्ता

धनराजजी मोतीलालजी

मु० पो० दरोरा जि० चांदा सी

किसुरचंदजी रिषचंदजी

मु० पो० मानकवाडा

(रल्वे स्टेशन—धामनगांव)